प्रकाशक :

मेडिकल पुस्तक भवन,

गोला दीनानाथ, वाराणसी ।



एकादशम् संस्करण





मू० १०-०० रुपये मात्र



मुद्रक—

बैजनाथप्रसाद

कल्पना प्रेस

रामकटोरा रोड, वाराणसी ।

प्राक्कथन

महात्मा हैनिमैन ने जब पूर्ण सदृश-विधान पर आधारित होमियोपैथी को मूर्तरूप दिया तो पाश्चात्य चिकित्सा-जगत में बड़ी हलचल मच गयी। प्राचीन चिकित्सा-पद्धति के अनुसरणकारी एलोपैथ चिकित्सकों की निराधार चिकित्सा-शैली और उनके होनेवाली धांधलियों का पर्दाफाश हुआ। जनता ने भी उक्त महात्मा की सत्य शैली का अनुभव किया और होमियोपैथी की तरफ विशेष आकर्षित हुई।

इतना होने पर भी होमियोपैथी की सदृश-चिकित्सा जनसाधारण के लिए सहज प्रमाणित नहीं हुई। महात्मा हैनिमैन ने अपने जीवन में जिन औषधियों की परीक्षा की, उनके परवर्ती मनीषियों ने भी उनका भंडार यथेष्ट परिपूर्ण किया। अब लोगों ने देखा कि उतनी औषधियों को सदा याद रखना और परिपूर्ण सदृश-चिकित्सा करना सरल नहीं, तो अन्य सहज-गम्य चिकित्सा की खोज होने लगी। कहना न होगा, महात्मा सुशलर ने इस अभाव की पूर्ति की। उन्होंने बारह औषधियों का जो वास्तव में मानव-शरीर का परिचालन करने वाले क्षार हैं, अनुसंधान किया और प्रमाणित किया कि कोई भी रोग उक्त एक या एकाधिक क्षारों के अभाव के कारण ही पैदा हुआ करता है। फलतः यावत् रोगों की चिकित्सा उन्ही १२ औषधियों मे सीमित होकर होने लगी। कहना न होगा, इसके मूल मे भी 'सदृश-विधान' ही प्रधान आधार है। यही कारण है कि इधर कुछ दिनों से प्रकाशित होनेवाली हर 'मेटेरिया मेडिका' की चिकित्सा मे 'सुशलर्स बायोकेमिक रेमिडीज' नाम से उपरोक्त बारह औषधियो के संक्षिप्त लक्षण भी लिखे जाकर प्रकाशित होने लगे। अपेक्षाकृत सहज होने के कारण हमारे भारत में इसका यथेष्ट प्रचार हुआ।

प्रकाशक :

मेडिकल पुस्तक भवन,

गोला दीनानाथ, वाराणसी ।



एकादशम् संस्करण





मू० १०–०० रुपये मात्र



मुद्रक—

वैजनाथप्रसाद

कल्पना प्रेस

रामकटोरा रोड, वाराणसी ।

प्राक्कथन

महात्मा हैनिमैन ने जब पूर्ण सदृश-विधान पर आधारित होमियोपैथी को मूर्त्तरूप दिया तो पाश्चात्य चिकित्सा-जगत् में बड़ी हलचल मच गयी। प्राचीन चिकित्सा-पद्धति के अनुसरणकारी एलोपैथ चिकित्सकों की निराधार चिकित्सा-शैली और उससे होनेवाली धाँधलियों का पर्दाफाश हुआ। जनता ने भी उस महात्मा की सत्य शैली का अनुभव किया और होमियोपैथी की तरफ विशेष आकर्षित हुई।

इतना होने पर भी होमियोपैथी की सदृश-चिकित्सा जनसाधारण के लिए सहज प्रमाणित नहीं हुई। महात्मा हैनिमैन ने अपने जीवन में जिन औषधियों की परीक्षा की, उनके परवर्ती मनीषियों ने भी उनका भंडार यथेष्ट परिपूर्ण किया। अब लोगों ने देखा कि उतनी औषधियों को सदा याद रखना और परिपूर्ण सदृश-चिकित्सा करना सरल नहीं, तो अन्य सहज-गम्य चिकित्सा की खोज होने लगी। कहना न होगा, महात्मा सुशलर ने इस अभाव की पूर्ति की। उन्होंने बारह औषधियों का जो वास्तव में मानव-शरीर का परिचालन करने वाले क्षार हैं, अनुसधान किया और प्रमाणित किया कि कोई भी रोग उक्त एक या एकाधिक क्षारों के अभाव के कारण ही पैदा हुआ करता है। फलतः यावत् रोगों की चिकित्सा उन्हीं १२ औषधियों में सीमित होकर होने लगी। कहना न होगा, इसके मूल में भी 'सदृश-विधान' ही प्रधान आधार है। यही कारण है कि इधर कुछ दिनो से प्रकाशित होनेवाली हर 'मेटेरिया मेडिका' की चिकित्सा मे 'सुशलर्स बायोकेमिक रेमिडीज' नाम से उपरोक्त बारह औषधियों के सक्षिप्त लक्षण भी लिखे जाकर प्रकाशित होने लगे। अपेक्षाकृत सहज होने के कारण हमारे भारत में इसका यथेष्ट प्रचार हुआ।

किंतु दुःख है कि हिन्दी भाषा में वायोकेमिक चिकित्सा पर कोई अलग संपूर्ण एवं सुबोध ग्रन्थ प्रकाशित नहीं हुआ। होमियो पुस्तकों के यत्किंचित प्रकाशन से ही कार्य चलाना पड़ता था। इस अभाव की पूर्ति के लिए ही इस ग्रन्थ को जन्म दिया जा रहा है। पारिवारिक चिकित्सा के रूप में यावत् रोगों के लक्षणों के साथ वही वायोकेमिक औषधियाँ इस पुस्तक में विस्तार के साथ दी गई हैं। केवल इतना ही नहीं, इस ग्रन्थ को उपादेय बनाने के लिए संक्षिप्त आहार गुण संग्रह, शारीरिक आवश्यकताओं के अनुसार पथ्य-निरूपण तथा शरीर-निर्माण सम्बन्धी वैज्ञानिक विषयों का भी समावेश इसमें किया गया है। पुस्तक का निर्माण इसी दृष्टि से हुआ है कि कोई भी वायोकेमिक चिकित्सक, चाहे वह पेशेवर हो या घरेलू मात्र इस एक पुस्तक से ही पूरी तरह अपना कार्य-निर्वाह कर सके। चिकित्सकों की सुविधा के लिए इसीलिए अन्त में रोगौषधि-कोश भी दिया गया है। अस्तु, इस पुस्तक के लेखन तथा प्रकाशन से यदि जनता का कुछ भी लाभ और हितसाधन हुआ तो लेखक का श्रम सार्थक होगा और उसे प्रोत्साहन भी प्राप्त होगा।

—लेखक

सम्मतियाँ

'बायोकेमिक चिकित्सा' पर प्राप्त कुछ मुख्य सम्मतियों का सारांश निम्नांकित है—

सम्पादक, होमियोपैथिक 'अग्रदूत' वाराणसी लिखते हैं—

"...... डॉ० शर्मा जी द्वारा लिखित 'बायोकेमिक चिकित्सा' पुस्तक सचमुच हिन्दी भाषा में अद्वितीय है। विषयों का वर्णन बहुत ही बोधगम्य भाषा में किया गया है। पुस्तक प्राचीन चिकित्सकों एवं चिकित्सा-शास्त्र के विद्यार्थियों के लिए लाभप्रद सिद्ध होगी। लेखक का प्रयत्न प्रशंसनीय है—"

—डॉ० कैलाश भूषण त्रिपाठी

डॉ० अयोध्यानाथ पाण्डेय (होमियोपैथ) माननीय गवर्नर द्वारा 'बोर्ड आफ होमियोपैथिक मेडिसिन्स' उत्तर प्रदेश के मनोनीत सदस्य तथा डिस्ट्रिक्ट होमियोपैथिक मेडिकल असोसिएशन, वाराणसी के प्रेसिडेण्ट लिखते हैं—

'...श्रीयुत् डॉ० सुरेशप्रसाद शर्मा जी द्वारा लिखित 'बायोकेमिक चिकित्सा' का द्वितीय संस्करण देखा। इस पुस्तक पर उ० प्र० सरकार ने पुरस्कार भी प्रदान किया है। द्वितीय संस्करण संशोधित एवं परिवर्द्धित है। प्रथम संस्करण ही चिकित्सकों के लिए काफी उपादेय साबित हो चुका है। इस कारण मानना ही पड़ेगा कि द्वितीय संस्करण से चिकित्सक विशेष लाभान्वित होंगे। चिकित्सा के सम्पूर्ण अङ्ग-प्रत्यङ्गों का विधिवत् वर्णन है। मुझे आशा एवं पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक न केवल चिकित्सकों में ही वरन् जनता-जनार्दन में भी विशेष चमत्कार एवं सर्वगुणसम्पन्न साबित होगी........।'

—डॉ० ए० एन० पाण्डेय

सम्पादक 'आज', वाराणसी लिखते हैं—

'........वायोकेमिक चिकित्सा' में लेखक ने प्रायः सभी रोगों के लक्षण और औषधि के साथ ही साथ पथ्यनिरूपण, आहार-गुण और शरीर-निर्माण सम्बन्धी विज्ञान भी देकर पुस्तक की उपयोगिता बढा दी है।........'

—सम्पादक

डॉ० वारिद वरण चटर्जी एम० एम०, ए० डी० (रजिस्टर्ड)

'....... डॉ० सुरेशप्रसाद शर्मा जी द्वारा लिखित पुस्तक 'वायोकेमिक चिकित्सा' वायोकेमिक विज्ञान के सम्बन्ध में सागोपाग रूप में है। विषयों का विवेचन सरल ढग से दिया गया है। आशा है चिकित्सक समाज इससे पूर्ण रूप से लाभ उठायेगा।

—डॉ० वारिद वरण चटर्जी

प्रकाशकीय वक्तव्य

महान हर्ष का विषय है कि आज हम पाठकों के समक्ष 'बायोकेमिक चिकित्सा' पुस्तक का एकादशम् संस्करण प्रस्तुत कर रहे हैं। इसके पहले के सभी संस्करणों की हाथों-हाथ खपत हो गई, बस इसकी उपयोगिता का यही एक प्रत्यक्ष प्रमाण है।

प्रसन्नता की बात है कि उ० प्र० राज्य सरकार द्वारा पुरस्कृत यह पुस्तक होमियोपैथिक शिक्षण संस्थाओं द्वारा भी अपनायी गई है। साथ ही साथ चिकित्सालयों, पुस्तकालयों के अतिरिक्त प्रत्येक कुटुम्ब में इस पुस्तक को रखकर चिकित्सा प्रेमियों ने जो इसको आदर दिया है इसके लिए हम विशेष रूप से उनके कृतज्ञ और आभारी हैं।

आशा है जनता और चिकित्सक समुदाय इसे अपनायेंगे।

—प्रकाशक

विषय सूची

षष्ठ अध्याय

चिकित्सा खण्ड

प्रथम अध्याय

प्रस्तुत अध्याय मे निम्नांकित विषयो का समावेश हुआ है :—

पोषण-संस्थान, शरीर का रासायनिक संगठन (खनिज पदार्थ, सजीव पदार्थ, नत्रजनीय, अनत्रजनीय, प्रोटीन, वसा, कार्बोज, श्वेतसार, लवण, जल , शरीर मे पाये जाने वाले यौगिक, भोजन, खाद्य के मुख्य अवयव, भोजन के मूल अवयव कितने-कितने खाने चाहिए, खाद्य का रासायनिक संगठन (दालवर्ग, शाकवर्ग, फलवर्ग, शुष्क फल वर्ग, मसाले, दुग्धवर्ग, दुग्ध के लवण, मांसवर्ग, अण्डा, भोजन पकाने के लाभ, कुछ भोजन के नमूने, अंग्रेजी डबल रोटी, अंग्रेजी बिस्कुट) आदि।



पोषण-संस्थान

जब सेलें कोई काम करती हैं तब उनके प्रोटोप्लाज्म (जीवनमूल) में बड़ी ही विचित्र रासायनिक क्रियाएँ होती हैं। इन क्रियाओं से शक्ति उत्पन्न होती है जिसका अधिकाश कार्य के रूप में दिखायी दिया करता है। कार्य करने से सेलें घिसती और टूटती-फूटती भी हैं। यदि सेलों को उन पदार्थों की जगह जिनका शक्ति उत्पन्न करने में व्यय होता है नये पदार्थ न मिलें और उनके टूटे-फूटे भाग फिर ज्यों के त्यों न बन जावें तो शरीर का सब कारोबार क्षणभर में बन्द हो जाय, परन्तु ऐसा नहीं है, जिस प्रकार अमीबा अपने शरीर के खर्च हुए पदार्थों की जगह उस जल में से जिसमें वह रहता है, नये पदार्थ ग्रहण करता रहता है उसी प्रकार हमारे शरीर की सेलें भी, उस लसिका से जो उनके पास रहती है, पोषणकारक और शक्ति उत्पादक पदार्थ ग्रहण करती रहती हैं। लसिका रक्त से उत्पन्न होती हैं। रक्त में ये पदार्थ भोजन से आते हैं। जो भोजन हम खाते हैं उस पर शरीर में रासायनिक क्रियाएँ होती हैं। इन क्रियाओं के पश्चात् उसमें वे पदार्थ जिनकी शरीर में आवश्यकता होती है, शरीर में रह जाते हैं, जिन चीजों की आवश्यकता नहीं होती या जो चीजें पच नहीं सकतीं वे मल (विष्ठा) रूप में शरीर से बाहर निकल जाती हैं।

शरीर का रासायनिक गठन

रासायनिक परीक्षा से शरीर में दो प्रकार के पदार्थ मिलते हैं—

(१) खनिज या निर्जीव पदार्थ।

(२) सजीव या जान्तव पदार्थ—ये पदार्थ सजीव इस कारण कहलाते हैं कि वे केवल सजीव सृष्टि अर्थात् वनस्पतियों या प्राणियों में ही पाये जाते हैं। निर्जीव सृष्टि जैसे ककड़, पत्थर में नहीं।

खनिज पदार्थ

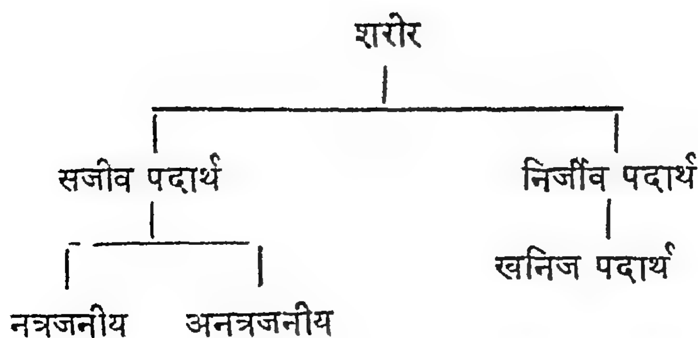
ये ऐसे होते हैं जैसे जल, अमोनिया गैस, नमक का तेजाब (हाइड्रोक्लोरिक एसिड), भाँति-भाँति के लवण जैसे खटिक संयोजित, साधारण लवण, स्फुरित (फास्फेट्स), गंधित (सल्फेट्स) इत्यादि।

सजीव पदार्थ

इन सबों में कार्बन अवश्य पाया जाता है। ये पदार्थ दो प्रकार के होते हैं :—

(१) नत्रजनीय—इसमें कार्बन के अतिरिक्त नत्रजन (नाइट्रोजन) भी अवश्य होते हैं जैसे कई प्रकार की प्रोटीनें। प्रोटीनों के अतिरिक्त और भी कई नत्रजनीय पदार्थ होते हैं जैसे यूरिया, यूरिक अम्ल।

(२) अनत्रजनीय या नत्रजनविहीन—इनमें नत्रजन नहीं होती जैसे वसा (चर्बी), शर्करा (शक्कर), श्वेतसार (माँड)। शरीर का रासायनिक संगठन इस प्रकार है :—



(१) प्रोटीन, (२) वसा, (३) कार्बोज, (४) लवण, (५) जल तथा अन्य कई चीजें जैसे शर्करा।

सक्षेपत:—शरीर में मुख्यतः पाँच प्रकार के पदार्थ मिलते हैं:—

(१) प्रोटीन ।

(२) वसा (चर्वी) ।

(३) कार्वोज जैसे शक्कर ।

(४) लवण ।

(५) जल ।

प्रोटीन

विश्लेषण करने पर इनमे ये मौलिक पाये जाते हैं :—कार्वन, उद्जन, ओषजन, गन्धक, नत्रजन वा स्फुर । १०० भागों मे कार्वन के ५४, ओषजन के २२, नत्रजन के १६, उद्जन के ७ और गन्धक का १ भाग होता है । इन मौलिकों के परस्पर रासायनिक सयोग से वने हुए विचित्र सम्मेलन को 'प्रोटीन' कहते हैं ।

प्रोटीनें कई प्रकार की होती हैं । कुछ जल मे घुलनशील हैं, कुछ नही । अण्डे की सफेदी एक प्रकार की प्रोटीन है । वहुत-सी प्रोटीनें ऐसी होती हैं कि यदि उनको या उनके घोलों को गरम करे तो उनमें एक विशेष प्रकार का परिवर्तन हो जाता है । ये जमकर सख्त हो जाती है और फिर पानी मे नहीं घुलतीं । यदि एक कॉच की नली में अण्डे की सफेदी या उसका घोल लैम्प के ऊपर गरम किया जाय तो वह जमकर सख्त हो जायगा और उसके छिछड़े (थक्का) नली की दीवालों से चिपट जायँगे ।

शरीर में कोई सेल ऐसी नहीं जिसमे प्रोटीन न हो । वह प्रत्येक सेल का अत्यावश्यक अवयव है । शरीर की प्रोटीनों मे सदा रासायनिक रूपातर होते रहते हैं । प्रोटीन और ओषजन के सयोग से औषजनीकरण (घनद् प्रक्रिया) नामक रासायनिक क्रिया होती रहती है जिसका परिणाम यह होता है कि प्रोटीन से यूरिया, यूरिक अम्ल, अमोनिया, जल इत्यादि नये पदार्थ

बन जाते हैं और साथ-साथ उष्णता (गर्मी) के रूप में शक्ति भी उत्पन्न होती है।

स्वस्थ मनुष्य के मूत्र में प्रोटीन नहीं होती। वृक्क प्रदाह या हृदय के रोगी में मूत्र में एक प्रकार की प्रोटीन आने लगती है। यह मूत्र में घुली रहती है। यदि मूत्र काच की नली में यथाविधि पकाया जाय तो वह उष्णता के प्रभाव से अनघुल बन जाता है और मूत्र की सतह पर एक गाढ़ी सफेद तह दिखाई देने लगती है।

प्रोटीनों के जुदा-जुदा नाम होते हैं। जो प्रोटीन मास मे पाई जाती है उसको मांसज कहते हैं। अण्डे की सफेदी की प्रोटीन को डिम्बज कहते हैं। दुग्ध में दो प्रोटीनें होती हैं। जब दुग्ध मे दही बनता है तो एक प्रोटीन अनघुल बन जाती है। दही का अधिक भाग इसी जमी हुई और अनघुल बनी हुई प्रोटीन से बनता है, पनीर का अधिक भाग इसी प्रोटीन से बनता है, पनीर या किलाट में पाये जाने के कारण उस प्रोटीन को किलाटज कहते हैं। दही बनने के पश्चात् दूसरी प्रोटीन तोड़ (दही का पानी) में घुली रहती है। इस प्रोटीन को दुग्धज या दुग्ध डिम्बज कहते हैं। यह प्रोटीन वैसे ही होती है जैसे कि अण्डे का डिम्बज, मलाई मे दुग्धज होती है। गर्मी के प्रभाव से यह जमकर दुग्ध के ऊपर आ जाती है। गेहूँ (गोधूम) की प्रोटीन गोधूमज, चने और मटर की प्रोटीन चरनकज कहलाती हैं।

वसा (चर्बी)

वसा में तीन मौलिक होते हैं—कार्बन, उद्जन और औषजन। वसा जलाने से जलती है अर्थात् वह एक दहनशील पदार्थ है, जल से हलकी होने के कारण उस पर तैरती है, शीत के प्रभाव से जम जाती है, उष्णता

से पिघली जाती है। वैसे तो वसा का थोड़ा वहुत अंश शरीर के हर एक सेल में पाया जाता है, परन्तु कुछ सेले ऐसी होती हैं कि जो वसा से भरी रहती हैं; ये सेले वसामय सौत्रिक तन्तु में होती हैं।

जब चर्वी का ओषजनीकरण होता है तब कार्वनद्विओषित गैस और जल उत्पन्न होते हैं और साथ-साथ उष्णता के रूप में शक्ति भी निकलती है। एक ग्राम वसा के पूर्ण ओषजनीकरण से इतनी उष्णता पैदा होती है कि यदि वह जल गरम करने के काम में लायी जावे तो ६४०० ग्राम जल का तापक्रम १ दरजा शतांश वढ़ा दे, यदि जल का तापक्रम ३७ था तो अब ३८ हो जायगा।

चर्वी पानी में नहीं घुलती, क्लोरोफार्म, ईथर, मद्यसार में घुल जाती है।

कार्वोज

इन पदार्थों में भी वसा की भाँति तीन ही मौलिक होते हैं—कार्वन, उद्‌जन और ओषजन। परन्तु इनका संयोग भिन्न प्रकार से होता है। ये पदार्थ ऐसे होते हैं जैसे शर्करा, श्वेतसार, ग्लाइकोजन, लकड़ी या शाकों के रेशे। एक प्रकार के कार्वोज से ही वनते हैं इसको सेल्यूलोज या काष्ठोज कहते हैं।

प्राणियों के शरीर में कार्वोज श्रेणी के दो ही पदार्थ पाये जाते हैं—

(१) शक्कर या शर्करा जो कई प्रकार की होती हैं।

(२) ग्लाइकोजन (शर्कराजन)

श्वेतसार और काष्ठोज प्राणियों के शरीर में नहीं होते; ये चीजें वनस्पतियों में पायी जाती हैं।

कार्वोज के ओषजनीकरण से कार्वनद्विओषित गैस, जल और शक्ति उत्पन्न होती है। वसा के मुकावले में उष्णता कम वनती है।

शर्कराओं के भिन्न-भिन्न नाम होते हैं। दुग्ध की शर्करा—दुग्धौज, अंगूर की शर्करा—द्राक्षौज, गन्ने की शर्करा—इक्ष्वोज कहलाती है।

श्वेतसार

वनस्पति वर्ग में बहुत पाया जाता है। चावल का अधिक भाग श्वेतसार ही होता है। गेहूं का छिलका उतार दिया जावे तो श्वेतरंग की चीज निकलेगी उसका अधिकांश श्वेतसार ही है। श्वेतसार के दाने अति सूक्ष्म होते हैं और इनका आकार भिन्न-भिन्न होता है। हर एक दाने में कई तहें काष्ठोज की होती हैं। इन काष्ठोज की तहों के बीच में श्वेतसार रहता है।

श्वेतसार ठण्डे पानी में अनघुल होता है, उबलते हुए पानी में यह घुल जाता है और यह घोल दुधिया-सा और अपारदर्शक होता है। आयोडीन (नैल) से मिलकर श्वेतसार का रंग नीला हो जाता है। यदि खनिज अम्लों के साथ श्वेतसार गर्म किया जावे तो उससे अंगूरी शक्कर (द्राक्षौज) बन जावेगी।

लवण

शरीर में कई प्रकार के खनिज लवण पाये जाते हैं। ये सोडियम, पोटैशियम, मैग्नीशियम, खटिक इत्यादि के लवण होते हैं। प्रत्येक सेल के प्रोटोप्लाज्म (जीवनमूल) में किसी न किसी प्रकार के लवण अवश्य पाये जाते हैं। किसी-किसी अंग में खनिज पदार्थ अधिक होते हैं। जैसे अस्थि में।

जल

जल प्रत्येक सेल का अत्यावश्यक अवयव है। कोई सेल नहीं, कोई तन्तु नहीं, जहाँ जल का कुछ न कुछ अंश न हो। शरीर के भार के १००

भागों में ६४ भाग जल के होते हैं। जल, ओषजन और उद्जन का संयोजित रूप है। उद्जन के दो परमाणु और ओषजन के एक परमाणु केरासायनिक सयोग से जल का एक अणु वनता है। जल का रासायनिक सकेत अ ३ ओ है। उद्जन को अभिद्रवजन भी कहते हैं। ओषजन का सकेत 'ओ' और अभिद्रवजन का 'अ' है।

शरीर में प्रोटीनों, वसा और कार्वोज के ओषजनीकरण से जल उत्पन्न होता है। रक्त और लसिका का अधिक भाग जल ही होता है।

उपर्युक्त पदार्थ (प्रोटीन, वसा, कार्वोज, लवण, जल) सव के सब यौगिक हैं अर्थात् एक से अधिक मौलिकों से वनते हैं। अव हम उन मौलिकों को गिनाते हैं जिनसे ये यौगिक वनते हैं।

शरीर में पाये जाने वाले यौगिक

जितने मौलिक वैज्ञानिकों को मालूम है उनमें से हमारे शरीर में केवल १६ मौलिक पाये जाते हैं—

(१) कार्वन
(२) नत्रजन
(३) ओपजन
(४) उद्जन
(५) गन्धक
(६) स्फुर
(७) सोडियम
(८) पोटैशियम
(९) खटिक
(१०) मैग्नीशियम
(११) ग्राव (लीथियम)
(१२) प्लव फ्लोरिन)
(१३) हरिन (क्लोरिन)
(१४) नैल (आयोडीन)
(१५) सेल (सिलिकोन)
(१६) लौह

इनके अतिरिक्त कभी-कभी वहुत ही सूक्ष्म मात्रा में ताम्र (ताँवा), मैंगनीज और सीसा भी पाये जाते हैं।

अनुमान है कि यदि किसी जवान मनुष्य के शरीर का जिसका भार १½ (डेढ़) मन हो विश्लेषण किया जावे तो उसमें निम्नलिखित मौलिक मिलेंगे।

मौलिक	सेर	छटाँक	तोला
१. ओषजन	४२	९	
२. कार्बन	७	४	२½
३. उद्जन	५	१३	२ [illegible]/२
४. नत्रजन	१	१४	२
५. खटिक	१	४	
६. स्फुर	—	११	
७. गन्धक	—	३	
८. हरिन	—	१½	
९. सोडियम	—	१¼	
१०. पोटैशियम	—	१¼	
११. प्लव	—	१¼	
१२. मैग्नेशियम	—	¾	
१३. लोहा			(है) ३२ ग्रेन

शेष मौलिक अंश मात्र ही होते हैं।

यौगिक पदार्थ कितने-कितने होते हैं

हम केवल उन पदार्थों को लिखते हैं जो अधिक पाये जाते हैं—

योगिक	सेर	छटाँक	शरीर के भार के प्रति १०० भाग
१. जल	४२	८	५७
२. वसा	१	१२	
३. कणरञ्जक	०	६½	
४. खटिक स्फुरित	३	५½	४३
५. खटिक कार्वनित	०	६	
६. प्रोटीन	१०	१२	
७. अन्य लवण	०	१२	१००

शरीर के १०० भागों में ५७ भाग जल के होते हैं, शेष ४३ भाग अन्य चीजों के।

खाद्य-भोजन

जिन पदार्थों से शरीर वना है और जिनसे शक्ति उत्पन्न होती है वे सव भोजन में मौजूद होते हैं। जो चीजें हम खाते हैं अर्थात् जिनसे भोजन वनता है वे खाद्य द्रव्य कहलाती हैं।

भोजन से लाभ

(१) भोजन से शरीर की सेलें अपनी वृद्धि के लिए सामग्री प्राप्त करती हैं। सेलों के वढ़ने और उनकी सख्या अधिक होने से शीरर का वर्धन होता है।

(२) शक्ति उत्पन्न होने के लिए शरीर में मसाला पहुँचता है। शक्ति ही से सव काम होते हैं।

खाद्य के मुख्य (मूल) अवयव

ये वही चीजें हैं जो शरीर में पायी जाती हैं अर्थात् :—

(१) प्रोटीन

(२) वसा (स्नेह पदार्थ-घृत, तैल इत्यादि

(३) कार्बोज

(४) लवण

(५) जल

किसी खाद्य द्रव्य में प्रोटीन अधिक होती है, किसी में वसा और किसी में कार्बोज। किसी में अधिकांश जल और लवण ही होते हैं।

अच्छे भोजन के लक्षण

(१) अच्छे भोजन में मूल अवयव उतने ही होते हैं जितने की शरीर मे आवश्यकता होती है।

(२) भोजन, जलवायु, मनुष्य के स्वभाव और प्रकृति के अनुकूल होना चाहिए। आयु, ऋतु, मनुष्य का भार, शारीरिक और मानसिक परिश्रम, स्वास्थ्य और अस्वास्थ्य इन बातों का भी ध्यान रखना चाहिए।

(३) भोजन ऐसा होना चाहिए कि वह अच्छी तरह और आसानी से पच सके। भोजन जहाँ तक हो सके स्थूल और महाप्रमाण न हो।

भोजन के मूल अवयव कितने-कितने खाने चाहिए

मामूली मानसिक और शारीरिक परिश्रम करने वालों को जिनका भार १½ मन के लगभग हो, मूल अवयव निम्नलिखित परिमाण मे खाने चाहिए।

प्रोटीन७०—८५ माशे (ग्राम)
वसा (स्नेह) ८५ माशे (ग्राम)
कार्बोज २२०–२५० माशे (ग्राम)

लवण, जल—कोई विशेष परिमाण की आवश्यकता नहीं। मास के बनाने के लिए बहुत आवश्यक है। मास प्रोटीन से बनता है। शरीर के भार का आधे से कुछ ही कम मास है—४२%। इससे समझ लेना चाहिए कि प्रोटीन कैसी आवश्यक चीज है। जिस भोजन में प्रोटीन कम होती है उस भोजन को खाने वाले सदा निर्बल रहते हैं और उनकी मांसपेशियाँ पतली, कमजोर और पिचपिची होती हैं। मस्तिष्क से अधिक काम लेने वालों को— जैसे विद्यार्थी, अध्यापक, वकील, डाक्टर को प्रोटीन की अधिक आवश्यकता है।

जैसे प्रोटीन सेलों के बनाने के लिए आवश्यक है वैसे ही वसा और कार्बोज शरीर मे शक्ति उत्पन्न करने के लिए आवश्यक हैं। प्रोटीन से भी शक्ति उत्पन्न होती है परन्तु शरीर की सेलें इस पदार्थ को शक्ति पैदा करने के लिए इतनी काम में नहीं लाती जितनी वसा और कार्बोज को। मानसिक परिश्रम करने वालों की अपेक्षा शारीरिक परिश्रम करने वालों को (फौज के सिपाही, मजदूर, पहलवान इत्यादि) इन पदार्थों की अधिक आवश्यकता होती है। शीत ऋतु में शरीर का ताप स्थिर रखने के लिए, इन उष्णता उत्पादक पदार्थों की, ग्रीष्म ऋतु की अपेक्षा अधिक आवश्यकता होती है।

कार्बोज और वसा (घृत, तैलादि) एक दूसरे की जगह काम दे सकते हैं अर्थात् यदि भोजन मे वसा कम हो और कार्बोज काफी हो तो शरीर को कुछ हानि न होगी और स्वास्थ्य खराब न होगा। इसी तरह यदि कार्बोज कम हो और वसा कुछ अधिक हो तब भी काम चल जायगा। इतनी बात आवश्यक है कि वसा कार्बोज की अपेक्षा देर मे पचती है और उतनी नहीं खाई जा सकती जितनी कि शर्करादि कार्बोज। गरीब मनुष्यों को वसा (घृतादि) बहुत कम प्राप्त होती है, उनका काम श्वेतसार शक्कर जैसी सस्ती चीज खाने से चल जाता है।

प्रोटीन भोजन में अवश्य होनी चाहिए (विशेषकर वर्द्धन काल मे २५ वर्ष की आयु तक), यदि २५ वर्ष से पूर्व प्रोटीन कम मिले तो वर्धन अच्छा न होगा। गर्भवती स्त्री को, अपने स्तन से बालकों को दुग्ध पिलाने वाली स्त्री को, क्षय रोगियों को या अन्य कठिन रोगों से अच्छा होने वालों को साधारण परिमाण से अधिक प्रोटीन मिलनी चाहिए। जवान मनुष्य के भोजन में ४५-५० माशे से कम प्रोटीन न होनी चाहिए। प्रोटीन का काम वसा और कार्वोज नहीं कर सकता। जो जातियाँ प्रोटीन कम खाती हैं वे कमजोर होती हैं।

जितनी उष्णता की एक ग्राम (एक घन शतांश मीटर) या माशा जल के तापक्रम को एक दर्जा शतांश अधिक करने के लिए आवश्यकता है वह उष्णता की एक इकाई कहलाती है। परीक्षा से यह मालूम किया जा सकता है कि किसी चीज के जलने या ओषजनीकरण से उष्णता की कितनी इकाइयाँ उत्पन्न हुईं अर्थात् वह उष्णता एक ग्राम जल का ताप कितना बढ़ा सकती है। एक ग्राम शर्करा के जलने से (ओषजनीकरण) से उष्णता की ३९५० इकाइयाँ बनती हैं। इसी तरह और चीजों की इकाइयाँ ये हैं :—

वसा—९४००

श्वेतसार—४१००

प्रोटीन—४१००

इन अकों से विदित है कि जहाँ तक उष्णता का सम्बन्ध है ४·१ ग्राम वसा ९·४ ग्राम प्रोटीन के बराबर है (प्रोटीन से उष्णता कम बनती है) या यह कहिये कि १ भाग वसा २·३ भाग प्रोटीन के बराबर है। यही अनुपात कार्वोज और वसा का है। शीत-ऋतु मे घृत का अधिक सेवन इसी कारण बहुत उपयोगी है।

इन तीनों मूल अवयवों के अतिरिक्त हमको जल और भाँति-भाँति के लवणों की भी आवश्यकता है। प्रत्येक सेल में किसी प्रकार के लवण पाये जाते हैं। अस्थियाँ लवणों के विना (खटिक सयोजित) मजबूत नहीं वनतीं। रक्त के कणरञ्जक के लिए लौह सयोजित की आवश्यकता है। लवण और जल शक्ति उत्पन्न करने के काम नहीं आते। खनिज लवणों (साधारण लवण, खटिक, स्फुरित और कार्वनित, लौह संयोजित) के अतिरिक्त शरीर को सजीव लवणों और अम्लों (जो शाकों और फलों मे पाये जाते हैं) की भी वड़ी आवश्यकता है। इनके विना स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता।

भोजन की कुछ और चीजें

मसाले, चाय, कहवा, कोका—इनमें से कोई चीज भी जीवन के लिए आवश्यक नहीं है, न इनसे सेलों की वृद्धि होती है और न शक्ति उत्पन्न होती है। मसालों से भोजन स्वादिष्ट और रोचक वन जाता है। स्वादिष्ट भोजन, अस्वादिष्ट भोजन की अपेक्षा भली प्रकार और शीघ्र पचता है। अधिक मसाला अजीर्ण पैदा करके स्वास्थ्य को विगाड़ता है।

भारतवर्ष में चाय का रिवाज प्रतिदिन वढ़ता जा रहा है। अच्छी वनी हुई चाय एक प्रकार का उत्तेजक है। थकान के वाद चाय पीने से थकान कम हो जाती है। विना जरूरत के उत्तेजक वस्तुओं का सेवन अच्छा नहीं। चाय को पानी में पकाना नहीं चाहिए। ऐसा करने से चाय के हानिकारक अवयव पानी में घुल जाते हैं। उवलते हुए जल मे चाय को तीन-चार मिनट भिगो कर छान लेना चाहिए। उस थोड़े से समय में उसके उत्तेजक अवयव तो पानी में घुल जाते हैं परन्तु हानिकारक अवयव वहुत कम घुल पाते हैं। ४ मिनट से ज्यादा भिगोने से चाय कड़वी हो जाती है और अजीर्ण पैदा करती है।

चाय, कहवा और कोको आमाशयिक रस की क्रिया को मन्द करते हैं इसलिए भोजन के साथ उनको न पीना चाहिए। दुग्ध मिलाने से यह दोष कम हो जाता है। अधिक कहवा पीने से अनिद्रा, सिरदर्द, मिरगी, हृदय कम्प इत्यादि रोग हो जाते हैं।

रासायनिक संगठन

नाम	प्रोटीन	स्नेह (वसा)	कार्बोज (श्वेतसार)	खनिज पदार्थ	जल
गेहूं	११·४७	२·०४	७०·६०	३·१४	११·८३
जौ	८·६२	१·६०	७६·१०	२·३	१२·३
मक्का	६·५२	४·४४	६८·६	३·७५	११·५०
चावल	६·६८	०·५०	८१·०७	१·०१	११·०५
बाजरा	८·७२	४·७६	७३·४०	१·५-२·०	११·१२
ज्वार	७·६७	२·७७	६७·२६		
गेहूँ का आटा (छना हुआ)	१०·७	१·१	७५·४	०·५	
फूल मैदा	७·६	१·४	७६·४	०·५	
गेहूँ का चोकर	१६·४	३·५	४३·६	६·०	१२·५

इन सब में २–३% काष्ठोज होता है। चोकर में १८% काष्ठोज होता है। उपर्युक्त तालिका से विदित है कि विना छने गेहूँ के आटे में छने हुए आटे और फूल मैदा की अपेक्षा अधिक प्रोटीन होती है। गेहूँ के

छिलके (चोकर) मे प्रोटीन और लवण दोनों बड़े परिमाण मे होते हैं। इससे स्पष्ट है कि आटा बहुत बारीक चलनी में चालना अच्छा नहीं। अन्न वर्गों मे कार्बोज श्वेतसार के रूप मे पाया जाता है।

दालवर्ग

नाम	प्रोटीन	स्नेह (वसा)	कार्बोज
मूँग	२३·६२	२·६६	५३·०५
मसूर	२५·४७	३·००	५५·०३
चना	१६·६१	४·३४	५४·२२
मटर	२२·०१	१·६६	५३·६७
अरहर	२१·७०	२·५०	५४·०१
उरद	२२·३३	१·६५	५५·२२

इन सबों मे १०–११% जल, ३–४% खनिज पदार्थ और शेष भाग कार्बोज होता है।

छिलके उतरी हुई दाल, छिलकेदार की अपेक्षा जल्दी पचती है।

शाक वर्ग

नाम	प्रोटीन	वसा	कार्वोज	खनिज पदार्थ	जल
बन्द गोभी	१·८	०·४	५·८	०·३	८९·६
फूल गोभी	२·२	०·४	४·७	०·८	९०·७
टमाटर	१ ३	०·२	५·०	०·७	९१·९
खीरा	०·८	०·१	२·१	०·४	९५·९
आलू	२·२	०·१	१५·७–२०·६	१·०	७८·३
शलजम	०·९	०·१५	५·०	०·८	९०·३
गाजर	०·५	०·३	१०·१	०·९	८६·५
हरी मटर	४·०	०·५	१६·०	०·९	७८·१
प्याज	१ ६	०·३	१०·१	०·६	८७·६
मूली	१·३	०·१	१४·५	१·०	८२·५
केला	,·३	०·६	२२·०	०·८	७५·३
भण्टा	०·८६	०·९४	३·४८	०·२६	९०·९८
भिण्डी	१·६	१·१	५·७२	०·८	९०·४
मीठा कद्दू	०.९०	१·०	३·९६	०·७	९३·४०

इन सबों में थोड़ा वहुत काष्ठोज होता है। शाक पकाकर खाना चाहिए। वथुआ, मेथी, सोवा इत्यादि हरे शाकों का सगठन ऐसा ही होता है। इनमें कई प्रकार के उड़नशील तैल भी होते हैं। जिनकी वजह से उसमे गन्ध आया करती है। यद्यपि शाकों मे पौष्टिक पदार्थ वहुत कम होते हैं तथापि भोजन में अवश्य होने चाहिए। उनमे हमको कई प्रकार के लवण मिलते हैं जिनके न होने से स्वास्थ्य बिगड़ने का भय रहता है।

केले के आटे में ये चीजें होती हैं—प्रोटीन ४%, वसा ०·५%, कार्बोज ८०·०%, खटिक पदार्थ २·५० और जल १·३०%।

फलवर्ग

नाम	प्रोटीन	वसा	कार्बोज	लवण अम्ल	जल
सेव	०·४	०·५	१२·५	१·४	८२·५
नाशपाती	०·४	०·६	११·५	१·४	८३·६
आडू	०·५	०·२	५·८	१·३	८८·८
बेर	१·०	—	१४·८	१·५	७८·४
स्ट्रावेरी	१·०	०·५	६·३	१.७	८६·१
रेस्पवेरी	१·०	—	५·२	२·०	८४·४
शहतूत	०·३	-	११·४	२·४	८४ ७
अगूर	१·०	१·०	१५·५	१ ०	७६·०
खरबूजा	०·७	०·३	७·६	०·६	८६ ८
तरबूज	०·३	०·१	६·५	०·२	६२·६
नारगी	०·६	०·६	८·७	२·०	८६·७
नीबू	१·०	०·६	८·३	०·५	८६ ३
अनानाश	०·४	० ३	६·७	०·३	८६·३
अनार	१·५	१·६	१६·७	०·६	७६·८
अनीर	१·५	—	१८·८	०·६	७६·१
मुनक्का	२·२	३·०	६४·०	२·२	२·७६
किशमिश	२·५	४·७	७४·७	४·१	१४·४

मिष्ट फलों में कार्बोज अधिकतर शर्करा (द्राक्षौज) के रूप में पाया

जाता है। सब फलों में २ से ५ काष्ठोज होता है। आधी छटाँक नीबू के रस मे २½ मासे साइट्रिक अम्ल (नीबू का तेजाब) होता है। खट्टे फलों मे किसी न किसी प्रकार के अम्ल होते हैं। आम मे गैलिक अम्ल, साइट्रिक अम्ल, टारटारिक अम्ल (इमली का तेजाब) और मेलिक अम्ल पाये जाते हैं।

शुष्क फल वर्ग

नाम	प्रोटीन	स्नेह (वसा)	कार्बोज	खनिज पदार्थ	जल
चेस्टनट (ताजे)	६·६	८·०	५·२ (क)	१ ७	३८·५
चेस्टनट (सूखे)	१०·१	१०·०	७१·४ (क)	२·७	५·६
अखरोट (सूखे)	१५·६	६२·६	७ ४	२·०	४·६
बादाम (मीठा)	२४·०	४·०	१०·०	३·०	६·०
पिस्ता	२१·७	५१·१	१४·०	३·३	७·४
नारियल (गूदा)	५·२	३५·६	८ ४	१·०	४६·६
गोला (सूखा)	६·०	५७·४	३१·८ (क)	१·३	३.५
नारियल का दूध	०·५	—	६·४ (क)	—	६०·३
मूँगफली	२७·५	४४ ५	१५·७	२·५	७ ५

(क) इसमें काष्ठोज शामिल है। शेष चीजों में ३–७% काष्ठोज होता है।

सागूदाना—इसमे ८६·७% कार्बोज (श्वेतसार के रूप मे) होता है, प्रोटीन अंशमात्र होती है। शेष भाग जल रहता है।

आरारूट—इसमे ८५·१% कार्बोज (श्वेतासार के रूप में) होता है। शेष भाग जल रहता है। प्रोटीन और लवण अंश मात्र होते हैं।

मसाले

हल्दी, काली और लाल मिर्च, धनियाँ, जीरा इत्यादि इसमें किसी न-किसी प्रकार के उड़नशील तेल होते हैं, इन्हीं के कारण इनमें विशेष प्रकार की गन्ध आया करती है। तेलों के अतिरिक्त उनमें विशेष अवयव भी होते हैं जिनके कारण ये चीजे अपना-अपना गुण और स्वाद रखती हैं।

राई—१०० भागों मे उड़नशील तेल ०·५ से तक, मामूली तेल १५ से २५ तक, नत्रजनीय पदार्थ ३५ से ४५ तक, कांष्ठोज २ से ५ तक, खनिज पदार्थ ४ से ६ तक, श्वेतसार अंश मात्र होते हैं।

अदरक—१·५ से ३% उड़नशील तेल, ३% मामूली तेल और श्वेतसार होते हैं।

लौंग—१०% उड़नशील तेल होता है।

दुग्ध वर्ग

प्राणी	प्रोटीन	वसा	शर्करा	लवण	जल
यूरोपियन स्त्री	१·२५	३·५	७·०	०·२	८८·०५
बंगाली स्त्री	१·२	२·८०	५·६०	०·२	८६·८६
गाय	३·२	४·०	३·५	०·७५	८७·२५
घोड़ी	२·०	१·२०	५·६५	०·३६	६०·७६
गधी	२·२५	१·६५	६·००	०·५०	८९·६०
बकरी	४·३	४·७८	४·४६	०·७५	८५·७१
भैंस	६·११	७·४५	४·१७	०·८७	८१·४०

गधी का दूध स्त्री के दूध से बहुत कुछ मिलता है। उसमें स्त्री के दूध से वसा कम होती है। जब शिशु को माता का दूध मुआफिक न आवे या यकृत रोग के कारण उसको कम वसा देना उचित समझा जावे तो उसको गधी का दूध पिलाना अच्छा है। घोड़ी के दूध में वसा और भी कम होती है।

दुग्ध के लवण

स्त्री के दुग्ध की राख में ये लवण पाये जाते हैं—

कैल्शियम फास्फेट	२३·८७%
,, सल्फेट	२·२५ ,,
,, कार्बोनेट	२·८५ ,,
,, सिलीकेट	१·२७ ,,
पोटैशियम कार्बोनेट	२३·४७ ,,
,, क्लोराइड	१२·०५ ,,
,, सल्फेट	८·३३ ,,
मैग्नेशियम कार्बोनेट	३·७७ ,,
सोडियम क्लोराइड	२१·७७ ,,
फेरिक आक्साइड	२·३७ ,,
	१००·००

मक्खन—प्रोटीन २·००, वसा ८५·००, लवण १·०, जल १२·६५%।

घृत—वसा १००% (लगभग)।

पनीर—प्रोटीन १८·२१%, वसा २७·८३, शर्करा २·५०, लवण ४·८६, जल ३६·६०।

दही—प्रोटीन २१·०६%, वसा २·५, लवण १·१, शेष भाग जल।

तोड़ (दही का पानी)—प्रोटीन, ०·८२%, वसा ०·२४, शर्करा ४·६५%, लवण ० ६५%, जल ६३ ६४%।

वालाई (शर)—प्रोटीन २५%, वसा २० से ६५%, सामान्यतः ४५%, शर्करा ४५%, लवण ० ५ शेष भाग जल।

मलाई—प्रोटीन, खटिक सयोजित और थोड़ी-सी वसा होती है,

मांसवर्ग

प्राणी	प्रोटीन	वसा	शर्करा	लवण	जल
गाय, बैल	२० ०	१ ५	०·६	१ २	७८·६
सुअर	१६ ६	६·२	०·६	१·१	६२·६
घोड़ा	२१ ६	२·५	० ६	१·०	७४·३
मुर्गी	२२·७	४ १	१·३	१·१	७०·४
मछली	१८·३	०·७	० ६	०·८	७६·३
बकरा	१८ ०	५ ०	—	१·०	७६·०
हिरन	१६·७	१·६	—	१·१	५५·७
खरगोश	२२·३	१·१	—	१ १	७४·०

डिम्ब (अण्डा)

मुर्गी	प्रोटीन	वसा	लवण	जल
साबुत अण्डा (खोल सहित)	१३.५०	११·६०	१·२०	७३·५०
अण्डे का श्वेत भाग	१२·८७	०·२५	०·६३	८५·५०
अण्डे का पीला भाग	१६·१२	३१·३६	१·०१	५१·०३

खोल अधिकतर चटिक कार्बनिक से बनता है अण्डे के १०० भागों में १० भाग खोल, ६० भाग सुफेदी, ३० भाग जर्दी के होते है।

भोजन पकाने से लाभ

१—पकाने के समय भोजन स्वादिष्ट हो जाता है। और आसानी से पच जाता है।

२—उष्णता के प्रभाव से रोग उत्पादक कीटाणु (बैक्टीरिया) और कीट मर जाते हैं। पके हुए भोजन में हैजा, पेचिश इत्यादि रोगों के बैक्टीरिया के रहने की सम्भावना होती है।

दुग्ध उबाल कर पीना चाहिए या ताजा बिना उबाला हुआ। उत्तर यह है कि ताजा दूध उबाले हुए की अपेक्षा कुछ जल्द पचता है। यदि स्वस्थ गाय का दूध पवित्र स्थान मे स्वस्थ मनुष्य विधिपूर्वक शुद्ध किये हुए हाथों से शुद्ध बर्तन मे निकाले तब ऐसा दुग्ध बिना उबाले पीने से कोई हानि नहीं, परन्तु जैसा दुग्ध आजकल मिलता है उसको बिना गर्म किये कदापि नहीं पीना चाहिए। उसमे अनेक प्रकार के रोगों के कीटाणु रहते हैं। ये उबाल देने से मर जाते है। दुग्ध को बहुत देर तक नहीं पकाना चाहिए। ऐसा करने से वह देर में पचता है। उसके कुछ और भी गुण दूर हो जाते हैं।

७०° शतांश (१५८° फारेनहाइट) ताप से आधे घण्टे में बहुत-से बैक्टीरिया मर जाते हैं। दुग्ध खुले बर्तन में कभी न रखना चाहिए। खुला रहने से उसमें धूल, मिट्टी पड़ने और हवा से दूषित गैसों के आ जाने की सम्भावना रहती है।

कुछ भोजनों के नमूने

भोजन (२४ घण्टे में)	मूल अवयव (लगभग)
चावल १० छटाँक दाल २ छटाँक तैल ½ छटाँक शाक थोड़ा-सा	प्रोटीन ५० माशे कार्बोज ५०० ,, वसा ३३ ,,

इस भोजन में प्रोटीन और वसा कम है। वसा का काम कार्बोज से चल जायगा। यह भोजन मजदूरों के लायक है। विद्यार्थियों, अध्यापकों या अन्य मानसिक परिश्रम करने वालों के लिए अच्छा नहीं है।

भोजन (२४ घण्टे में)		मूल अवयव	
चावल	८ छटाँक	प्रोटीन	५·२
दाल	१ छटाँक	वसा	३८
दूध	४ छटाँक	कार्बोज	४२२
तैल या घृत	½ छटाँक		
शाक	थोड़ा-सा		

यह भोजन वैसा ही है जैसे उपर्युक्त न० १। यह भी माननिक परिश्रम करने वालों के लिए अच्छा नहीं है।

भोजन (२४ घण्टे में)		मूल अवयव	
दाल	२ छटाँक	प्रोटीन	५६
ज्वार का आटा	१० छटाँक	वसा	५०
तैल या घृत	२ छटाँक	कार्बोज	३६०
शाक			

यह भोजन शारीरिक परिश्रम करने वालों के लिए है।

भोजन (२४ घण्टे में)		मूल अवयव	
चावल	३ छटाँक		
गेहूं का आटा	३ ,,	प्रोटीन	६१
दाल	१ ,,		
दुग्ध	८ ,,	वसा	५०
घृत	२ ,,		
शर्करा	१ ,,	कार्बोज	३३०
शाक	४ ,,		

मामूली मानसिक और शारीरिक परिश्रम करने वालों के लिए अच्छा भोजन है। प्रोटीन और वसा इसमें भी कुछ कम है।

भोजन (२४ घण्टे में)		मूल अवयव	
गेहूं का आटा	६ छटाँक		
दाल	१½ ,,	प्रोटीन	८४
दूध	१२ ,,		
घृत	१ ,,	वसा	६२
शर्करा	½ ,,		
शाक		कार्बोज	३५०

इस भोजन में प्रोटीन और वसा यथेष्ट परिमाण में है, कार्बोज कुछ अधिक है। मस्तिष्क के काम करने वालों के लिए अच्छा भोजन है।

भोजन (२४ घण्टे में)		मूल अवयव	
गेहूँ का आटा	४ छटाँक		
दाल	१ ,,		
दूध	८ ,,	प्रोटीन	७६ माशे
घृत	१ ,,	वसा	८२ ,,
मांस	२ ,,		
शर्करा	१ ,,	कार्बोज	२७४ ,,
शाक			

भोजन (२४ घण्टे में)		मूल अवयव	
गेहूँ का आटा	४ छटाँक	प्रोटीन	७२ माशे
दूध	० ,,	वसा	८३ ,,
दाल	१ ,,		
घृत	१ ,,		
शर्करा	१ ,,	कार्बोज	३०० ,,
शाक			

अंग्रेजी डबल रोटी

	प्रोटीन	वसा	कार्बोज	काष्ठोज	खनिज पदार्थ	जल
श्वेत (अर्थात् चोकर रहित)	६·५	१·०	५१·२	०·३	१·०	४०·०
भूरी (मय चोकर के)	६·३	१·२	४४·८	१·५	१·२	४५·०

डबल रोटी का २/३ भाग गैस और शेष भाग ठोस होता है। ठोस भाग में ४०·५० प्रतिशत जल होता है।

अंग्रेजी बिस्कुट

जल	७·४५	अन्य कार्बोज	५८·०८
नत्रजनीय पदार्थ	७·१८	काष्ठोज	०·१६
वसा	६·२८	खनिज	०·८३
शर्करा	१७·०२		

पढ़ने लिखने वालों को दूध, दही, मलाई, बालाई (शर), घृत इत्यादि का अधिक सेवन करना चाहिए। अधिक शारीरिक परिश्रम करने वालों को चावल, शर्करा जैसी चीजों की जितनी शक्ति १ माशा वसा (घृत) से प्राप्त होती है उतनी २, ३ माशा कार्बोज से मिलेगी। इससे विदित है कि शक्ति का एक नियत परिमाण प्राप्त करने के लिए वसा के मुकाबले में कार्बोज की अधिक मात्रा खानी पड़ेगी, आमाशय (पेट) पर अधिक भार पड़ेगा। इसलिए दिमागी परिश्रम करने वालों को अधिक कार्बोज खाकर अपना पेट भारी न करना चाहिए। कार्बोज की जगह घृत, मलाई, बालाई, बादाम इत्यादि कुछ खा सकते हैं।

भोजन और पथ्य

भोजन—साधारणतः पाँच प्रकार के उपादान हमारे खाद्य-पदार्थों मे मौजूद रहते हैं :—

(१) छेना जाति या Protein, (२) चीनी या श्वेतसार जाति या Carbohydrate, (३) चर्वी जाति या Fat, (४) लवण या Salt और (५) पानी या Water। इनके अलावा विटामिन नाम का एक और भी उपादान का आविष्कार हुआ है। विटामिन की कमी भी बहुत-सी बीमारियों का कारण है। छाना जातीय उपादानों से शरीर पुष्ट होता है और उसका जो क्षय होता है वह पूर्ण हो जाता है। शर्करा जाति के उपादान शरीर में गर्मी उत्पन्न करते हैं और उसमें काम करने की शक्ति बढाते हैं। चर्वी जाति के उपादान में भी शर्करा जाति के उपादान की तरह शरीर में ताप उत्पन्न होता है। उसमें काम करने की शक्ति बढ़ती है, पर शर्करा जाति की अपेक्षा इससे गर्मी अधिक उत्पन्न होती है। नमक (लवण) भी प्रोटीन की भाँति शरीर के गठन में सहायता करता है। पानी खून को पतला रख कर उसके दौरा में मदद पहुँचाता है। भोजन को साफ करने में सहायता पहुँचाता है और बचे हुए खाद्य को पतला बनाकर खून के साथ मिल जाने की सुविधा देता है। जो हो शरीर को स्वस्थ रखने के लिए ये पाँच उपादान और विटामिन—इस तरह छः प्रकार के उपादान ठीक-ठीक प्रकार से रखना उचित है। इनके कम या अधिक हो जाने पर शरीर अस्वस्थ हो जाता है।

पथ्य—बुखार तथा बुखार से मिली हुई दूसरी बीमारियों की नई दशा में पतला और हलका पानी का बार्ली, आरारोट, सागू प्रभृति और पतले दस्त होने पर आरारोट बढ़िया पथ्य है। जिन बच्चों को कृमि हों उनके लिए बार्ली बढ़िया चीज है। बुखार आने के कई दिन बाद जब बिना पचे हुए रस दूब पच जायें तो सागू बार्ली के साथ दूध दिया जाता है। पेट की

गड़बड़ी में दूध मना है । न्यूमोनिया, ब्रानकाइटिस इत्यादि बलगम मिली बीमारियों की पहली अवस्था में दूध न देकर जब बलगम ढीला हो जाये तो एक सप्ताह के बाद दूध देना चाहिए । अतिसार और पेट की गड़बड़ी वाली बीमारी में चिवड़े का माँड और जौ का पानी बढ़िया पथ्य है । पेट की गड़बड़ी में किसमिस, मुनक्का, अंगूर, कमला नीबू प्रभृति फल भी नहीं दिया जाता । पर अनार बेदाना कब्जियत तथा उदरामय दोनों में ही उपयोगी है । जौ का माड़ा या मकई का सिझाया हुआ पानी टायफायड या दूसरी तरह की बीमारियों में रोगी की ताकत बनाए रखने के लिये बहुत उपयोगी है । यह पतले दस्त या कब्ज सभी अवस्थाओं में दिया जाता है । नारंगी, अनार, मीठा कागजी नीबू, नाशपाती, पपीता इत्यादि खट्टे मीठे, फल बहुत से मियादी ज्वर के रोगियों को दिया करते हैं, पर सभी प्रकार के ज्वरों में इनका प्रयोग करना उचित नहीं है । इनमें से प्रत्येक से बलगम बन जाता है । इसलिए जिस ज्वर में श्लेष्मा का प्रकोप अधिक हो उनमें इनका देना उचित नहीं है, पर इसके विपरीत वात, पैत्तिक ज्वर में रोगी की धातु प्रकृति और रोगी की अवस्था के अनुसार ये दिये जाते हैं ।



रोगी की सुश्रूषा

रोगी को हमेशा अभय वाणी सुनाते रहना चाहिए कि डर की कोई बात नहीं है, पर मुँह से ज्यादा नहीं बोलना चाहिए । रोगी की शय्या के पास बैठ, रोगी के लक्षण लिखकर चिकित्सक को देना चाहिए तथा चिकित्सा करने वाले के अनुसार दवा और पथ्य नियम के मुताबिक खिलाना चाहिए । दो या और भी ज्यादा आदमी बारी-बारी से रोगी की सुश्रूषा करें । रोगी के सामने हताश भाव दिखाना, दुःखित होना या रोना एकदम मना है और

घोर अन्याय है। यह रोगी की मानसिक ताकत घटा देती है और वहुत जल्दी-जल्दी मृत्यु की ओर खींचती जाती है। हैजा वगैरह छूत बीमारियों में वहुत सावधान रहना पडेगा। कार्वोलिक साबुन से अच्छी तरह हाथ धो लेने के वाद उसे दूसरा काम करना चाहिए। रोगी के पाखाना पेशाव तथा थूक के लिए अलग-अलग वर्तन रखना चाहिए। पाखाना फिरने के लिए वेड-पैन, यह न मिले तो मिट्टी का गमला, टूटी हँडिया आदि का व्यवहार किया जा सकता है।

———

द्वितीय अध्याय

'बायोकेमिक' और आवश्यकीय बातें

परिभाषा—'बायोकेमिस्ट्री' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है। पहला शब्द है 'बायोस' और दूसरा है 'केमिस्ट्री'। 'बायोस' ग्रीस भाषा का शब्द है और इसका अर्थ है जीवन या जिन्दगी। 'केमिस्ट्री' शब्द का अर्थ होता है रसायन शास्त्र। इससे यह अर्थ निकला कि 'बायोकेमिस्ट्री' उस विद्या को कहते हैं जो जीवधारियों के पोषण तथा उनकी बनावट से सम्बन्ध रखे। इसके अतिरिक्त इसका सम्बन्ध उन नियमों से भी है जिनमें भिन्न-भिन्न रस और टीशू तैयार होते हैं।

इसे ही डाक्टर फादर मुलर की भाषा में देखिए :—

The idea upon which the Biochemic Therapeutics is based, is the physiological fact that both the structure and vitality of the organs of the body are dependent upon certain necessary quantities and proper apportionment of its inorganic constituents.'

इस शास्त्र को 'ट्वेल्व टीशू रेमिडीज' 'जीवन रसायन शास्त्र' अथवा 'द्वादश क्षार चिकित्सा' आदि विभिन्न नामों से भी पुकारते हैं।

विज्ञान के प्रवर्तक

सबसे पहले हैनिमैन साहब ने ही कितने ही पार्थिव लवणों की परीक्षा की और सदृश मतानुसार (होमियोपैथी) चिकित्सा के लिए उन्हे काम मे लाने लगे। उस समय तक 'बायोकेमिक' मत से इसका व्यवहार प्रचलित न हुआ था। इसके बाद डाक्टर स्टाफ ने भी इस बात का समर्थन किया कि

किसी रोगी को आरोग्य करने के लिए नरदेह के सभी उपादान वहुत ही आवश्यक और उपयोगी हैं। सुविख्यात वैज्ञानिक ग्रौवल साहव ने भी इन लवणा की वहुत प्रशसा की है। इतना सव होते हुए भी अभी यह विज्ञान पूर्ण प्रकाश में नहीं आया था।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे जर्मनी के ओल्डनवर्ग नगर के रहने वाले डॉक्टर विलियम हेनरिच सुशलर साहव ने पार्थिव लवणों का सहारा लेकर 'वायोकेमिक चिकित्सा प्रणाली' का प्रचार किया। सन् १८७३ ई० मे तद्विषयक आपकी पुस्तक भी प्रकाशित हुई। डॉक्टर ओकन्नर ने जर्मन भाषा मे लिखे हुए उस ग्रन्थ का अग्रेजी मे अनुवाद किया और इसके वाद एम० डासेटी वाकर, केरी साहव और वोरिक एण्ड डियुई इन चिकित्सकों ने 'वायोकेमिक चिकित्सा' के सव ग्रन्थ अग्रेजी भाषा मे प्रकाशित किये।

जैव-तन्तु

जीव-देह के गठन के भीतर कितने ही खास-खास अश दिखाई देते हैं। उनके सम्मिलन और ठीक-ठीक स्थान पर लगाने के कारण ही शरीर का निर्माण हुआ है। ये सव अश नाना प्रकार के तन्तुओं (Tissues) से वने है। ये तन्तु भी कितने ही छोटे-छोटे कोषों द्वारा वने हैं। इन तन्तुओं मे अस्थि कोष, पेशी कोष उपास्थि कोष, श्लैष्मिक झिल्ली कोष, स्थिति स्थापक तन्तु, उपत्वक तन्तु, सयोजक तन्तु, स्नायु कोष, चक्षु तन्तु इत्यादि भिन्न-भिन्न श्रेणी के और अलग-अलग काम मे आने वाले तन्तु दिखाई देते है। ये सव कोष भी जैव (Organic) और पार्थिव (Inorganic) दो पदार्थों से वने हैं। सजीव नर-देह का गठन और उसकी शक्ति वहुत दिनों तक ठीक ठीक अविकृत अवस्था मे रह सकती है, पर उनका मूल पदार्थ—ये कोष प्रत्येक क्षण लगातार ध्वस होते रहते हैं, और उनकी जगह पर नये-नये कोष वनते रहते है।

रक्त की रासायनिक संयुक्ति

वजन के अनुसार १०० भाग रक्त में ८० भाग पानी और २० भाग ठोस पदार्थ, ग्यास कर नवक्षारजन से उत्पन्न यौगिक पदार्थ (Nitrogenous Compound) है। इसका १० भाग हिमोग्लोबिन नामक लाल द्रव्य, ९ भाग प्रोटीन पदार्थ (खाद्य पदार्थों से मिला हुआ जैव पदार्थ) और बाकी एक भाग में बहुत थोड़े परिमाण में मेद (Fat), कार्बोहाइड्रेट्स (शर्करा श्रेणी), पार्थिव लवण और यूरिया (मूत्रक्षार) नामक तन्तु ध्वंस के बचे हुए भाग हैं। यह अजैव लवण प्रधानतः क्लोराइड्स, सोडियम फास्फेट और पोटैशियम फास्फेट्स हैं। इस हिमोग्लोबिन में सूक्ष्म परिमाण में लोहा भी रहता है और आक्सीजन को लेने और ठीक-ठीक यथास्थान रखने का काम इस लौह के बिना हो ही नहीं सकता।

जीव देह के निर्माण के लिए खासकर दो पृथक् श्रेणियों के रासायनिक यौगिक पदार्थों की जरूरत पड़ती है।

(क) अजैव पार्थिव पदार्थ जैसे खड़िया मिट्टी, साधारण नमक, सिलिका आदि।

(ख) जैव पदार्थ जैसे मेद, चीनी (शर्करा), श्वेसार, अण्डलाल आदि।

पार्थिव यौगिक पदार्थों में प्रधानतः पानी, अङ्गारकाम्ल (Carbon-Dioxide), नमक का तेजाब (Hydrochloric Acid), साधारण नमक (Sodium Chloride), कैल्शियम कार्बोनेट और कैल्शियम फास्फेट इत्यादि होते हैं।

आहार-विहार की गड़बड़ी पैदा होने पर अथवा अन्यान्य कारणों से पार्थिव उपादनों की कमी या परिमाण की विचित्रता या विभाग की गड़बड़ी जब होती है तभी स्वास्थ्य में विकार पैदा होकर नाना प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

जीव-देह में पार्थिव लवणों के परिमाण और विभाग का अनुपात

१ ग्राम = १५.४३२ ग्रेन

१००० ग्राम रक्त कोष मे नीचे लिखे परिमाण और विभाग के अनुसार पार्थिव लवण पाये जाते है—

लौह	—	०.९९८
काली सल्फ	—	०.१३२
काली म्यूर	—	३.०७९
काली फास्फेट	—	२.३४३
नेट्रम फास्फेट	—	२.३६३
नेट्रम म्यूर	—	०.३४४
कल्केरिया फास	—	०.०९४
मैग्नेशिया फास	—	०.०६०

अलग-अलग श्रेणियों के तन्तु जिस तरह विभिन्न कार्यों के लिए बने हैं, उनके उपादानों मे भी उसी तरह का प्रभेद है। यथा—

स्नायु कोष (Nerve Cells)—मैग्नेशिया फास, काली फास, नेट्रम और फेरम ।

पेशी कोष (Muscle Cells) मैग्नेशिया फास, नेट्रम, फेरम और काली म्यूर।

सयोजक तन्तु (Connective Tissue)—खासकर साइलिशिया।

स्थिति-स्थापक तन्तु (Elastic Tissue)—खासकर कल्केरिया फ्लोरिका।

अस्थि कोष (Rone Cells)—कल्केरिया फ्लोर, मैग्नेशिया फास और अधिक मात्रा मे कल्केरिया फास।

उपास्थि और श्लैष्मिक कोष (Cartilage & Mucous Cells)—खासकर नेट्रम म्यूर ।

केश और चक्षु कोष — अन्य पार्थिव लवणों के साथ लोहा।

प्रत्येक पार्थिव लवण का एक-एक बँधा हुआ काम है और हरेक का कितने ही जैव पदार्थों के साथ घनिष्ट सम्बन्ध रहने के कारण - खासकर उसी जाति के कोष और तन्तुओं में मिलकर ये अपनी रासायनिक प्रक्रिया से शरीर की बनावट के कार्य में सहायता पहुँचाते हैं।

बायोकेमिक दवायें

Dr. Schuessler :—The inorganic substances in the blood and tissues are sufficient to heal all diseases which are curable at all. The questions whether this or that disease is or is not dependent or the existence of fungy, germs or bacilli, is of no importance in Biochemic treatment.

अर्थात् सभी साध्य रोगी तन्तु स्थित और रक्त अवलम्बित अजैव पदार्थों के प्रयोग से आरोग्य किये जाते हैं। किसी भी रोग का उचित कारण, किसी तरह के छत्रक, बीजाणु या जीवाणु उस स्थान पर मूल कारण है या नहीं अर्थात् इन छत्रक बीजाणु या जीवाणु के ऊपर रोग की उत्पत्ति निर्भर करती है या नहीं? बायोकेमिक चिकित्सा में इस सवाल की कोई भी सार्थकता नहीं।

डॉ० शुशलर ने आगे चलकर यह भी लिखा है कि :—

'If the remedies are used according to the symptoms, the desired and, that of curing disease will be gained in the shortest way.'

अर्थात् कोषों को स्वाभाविक अवस्था में लाने के लिए आवश्यक लवणों के प्रयोग करने के पहले रोग बीजाणु प्रभृत उत्पत्ति के क्षेत्र स्वरूप तन्तुओं का एकदम संस्कार कर दिया जाता है। लक्षण बताने

वाली दवा के प्रयोग करने पर न्यायसंगत स्वाभाविक नियम से अवश्य ही आरोग्य होगा।

तन्तु लवण

कल्केरिया फ्लोरिका	(Calcarea Flourica)
कल्केरिया फास्फोरिका	(Calcarea Phosphorica)
कल्केरिया सल्फ्यूरिका	(Calcarea Sulphurica)
फेरम फासफोरिकम	(Ferrun Phosphoricum)
काली म्यूरियेटिकम	(Kali Muriaticum)
काली फासफोरिकम	(Kali Phosphoricum)
काली सल्फ्यूरिकम	(Kali Sulphuricum)
मैग्नेशिया फासफोरिका	(Magnesia Phosphorica)
नेट्रम म्यूरियेटिकम	(Natrum Muriaticum)
नेट्रम फासफोरिकम	(Natrum Phosphoricum)
नेट्रम सल्फ्यूरिकम	(Natrum Sulphuricum)
साइलिशिया	(Silicea)

औषधि-प्रस्तुत-प्रक्रिया

एक भाग विशुद्ध पार्थिव लवण के साथ ९ भाग दूध की चीनी मिलाकर और एक घण्टे तक खरल में घोटने पर प्रथम दशमिक क्रम के भाग के साथ दूध की चीनी ९ भाग मिलाकर फिर एक घण्टे तक घोटने पर दूसरा दशमिक क्रम तैयार होता है। इसी प्रकार लगातार पहले के क्रम की दवा के १ भाग के साथ दूध की चीनी ९ भाग मिलाकर और एक घण्टे तक घोटकर बाद का क्रम तैयार किया जाता है।

मात्रा

इसी विचूर्ण को एक मटर की मात्रा में (प्रायः ५ ग्रेन) जीभ पर डाल देना या इसी मात्रा की टिकिया चबाकर खाना पड़ता है। बालक

बालिकाओं को उम्र के अनुसार आधी या चौथाई मात्रा का प्रयोग करना चाहिए।

समय का अन्तर

नई बीमारी में आधे घण्टे से लेकर २ घण्टे के अन्तर से दवा का प्रयोग किया जाता है। पुरानी बीमारी में दिन में अधिक से अधिक ३-४ बार सेवन करना ही काफी होता है। गर्म पानी में घोलकर पिलाना ज्यादा फायदेमन्द होता है।

औषधि-शक्ति

सामान्यतया ६x तक की औषधियाँ कम शक्ति की मानी जाती हैं और इनका उपयोग दिन में तीन-चार घण्टे के बाद होता है। ६x से ३०x तक मध्यम शक्ति की मानते हैं और इनका उपयोग ६-६ घण्टे के बाद होता है। ३०x से २००x शक्ति तक ऊँची शक्ति की औषधियाँ मानते हैं और इनका प्रयोग दिन में एक ही बार होता है। परन्तु रोग की तीव्रावस्था मे अनेक बार इनका उपयोग हो सकता है और यह सब अपने अनुभव पर विशेषतः निर्भर है।

औषधि-मिश्रण

जिस प्रकार की औषधि है उसी प्रकार की औषधि के साथ मिश्रण हो सकता है। कल्केरिया फ्लोर, कल्के फास और कल्के सल्फ तथा काली म्यूर, काली फास और काली सल्फ तथा नेट्रम म्यूर, नेट्रम, फास और नेट्रम सल्फ आपस में मिश्रित की जा सकती है। इनके अतिरिक्त कल्केरिया फ्लोर, काली म्यूर और नेट्रम म्यूर तथा कल्के फास, फेरम फास, काली फास, मैग्नेशिया फास, नेट्रम फास तथा कल्केरिया सल्फ, काली सल्फ और नेट्रम सल्फ मिलाकर दिये जा सकते हैं। साइलिशिया हर औषधि के साथ व काली म्यूर, नेट्रम फास और नेट्रम सल्फ को छोड़ कर सबके साथ मिलाकर दी जा सकती है।

कौन-कौन और किस-किस औषधि के साथ मिलाकर नहीं देना चाहिए

कल्केरिया फ्लोर को किसी चार प्रकार के फास्फेट और दो प्रकार के सल्फेट के साथ मिश्रित नहीं करते हैं। काली सल्फ को नेट्रम सल्फ और नेट्रम म्यूर के साथ मिश्रित नहीं करना चाहिए। पाँचों फास्फेट को भी नहीं मिलाना चाहिए, किन्तु इन पाँचों मे से चार फास्फेट जिनको निश्चित किया जाय, मिश्रित कर सकते हैं।

औषधियों का वाह्य-प्रयोग

२० ग्रेन निश्चित की हुई औषधि ३ छटाँक पानी मे मिलाकर लोशन बना लेना चाहिए जो घाव व फोड़े के धोने के काम में आता है। यदि घाव गहरा हो तो गर्म पानी का लोशन होना चाहिए अन्यथा ठण्डे पानी का। १ ड्राम औषधि को १० ड्राम वेसलीन, ग्लिसरीन अथवा जैतून के तेल में मिलाकर मलहम भी आवश्यकतानुकूल वनाया जा सकता है।

ज्योतिष के अनुसार औषधि-प्रयोग

हिन्दी माह	नाम औषधि
चैत्र	नेट्रम सल्फ
वैशाख	काली म्यूर
ज्येष्ठ	कल्केरिया फ्लोर
अषाढ़	मैग्नेशिया फास
श्रावण	काली सल्फ
भाद्रपद	नेट्रम फास
क्वार	कल्केरिया सल्फ
कार्तिक	साइलिशिया
अगहन	कल्केरिया फास
पौष	नेट्रम म्यूर

माघ	फेरम फास
फाल्गुन	काली फास

ऋतु के अनुसार औषधि प्रयोग

शरद ऋतु—(दिसम्बर से फरवरी तक) अधिकतर फेरम फास और काली म्यूर कम होते हैं जिसके कारण नाक, गला, फेफड़ों के रोग, खाँसी, ठढ लगना, न्यूमोनियाँ आदि रोग होते हैं।

वसन्त ऋतु—(मार्च से मई तक) फेरम फास, कल्केरिया फास और नेट्रम फास कम हो जाते हैं जिसके कारण ज्वर, सुस्ती इत्यादि लक्षण प्रतीत होते हैं।

ग्रीष्म ऋतु—(जून से अगस्त तक) काली म्यूर, नेट्रम सल्फ और नेट्रम फास कम होते हैं जिसके कारण अजीर्ण और आँतों पर कष्ट होता है।

हेमन्त ऋतु—(सितम्बर से नवम्बर तक) काली म्यूर, फेरम फास कम होते हैं। अतः ज्वर, खाँसी, अजीर्ण और फेफडे का शोथ करने वाले रोग होते हैं।

———

तृतीय अध्याय

आकृति तथा चेहरा देखकर

औषधि का चुनाव

फास्फेट्स (The Phosphates) का रोगी क्रोधी, स्नायविक, क्षय हुई जीवनी-शक्ति वाला, वेचैन, उदासीन, साधारणतया जल्द उत्तेजित हो जाने वाला होता है।

चमड़ा कोमल, कोमल वालों वाला, चेहरा पीला अथवा मिट्टी के रङ्ग वाला होता है। जरा-सी उत्तेजना पर मिट्टी की तरह अथवा पीला चेहरा लाल हो जाता है। ऐसे रोगियों की आँखों के नीचे काला घेरा, चेहरा फूला रहता है। वे जल्दी सूखने लगते हैं। कम उम्र में तथा स्वभावतः लम्बे कद वाले होते हैं।

Cal. Phosphorica–इसके रोगी का चेहरा सूखा तथा वुड्ढे के ऐसा दिखलाई देने वाला होता है, चेहरे का चर्म ढीला होता है। नाक तथा कान टेढे होते हैं। औरतों और जवानी की उम्र की लड़कियों के चेहरे पर मुहाँसे रहते हैं। ऊपर का ओंठ वढ़ा हुआ होता है। मुँह के किनारे कच्चे होते हैं।

गोलाकार शाखा अङ्ग नहीं होते। सर वडा, पतली एव कमजोर गर्दन, पेट आलू भरे झोले के समान, वेतरतीव, पतले पर, जड़ ढीले होते हैं।

थोड़े परिश्रम से चेहरे पर ठण्ढा पसीना आ जाता है। वेचैनी के कारण एक जगह से दूसरी जगह जाता है, परन्तु कमजोरी के कारण विशेष हरकत नहीं कर सकता, वैठ जाता है।

Ferrum Phos—नीला और रक्तहीन चेहरा, आँखें हमेशा लाल Mucosae सफेद, रक्तवाहिनियाँ दिखाई देती हैं, उनमें चाल दिखाई देती है।

जल्दी-जल्दी और कठिनता मे श्वास चलती है। नाक से श्वास की आवाज आती है। चैतन्य नाड़ियाँ सुस्त रहती हैं; परन्तु चेहरा लाल रहता है। ललाट पर तथा ललाट के किनारे मुँहासे अथवा दाग होते हैं।

चेहरे पर सुस्ती का भाव रहता है, रोगी कायर ऐसा दिखाई देता है। मालूम होता है दिन में बहुत-सी असुविधाओं का सामना करना पड़ता है।

Kali Phos—इसके रोगी की अधखुली आँखें अथवा शीशे की तरह चमकने वाली आँखें होती हैं। बुद्ध के ऐसा, आश्चर्यचकित-सा अथवा मत-वाला की तरह दिखाई देने वाला चेहरा होता है। चेहरा सूखा, आँखें धँसी हुईं एव चर्म नीला तथा गन्दा होता है।

Magnesia Phos—दुःखी, सफेद, भूत ऐसा, अनासिक तथा चेहरे पर बेचैनी का भाव रहता है। चमड़ा (चेहरे पर) खिंचा हुआ रहता है। रोगी दुबला-पतला, सफेद चेहरे वाला होता है। इच्छाएँ अधिक रहती हैं, परन्तु कुछ कर नहीं सकता, थक जाता है। इसका रोगी काम जल्दी कर सकता है, परन्तु जल्दी सोच नहीं सकता। अपनी पूरी ताकत से बोलता है। उसके दिल में भावनाएँ जल्दी नहीं आतीं, इस भाव को छिपाने की कोशिश करता है। इच्छा शक्ति दुर्बल होती है, दर्द बरदाश्त नहीं कर सकता। लोगों का कहना मानने वाला होता है।

Natrum Phos—हड्डी की बनावट बहुत कमजोर रहती है। मांस-पेशियाँ सूखी रहती हैं। रोगी तन्द्राग्रस्त-सा रहता है। डर, भय, बेचैनी, सोच-विचार चेहरे पर प्रत्यक्ष दिखाई देता, नाक और कान में खुजली होती रहती है और रोगी खुजलाता रहता है।

The Sulphates—(i) फास्फेट एवं सोडियम से अधिक रुक्ष और दानेदार मास-तन्तु से बना शरीर होता है।

(ii) शरीर से बदबू आती है जो अच्छी नहीं लगती।

(iii) मुँह पीला, परन्तु ओंठ और कान आदि प्रमुख अङ्ग लाल होते हैं।

(iv) गर्दन कमजोर, सिर झुका होता है।

(v) पतली तकिया पर सिर रख कर रोगी सोता है।

Calcarea Sulph—(i) दगीला, फफोलादार चेहरा तथा चेहरे पर कष्ट का भाव रहता है।

(ii) आँखों के किनारे कच्चे, छिले ऐसे (Sore) तथा ओठों के नीचे फफोले होते हैं।

(iii) शरीर का चमड़ा और चेहरा कम अथवा अधिक अकौता (सूखा) की पुरानी अवस्था के सदृश्य होते हैं।

Kali Sulph—(i) चेहरा देखने से मालूम होता है कि रोगी को किसी वस्तु की चाह नही है। चापलूस के ऐसा भाव रहता है। उत्तर देना नहीं चाहता।

(ii) दायीं तरफ आँखों के पास चेहरा विशेष फूला रहता है।

(iii) ज्यादा तथा कम सभी शरीर और चेहरा पीला रहता है।

(iv) ओंठ झुर्री पड़े, आगे निकली लाल जीभ होती है।

(v) गर्दन कम घूमती है।

Natrium Sulph—(i) प्रातःकाल चेहरे का दाहिना हिस्सा फूलता है। पित्त प्रधान आदमियों की तरह स्वभाव होता है।

(ii) पीला, दुखित मालूम होता है जैसे रोगी रात भर सोया नही है।

(iii) आँखों मे ज्योति नहीं होती है चकाचौंध रहती है।

(iv) ओठों पर पपड़ियाँ पड़ी रहती हैं।

The Chlorides—(i) इसके रोगी Phosphate के रोगी से अधिक स्नायविक तथा Sulphate से कम, शरीर से बदबू निकलने वाले तथा कम कठोर तन्तु वाले होते हैं।

(ii) रोगी के ऐसा चेहरा फूला हुआ, दगीला, बेतरतीत शक्ल के होते हैं।

(iii) सुस्त, आलसी दिखाई देने वाले होते हैं।

(iv) सुगठित शरीर वाले।

Kali Mur—(i) मध्यम कड़ी ग्रन्थियों की सूजन।

(ii) भाव Natrum Mur. से गहरे तथा Kali Phos. से कम गहरे होते हैं।

(iii) प्रदाहित, अत्यन्त लाल, कोमल, छोटे-छोटे फफोले पड़ते हैं।

(iv) Kali Mur का रोगी खूब खाता-पीता है तथा मुलायम बाल वाला होता है।

(v) चेहरे पर बेचैनी का भाव।

(vi) हरकत से तकलीफ होती है, परन्तु अपने को किसी काम में लगाये रहना चाहता है तथा अँगुलियों से खेलता है।

(vii) रोगों के सभी स्राव तारदार परन्तु Natrum Mur. से गाढ़े होते हैं।

(viii) गाल फूले, सुस्त स्वभाव वाले कंठमाला वाले रोगी।

Natrum Mur—(i) नीला फूला हुआ चेहरा (खासकर बायें), चमकीला तेलहा चमड़ा, विशेषकर पीला, दानेदार चर्म रोग, चौड़े लाल घाव, उन पर सफेद दाग।

(ii) चेहरे का चमड़ा स्पर्शकातर तथा आँखें आँसुओं से भींगी।

(iii) ओंठ और मुँह पानी के ऐसा पतला पारदर्शक रक्त युक्त।

(iv) स्राव साफ पानी ऐसा, त्वचा को छीलने वाला, काटने वाला होता है।

(v) उदास मुखमण्डल, सूखा शरीर, दुःखी, उदास, मिला-जुला चेहरा।

Cali Fluor—(i) चेहरा सफेद, नसें स्पष्ट (चमडे के नीचे) जैसे नीले सूत का जाल चेहरे पर बनाती हैं—केवल चेहरे पर ही नहीं परन्तु समूचे शरीर पर।

(ii) चमड़ा सूखा, कड़ा।

(iii) जबड़े की ग्रन्थियाँ कड़ी।

(iv) बेवकूफ के ऐसी मुखाकृति होती है।

Silicea—(i) पीला चेहरा, चमड़ा जल्दी फटता है, चेहरे के किनारे (Chin) पर मुँहासे।

(ii) कठमाला धातु वालों ऐसा चेहरा (काली म्यूर से विशेष)।

(iii) सुस्त परन्तु जगाने पर हठ का भाव।

With evidence of exhaustion, there is an exalted condition of Susceptibility to nervous stimul the special senses are morbidly—Keen Dunham.

———

चौथा अध्याय

औषधियाँ

कैल्केरिया फ्लोरिका

(Calcaria Fluorica)

पर्याय नाम—कैल्शियम फ्लोराइड, फ्लोराइड आफ लाइम। डॉ० सुशलर ने इसी को बोन साल्ट अर्थात् 'हड्डी का नमक' नाम से घोषित किया है।

मुख्य कार्य—यह एक प्रकार का खनिज धातु पदार्थ है, देखने में स्फटिक की भाँति उजला तथा नाना प्रकार के आकार का होता है। इसका संक्षिप्त नाम 'कैल्के फ्लोर' (Calca. Fluour) है। कई रंगों का, सीसा धातु का शिरा लगा हुआ, ६पहलू या ८ पहलू की तरह होता है, पानी में नहीं गलता, पर गंधक का तेजाब मिलाकर वियोजित होने पर 'हाइड्रो फ्लोरिका एसिड' पैदा करता है। आग से सयोग होने पर इसमें से फासफोरस,सी ज्योति निकलती है। इसका आपेक्षिक गुरुत्व ३'४ है और इसमें ५८'२१ अंश कैल्शियम वर्तमान रहता है।

डॉ० फादर मुलर ने लिखा है—

'It is found in the enamel of the teeth, in the surface of the bones, in elastic fibres and in the cells of the epidermits' अर्थात् यह क्षार मनुष्य शरीर के दाँतों के कवच, अस्थियों के आवरण, पेशियों के लचकीले तन्तु तथा संयोग धातुओं में पाये जाते हैं। :जहाँ-जहाँ मनुष्य के शरीर मे लचकीले तन्तु पाये जाते हैं वहाँ

यह क्षार अवश्य होता है। उन तन्तुओं का लचकीलापन इस क्षार की उपस्थिति पर निर्भर होता है। अतः जब इनकी कमी पड़ती है तब उन तन्तुओं में शिथिलता उत्पन्न होती है। यह लावणिक पदार्थ देह के भीतर अण्डलालिक पदार्थ के साथ मिलकर मासपेशी के साथ जाकर स्थिर स्थापक सूत्र (Elastic Fribre) का निर्माण करने मे सहायक होता है। दन्त अस्थि का आवरण पदार्थ (Periostium), संयोजक तन्तु (Connective Tissue) और रक्तवाहिक शिरा (Blood Vessels) को दृढ़ और पुष्ट करता है।

यदि किसी कारणवश यह नमक हमारे शरीर में स्वाभाविक नियमानुसार जितना होना चाहिए उससे कम हो जाय तो शिरा समूह प्रसारित होकर ढीले पड़ जाते हैं। धमनी की दीवाल व रसवाहिक प्रणाली (Lymphatic System) के भीतर इस लवण की कमी होने के कारण रक्तस्थ (रक्त के अन्दर का) पदार्थ शोषण नहीं होने पाता। इस कारण उन-उन स्थानों में वह पदार्थ सूजकर कठिन अवस्था को प्राप्त हो जाता है। जरायु प्रदेश की शिथिलता व स्थान-भ्रष्टता, धमनी व शिरा समूह की सूजन, यकृत्, प्लीहा की पत्थर जैसी कठिन अवस्था; हाथ, पैर, जीभ, मलद्वार, स्तन की घुण्डी, ओंठ, नाक, पैर का टेढ़ा पड़ जाना, कमर की त्रिकोणाकार हड्डी के सामने समस्त नीचे प्रदेश का यन्त्र (Pelvic Region) ढीला पड़ जाय और नीचे झुक जाय आदि बातें 'कल्केरिया फ्लोर' नामक औषधि के अभाव की द्योतक हैं।

डॉ० जे० बी० बेल ने होमियोपैथिक मत से इस लवण की परीक्षा की थी। होमियोपैथिक चिकित्सा मे इसका भरपूर व्यवहार हुआ करता है।

चाहे किसी भी कारण से शरीर का कोई भी भाग पत्थर के समान कड़ा हो जाय तो भी यह नमक फायदा करता है। जो स्त्रियाँ अधिक सन्तान वाली हों इस कारण समस्त पेट घड़ी के डोलक (Pendulum) के

समान नीचे झुका पड़ा हो उनके लिए उपयुक्त है। वृद्धावस्था के मोतियाबिन्द (Cataract) में यह औषधि पेटेण्ट ओषधि के रूप में व्यवहार की जाती है।

प्रमुख लक्षण

मन(Mind)—मानसिक उद्वेग; कामों में निरुत्साह भाव, वृथा आशंका, अशान्ति, धन नाश व्यर्थ भय, उदासी।

मस्तक (Head)—नवजात शिशु के मस्तक पर Tumour व रक्त गुल्म। कब्ज के साथ सिर में भन-भन शब्द होना। मस्तक में गहरी चोट आना, अस्थि अर्बुद आदि।

आँख(Eyes)—ऐसा मालूम होना मानों आँख के सामने चमकीली छोटी-छोटी लहरें नृत्य कर रही हों या आग की चिनगारियाँ उड़ रही हों। आँख उठना, मोतियाबिन्द, अधिक काम में लगे रहने पर आँखों के गोल ढेले (Eye Ball) में दर्द, चक्षु में गुहोंरी या अञ्जनी निकल कर आ जाय तो मुफीद है।

कान (Ear)—कान से पुराना पीव का स्राव, कम सुनाई पड़ना, कान में गम्भीर गरज या गुनगुन आवाज, कर्ण अस्थि (Mastoid Bone) के पीछे निम्न स्थान पर उठी हुई हड्डी के आवरक पदार्थ पर आक्रमण हो तो इस नमक से अति सुन्दर फल मिलता है।

नाक (Nose)—सर्दी लगने की प्रथम अवस्था में देना चाहिए। सर्दी, ज्वर, नासारन्ध्र से थोक-थोक दुर्गन्धयुक्त स्राव निकलने पर अवस्था विशेष पर विचार करके 'कैली फास' या 'साइलिशिया' में जो उचित समझा जाय या दोनों के बाद इस औषधि को एक के बाद एक करके प्रयोग करना लाभप्रद है।

मुखमण्डल (Face)—गालों में कड़ी सूजन, जबड़ा फूल जाना, कड़ा हो जाना और दर्द करना।

मुखमध्य (Mouth)—मसूढ़े के ऊपर सूजन के साथ सख्त फोड़ा, मुख के कोने पर फटा-फटा क्षत, मुख के भीतर शुष्क भाव और वह क्षत गले के अन्दर भी पहुँचता है। ओंठ भी फट जाते हैं। उपर्युक्त क्षत यदि पैत्रिक उपदश जनित कारण से हो तब इस औषधि से और अच्छा फल मिलता है।

जिह्वा (Tongue)—कभी दर्द के साथ, कभी दर्द रहित जिह्वा का सुन्न पड़ जाना, जिह्वा पर फटी धारी होना।

दाँत (Teeth)—दाँत के हिलने के साथ ही दर्द, कभी दर्द की अवस्था सुन्न हो जाती है। जल्दी-जल्दी दाँतों का क्षय होना, बालकों के दाँत निकलने में विलम्ब हो तो इसे प्रयोग करना चाहिए।

गलमध्य (Throat)—गलमध्य आदि का ढीला भाव, शिथिलता, काग बढ़कर और जिह्वा में लगकर एक प्रकार की खुर-खुर खाँसी पैदा कर दे तो इसे देना चाहिए। दुर्गन्धयुक्त सड़ी हुई मलाई की भाँति टुकड़ा-टुकड़ा बलगम निकलने पर इसे देना चाहिए।

पाकस्थली प्रदेश (Stomach)—खाया हुआ भोजन जो न पचा हो उसकी कै होना।

उदर एवं मल (Abdomen & Stool)—आँत के भीतर मल अटका हुआ रह जाय। मांसपेशी की शिथिलता के कारण मल निकलने में अक्षमता। वातग्रस्त रोगी अथवा रीढ़ के दर्द वाले रोगी के पेट में पीड़ा हो और निम्न उदर में प्रभूत वायुसंचय हो जाय तो इसका प्रयोग उपयुक्त है। गर्भवती स्त्रियों के तलपेट में वायु होना और इसी कारण बेचैनी होना, मलद्वार में इस ढङ्ग की खुजलाहट हो मानो छोटी-छोटी कृमियाँ काट रही हैं।

मूत्रयन्त्र (Urinary Organs)—बार-बार पेशाब लगता है, बहुत ज्यादा पेशाब होता है। पेशाब थोड़ा, रंग गहरा और उसमें बहुत तेज गन्ध होती है। अण्डकोष लटक जाना, रात्रि में मूत्र-वेग धारण में

अक्षमता, अण्डकोष में सूजन। मासिकधर्म में प्रसवकाल जैसा दर्द का अनुभव करना।

गर्भ (Pregnancy)—प्रसव के बाद का दर्द (After Pains) ऐसा कठिन हो जैसा कि प्रसव के समय का होता है। स्तन की घुण्डी में क्षत हो जाना। प्रसवकाल में यदि जरायु का मुख भली-भाँति न खुला हो और इस कारण सन्तान होने में देरी हो व कष्ट हो और मृदु-मृदु दर्द हो तो इस दर्द को तेज करने व शीघ्र प्रसव कराने के लिए 'काली फास' के साथ इस औषधि को देना लाभप्रद है।

श्वास-यन्त्र (Respiratory Organs)—श्वासनली में खुजली, स्वरभंग, काली खाँसी, खाँसी के साथ छोटे-छोटे पीली आभा लिए गाढे बलगम के टुकडे निकलना, डिफ्थीरिया की बढिया दवा है।

रक्त-सचालन यन्त्र (Circulatory System)—हृद्पिंड की विवृद्ध अवस्था (Hypertrophy) और धड़कन (Palpitation) इत्यादि के कारण से हृदय-पीड़ा के लक्षण आदि में यह दवा बहुत ही लाभदायक है।

पृष्ठ, ग्रीवा और अग-प्रत्यङ्ग का अग्रभाग (Back, Neck and Extremities)—कटि प्रदेश मे बहुत दर्द और साथ-साथ अत्यन्त दुर्बलता, हाथ की अँगुली की सन्धियों मे वात की वजह से सूजन, (Rickets) वाले बच्चों की उस स्थान की अस्थि का टेढापन। कभी-कभी देखा जाता है कि जो मनुष्य बहुत ऊँचे-नीचे पहाड़ इत्यादि स्थानों मे चलते हैं, वह कुली, मजदूर जो सिर पर भारी बोझा लाद कर चलते हैं उनके पैर की तरफ शिरा इत्यादि मे रक्तसचय होकर शिरा मोटी-मोटी रस्सी के समान चर्म पर उठ जाती है। और इस अवस्था में थोड़े दिनों तक और मेहनत करने से सब शिरा का स्फीति भाव की जगह Knots व गुटिका के

समान सख्त हो जाती है जिसको वेरीकोस वेन्स (Vericose Veins) कहते हैं।

नींद (Sleep)—बैचैनी, नींद सपने मे नई-नई जगहें और दृश्य देखता है। आने वाली विपत्ति की आशका के साथ स्पष्ट सपने ।

चर्म (Skin)—ठंढ लगकर ओंठ, हाथ आदि का फटना, विशेष रूप से जाडे के मौसम मे ओंठ, गाल, चर्म, तलुआ, हथेली का फट जाना जैसा कि सब्जी बनाने के समय दराँती से कट जाता है। और खुरेचें पड़ जाती हैं। ऐसी अवस्था में इसका प्रयोग लाभदायक है। पीव भरे जख्म के चारों ओर के स्थान कडे और लचीले नहीं रहते, ऊँचे किनारे वाले कठिन जख्म, चारों ओर का चमड़ा बैंगनी रंग का हो जाता है और फूला रहता है। गण्ठमाला धातुदोष वाले व्यक्ति के बदन पर (Scrofulous Constitution) यदि खरीश पेदा हो जाय तो इस दवा के उपयोग से विशेष लाभ होता है।

ज्वर (Fever)—कुछ दीर्घ दिन तक प्यास के साथ ज्वर अर्थात् पुराने ज्वर में जब यकृत प्रदेश इत्यादि लोहे के समान सख्त हों और चर्म के ऊपर मोटी-मोटी नीले रग की नसें दिखाई पड़ने लगें और जीभ बादामी रङ्ग की व खुश्क हो तो इस नमक की उच्च शक्ति बहुत लाभप्रद सिद्ध होती है।

तन्तु विधान (Tissues)—गिल्टी जब पत्थर के समान सख्त हो और वह स्थान ऊँचा दिखाई दे तो इसका सेवन लाभदायक है। डॉ० सुणलर साहब का कहना है कि जिस-जिस स्थान पर सूत्रिका समान पदार्थ (Fibrinous Matter) जम कर पक जाय और वह पीब बाहर न निकलकर उस स्थान को कठिन व सख्त बना दे तब इस नमक को अवश्य व्यवहार करें। हड्डी के ऊपर चोट लगकर आक्रान्त स्थान टेढ़ी-मेढ़ी अवस्था में होकर गुठली की तरह सख्त हो जाय तब इस नमक का

अभाव समझना चाहिए। किसी को हृतपिण्ड रोग के कारण हृदय प्रदेश में शोथ (Dropsy of the Heart) हो जाय तो इसका प्रयोग लाभदायक है।

रोग की वृद्धि और उपशम (Modalities)—ठण्ढी आबहवा मे व चुपचाप बैठे रहने पर लक्षणों की वृद्धि, सेकने और मालिश करने से आराम होता है।

शक्ति—(Potency)—इसकी सब प्रकार की शक्ति व्यवहार होती है। हड्डी आक्रान्त होने से १२X, ३०X और २००X आदि उच्च शक्तियों से उपकार होता है। मलद्वार पर फटन, हड्डी की वृद्धि, अर्श रोग आदि में २X, ३X शक्ति मलहम रूप से व्यवहार होता है। पुराने उपदंश इत्यादि के क्षत में भी ३०X, २००X आदि उच्च शक्ति हफ्ते में २–३ बार व्यवहार करना चाहिए। यदि इससे फायदा न हो तो १०००X शक्ति हफ्ते मे २–३ बार व्यवहार करना चाहिए।

अन्य औषधियों के साथ सम्बन्ध (Relationship with other Tissue Salts) 'साइलिशिया' के बाद पूययुक्त विकारों मे उपयोगी होता है। घुटने की सूजन मे 'फेरम फास' के बाद उपयोगी है। पुराने व्रण में 'नेट्रम म्यूर' के पश्चात् और पाण्डु रोग में 'कल्केरिया फास' के पश्चात् उपयोगी होता है।

मात्रा—(Dose)—चार से पाँच टिकिया या ३–४ रत्ती चूर्ण प्रत्येक ३ घण्टे के बाद दिन में पाँच बार देना चाहिये।

तुलना (Comparison)—'कल्केरिया फ्लोर' का मानव देह और यन्त्रादि के ऊपर जिन-जिन लक्षणों में व्यवहार होता है उसी अवस्था के साथ होमियोपैथिक दवाओं की तुलना—

नासिका की किसी अस्थिक्षत आदि पीड़ा में जब दुर्गन्धयुक्त स्राव निकलता है तो 'औरम मेटालिकम' का व्यवहार होता है। यदि निकलता हुआ स्राव उपदंश जनित कारण से हो तो और भी लाभप्रद है। इसके

साथ 'काली वाइक्रोम' की भी तुलना कीजिए। मसूढे की जगह में सख्त फूले हुए ऊँचे फोड़े में 'हेक्ला लावा' और फ्लोरिक एसिड' के साथ तुलना करनी चाहिए। दाँत की जड़ मे पायरिया अथवा किसी कारण से नासूर घाव हो जाय तब 'साइलिशिया', 'कल्केरिया फ्लोर' से ज्यादा फायदेमन्द 'फ्लोरिक एसिड' माना जाता है; किन्तु १० एम०, सी० एम० आदि शक्तिकृत दवाएँ होनी चाहिए। पुरातन सर्दी, पीड़ा आदि अगर उपदश जनित कारण से हो तो 'औरम मेटालिकम', 'केली बाई क्रोम,' 'हिपर सल्फर', 'नाइट्रिक एसिड' के साथ और यदि साधारण कारण से हो तब 'नेट्रम कार्ब', 'सल्फर', 'कल्केरिया फास', 'आर्सेनिक आयोडायड' के साथ तुलना कीजिए। वगल की गिल्टी की सख्त अवस्था में 'कोनियम' 'फाइटोलक्का' इत्यादि के साथ तुलना कीजिए। पुट्ठे की गिल्टियो (व्यूवोग्लैंड) की सख्त अवस्था मे 'फाइटोलक्का', 'कार्वोएनिमेलिस' वहुत अच्छी तरह से व्यवहार होता है। कमर प्रदेश के वातज व रीढ़ के दर्द मे 'रसटाक्स' के साथ तुलना कीजिए। जरायु प्रदेश का नीचे झुक जाना व वाहर निकल जाना व स्नायुच्युति आदि में 'सिपिया', 'वाईवर्नम ओपुलस', 'म्यूरेक्स,' 'प्लेटिना' इत्यादि के साथ तुलना चल सकती है।

कल्केरिया फासफोरिका

(Calcarea Phosphorica)

पर्याय नाम—फास्फेट आफ लाइम, कैलशियम फास्फेट।

मुख्य कार्य—जगत् विख्यात चिकित्सक डॉ० हेरिङ्ग साहव ने सवसे पहले इस लवण को तैयार कर होमियोपैथिक नियम के अनुसार इसकी परीक्षा की थी। यह देखा जाता है कि चूने के पानी में डाइल्यूट फास्फोरिक एसिड (Dilute Phosphoric Acid) मिलाने से एक प्रकार की सफेद तलछट नीचे वैठ जाती है। इस इस पदार्थ को परिस्रुत जल (Distilled

Water) से धोकर खुश्क कर लेते हैं और तब औषधि रूप में इसका व्यवहार होता है। होमियोपैथिक फार्माकोपिया की रीति के अनुसार व ट्रिच्यूरेशन व विचूर्ण पद्धति के अनुसार खरल करके यह औषधि व्यवहार की जाती है।

शरीर के योग्य पोषण तथा वृद्धि के लिए यह क्षार अत्यन्त आवश्यक है। दाँत, अस्थि, संयोजक धातु, रक्त पिण्ड इत्यादि अवयवों का यह क्षार घटक है। अस्थियों में यह क्षार ५७% होते हैं। किसी डाक्टर ने ठीक यही चीज लिखी है—

'Bone Contains fifty seven percent phosphate of lime and without lime phosphate no bone can be found' यह औषधि शरीर के गठन व पुष्टि भाव में क्रम-वर्धन के लिए अत्यन्त उपयोगी समझा जाती है। अस्थि, रक्त, लार, संयोजक तन्तु, आमाशय प्रदेश का रस, होड़, दुग्ध, दन्त इन सब चीजों में यह नमक बहुत मात्रा मे पाया जाता है।

बचपन, यौवन और बुढापा इन तीनों अवस्थाओं में यह औषधि अत्यन्त उपयोगी है। देर से दाँत निकलना और उस समय की बहुत-सी बीमारियाँ, अस्थि सम्बन्धी रोग, किसी कड़ी बीमारी के बाद कमजोरी, पुरानी क्षय करने वाली बीमारी, कठमाला धातु, हरित रोग, यक्ष्मा इत्यादि रोगों में यह दवा लाभदायक है। कहीं-कहीं पर इस औषधि का टॉनिक के रूप में भी व्यवहार होता है। यदि किसी स्थान की हड्डी टूट गई और उसमे जोड़ नहीं लगता है या किसी स्थान की हड्डी अस्वाभाविक रूप से बढ गई है, इन सब स्थलों मे इसका सेवन करना चाहिए। बच्चों के अन्यान्य रोगों की यह महाषधि है तथा दाँत निकलने के समय की बीमारियाँ जैसे वमन, अतिसार, ज्वर, तड़का आदि, सुखण्डी, मस्तिष्क में शोथ, गण्डमाला प्रभृति रोगों मे भी श्रेयस्कर है। स्त्रियों की गर्भ-अवस्था में नित्य तीन बार

'कल्केरिया फास' ६x व्यवहार में लाना चाहिए। ऐसा करने से गर्भ की सन्तान गर्भ में पुष्ट हो जायगी और प्रसव के बाद शिशु के दाँत निकलने के समय आक्षेप, पेट खराबी, तडका, सूखे की बीमारी इत्यादि जो-जो रोग हो जाते हैं, यह औषधि नहीं उत्पन्न होने देगी। शरीर का अधिक रक्तक्षय या रजःस्राव व प्रदर पीड़ा मे भुगतने से दिन व दिन बल का नाश व शरीर में काम करने की क्षमता एकदम नष्ट हो जाती है। ऐसी स्थिति में 'कल्केरिया फास' मृत सञ्जीवनी सुरा सदृश फल देता है। जिन स्त्रियों में काम की बहुत इच्छा और इन्द्रिय के द्वार स्थान व योनि-द्वार में सुरसुरी व खरिश का भाव हो, उन्हें यह उपयोगी है। इस औषधि का खास परिचायक लक्षण यह है कि अस्थि के जोड़-जोड़ में आरिष्ट भाव व दर्द के साथ शरीर के भीतर ठण्ढ अनुभव करना और सहज ही पसीने का स्राव, ग्रन्थि आदि की विकृत अवस्था, क्षुद्र ग्रन्थियों आदि में दर्द, गण्डमाला धातु-ग्रस्त शरीर पर विशेष क्रिया होती है।

प्रमुख लक्षण

मन (Mind)—'कल्केरिया फासफोरिका' को संकेत करने वाली सब बीमारियों में मानसिक उद्वेग स्पष्ट और साफ-साफ दिखाई देता है। स्मरण शक्ति घट जाती है। शोक, कलह, अपमान, निराशा प्रभृति के कारण शारीरिक और मानसिक रोग, लगातार स्थान बदलते रहने की उत्कंठा, घर में रहने के समय बाहर जाना चाहता है और बाहर जाने पर घर लौट आना चाहता है। अत्यन्त क्रोधी और चिड़चिड़े स्वभाव का शिशु-युवक जिसकी हस्तमैथुन इत्यादि क्रिया के कुफल से क्षीण स्मरणशक्ति हो, सर्वदा निर्जन स्थान में रहने की इच्छा आदि उपसर्गों में लाभप्रद है।

मस्तिष्क (Head)—माथे की हड्डी की सन्धि का स्थान खुला हो, विद्यार्थी, बालक-बालिकाओं की जवानी आने के साथ ही साथ सिर दर्द,

पुराना मस्तिष्कोदक रोग, माथे में जगह-जगह के केश उड़ जाते हैं, माथे के चारों ओर रूमाल या पट्टी बाँधे रहना किसी भी विषय में सन्तुष्ट भाव नहीं, अच्छी बात का जवाब भी बड़ी सख्ती के साथ देना, लड़कियाँ स्कूल से आकर किताब फेंक देती हैं और धम से खाट पर आ पड़ती हैं।

आँख (Eye)—रोशनी या बत्ती की ज्योति सहन न होना, चक्षु के गोले के भीतर दर्द।

कान (Ear)—गण्डमाला धातु दोष युक्त रोगी व वातग्रस्त रोगी के कानों के नीचे की चारों ओर की ग्रन्थि के अत्यन्त स्फीति लक्षण में जलन व खुजली। टॉन्सिलाइटिस के कारण यदि बधिरता आ जाय व कान के भीतर किसी किस्म की ठण्ढ महसूस हो तो यह लाभदायक है।

नाक (Nose)—नासिका के भीतर बड़ी गुमड़ी व अर्बुद जिसको पोलीपस कहते हैं, नीचे को लटक पडता है। नासिका का अग्र भाग बर्फ के समान शीतल, मस्तिष्क प्रदेश में कफ जम जाने के कारण अण्डलालिक पदार्थ के समान स्राव, ठण्ढे कमरे में स्राव की अधिकता, गर्म हवा में स्राव कम हो जाता है। इसकी क्रिया झिल्ली पर खूब देखी जाती है।

मुखमण्डल (Face)—हरित पाण्डु रोग से भोगने के कारण रक्तहीनता होकर मुख पर फीका भाव हो जाय, मुख के ऊपर मुँहासे निकल आते हैं।

मुखमध्य (Mouth)—प्रातःकाल मुख का धुला हुआ खराब स्वाद, तिक्त व कड़वे मुख के साथ सिर में दर्द, टॉन्सिल प्रदेश की ग्रन्थि का प्रदाह, निगलने में तकलीफ।

जिह्वा (Tongue)—जिह्वा की सूजन, जकड़न तथा सुन्न हो जाना, पेट की पाचन-शक्ति खराब होने के कारण जीभ के अग्र-भाग में फफोले पड़ जाना और जीभ फटी दिखलाई पड़ना।

दाँत (Teeth)—बच्चों को विलम्ब से दाँत निकलना, दाँतों को पुष्ट बनाने के लिए यह नमक बहुत लाभदायक है।

गलमध्य (Throat)—गले के बाहरी प्रदेश की ग्रंथि आदि की सूजन व दर्द। गलगण्ड की यह प्रधान दवा है। पुरातन स्वरभंगता, वक्ता, गायक, वक्तव्य देने वालों के लिए यह प्रधान दवा है।

आमाशय प्रदेश (Gastric System)—आहार के पश्चात् आमाशय मे वेदना, भोजन की वस्तु आमाशय में प्रवेश कर पिण्ड के समान रखी रहे, उस अवस्था में उस प्रदेश मे भारीपन व जलन। ठण्ढे पानी व खाने से वेदना की वृद्धि होती है। परन्तु गर्म वस्तु खाने से कमी। शिशु हमेशा दूध (स्तन) पीने की इच्छा करे और पेट फूला रहे तथा दही के समान खट्टा वमन करे, गोश्त या अण्डे खाने की प्रबल इच्छा होना, शरीर की क्षीणता व रक्तहीनता। शिशु के सुखडी रोग की सर्वोत्कृष्ट दवा मानी गई है।

उदर एव मल (Abdomen & Stool)—शिशु के दाँत निकलने के समय अतिसार, पेट से दर्द के साथ तालाब की काई के समान हरे रङ्ग का चिकना बदहजम मल निकलना और उसमें खट्टी-खट्टी बदबू आना। यदि किसी भी मौसमी तकलीफों के कारण बदहजमी हो जाय तो इसका प्रयोग करना चाहिये। पित्त-पथरी के लिए यह बड़ी मूल्यवान् औषधि है।

मूत्र यन्त्र (Urinary Organ)—गाढ़े रङ्ग का विशिष्ट मूत्र, शिशु व वृद्ध की दुर्बलता के कारण लगातार मूत्रत्याग हो जाय। थोड़ी-थोड़ी देर मे मूत्र त्याग की इच्छा। मूत्रस्थली के ग्रीवा प्रदेश मे दर्द व मूत्र नली में कभी छुरी से काटने, कभी तीर भेदन के समान दर्द। मूत्र के नीचे फासफेट की तली जमना व कभी रेत के कण के समान जम जाना।

पुरुषेन्द्रिय (Male Organ)—अण्डकोष की स्फीति, सूजन, प्रदाह, दर्द व हस्तमैथुन के कुफल से अण्डकोष में बहुत खुजली, पुरातन प्रमेह, अण्डलालिक स्राव हो तो इससे फायदा होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय (Female Organ)—जरायु का नीचे की तरफ झुक जाना जिसे Prolapsus कहते हैं, जरायु का स्थानच्युत होना,

जब मासिकधर्म होने के पहले काम की बहुत इच्छा हो व इस इच्छा के साथ योनि में सुरसुराहट या दपदपाहट होने के कारण कृत्रिम मैथुन की इच्छा हो, रक्तहीन स्त्री को नियमित काल से पहिले या पीछे अति स्राव हो, ऋतुकाल के समय प्रसव के समान दर्द हो तो इसे देना चाहिए। प्रदर की भी उत्तम दवा है। सन्तान वाली स्त्रियों को बच्चे को अधिक दिन दूध पिलाने से प्रदर हो जाय तो इसे देना उपयुक्त है।

गर्भ (Pregnancy)—गर्भ के समय अंग-प्रत्यंग में लगातार मृदु-मृदु दर्द अनुभव करना, स्तन दुग्ध में कमी, पतला व लवण स्वाद युक्त जिस कारण बच्चा दूध पीते-पीते मुँह लटका लेता है। गर्भ अवस्था व सूतिका ज्वर को भुगतने के कारण शरीर जीर्ण-शीर्ण हो जाय। प्रसव के बाद बल विधान के लिए इस औषधि को प्रयोग में लाना चाहिए। यह नमक प्रसूति के क्षुधा । बल को बढाता है।

श्वास-यन्त्र (Respiratory Organ)—अण्डलालिक पदार्थ के समग्र बलगम बाहर निकलना और खाँसी का ठुनका होना, पुरानी खाँसी में छाती को थोड़ा छूने से भी दर्द होता है। शिशु का खाँसते-खाँसते दम बन्द हो जाय।

रक्त-संचालन यन्त्र (Circulatory System)—हृत्पिण्ड की सम्पूर्ण बीमारियों में उपयुक्त है। (कैली फास) हृदय कम्पन की महौषधि है। (नेट्रम म्यूर)

पृष्ठ, ग्रीवा और शरीर के अङ्ग-प्रत्यङ्ग का अग्रभाग (Back, Neck & Extremities)—मेरुदण्ड प्रदेश के सब अंगों से लेकर कमर के नीचे तक जो सब अस्थि है, उस पर इसकी विशेष क्रिया देखी जाती है। जिस मनुष्य ने अति हस्तमैथुन किया है या अधिक सम्भोग किया है व किसी युवती का मेरुदण्ड प्रदेश यौवन प्रकाश होने के समय वक्र हो जाय व सामने की ओर झुक कर चले, इसी के साथ रक्तहीनता, दुर्बलता, क्षुधा का अभाव इत्यादि हो तो इसके प्रयोग से विशेष लाभ होगा। अचानक बहुत देर तक बैठे-बैठे कमर, नितम्ब व चूतड़-प्रदेश तक एक प्रकार की

खिंचावट-सा दर्द हो जिससे सीधा न खड़ा हुआ जाय, इस अवस्था में भी लाभप्रद है।

स्नायु-मण्डल विधान (Nervous System)—रात्रिकाल में स्नायु-शूल, कूल्हों का दर्द घूम-घूम कर उपस्थित हो जाता है। चाहे जिस प्रकार का दर्द अथवा आक्षेपिक अवस्था हो, इसे देना चाहिए। शरीर की जड़ता, अवसन्नता, भारीपन व रीढ के दर्द के कारण किसी काम के करने की इच्छा का न होना।

चर्म (Skin)—चमड़े में खुश्की, ठण्ढापन व झुर्री पड़ जाना। चमड़े के ऊपर खाज के समान प्रकाश, युवक-युवती के योवनकाल के समय मुँह पर मुँहासे निकल आवें तो यह लाभदायक है। इस दवा के २x, ३x शक्ति को सफेद वैसलीन के साथ मिलाकर मलहम बनाकर दो या तीन बार क्रीम की तरह चेहरे पर लगाना चाहिए।

निद्रा—(Sleep)—वृद्धापन मे ऊँघना स्वाभाविक निद्रा का ठीक न आना, नाना प्रकार की विषादयुक्त चिन्ताओं का मन मे उदय होना, सुबह को निद्रा देर से भग होता हो, शिशु निद्रावस्था मे चिल्ला उठता हो, अविराम जम्हाई और हाथ-पैर चारों ओर फैलाना और जब कभी कृमि घटित उपद्रव के कारण निद्रा कम आती हो तो इसका प्रयोग-उपयुक्त है।

ज्वर (Fever)—ज्वर के प्रारम्भ मे कम्प व ठण्ढे होने पर और यक्ष्मा रोगी को रात्रि में जब बहुत पसीना आवे तो देना चाहिए। पुराने बुखार के लिए भी उपयुक्त है।

तन्तु विधान (Tissues)—रक्तहीनता व हरित पाण्डु रोग मे प्रयोग करने से यह नये रक्त-कणिका की तो सृष्टि करता ही है इसके अतिरिक्त दुर्बल कर कणिका और श्वेत कणिका इत्यादि को रक्त कणिका में तबदील करने की क्षमता रखता है।

रोग की वृद्धि और उपशम—ऋतु परिवर्तन, रात्रिकाल, ठढी आबहवा में वृद्धि और गर्म आबहवा व कमरे मे सब लक्षणों की शान्ति।

शक्ति (Potency)—विशेषतः हड्डी के विकारों में अधिक शक्ति का उपयोग करने से लाभ करता है। उपदशजन्य अस्थिविकार पर तथा शिरा कुटिलता पर २००x का भी उपयोग होता है। साधारणतः ३x या ६x औषधि का उपयोग करना चाहिये। यदि इससे आराम न हो तो १२x या ३०x का उपयोग करना चाहिये। दरार, बवासीर, शिरा कुटिलता और नख की सूजन में लगाने के लिए भी इसका उपयोग होता है। चार औंस पानी लेकर उसमें ३० ग्रेन औषधि का घोल बनाकर उसकी पट्टी रखनी चाहिये। इसके लिए २x, ३x औषधि का उपयोग होता है।

इस दवा के साथ अन्य होमियोपैथिक औषधियों की तुलना—

होमियोपैथिक 'कल्केरिया कार्ब' का रोगी सुन्दर वर्ण, मासपेशी थुलथुली, थोड़ा काम करने से पसीना आ जाय व ठण्डक नहीं सह सकता है। खाने में अण्डा इत्यादि ज्यादे पसन्द करता है और 'कल्केरिया फास' का रोगी भी ऐसा ही दुर्बल प्रकृति, पतले ढग का गठन, देखने में चमड़े के ऊपर मैला या बादामी रंग के समान, अधिकतर नमकीन चीज और मास आदि खाने की इच्छा करता है। पेट की खराबी दोनों में होती है और गण्ड-माला धातु दोष दोनों में पाया जाता है। मस्तिष्क के शोथ रोग की अवस्था के लिए 'जिंकम मेटालिकम', 'एपिस मेल', 'हेलीबोरस नाइजर' के साथ तुलना करे। अधिक दिन कर्ण रोग भुगतने से बधिरता हो जाती है तब इस औषधि की 'पल्सेटिला' के साथ तुलना कीजिए। बालक-बालिकाओं के वयसकालीन मुँहासों के लिये 'कल्केरिया पिक्रेटा', 'सल्फर' के साथ तुलना करें। यदि शरीर की कोई हड्डी इत्यादि भग्न होकर जोड़ न लगे तो 'सिम्फाइटम' मदर टिंचर के साथ तुलना करें। शिशु के दाँत निकलने के समय अस्थि विकृति रोग, अतिसार इत्यादि में इथूजा, 'सेनाक्यूला', 'आयोडियम', 'सल्फर', 'मैग्नेशिया कार्ब', इत्यादि के साथ तुलना

कीजिए। गुह्यद्वार की फटन मे इस नमक के साथ ग्रेफाइटिस की तुलना करनी चाहिये आदि।

कल्केरिया सल्फ

(Calcarea Sulphurica)

पर्यायनाम—सल्फेट आफ लाइम, कैल्शियम सल्फेट, प्लास्टर आफ पेरिस जिप्सम।

मुख्य कार्य—साधारण रूप से यह शारीरिक व रासायनिक क्रिया में देखा गया है कि सल्फेट आफ लाइम सयोजक तन्तु पर विशेष कार्य करता है। यह लावणिक पदार्थ यकृत के भीतर कुछ-कुछ देखा जाता है। इसका कार्य यही है कि यह उस स्थान के पित्त-कोष में मिलकर अकार्यकारी रक्त कणिका को यकृत से अलग कर देता है एव वह सब पित्तक्रिया के द्वारा बाहर निकल जाता है।

पीव पैदा होने के साथ इस लवण का घनिष्ट सम्बन्ध है। 'साइलिशिया' नामक नमक से पीव पैदा होती है और बहुत जल्दी पका देता है, पर 'कल्केरिया सल्फ' से पीव पैदा होना रोक दिया जाता है और जखम में अकुर पैदा होने की वजह से वे जल्द आरोग्य हो जाते हैं।

उपर्युक्त वस्तु को ध्यान में रखकर किसी डाक्टर ने लिखा है—

'Is used to clean cut an accumulation of heteroplasm in the interestices of tissue, to cause infiltrated part to discharge their contents readily and throw off decaying organic matter, so it may not le dermant or slowly decay and thus injure the surrounding tissue. It controls suppuration.

इस औषधि के पीव का लक्षण हरिद्र वर्ण, पतला दुर्गन्धयुक्त स्राव व कमी गाढा हरिद्र वर्ण व सामान्य खून का छींटा भी साथ में होता है।

यह पीब जो बनती है वह श्लैष्मिक झिल्ली व सिरम के ऊपर, यकृत के स्फोटक की पीब, आँत के स्फोटक की पीब व किसी प्रकार की गुटिका दोष युक्त क्षत व कार्निया स्वच्छत्वक्-प्रदेश का क्षत व सब स्थान के स्फोटक में हो तब इसके पैदा होने के बाद यह लवण विशेष रूप मे व्यवहार हो सकता है। सब स्थान की सर्दी, जैसे नाक की सर्दी, फेफड़े की सर्दी, आँत की सर्दी इत्यादि में इसका प्रयोग होता है; परन्तु यह याद रखना चाहिये कि इसको प्रदाह की तृतीय अवस्था में और लक्षण विचार कर देना चाहिए। स्फोटक, बड़े-बड़े कार्बङ्कल व पृष्ठ पर फोड़े, सर्दी की तृतीय अवस्था, बहुत दिनों की रक्तामाशय, पुरातन शुक्रमेह या प्रमेह रोग की तृतीय अवस्था, श्वेत प्रदर इन सब रोगों में जहाँ इस नमक के स्राव का परिचायक लक्षण मिलता हो, सब स्थानों पर प्रयोग हो सकता है।

प्रमुख लक्षण

मन (Mind)—किसी वस्तु व कार्य मे मन नहीं लगता, मन के भाव परिवर्तनशील हों, अस्थिर मन, क्रोधी स्वभाव, किसी कार्य के करने से मन सन्तुष्ट नहीं रहता। एकाएक स्मरण शक्ति का लोप हो जाना।

मस्तिष्क (Head)—बालक-बालिकाओं के माथे के जख्म से पीली गाढ़ी पीब निकलती हो अथवा हरित रंग का खुरण्ट पड़ जाय और ओकाई के साथ सिर घूमना या सिर दर्द, मस्तिष्कास्थि का क्षय रोग, बाल झड़ना।

आँख (Eye)—आँख की प्रथम व नई प्रादाहिक अवस्था में साधारणतः यह औषधि व्यवहार नहीं होती। यह जब प्रदाह की तृतीय अवस्था प्राप्त हो जाय, स्वच्छत्वक्-प्रदेश के मूल प्रदेश मे गम्भीर स्फोटक हो जाय तब 'साइलिशिया' के साथ पर्याय-क्रम में व कभी अवस्था विशेष में 'कैली सल्फ' के साथ देना चाहिए। सब के ऊपर 'कल्केरिया सल्फ' चक्षु की तृतीय अवस्था में गाढ़ी पीब निकलती देखी जाय तो खाने और

लगाने दोनों में व्यवहार होता है। आँख के सफेद हिस्से की प्रदाह अवस्था; द्वि दृष्टि रोग, एक चीज का दो हिस्सों में देखना व कभी रोशनी इत्यादि में ताकने से नागवार मालूम हो, ऐसी अवस्था में इसका प्रयोग होता है; पलकों का फड़कना, किनारों का सूजना।

कान (Ear)—कान के भीतर जब गाढ़े पीत वर्ण की पीव उत्पन्न हो जाती है एव 'साइलिशिया' के प्रयोग से यह पीव दूर नहीं होती और इस पीव के साथ थोड़ा-थोड़ा खून का छींटा देखा जाय तो विना विशेष कुछ सोचे विचारे इस दवा के ३x शक्ति का थोड़ा हिस्सा लेकर ग्लिसरीन के साथ मिलाना चाहिये और दिन मे ३–४ वार कान में डालना चाहिए। कान में पीव के स्राव के साथ सुनाई कम पड़े, कान के अन्दर काटने, छेंदने ऐसा दव-दव दर्द, कान के चारों ओर फुन्सी व दाना-दाना क्षत और इसके साथ पीव वनने की सम्भावना हो तो इसका व्यवहार करना चाहिए।

नाक (Nose)—नासारन्ध्र के किनारे फटे-फटे और दर्द भरे, नाक के पिछले छेद से पीली आभा लिए स्राव; माथे में श्लेष्मा जमा रहता है, इसके साथ ही गाढ़ी-पीली आभा लिए पीव मिला स्राव होता है, केवल एक ही रन्ध्रपथ से श्लेष्मा निकलना।

मुखमण्डल(Face)—यौवन प्रारम्भ व यौवनावस्था के वाद वालक व वालिकाओं को एक किस्म के मुँहासे की तरह व्रण मुख पर निकल आते हैं। इसके साथ यदि खरिश रहे तो इसकी निम्न शक्ति ३x 'साइलिशिया' ३x शक्ति के साथ मिलाकर उन सब जगहों पर लगाना चाहिए। यदि हजामत वनवाते समय नाई के अस्तुरे से कटकर घाव हो जाय तो 'कल्केरिया सल्फ' के साथ औषधि विचार कर प्रयोग (वाह्य और आभ्यान्तरिक) करना चाहिए।

मुखमध्य (Mouth)—मुख के भीतर जब किसी प्रकार के रोग में पीवयुक्त स्राव देखा जाय या ओंठ के भीतर की तरफ क्षत हो तो इन अवस्थाओं में इसका प्रयोग करना चाहिए।

दाँत (Teeth)—गाल और मसूढे दोनों फूल जाते हैं। दन्तमूल में क्षत और उसमें रक्तस्राव। भीतर से दब-दब और दन्त मूल में स्फोटक। यदि मसूढ़े के भीतर पीब की उत्पत्ति हो तो उच्च-शक्ति देना उपयुक्त है। पायरिया की यह उत्तम दवा है। वातव्याधि के रोगियों के दाढ़ के दर्द की अच्छी दवा है।

जिह्वा (Tongue)—जिह्वा में प्रदाह के बाद पीब की उत्पत्ति होने पर 'साइलिशिया' के साथ इस औषधि की निम्न शक्ति मिलाकर गर्म पानी में डाल कर कुल्ला करना चाहिये और जब पुरानी अवस्था हो जाय तो दोनों औषधियों की ३०x शक्ति बदल-बदल कर ३–४ घण्टे के बाद व्यवहार करना उचित है।

गलमध्य (Throat)—गले सम्बन्धी रोगों की जब तृतीय अवस्था हो जाय अर्थात् पीब के समान स्राव बहने लगे, टान्सिल अर्थात् गले की ग्रन्थि के प्रदाह के पश्चात् जब पीब उत्पन्न हो जाय व दब-दब अनुभव हो और पीब बनने का सन्देह हो तो पहिले से ही इसको रोकने के लिये 'साइलिशिया' के साथ इस औषधि को देना चाहिये।

पाकस्थली (Stomach)—खट्टा फल, चाय इत्यादि वस्तुओं की इच्छा, क्षुधा व तृषा दोनों प्रबल हों, पाकस्थली में एक प्रकार की ज्वाला व दर्द, सिर घूमना व मिचली, कभी-कभी बदहजमी।

उदर एव मल (Stool & Abdomen)—पाखाने के साथ रक्तयुक्त पीब निकलना व कभी इसके साथ चिकना-चिकना पदार्थ निकलना, कभी ऋतु परिवर्तन जनित उदरामय, बहुत दिनों तक जिन्हें पेट की खराबी का रोग हो, आँत के भीतर श्लैष्मिक झिल्ली इत्यादि में असली क्षत के समान होकर पक जाय तब इसकी उच्चशक्ति जैसे १००x, २००x, १०००x, थोड़ी मात्रा में एक दो रोज के अन्तर पर सिर्फ एक खूराक व्यवहार करने से यह औषधि मन्त्र-शक्ति के समान काम करती है। मलद्वार का किसी प्रकार का बहुत यन्त्रणादायक व कष्टकर फोड़ा व भगन्दर,

रोगी के कभी सिर्फ पीव, कभी रक्त मिश्रित स्राव युक्त पुराने क्षत इत्यादि में इसका प्रयोग लाभप्रद है।

मूत्र यन्त्र (Urinary Organ)—जब शरीर में पीव बनकर बुखार हो जाय, पीव युक्त रस के साथ मूत्राशय की पुरातन प्रदाह अवस्था में इस नमक से विशेष लाभ होता है। जब मूत्र-मेह आदि में पीला बलगम देखा जाय तो इस औषधि के साथ 'कैली सल्फ' पर्यायक्रम से प्रयोग करना उचित है। प्रोस्टेट ग्रन्थि व पेड़ू की दोनों तरफ जो गिल्टी होती है उसमें पीव युक्त अवस्था व फोड़ा हो जाय तो इसका व्यवहार करना चाहिये।

पुरुषेन्द्रिय (Male Organ)—प्रोस्टेट ग्लैंड्स व पेड़ू की ग्रन्थि, पीव स्राव, स्फोटक व व्रण, उपदंश व प्रमेह रोग में जब पीवयुक्त रस के समान स्राव हो तो इसके प्रयोग से काफी लाभ होता है। जब शुक्रमेह के साथ एक प्रकार की नामर्दी की अवस्था आ गई हो तो इसका प्रयोग करना चाहिये।

स्त्री-जननेन्द्रिय (Female Organ)—स्त्री-रोग घटित जब श्वेत प्रदर अवस्था में गाढा हरिद्र वर्ण रक्त मिश्रित स्राव निकलने लगे तब 'साइलिशिया' के साथ पर्याय क्रम से देना उचित है, एवं इस प्रकार का स्राव यदि प्रमेह आक्रान्त रोगी में देखा जाय तब भी इन दो औषधियों का प्रयोग चल सकता है।

गर्भावस्था (Pregnancy)—स्त्रियों के स्तन प्रदाह के पश्चात् जब उस स्थान में पीव बन जाती है तब साधारणतः 'साइलिशिया' का व्यवहार होता है।

स्वास यन्त्र (Respiratory Organ)—यक्ष्माग्रस्त रोगी की जब एक प्रकार की अन्तिम अवस्था हो जाय अर्थात् तृतीय अवस्था के समय खाँसी के साथ पीव निकलती देखी जाय (यदि उसमें दुर्गन्ध हो) तब इस औषधि को 'साइलिशिया' के साथ पर्याय-क्रम से व्यवहार करना

उचित है और उस पीब के साथ यदि रक्त का छींटा देखा जाय तब अविलम्ब इस औषधि की सहायता लेनी चाहिए।

ग्रीवा व अङ्ग-प्रत्यङ्ग का अग्र भाग (Back, Neck and Extremities) व कूल्हे के सन्धिस्थान के रोग (Hip Joint Disease) में जब पीब उत्पन्न हो जाती है तब साइलिशिया के साथ कल्केरिया सल्फ पर्याय क्रम में देना चाहिए।

स्नायुमण्डल विधान (Nervous System)—वृद्ध व्यक्ति इत्यादि के हाथ-पैर का कम्पन, दुर्बलता, अनिद्रा, स्नायुशूल इत्यादि रोगों में उच्च शक्ति जैसे १२x, ३०x, २००x इत्यादि अल्प मात्रा में प्रयोग करके विशेष फल होता है।

चर्म (Skin)—जब किसी स्थान में चमडे के घाव में खारिश रहे व हरिद्र वर्ण का खुरण्ट पडे तब नेट्रम फास ३x और कल्केरिया सल्फ ३x इन दोनों औषधियों को एक साथ सफेद वैसलीन में मलहम वनाकर प्रयोग करना चाहिये।

तन्तु इत्यादि (Tissue)—पहले कई वार कह दिया गया है कि चाहे जिस प्रकार के क्षत हों, जब उनमें साइलिशिया के व्यवहार से पीब निकलना वन्द न हो, घाव न सूखे तब इस औषधि का व्यवहार करना चाहिये।

ज्वर (Fever)—सान्निपातिक क्षेत्र का ज्वर, उदरामय, रक्तामाशय व दूसरे रोग की गम्भीर अवस्था में इसी का परिचायक लक्षण देखकर और क्षत इत्यादि की पीब देखकर व्यवहार करना उचित है।

निद्रा (Sleep)—निद्राहीनता व आलस्य भाव, पीब युक्त ज्वर के साथ, दिन में नींद लगे, रात में नींद न लगे, विचारमग्नता के कारण अनिद्रा।

उपशम व वृद्धि—पानी के छूने से ठण्ड लगना, ऋतु परिवर्तन के समय इन सव में वृद्धि होती है और खुश्क उष्ण-वायु वहने से रोगी आराम अनुभव करता है।

मात्रा (Dose)—इस औषधि का साधारणतया ६x और किसी डाक्टर के मतानुसार १२x व्यवहार करते हैं। चक्षु के पीवयुक्त क्षत इत्यादि में ३x से अधिक गुण होता है।

मन्तव्य और इस औषधि का होमियोपैथिक औषधि के साथ लक्षण विशेष में तुलना—होमियोपैथी में फोड़े में पीव पैदा करने और सुखाने के लिए पहले चिकित्सक लोग हीपर पर ध्यान देते हैं। किसी-किसी क्षेत्र में अवस्था विशेष में मरक्यूरियस का प्रयोग होता है, परन्तु इन सब औषधियों में कल्केरिया सल्फ की क्रिया बहुत ही दीर्घ व गम्भीर (Deep Acting) है। साइलिशिया के साथ कल्केरिया फास के फोड़े में पीव बनना और सूखना और पीव के रंग इत्यादि पर भी ध्यान रखना चाहिये। कल्केरिया सल्फ की पीव का रंग सफेद व ज्यादातर खून का छींटा मिला होता है और बदबू भी इतनी नहीं, परन्तु साइलिशिया की पीव पतले पानी के समान दुर्गन्ध युक्त ज्यादा होती है।

बाल की जड़ में कठिन अवस्था होकर पीव जम जाय, नोचने से खून छिटक जाय तब कल्केरिया सल्फ को विनकामाइनर (Vincaminor), सिक्यूटा, सोराइनम (Psorinum), इचिनेशिया के साथ तुलना करें। यदि स्राव गुठली समान कुछ नील वर्ण का हो तो कैली बाइक्रोम के साथ तुलना करें। बार्बर्स-इच इत्यादि में जहाँ पीव चर्म को वेध कर निकले, इस समय सल्फर आयोड, (Sulphur Iod), सिक्यूटा (Cicuta), मरक्यूरियस प्रेसीपिटेलस रबर (Mercurious Pracipitalus Ruber) इत्यादि के साथ तुलना करे।

फेरम फास्फोरिकम

(Ferrum Phosphoricum)

पर्याय नाम—(Phosphate of Iron) फास्फेट आफ आइरन है। फेरी फास्फेट भी इसी का नाम है।

मुख्य कार्य—यह लावणिक पदार्थ शरीर के भीतर अण्डलालिक पदार्थ के साथ मिलकर खून की लोहित कणिका व (जर्रा) हीमोग्लोबिन (Haemoglobin) की वृद्धि करते हैं। यह लोहे के कण शरीर में विद्यमान रहने के कारण बाहर से आक्सीजन (Oxygen) नामक पदार्थ को आकर्षक करके लाते हैं और आक्सीजन वाष्य शरीर के वनावधान व जीवन-शक्ति को स्वाभावतः बढा देते हैं। हम लोग जो रक्त के अन्दर लाल रंग देखते हैं वह सब फास्फेट आफ आइरन (Phosphate of Iron) के कारण होता है। शरीर के भीतर जो सेल्स व कोष (Cells) देखे जाते हैं उनके लिए 'फेरमफास' की आवश्यकता होती है। हर एक रोग की प्रथम अवस्था में चाहे वह ठण्ढ के कारण हो, चाहे चोट (आघात) या दूसरे किसी कारण से हो, 'फेरमफास' नमक यदि प्रयोग किया जाय तब दूसरे नमक के साथ जिससे इसका घनिष्ट सम्बन्ध है, उसी की क्रिया के वैलक्षण घटाने नहीं देता (Ferrum or Iron is the carrier of Oxygen) अर्थात् लौह आक्सीजन नामक पदार्थ को शरीर के भीतर चलायमान कर ले जाते हैं और इस संचालन कार्य में लोहे के साथ 'कैली सल्फ' (K. S.) नमक भी सहायता करता है। जिन सब स्त्रियों व बालक-बालिकाओं का प्लेथोरिक कान्सटीट्यूशन रक्त प्रधान धातुयुक्त शरीर है उन सबके लिए 'फेरम फास' बहुत उपयोगी है। बहुत से चिकित्सक लोग जब ऐसा देखते हैं कि रोगी में रक्तहीनता अवस्था होकर तमाम मासपेशी इत्यादि ढीली पड़ गयी; तब ऐसे रोगियों के लिए लौह व लौहमिश्रित औषधि उपयोगी मानते हैं।

प्रमुख लक्षण

मन (Mind)—मस्तिस्क में रक्ताधिक्यवश पागल के समान भाव हो जाना। अत्यधिक आनन्द के विषय व किसी भी प्रकार के विषय में उत्तेजित हो जाना। शरीर से खून का हिस्सा कम हो जाने के कारण मानसिक दुर्बलता, साधारण विषय का उदास भाव, अति सामान्य कारण से क्रोध व विरक्ति का सचार हो जाये और इस क्रोध के वश मस्तिष्क में रक्त संचय और शरीर में भारीपन हो जाना, तिल का पहाड़ बनना।

मस्तिष्क (Head)—मस्तिष्क मे अधिक रक्त संचय हेतु सिर का दर्द और वेदना एव यह दर्द मस्तिष्क के ऊपर से लेकर चक्षु प्रदेश के नीचे तक हटकर आता है और सिर पीड़ा के कारण दृष्टि का अभाव अर्थात् साफ नहीं दिखलाई देता, दर्द हिलने और नीचे सिर झुकाने से अधिक हो जाना। कान, सिर और नासिका से रक्तस्राव इसके साथ सिर मे पीड़ा रहे तव भी इससे अच्छा फल मिलता है।

चक्षु (Eye)—चक्षु रोग की किसी प्रथम व नवीन प्रदाह-अवस्था में 'कैली म्यूर' (K. M.) के साथ ज्यादातर व्यवहार होता है। अधिकतर पीब आदि जमने की पहली अवस्था में इसका प्रयोग होता है।

कर्ण (Ear) —रक्तहीनता की अवस्था में कर्ण की शूल वेदना के साथ अत्यन्त ज्वाला बोध, आघात, उपघात व ठण्ढ लग कर और किसी कारण से भी कर्ण की प्रथम, प्रादाहिक अवस्था में दर्द के साथ जब ज्वर भाव देखा जाय तब व्यवहार होता है।

नासिका (Nose)—मस्तिष्क प्रदेश में सर्दी लगना (Cold in the Head) अर्थात् अति सामान्य ठण्ढ लगने के कारण यदि कोई सर्दीग्रस्त हो जाय तब इस नमक को 'कैल्केरिया फास' के साथ बारी-बारी से व्यवहार करना चाहिए।

मुखमण्डल (Face)—बालक-बालिकाओं के मुखमण्डल प्रदेश पर देखने से एक प्रकार का छल-छल भाव प्रकाश होता देखा जाता है। मुखमण्डल की प्रदाहिक अवस्था के साथ यदि विसर्प रोग (Erysepelas) पैदा हो जाय तब इस नमक के साथ नेट्रम सल्फ का, निम्न शक्ति एक-एक घण्टे के अन्तर से अदल-बदल कर व्यवहार करना चाहिए।

मुखमध्य (Mouth)—मुख के भीतर श्लैष्मिक झिल्ली आदि प्रदाहित होकर जब रक्त वर्ण धारण कर लेती हैं, मुख के मसूढ़े फूल जायँ और उस स्थान का रंग उजला लालवर्ण हो तब फेरम फास (F. P.) की ३x शक्ति के प्रयोग से बहुत लाभ होता है।

जिह्वा (Tongue)—जिह्वा के ऊपर लेप सदा स्वच्छ और साफ देखा जाता है, परन्तु लाल वर्ण इसकी अधिकतर प्रादाहिक अवस्था का सूचक होता है।

दन्त (Teeth)—प्रथम प्रादाहिक अवस्था के साथ दन्त शूल व भोजन के बाद ही दन्तशूल की पीड़ा व शूल में ठण्ढा जल स्पर्श होने से शान्ति-बोध होता है।

गलमध्य (Throat)—कड़ुआ व अग्रजीभ की प्रादाहिक अवस्था, तालु प्रदेश एव इसके पीछे मुख के अन्दर क्षत व वेदना के साथ प्रदाह, गले मे कठिन स्फीति भाव और दर्द, इस कारण निगलने में बहुत कष्ट अनुभव होता है। डिफ्थीरिया की झिल्ली का प्रकाश भीतर का स्फीति भाव, दर्द, और वह स्थान उजला लाल वर्ण जैसा हो गया ऐसा समझना चाहिए। इस अवस्था में फेरम फास के साथ कैली म्यूर (K. M.) एक-एक घण्टे के बाद व्यवहार करना चाहिए और इसका गुनगुने पानी के साथ व्यवहार और अच्छा फल देता है। स्वर-यन्त्र, गले की नली (वायुनली भुज) अर्थात् गले के अन्दर फेफड़े में जो दो नलियाँ प्रवेश करती हैं उन सब स्थानों से रक्त-

स्राव में घण्टे-घण्टे पर इस नमक की निम्न शक्ति जैसे ३x व्यवहार करने से वहुत ही उपकार होता है।

पाकस्थली (Stomach)—पेट की पाचन-शक्ति का अभाव, इसके भीतर एक प्रकार का दर्द व जलन और यह दर्द आहार के वाद ही वृद्धि पर होता है। पाकस्थली की प्रादाहिक अवस्था में थोड़ा वहुत खाना खाने से दर्द की वृद्धि हो जाती है और इन सव अवस्थाओं के साथ हमेशा सिर में पीडा वर्तमान रहे। क्षुधा वढ़ाने के लिए इस नमक की १२x शक्ति वहुत उपयोगी है।

उदर एवं मल—आन्त्रादि प्रदाह की प्रारम्भिक अवस्था अर्थात् टायफायड व मियादी वुखार की पहली अवस्था में रक्तामाशय, कालरा (Cholera), पेरीटोनाइटिस (Peritonitis) व आँत की आवरक झिल्ली की प्रादाहिक अवस्था में रोगी जव शीत अनुभव करता है, तव इस औषधि का प्रयोग होता है। हार्निया (Hernia) व आँत उतरने के रोगादि की प्रथम प्रादाहिक अवस्था में थोड़ी-थोड़ी देर में कैली म्यूर के साथ 'फेरम फास' व्यवहार होता है। शिशु कालरा (Cholera Infantum) की प्रथम प्रादाहिक अवस्था एव अतिसार में इस औषधि की निम्न शक्ति घण्टे-घण्टे पर गर्म पानी के साथ सेवन कराने से वहुत ही लाभ होता है।

मूत्र (Urine)—पेशाव की थैली के चारों ओर एक प्रकार की मास-पेशी देखी जाती है जिसको स्फिंक्टर मसल्स (Sphincter Muscles) कहते हैं। इन सव पेशियों की जव ढीली अवस्था हो जाय तव पेशाव धारण करने व रोकने की क्षमता का नाश हो जाता है। इन सव क्षेत्रों में इस औषधि से अति उपकार होता है।

पुरुष-जननेन्द्रिय (Male Organ)—प्रमेह रोग की प्रथम अवस्था में कैली म्यूर (K. M.) के साथ वार-वार शुक्रक्षय, पेड़ू की ग्रन्थि का

प्रदाह (Prostate Gland), अण्डकोष व फोते का प्रदाह और इस स्थान का उजला लाल वर्ण, वेदना युक्त, हाथ से छूने से गर्म प्रतीत हो, साथ-साथ ज्वर-लक्षण, जंघा की गिल्टी (Bubo Glands) की सूजन व दर्द के साथ ज्वर भाव। एपीडिडिमाइटिज (Epididimitis), उपकोष प्रदाह (अर्थात् फोतों के ऊपर दोनों तरफ दो छोटे कोष होते हैं जिनको उपकोष कहते हैं)—इन सब में फेरम फास (F. P.) अच्छी तरह से व्यवहार हो सकता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय (Female Organ)—जरायु एवं योनि प्रदेश की प्रदाहावस्था के साथ ज्वर, डिम्ब कोष (Ovaritis) का प्रदाह व तीक्ष्ण शूल के समान दर्द, मालूम होता है कि नीचे की तरफ सब कुछ खिसक कर बाहर निकल जायेगा। स्त्रियों के योनि प्रदेश के चारों ओर की श्लैष्मिक झिल्ली (Mucous Membranes) की शुष्कता, अवस्था प्राप्त स्त्रियों में सहवास कालीन एक प्रकार का कष्ट अनुभव होता है और सहवास में अनिच्छा प्रकट होती है। सहवास तो बहुत बड़ी बात, यदि एक सूक्ष्म वस्तु जैसे पेन्सिल का अग्रभाग योनि द्वार में प्रवेश कराया जाय तब भी बहुत ही कष्ट बोध होता है। कष्टरजः (Dysmenorrhoea) व बाधक पीड़ा में मैग फास (M. P) के साथ फेरम फास (F. P.) का व्यवहार चल सकता है। इस क रजः के साथ किसी-किसी को हमेशा के लिए पेशाब त्याग करने में भी कष्ट पाया जाता है।

गर्भ (Pregnancy)—प्रिगनेन्सी व गर्भावस्था में वमन (Morning Sickness), अजीर्ण युक्त द्रव्य वमन एवं कभी-कभी इन सबका अम्ल युक्त खट्टा स्वाद हो तो नेट्रम फास (N. P.) के साथ इसका व्यवहार होता है। स्तन प्रदाह की प्रथम अवस्था में सिर पीड़ा आदि रहे और स्तन के भीतर दूध का थक्का जमकर एक प्रकार का ज्वर भी प्रतीत हो तब इसकी ३x शक्ति के प्रयोग से सब रोग दूर हो जाते हैं।

रक्त-संचालन-यन्त्र (Circulatory System)—श्वास-यंत्र इत्यादि की सव प्रकार की प्रथम अवस्था में यह प्रयोग होता है जैसे कि वेदना, वेचैनी, प्रवल ज्वर, पूर्ण द्रुत नाड़ी, इन सव अवस्थाओं में ३x शक्ति तीन घण्टे के अन्दर से हलके गर्म पानी में मिलाकर देने से वीमारी आगे नहीं वढने देता है।

पृष्ठ, ग्रीवा, अंग-प्रत्यग (Back, Neck & Extremities)—ठण्ड लग कर कमर व पीठ में दर्द हो जाय व अरिष्ट व ठप भाव। मासपेशी इत्यादि की खिचावट, हिलने-डुलने से वृद्धि, एक-एक सन्धिस्थान में खिंचावट सी मालूम होती है।

श्वास-यन्त्र (Respiratory System)—श्वास नली का प्रदाह (Bronchitis), फेफड़े का प्रदाह (Pneumonia), प्लूराइटिस या प्लूरिसी (Pleuritis or Pleurisy) अर्थात् फेफड़े की ढँकी हुई झिल्ली का प्रदाह, स्वरयन्त्र का प्रदाह (Laryngitis) इत्यादि स्थान में जव तक इस प्रादाहिक अवस्था के साथ दर्द दूर न हो, तव तक फेरम फास (F. P.) का व्यवहार करना चाहिए।

स्नायुमण्डल विधान (Nervous System)—सर्दी इत्यादि लग कर प्रादाहिक अवस्था के वाद स्नायुशूल या ठण्ढ लगकर मस्तिष्क में अधिक रक्त का भाग जमा हो जाना, जैसे मिरगी के रोगी व मूर्च्छा प्राप्त व्यक्ति के मस्तिष्क में रक्त सचय, वालक-वालिकाओं का दन्त उद्गम-कालीन ज्वर।

चर्म (Skin)—सर्व प्रकार की प्रादाहिक अवस्था में यह औषधि व्यवहार होती है। फोड़ा, व्रण, कार्वङ्कल, अगुलवेड़ा (Whitlow) व अगुली के अग्रभाग की सूजन इत्यादि वसन्त (माता) चेचक, खसरा इन सर्व प्रकार के रोगों की प्रथम प्रादाहिक अवस्था के साथ ज्वर रहे या न रहे 'फेरम फास' (F. P.) प्रयोग से सव कष्टों में उपशम व शान्ति हो जाती है।

ज्वर (Fever)—ठण्ढ लगकर सर्दी उत्पन्न होकर व सर्व प्रकार के दाहिक ज्वर की प्रथम अवस्था में जब तक दर्द व ज्वर की कमी न हो तबतक इसका व्यवहार जारी रख सकते हैं। अधिकतर फेरम फास के ज्वर का वेग बढ़ना दिन के एक बजे देखा जाता है।

तन्तुविधान (Tissue)—शरीर के किसी स्थान में आघात, चोट लगना, कुचल जाना, पिस जाना, कट जाना, इत्यादि में जब रक्त संचय या रक्तपात या ज्वर वेदना इत्यादि देखी जाये तब भीतर खाने और बाहर लगाने के लिये लोशन रूप में या सफेद वैसलीन के साथ मलहम रूप में व्यवहार होता है।

निद्रा (Sleep)—मस्तिष्क प्रदेश में अधिक रक्त संचय के कारण निद्रा की कमी व व्याघात, किसी प्रकार की दुर्वलता, मानसिक विकार में निद्रा की यदि कमी हो जाये तब कैलो म्यूर के साथ बारी-बारी से व्यवहार करना चाहिए। ऊँची शक्ति (२००x) नींद लाती है।

वृद्धि और उपशम—पहले यह कह दिया गया है कि फेरम फास (F. P.) के लक्षण में सब अवस्था मे हिलने से वृद्धि व ठण्ढ लगने से आराम बोध होता है। मास व दूध खाने की अनिच्छा, दाँत के दर्द में ठण्डा पानी लगने से आराम।

शक्ति व क्रम (Potency)—साधारणतया इस नमक की ६x, ३x का व्यवहार होता है, परन्तु पुरातन अवस्था व रक्तहीन की अवस्था में इस औषधि की १२x से २०० x शक्ति तक का व्यवहार होता है। परन्तु देर-देर में और थोड़ी-थोड़ी मात्रा मे, क्योंकि लोहे का अंश अधिक दिन तक व्यवहार करने से आराम के स्थान पर कुफल ही अधिक देखा जाता है।

इस नमक की होमियोपैथिक औषधियो के साथ तुलना—विलियम बोरिक साहब की मेटेरिया मेडिका में यह कहा गया है कि बुखार की प्रथम दाहिक अवस्था में फेरम फास का जेलसिमियम (Gelsimium)

एक तरफ और दूसरी तरफ एकोनाइट और बेलाडोना का मध्यवर्ती स्थान माना जाता है। बहुत से बालकों के लिए जो खाने के एक-दो ग्रास खाते ही पाखाने को दौड़ते हैं, फेरम फास ३x खाना खाने के एक घण्टा पहले एक मात्रा देनी चाहिये और चायना ३०x की एक मात्रा खाना खाने के एक घण्टे बाद देनी चाहिये।

कैली म्यूरियेटिकम

(Kali Muriaticum)

पर्याय नाम—इसी का दूसरा नाम क्लोराइड आफ पोटाश (Chloride of Potash) एवं कैली क्लोरिकम (Kali Chloricum) है। बहुत से व्यक्ति इन दोनों नामों को भिन्न समझते हैं, परन्तु वास्तव में दोनों एक ही वस्तु के नाम हैं।

मुख्य कार्य—हमारे शरीर में कैली म्यूर (K. M.) की क्रिया लगभग नेट्रम म्यूर (N. M.) के अनुरूप व समान देखी जाती है।

शरीर रक्त में यदि कैली म्यूर (K. M.) का अभाव हो जाय तब जो कुछ फाइब्रिन (Fibrin) व सूत के समान पदार्थ अकार्यकारी हो गया है, वह सब चर्म के नीचे जमा होकर छोटी-छोटी गुटिका, फुन्सी आदि के रूप में प्रकाश हो जाता है।

शरीर की नाना रूप की व्याधियों का सञ्चार इस लवण के अभाव से होता है। इस नमक के साथ फाइब्रिन (Fibrin) व सूत समान पदार्थ का रासायनिक क्रिया का सम्बन्ध होने के कारण जब इस नमक के अभाववश ये सूत की भाँति पदार्थ अकार्यकारी हो जाते हैं, तब प्राकृतिक नियमानुसार इन सब वस्तु व माद्दे को किसी रूप में व किसी मार्ग से बाहर निकालने की चेष्टा होती है। अतः यह सब खराब माद्दा शरीर के नासारन्ध्र व

छिद्र (सुराख) के द्वारा नाना रूप रोग में प्रकाश होता है जैसे फेफड़े से बाहर निकले तब खाँसी एव फेफड़े आदि अच्छी तरह से प्रादाहित व स्फीति हो जाने से इसी को न्यूमोनिया कहा जाता है। नासिका मार्ग से निकलने की सर्दी, सूत के समान पदार्थ श्लैष्मिक झिल्ली के साथ जमा हो जाय तो उसको प्ल्यूरिसी (Pleurisy) व फेफड़े की आवरक झिल्ली का प्रदाह पेरिटोनाइटिस (Peritonitis) व आंत के आवरक पर्दे का प्रदाह क्रूप कफ (Croup Cough) घूँघरी खाँसी, डिफ्थीरिया (Diphtheria) व मुख के भीतर श्लैष्मिक झिल्ली का प्रदाह आदि-आदि नाम से रोग हो जाते हैं। सब प्रकार की प्रादाहिक पीड़ा में जो स्राव निर्गत होते देखा जाता है, उसके साथ यही सूत के समान पदार्थ होता है।

इस नमक का परिचायक लक्षण यह है कि जिह्वा एवं टासिल आदि प्रदेश के ऊपर सफेद (मोटा लेप) पुरुलेप वर्तमान रहता है। हम लोग जो कुछ श्लैष्मिक झिल्ली के चारों ओर श्वेत लेप देखते हैं, सूत की भाँति के पदार्थ के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। कोष्ठबद्धता व कब्ज, उदरामय, डिफ्थीरिया, न्यूमोनिया, ब्राकाइटिस, चर्मरोग यथा वसन्त व माता, छाजन इत्यादि, टीका देने के बाद का कुफल, आमाशय, मोतियाबिन्द, कर्ण पीड़ा, यकृत की वृद्धि व क्रिया में धीमी चाल व ठप भाव, शोथ, पेट में जल-संचय, हृत्पिंड की पीड़ा, पुराना उपदश, प्रमेह पीड़ा, स्फोटक, बड़ा कार्बङ्कल, अग्नि दाह, विसर्प रोग, ब्यूबो ग्लैण्डस, (Bubo Glands) जंघा की ग्रन्थि की सूजन, टासिल की विवृद्धि, कर्णमूल प्रदेश से स्फीति, स्तनप्रदाह, इस प्रकार के बहुत से रोगों में जब इस प्रकार का परिचायक लक्षण मिल जाय अथवा साथ-साथ हों तब कैली म्यूर (K. M.) औषधि से विशेष उपकार होता है। छोटी माता व वसन्त जब भयानक रूप से नगर व देश मे फैल जाता है तब कैली म्यूर (K. M.) प्रतिषेधक रूप (Preventive), में यदि हर रोज २–३ खूराक करके व्यवहार किया जाय, तो इस भयानक रोग से छुटकारा हो सकता है।

प्रमुख लक्षण

मन (Mind)—रोगी सोचता है कि उसको विना खाये या व्रत की अवस्था में दिन व्यतीत करना पड़ेगा।

मस्तक (Head)—जिह्वा के ऊपर के श्वेत लेप के साथ पीड़ा, यकृत प्रदेश का कार्य जब अच्छी तरह से नहीं होता है अर्थात् यकृत क्रिया के वैलक्षण हेतु सिर पीड़ा के साथ वमन होना, क्षुधा प्रायः नहीं रहती है, वरन् कोष्ठवद्धता व कब्ज की अवस्था, शिशु के मस्तक पर खुरण्ड पड़ जाना (क्रस्टा लेक्टा—Crusta Lacta), मेनिन्जाइटिस (Meningitis) व मस्तिष्क की आवरक झिल्ली के प्रदाह की द्वितीय अवस्था में यह प्रयोग होता है।

चक्षु (Eye)—जब चक्षु की पीड़ा में श्वेत वर्ण के गाढे श्लेष्मा के समान कीचड़ निकलते देखा जाय तब भीतर, बाहर अर्थात् खाने और लगाने दोनों प्रकार से इसका प्रयोग होता है।

साराश यह है कि चक्षु रोग की यह प्रधान औषधि है, परन्तु इस औषधि का विशेष परिचायक लक्षण देखकर व्यवहार करना चाहिये।

कर्ण (Ear)—कान के चारों ओर की ग्रन्थि का स्फीति भाव व जिह्वा के भीतर सफेद व तनिक मटमैला भाव, साथ-साथ कर्ण प्रदेश में दर्द, टासिल (Tonsil) आदि का प्रदाह, यूस्टेशियन ट्यूब (Eustachian Tube) व कर्ण नली के स्फीति भाव के समय कान के भीतर टनटन दर्द 'फेरम फास' (F. P.) के साथ पर्याय क्रम से दें।

नासिका (Nose)—ठंढ व सर्दी लग कर नासिका का छेद वन्द हो जाना, उसके साथ सफेद वर्ण का श्लेष्मा निर्गत होता है एव जिह्वा के ऊपर गाढ़ा श्वेत व मटमैला लेप।

नाक से श्लेष्मा सहज रूप से नहीं निकलता है एवं चिपटा-चिपटा श्लेष्मा जोर-जोर से साँस बाहर फेंककर निकालना पड़ता है। कभी तीसरे पहर को नाक से खून का स्राव। उपदंश जनित कारण से नासिका की हड्डी इत्यादि आक्रान्त हो जाय तब दूसरे नमक की, अवस्था विशेष पर विचार कर जिस नमक की आवश्यकता हो उसके साथ 'कैली म्यूर' (K. M.) को अवश्य रखना चाहिये।

मुखमण्डल (Face)—बालक के मुख के भीतर सफेद-सफेद छोटे क्षत के समान देखा जाता है।

कभी-कभी स्तन पिलाने वाली स्त्रियों के भी मुँह के भीतर छाले इत्यादि पड़ने का भाव देखा जाता है।

दन्त (Teeth)—तसूढ़े की स्फीति के कारण दाँत में दर्द।

जिह्वा (Tongue)—जिह्वा के ऊपर चिपटा-चिपटा श्वेत व मटमैला लेप, जिह्वा की शुष्कता प्रदाह भाव और नक्शे की भाँति चित्रित हो।

गल मध्य (Throat)—टासिल (Tonsil) आदि की स्फीति होकर पीब उत्पन्न होने के पहले नवीन व पुरातन प्रदाह में इसका विशेष कार्य देखा जाता है।

सर्वदा स्मरण रखना चाहिये कि यह औषधि गले की ग्रन्थि आदि के स्फीति भाव, दर्द इत्यादि के लिये जिस प्रकार खायी जाय, उसी प्रकार इसकी निम्न शक्ति को गर्म पानी में घोलकर दिन में ३—४ बार कुल्ला भी करना चाहिये। ऐसा करने से बहुत लाभ होता है।

पाकस्थली (Stomach)—यकृत प्रदेश का पित्त आदि वैलक्षण हो जाने से जिस प्रकार 'नेट्रम सल्फ' (N. S.) की सहायता की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार अधिक पीब जमा हो जाने के कारण जिहवा प्रदेश के ऊपर सफेद व थोड़ा मैल सफेद लेप देखा जाता है तो इस औषधि का व्यवहार होता है।

उदर एवं मल (Abdomen & Stool)—पित्त का स्राव यदि कम हो व ठीक से भुक्त वस्तु के साथ न मिलने पावे, तब ठीक से पाचन क्रिया नहीं हो सकती है। इसी प्रकार यकृत की क्रिया बिगड़ जाने से कोष्ठ-बद्धता आ जाती है।

सूतिका अवस्था की कब्ज की दशा में भी यही प्रयोग होता है। मियादी ज्वर में श्वेत लेप से आवृत जिह्वा, फीके वर्ण के साथ पतला मलस्राव, पेट फूला रहे, हाथ का स्पर्श सहन नहीं होता है, इसी प्रकार टाइफस फीवर (Typhus Fever) की कोष्ठबद्धता में भी यह प्रयोग होता है।

मूत्र-यन्त्र (Urinary Organ)—मूत्र थैली, ब्लैडर (Bladder) की प्रथम प्रादाहिक अवस्था में जब सफेद गाढ़ा चिपटा-चिपटा श्लेष्मा के समान स्राव निर्गत होते देखा जाय अर्थात् मूत्र-थैली की नवीन व पुरातन अवस्था के प्रदाह (In case of Cystitus) में यह एक विशेष फलदायक औषधि है।

पुरुष-जननेन्द्रिय (Male Organ)—डाक्टर शुशलर साहब 'कैली-म्यूर' (K. M.) को 'नेट्रम फास' (N. P.) के साथ प्रमेह पीड़ा की सर्वोत्तम औषधि समझते हैं।

स्त्री-जननेन्द्रिय (Female Organ)—श्वेत प्रदर दूध के समान सफेद गाढ़ा स्राव मगर किसी प्रकार की जलन व उत्तेजना नहीं देखी जाती है। जरायु मुख एव ग्रीवा की टोटी पर क्षत हो जाना, उस स्थान से चिपकदार स्राव निकलते देखा जाय तो इस नमक का २x चूर्ण का सफेद वैसलीन के साथ मलहम बनाकर प्रयोग करना चाहिये। मासिकधर्म की कुछ गड़बड़ क्रिया अर्थात् कभी ऋतु बन्द हो जाय, कभी शीघ्र होने लगे, कभी बहुत विलम्ब में ऋतु होने पर अधिक स्राव देखा जाता है, रक्त का वर्ण काला चिपचिपा व मलीन। यदि ऋतु के स्राव का रंग बिल्कुल

कोल्तार के समान हो तब कैली फास (K.P.) के साथ पर्यायक्रम से देना चाहिए।

प्रेगनेन्सी व गर्भ—गर्भ अवस्था में प्रातःकालीन वमन (Morning Sickness) और यह वमन सफेद श्लेस्मा युक्त हो व जिह्वा पर सफेद लेप से आवृत्त हो।

स्तन प्रदाह में एक कटोरा गर्म पानी में लोशन बनाकर आक्रान्त स्थान को गर्म पट्टी में भींगा रखना चाहिए।

श्वास-यन्त्र (Respiratory Organ)—श्वास यन्त्रादि के प्रदाह की दूषित द्वितीय अवस्था में यह प्रयोग होता है। इसका विशेष परिचायक लक्षण यह है कि गाढ़ा चिपकदार सफद वर्ण का श्लेष्मा व दुग्धवत श्लेष्मा के समान निर्गत होता है। यदि क्षय खाँसी के साथ इस प्रकार के लक्षण वर्तमान रहें तब इस औषधि का प्रयोग होता है।

रक्त संचालन यन्त्र (Circulatory System)—हृत्पिण्ड प्रदेश का स्पन्दन व धड़कन, हृत्पिण्ड का अकसर बढ़ जाना व हृदय पिण्ड में अधिक रक्त सञ्चय, कभी-कभी आवश्यक झिल्ली का प्रदाह के साथ-साथ स्फीति भाव वर्तमान रहे, तब इस नमक का प्रयोग होता है।

पृष्ठ, ग्रीवा और अंग-प्रत्यंग के अग्रभाग (Back, Neck & Extremities)—इस नमक की विशेषता यह है कि यदि किसी स्थान पर प्रथम प्रादाहिक अवस्था के उपरान्त स्फीति इत्यादि रह जाय तो उसको हटाने में यह आश्चर्यजनक कार्य करता है। ग्रन्थि प्रदेश की स्फीति के साथ, आमवात (Rheumatism), रीढ का दर्द इत्यादि जो हिलने-डुलने से बढ जाय, इसके लिए ही नहीं वरन् वात, रीढ़, सक्रान्त बुखार आदि के लिए भी इसका प्रयोग होता है।

चर्म (Skin)—किसी प्रकार का चर्म रोग हो जब उद्भेद आदि के भीतर से सफेद सूत के समान पदार्थ सञ्चित अवस्था में देखा जाय और कभी मैदे के समान सफेद चूर्ण निकलते देखा जाय, वसन्त माता

आदि रोग मे खराव टीका इत्यादि देने के कुफल में नाना रूप की चर्म पीड़ा इत्यादि उपद्रव की अवस्था विशेष में कभी 'नेट्रम फास' (N. P) कभी 'साइलिशिया' के साथ अदल-वदल कर देना चाहिए ।

छोटे-छोटे फोड़ों से लेकर वड़े-वड़े कार्वङ्कल के लिए उस समय तक जव तक उसमें पीव न पड़े, इसका अच्छी तरह से व्यवहार चल सकता है ।

तन्तु विधान (Tissue)—रक्तहीनता के साथ यदि चर्म रोग हो तव और दूसरे नमक जो चर्म रोगों के लिए भिन्न-भिन्न लक्षणों में उपयोगी हैं, उनको तो देना चाहिए परन्तु वीच-वीच में दो एक मात्रा करके 'कैली म्यूर' (K. M.) का भी सेवन कराना चाहिए ।

स्नायुमण्डल विधान (Nervous System)—चर्म रोग इत्यादि भीतर दव जाने के कारण वहुत-सी स्नायविक पीड़ाएँ हो जाती हैं जैसे मूर्च्छा रोग, मिरगी रोग—इन सव में जिह्वा के लक्षण देखकर कभी मैग्नेशिया फास (M. P.) कभी कैली फास (K. P.) इत्यादि के साथ यह औषधि अधिक दिन तक व्यवहार करने से स्नायुमण्डल की नाना रूप पीड़ा से वहुत व्यक्ति वच सकते हैं ।

ज्वर(Fever)—हम भली भाँति जानते हैं कि यह नमक साधारणतया शारीरिक यन्त्र की विकृत अवस्था प्राप्त होकर किसी अंग की प्रदाह की द्वितीय अवस्था में व्यवहार होता है, अर्थात् दूसरे-दूसरे उपसर्ग व उपद्रवों के साथ ज्वर, यह ज्वर चाहे आरक्त ज्वर (स्कारलेट फीवर—Scarlet Fever), गैस्ट्रिक फीवर (Gastric Fever), पाकाशय घटित मियादी ज्वर टायफायड (Typhoid), सूतिका घटित ज्वर (यकृत प्रदाह आदि का ज्वर, यकृत में दर्द रहे व पित्त के अभाव हेतु कोष्ठबद्धता), छोटी खसरा का ज्वर, वसन्त व स्फोटक आदि संयुक्त सन्निपातिक क्षेत्र का ज्वर, इन सवकी द्वितीय अवस्था के ज्वर में यह व्यवहार होता

है, परन्तु जिह्वा के लक्षण आदि और कोष्ठबद्धता है कि नहीं आदि बातों पर ध्यान रखना चाहिए।

वृद्धि व उपशम—तेल की बनी हुई चीज परेठा इत्यादि व भारी गुरुपाक भोजन के बाद पाकस्थली व आँत इत्यादि पर नाना रूप के उपद्रव हो जायें, दर्द इत्यादि में हिलने-डोलने से वृद्धि हो तो इसे देना चाहिए।

क्रम व शक्ति (Dosage)—डॉ० सुशलर साहब एवं अन्य बहुविज्ञ चिकित्सकों ने इसकी ६X शक्ति अधिकतर भीतरी प्रयोग करने का उपदेश दिया है। निम्न शक्ति ३X गहरा करने में (जैसे डिफ्थीरिया रोग में) अधिकतर प्रयोग होता है। यदि ६X शक्ति के व्यवहार से लाभ नहीं हो तो धीरे-धीरे १२X से २००X तक इसका व्यवहार चल सकता है।

'कैली म्यूर' नमक की अन्य होमियोपैथिक औषधियों के साथ तुलना (Comparison)—होमियोपैथिक क्षेत्र में जिस प्रकार प्रथम प्रादाहिक अवस्था में एकोनाइट की आवश्यकता समझी जाती है उसी प्रकार बायोकेमिक औषधि में प्रथम प्रादाहिक अवस्था में साधारणतः फेरम फास (F. P.) देते हैं, परन्तु प्राथमिक अवस्था के पश्चात् द्वितीय अवस्था में—द्वितीय अवस्था माने यह है कि किसी स्थान से दर्द इत्यादि हटकर रस संचय होकर स्फीति भाव हो जाता है तो जिसको एक्ज्यूडेशन (Exudation) अवस्था कहते हैं—कैली म्यूर, (K. M.) फेरम फास (F. P.) के बाद प्रयोग होता है उसी प्रकार होमियोपैथी में एकोनाइट के पश्चात् द्वितीय अवस्था में अवस्था पर विचार कर ब्रायोनिया, बेलाडाना (Belladonna), जेलसीमियम (Gelsemium) इत्यादि बहुत-सी औषधि व्यवहार करते हैं। कैली म्यूर, (K. M.) विशेषतः दर्द इत्यादि के पश्चात् स्फीति भाव व सूजन इत्यादि में दिया जाता है।

यकृत की बहुत-सी खराबियों व विकृत अवस्था हेतु **कैली म्यूर** (K. M.) के साथ ब्रायोनिया, बेलाडोना, मरक्यूरियस साल, (Mercurious Sol.) सल्फर, औरम मेटालिकम, एगैरिकस, नेट्रम सल्फ इन सब अच्छी-अच्छी औषधियों की तुलना कर सकते हैं ।

यकृत खराव होकर जब पतला अनपचा पाखाना होता है, **पल्सेटिला** के साथ तुलना होती है ।

केली फास

(Kali Phossphoricum)

पर्याय नाम—इसी का दूसरा नाम फास्फेट आफ पोटश (Phosphate of Potash) है।

मुख्य कार्य—यह स्नायुमण्डल विधान के लिए एक परम और अति आवश्यक पदार्थ माना जाता है। यह साधारणतया सभी जानते हैं कि शरीर के अन्दर जो कुछ कार्य होता है उसको यह स्नायुमण्डली ही गाइड करती है व उसकी पथ-प्रदर्शक हैं ।

इस लवण के अतिरिक्त और किसी से तन्तु इत्यादि का गठन कार्य भली प्रकार नहीं हो सकता। यह स्नायुमण्डली का बल विधान व क्षमता रक्षा करके जीवन रक्त को स्थिर (कायम) रखता है। यह लवण शरीर में वर्तमान रहने के कारण बहुत प्रकार की पचनशील क्रिया (Gangrenous Stage—व सड़ने की अवस्था) शरीर में सृष्टि नहीं होने देती है। टाइफस (Typhus), टायफायड (Typhoid), पचनशील क्रिया लग सकती है, इस अवस्था में अथवा किसी प्रकार के दूषित घाव होकर तन्तु इत्यादि की ध्वंसशील अवस्था साथ-साथ दुर्बलता, यह लवण शरीर के भीतर रहने के कारण इसके बल विधान को एकदम नष्ट नहीं करने देता है।

अण्डलाल के साथ मिश्रित होकर यह मस्तिष्क का ग्रेमेटर (Graymatter) व एक प्रकार का धूसर चूर्ण पदार्थ प्रस्तुत व तैयार करता है। जैसा रक्त के ऊपर नेट्रम म्यूर (N. M.) का कार्य बहुत देखा जाता है उसी प्रकार मांसपेशी के रस व सीरम (Serum) के ऊपर इस नमक का बहुत अधिकार देखा जाता है।

अतः मस्तिष्क प्रदेश की सब प्रकार की स्नायविक पीड़ा के सम्बन्ध में इसे प्रधान औषधि समझना चाहिए। उन्माद रोग की भी यह एक अति प्रधान औषधि है। इस रोग में इस औषधि को दीर्घ दिन धारावाहिक रूप में प्रयोग करने से बहुत बड़े-बड़े बायोकेमिक चिकित्सकों का सिद्धान्त है कि गवर्नमेंट के पागलखाने का बहुत-सा व्यय कम हो सकता है।

अति इन्द्रिय संचालन हेतु मनो व शुक्रक्षय, उसके कारण नाना प्रकार के मानसिक व मस्तिष्क रोग की उत्पत्ति इन सब क्षेत्रों में कैली फास (K. P.), कल्केरिया फास (C. P.) के साथ टॉनिक (Tonic) रूप में प्रयोग होता है। जो बालक सर्वदा रोने के आदी हैं, भीत चित्त, घर से बाहर निकलते ही डर जाते हैं, बहुत लोगों के समागम जैसे बड़े-बड़े मेले, सभा, पैठ इत्यादि इन सब में इस प्रकृति के बालक जाने से डरते हैं। मूल बात यह है कि स्नायु प्रधान व वात प्रधान व्यक्ति के लिए यह औषधि उत्तम फल देती है। वृद्ध अवस्था में दिन-दिन सूखते जाना व रक्त कम हो जाना, दृष्टिशक्ति की ही हीनता इत्यादि में स्मरण रखना चाहिए कि यह अवस्था इस नमक के कारण हुई है।

मन (Mind)—पहले ही कहा गया है कि यह नमक कैली फास (K. P.) स्नायु एवं मस्तिष्क रोग की सर्वप्रथम औषधि है। यह सब जानते ही हैं कि देह और मन के साथ परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। देह की किसी प्रकार की विलक्षता व विकार अवस्था हेतु जैसे मन पर उसका प्रभाव

होता है वैसे ही मानसिक नाना रूप विकार व वड़वड़ी हेतु देह पर भी उसका प्रभाव होता है।

दूसरे के ऐव व दोष देखने मे सर्वदा चेष्टा करते हैं, भय, दुःख, (नेट्रम म्यूर), शोक इत्यादि का कुफल जो शरीर और मन के ऊपर पहुँचता है, उन्माद रोग सब समय में एक कोने में चुपचाप वैठे रहने की इच्छा, रात को नींद ही नहीं आती, आकाश-पाताल का ख्याल करते रहना, मन में आता है कि इस जीवन को और रखना व्यर्थ है, हृदय मे दुःख व निराशा का वोझ भरा हुआ, मन वहुत चिड़चिड़ा एवं शारीरिक दुर्वलता व यन्त्रादि विकृतावस्था हेतु थोड़ी-सी ही विरुद्ध वात कहने से मूर्च्छा आ जाना व आँख से आँसू निकल पड़ना, स्त्रियों की नाना रूप पीड़ा जैसे हृदय रोग, हिस्टीरिया रोग में कभी हँसना, कभी रोना, प्रेम में हताश होना (Disappointment from Love), गम्भीर निराशा होकर हिस्टीरिया ग्रस्तभाव, गर्भकालीन और संतान प्रसव के समय कष्ट और स्नायविक विकार; सूतिका उन्माद इत्यादि।

मस्तिष्क (Head)—यह पहले ही कहा जा चुका है कि कैली फास स्नायु प्रधान, वायु प्रधान व्यक्ति के लिए वहुत उपयोगी औषधि है। किसी को सिर पीड़ा के साथ अधिक क्षुधावोध करना, कमजोरी व सिर घूमने के कारण ऊपर को जरा देखने से चक्कर आ जाता है, निद्रा के पश्चात् उठ वैठने व खड़ा होने से गिर पड़ने का भय, स्कूल की वालिका की सिर पीड़ा व कभी-कभी अनिच्छा के साथ सिर कम्पन।

चक्षु (Eye)—किसी प्रकार की गम्भीर पीड़ा जैसे टायफायड (Typhoid), डिफ्थीरिया रोग को भोगने के पश्चात् चक्षु की वक्र दृष्टि व स्ट्रेवविस्मस (Strasbismus) एवं चक्षु की पेशी दुर्वलता के कारण पलक खींच कर ऊपर उठा नहीं सकते अर्थात् फालिज के समान अवस्था व टोसिस (Ptosis), चक्षु के भीतर रेता व कुछ वाहर का पदार्थ अटका हुआ अनुभव करना।

कर्ण (Ear)—कर्ण के भीतर की स्नायु की दुर्बलता व ठप भाव के कारण कान से ऊँचा सुनना, कान के भीतर एक प्रकार का गोल माल शब्द अनुभव करना, जब कान इत्यादि में क्षत होकर दुर्गन्धयुक्त काली पतली रक्त मिश्रित पीब अवस्था के साथ सडे गन्ध युक्त रस की भाँति पदार्थ निर्गत होते देखा जाय।

नासिका (Nose)—जिन लोगों की नाक से कभी-कभी नकसीर बहती है और जिस कारण से भी हो खून, रग इत्यादि देखकर **फेरमफास** (F. P.) कभी कैली म्यूर (K. M.) इत्यादि के साथ पर्यायक्रम मे थोडे दिनों तक व्यवहार करना चाहिए।

पाकस्थली (Stomach)—बहुत दिन पीड़ा भुगतने के बाद दुर्बलता व अवसन्नता हेतु व मानसिक कष्ट, दुःख, चिन्ता, शोक इत्यादि के कारण यकृत प्रदेश का कार्य भली-भाँति सञ्चालन न होने से दर्द या किसी पीड़ा को भोगने के बाद अस्वाभाविक व अतिक्षुधा, हर समय खाना ही खाना सूझता है, खाने के बाद ही पेट खाली, (कभी यह अवस्था चुनचुने पेट मे होने के कारण होती है तब नेट्रम फास (N. P.) के साथ पर्याय क्रम मे)।

उदर एवं मल (Abdomen and Stool)—कठिन पीड़ा जैसे टायफायड (Typhoid) इत्यादि की तृतीया अवस्था मे जब ऊपर की स्फीति, दुर्बलता, प्रलाप बकना, सडे हुए दुर्गन्ध युक्त मल, जिह्वा पर शुष्कता इत्यादि अवस्था में **कल्केरिया फास** के साथ इस नमक के बारी-बारी से व्यवहार से बहुत उपकार देखा जाता है।

मूत्र-यन्त्र (Urinary Organ)—हर समय यह याद रखना चाहिए कि स्नायु प्रधान और वात प्रधान व्यक्ति के ऊपर **कैली फास** का सर्व प्रधान कार्य है। पेशाब आदि पीड़ा में जहाँ स्नायु विकार घटित कारण समझा जाय तब इस नमक पर दृष्टि रखनी चाहिए जैसे स्नायविक दुर्बलता हेतु, बार-बार पेशाब और पेशाब भी अधिक परिमाण मे होना, पेशाब

की नली के भीतर जलन, मूत्र धारण मे अक्षमता अवस्था में लगातार बूँद-बूँद पेशाव गिरना, शिशु इत्यादि की निद्रावस्था में शय्या पर मूत्र त्याग।

मुखमण्डल (Faee)—मुखमण्डल के साथ स्नायु शूल का रोग प्रोसोपेल्जिया (Prosopalgia), रक्तहीनता व दुर्वल अवस्था प्राप्त होकर जव मुख के ऊपर पाडु वर्ण की आभा पड़ जाय, मुख के चारों ओर की पेशी दुर्वलता हेतु नाना प्रकार को भंगिमा, पेशी का (जैसे कोई मुँह वनाता है) पक्षाघात अवस्था पैरालिसिस आफ दी फेशियल मसल्स (Paralysis of the Facial Muscles)।

मुखमध्य (Mouth)—मुख के भीतर दुर्गन्ध व सडा हुआ क्षत व कभी मसूढे के चारों ओर इस प्रकार का क्षत एवं सड़ा हुआ दुर्गन्ध युक्त मलाई की भाँति स्राव निर्गमन होना, मुख व नासिक से सड़ा हुआ दुर्गन्ध युक्त स्राव वहना, इन सव क्षेत्रों में कैली म्यूर (K. M.) के साथ अदल-वदल कर व्यवहार चल सकता है।

दन्त (Teeth)—जिन व्यक्तियों के थोडा वहुत ठण्ड लगने से दन्त के मसूढ इत्यादि फूल जायँ और दन्त शूल के समान अवस्था प्राप्त हो तो मैग्नेशिया फास के साथ अदल-वदल कर सेवन करना चाहिए।

जिह्वा (Tangue)—मुख से दुर्गन्ध युक्त हवा निकलती है, जिह्वा के ऊपर हल्का वादामी रग के समान व सरसों पिसने के वाद जो घुला हुआ मैल युक्त देखा जाता है उसी के समान लेपन, टायफायड (Typhoid) लक्षण युक्त अवस्था, जिह्वा का अत्यन्त शुष्क भाव, अच्छी तरह से जिह्वा निकाल नहीं सकते।

गलमध्य (Throat)—गले के भीतर मासपेशी इत्यादि स्नायविक कारण हेतु पक्षाघात अवस्था, गले के भीतर सड़ा हुआ घाव, कठिन पीड़ा जैसे डिफ्थीरिया इत्यादि भुगतने से दृष्ट शक्ति की क्षीणता, स्वरयन्त्र की नसें, वोकल कार्ड (Vocal Card) इत्यादि की पक्षाघात अवस्था, कैली म्यूर के साथ अदल-वदल कर देना चाहिए।

पुरुष जननेन्द्रिय (Male Organ)—उपदंश रोग में पचनशील गलित क्षत, प्रमेह पीड़ा से खून का पेशाब, सहवास की प्रबल इच्छा, रात्रि समय में कार्डी (Chordee) (फेरम फास) व कष्ट के साथ लिंग उत्थान या अति कष्टकर शुक्र, किसी को एकदम ही ध्वजभंग व नामर्दी अवस्था प्राप्त हो, किसी की काम की इच्छा एकदम ठप हो जाय, सहवास से बाद अधिक दुर्बलता अनुभव करना और दृष्टि शक्ति की क्षीणता, किसी को बिना उत्तेजना के ही वीर्यपात हो जाय।

स्त्री-जननेन्द्रिय (Female Organ)—रोगी स्त्रियों की स्नायविक मण्डलो के वैलक्षण्य हेतु रोग-प्रवण स्वभाव (तुनक मिजाज) अर्थात् थोड़ी बात कहने से ही क्रोधित और उत्तेजित हो जाना, मुँह फीका, अनियमित ऋतुस्राव, साधारणतः बहुत विलम्ब से ऋतु प्रकाश पाये या स्राव की मात्रा थोड़ी, कभी-कभी ऋतु दो-तीन महीने तक बन्द रह जाता है, ऋतु का रंग कभी उजला लोहित 'फेरम फास' के साथ।

डिम्बाशय या ओवरी में दर्द, पेट की बाईं तरफ दर्द, सेक्रम (Secrum) व कटि प्रदेश में नीचे त्रिकोणाकार हड्डी के नीचे यन्त्र प्रदेश का असहनीय दर्द, निम्फोमेनिया (Nymphomenia) व कामोन्माद पीड़ा एव ऋतु के बाद अधिक संगम इच्छा जो कि दमन करना कठिन है, जिन स्त्रियों को बहुत कष्टकर रोग को भुगतने के पश्चात् अत्यन्त दुर्बल रक्तहीन व अवसन्न भाव हेतु मासिकधर्म कुछ दिन के लिए एकदम बन्द हो जाय, उन सबके लिए कुछ दीर्घ दिवस अवस्था विशेष मे यदि हिस्टारिया वाली रोगिणी हो तो **मैग फास** के साथ और पाडु वर्ण दुर्बल व रक्तहीन होने से **कल्केरिया फास** के साथ पर्याय क्रम में व्यवहार करने से शरीर में बल सचार करता है और ऋतु सम्बन्धी दोष इत्यादि को हटाकर स्वाभाविक नियम पर लाता है।

गर्भ (Pregnancy)—अति दुर्बल स्वभाव की स्त्रियाँ जिनको सर्वदा

गर्भपात की आशका रहती है, कल्केरिया फास और कल्केरिया फ्लोर के साथ पर्याय-क्रम में कुछ दिनों तक व्यवहार करना चाहिए।

श्वास-यन्त्र (Respiratory Organs)—ऊँची आवाज से जोर लगाकर भाषण देना, चिल्लाना, गायन करना इसलिए अत्यन्त दुर्बलता के साथ स्वरभग, (फेरम फास)।

रक्त-संचालन यन्त्र (Circulatory Organs)—परीक्षा से नाडी की अवस्था अति क्षीण, दुर्बल, हाथ की ऊँगली मे मृदु-मृदु आघात, कभी नाड़ी हाथ मे मिलती है, कभी ठप हो जाती है।

पृष्ठ, ग्रीवा व अग-प्रत्यंग (Back, Neck and Extremities)-समस्त देह व हस्त-पाद का आशिक पक्षाघात, मेरुदण्ड प्रदेश की कोमल अवस्था या रक्तहीनता, इस कारण रोगी स्वाभाविक अवस्था में चल-फिर नहीं सकता है, जब चलने लगे तब पैर ठीक जगह में नहीं पड़ता है, कभी चोट व ठोकर लग जाती है, पीठ के मध्यस्थल में शूल चुभने का-सा दर्द अनुभव करे।

स्नायुमण्डल (Tissue)—पक्षाघात फालिज के लिए कैली फास एक अमूल्य औपधि मानी जाती है।

चर्म (Skin)—अगुलवेडा रोग या (Felon or Whitlow) फेलोन या ह्विटलो में जब दुर्गन्ध युक्त पीब निकलती है साइलिशिया के साथ व्यवहार करना ही चाहिए, इसके अतिरिक्त वह स्थान यदि सख्त हो, तब कल्केरिया फ्लोर साथ-साथ देना उचित है।

ज्वर (Fever)—जब गम्भीर पीड़ा के ज्वर इत्यादि अवस्था में मस्तिष्क विकर वैलक्षण्य हेतु धीमा-धीमा ज्वर मे परिणत हो जाता है एव इन सब भयानक व दूसरे साघातिक ज्वर अवस्था में।

निद्रा (Sleep)—नाना रूप यन्त्रादि पर इस कैली फास नमक की क्रिया का जहाँ-जहाँ वर्णन किया गया है वह सब भली प्रकार याद रखने

से निद्रा के ऊपर 'कैली फास' का कौन-कौन अवस्था मे किस प्रकार प्रयोग हो सकता है इसको समझने में कोई कठिनाई न होगी, तब भी दो-चार लाइन संक्षिप्त में लिखना उचित है।

वृद्धि व उपशम—अत्यधिक मानसिक श्रम, दुश्चिन्ता, गोलमाल आदि लक्षणों की वृद्धि हो जाती है, प्रातःकाल में दर्द की वृद्धि, बहुत देर तक बैठे रहने के बाद उठने की कोशिश करने से व ठंढ से वात इत्यादि में रोग की वृद्धि, स्त्रियों को ऋतु के पहले सब लक्षणों की वृद्धि और ऋतु जारी होने के पश्चात् सब शान्ति, सोचने से रोग बढ़े, दूसरी तरफ मन लगाने से कम हो।

क्रम व शक्ति (Dosage)—अनुभव में देखा गया है कि इसी नमक की उच्च शक्ति से निम्न शक्ति अधिक लाभप्रद है, जैसे श्वास, खाँसी के रोग में व गर्भ अवस्था व प्रसवकालीन लक्षणों में ३x, २x, ६x, शक्ति से अच्छा फल मिलता है।

'कैली फास की होमियोपैथिक औषधियो के साथ तुलना—

स्नायु शक्ति एकदम कम होकर स्नायु मण्डली का अवसाद तथा मानसिक व दैहिक नाना रूप परिवर्तन, इन सब मे कैली फास के साथ होमियोपैथी में ऐविना सैटिवा व एसिड फास इत्यादि के साथ तुलना कर सकते हैं। मानसिक दुःख, भय, शोक, अति आनन्द के लिए स्नायु-मण्डली और मस्तिष्क के ऊपर नाना रूप परिवर्तनशील अवस्था के साथ इग्नेशिया, सिमिसिफ्यूगा, एनाकार्डियम, कोनायम, स्टेफिसेग्रिया इत्यादि के साथ तुलना कर सकते हैं। मियादी बुखार की तृतीया अवस्था मे जब नाना रूप मस्तिष्क विकार, गम्भीर दुर्बलता और दुर्गन्धयुक्त मल इत्यादि देखा जाता है, तब इन सब अवस्थाओं में म्यूरियेटिक एसिड, जिंकम, लैकेसिस, सिमिसिफ्यूगा, कार्बोवेज, स्ट्रामोनियम, हायोसियामस, खास तरह के मस्तिष्क विकार व रक्त की अवस्था दूषित हो जाय तब इसके साथ

लैकेसिस, क्रोटेलस, आर्सेनिक, वेप्टीशिया, म्यूरियेटिक एसिड इत्यादि के साथ तुलना कर सकते हैं।

कैली सल्फ्यूरिकम

(Kali Sulphuricum)

पर्याय नाम—इसी का दूसरा नाम पोटेशियम सल्फेट (Potassium Sulphate) है, संक्षिप्त में 'कैली सल्फ' (K. S.) कहा जाता है।

मुख्य कार्य—शरीर के चमड़े के नीचे बहुत प्रकार के छोटे-छोटे कोष देखे जाते हैं, उन कोषों के भीतर का रस एपीथिलियम (Epethi-lium) पेशी स्नायु रक्त कणिका, नाना प्रकार की झिल्ली, इन सब स्थानों पर 'कैल सल्फ' का हिस्सा पाया जाता है। शरीर के भीतर इस नमक का अभाव होन के कारण जिह्वा पर हरिद्र वर्ण की चिपकदार मैल जम जाती है और शारीरिक दुर्बलता, सिर घूमना, अवसन्नता बोध, शरीर में भारी बोझ, सिर पीड़ा, दन्तशूल, शीत बोध, हाथ व पैर में दर्द, मानसिक वैलक्षण्य, इन सब नाना प्रकार के उपसर्गों में कैली सल्फ का प्रयोग होता है।

किसी-किसी स्थान पर कैली म्यूर भी नीचे दवा हुआ चर्म रोग को ऊपर खींच कर ला सकता है, परन्तु कैली सल्फ की इस विषय में खास शक्ति है। चर्म रोग, खुजली, सिर की जड़ मे फयास इत्यादि। अजीर्ण रोग खासकर मेदे के स्थान में खाना खाने के बाद बोझ व चाप, नाखून की पीड़ा, काली खाँसी, प्रमेह, प्रदर, वात रोग, सिर घूमना, साधारण ज्वर, मलेरिया ज्वर, पुरानी सर्दी, छाजन, फोड़ा इत्यादि बहुत से रोगों में यह प्रयुक्त हो सकता है।

मन (Mind)—सब काम शीघ्र करते हैं, गिर पड़ने का भीतरी भय, सीढ़ी से उतरते-उतरते मन में ख्याल होता है कि गिर पड़ेगा, स्वभाव बहुत चिड़चिड़ा व कर्कश, खासकर शाम के ४ बजे से ८-६ बजे तक मन के भीतर नाना रूप अशान्ति का कारण हो जाना।

मस्तिष्क (Head)—मस्तिष्क प्रदेश में छाजन, शुष्क चटपटा छिलके के समान ऊपर रहता है, चमड़ा थोड़ा-सा दवाने से स्राव निकल आवे, भीतर खाने को देना और बाहर निम्न शक्ति का मलहम। आम तरह से कैली म्यूर के साथ और खाज रहे तब नेट्रम म्यूर (N. M.) के साथ देना चाहिए।

बाल की जड़ की मजबूती के लिए यह एक प्रधान औषधि मानी जाती है, कैली म्यूर या नेट्रम म्यूर के लक्षण देखकर जो आवश्यक हो, वह परिमाण अनुसार करके ओलिव आयल (Olive Oil) के साथ मिला लेना चाहिए व बाल की जड़ में लगाना चाहिए।

चक्षु (Eye)—कैली म्यूर में चक्षु स्राव पीत व सब्ज जलवत पदार्थ व कभी चिकना-चिकना कीचड़ के समान होता है। चक्षु की पत्री के चारों ओर पीत वर्ण खुरण्ड इस प्रकार स्राव के साथ कजंक्टाइवा (Conjunctiva) व श्वेत मण्डल प्रदेश का प्रदाह, मोतियाबिन्द रोग, इस रोग में इस लवण के साथ नेट्रम म्यूर और कल्केरिया फ्लोर के ऊपर भी ध्यान रखना चाहिए।

कर्ण (Ear)—कर्ण प्रदेश से पीत वर्ण का पानी-सा स्राव बहते देखा जाय, साथ-साथ कर्ण का शूल दर्द, कर्ण के निम्न प्रदेश में काटने-छेदने के समान दर्द, गला और कान के भीतर सर्दी की अवस्था (Catarrh), यूस्टेचियन ट्यूब (Eustachian Tube) व नल तक व्यापक हो जाता है। इसलिए कान से सुनाई नहीं देता एवं कान के भीतर से पीत वर्ण चिपकदार स्राव निस्सरण होते देखा जाता है। इन सब

च्छेत्रों मे इस नमक की १५ ग्रेन निम्न शक्ति दो औंस डिस्टिल्ड वाटर के साथ मिलाकर अति सावधानी के साथ पिचकारी से धो देना चाहिए।

नासिका (Nose)—इस औषधि का स्वभावसिद्ध व परिचायक लक्षण युक्त स्राव कैरेक्टेरिस्टिक सिम्पटम्स (Characteristic Symptoms) जैसे कि चिपकदार हरिद्र वर्ण व तरल सब्ज वर्ण का स्राव है। क्या नवीन क्या पुरातन सर्दी, चाहे मस्तक अथवा गले इत्यादि में हो, चाहे और किसी स्थान मे हो यदि संध्या समय या गरम गृह में रहने से वृद्धि और ठंढी आवहव मे आने से शान्ति हो तो इन सब लक्षणों मे कैली सल्फ अवश्य उपकारी होता है।

मुखमण्डल (Face)—मुखमण्डल का स्नायुशूल व दर्द, एक से दूसरा स्थान परिवर्तन करे, परिवर्तनशील (Wandering Pain) आक्षेपिक दर्द—स्पाज्मोडिक पेन (Spasmodic Pain), दर्द रह-रह कर होता है, उष्ण गृह और सायकाल में वृद्धि, ठढी खुली हवा में आराम बोध।

मुखमध्य (Mouth)—ओष्ठ प्रदेश के चमड़े के ऊपर अर्बुद इपीथिलियम (Epithelium) और कैन्सर (Cancer) पीड़ा एव उसमें जब इस नमक के परिचायक लक्षण युक्त स्राव निर्गत होते देखा जाय, नीचे ओष्ठ आदि शुष्क एवं उस पर एक प्रकार के छिलके समान पपड़ी, तब इस नमक की निम्न शक्ति का चूर्ण ओलिव आयल के साथ मिलाकर उससे इस स्थान को तर रखने से बहुत उपकार होता है। मुख के भीतर जलन के साथ उत्तम।

दन्त (Teeth)—दन्त शूल, हिलने-डुलने से और सायकाल आठ नौ बजे तक अधिक कष्ट रहे, गरम व बन्द कमरे में रहना मुश्किल, शीतल वायु में आने से दर्द कम हो जाना; स्थान परिवर्तनशील दर्द। इन सब उपद्रवों के लिए यह नमक अति लाभदायक है।

गलमध्य (Throat)—गले में खुश्की के कारण खिचावट-सा अनुभव होना, सरल भाव में बलगम नहीं उठता, बहुत खाँसते-खाँसते श्लेष्मा उठाना पड़ता है, तालु प्रदेश में चिपकदार पदार्थ जमा हुआ देखा जाता है, किसी वस्तु के निगलने के समय कष्ट अनुभव। टासिल (Tonsil) प्रदेश की ग्रन्थि आदि में स्फीति।

जिह्वा (Tongue)—जिह्वा दरिद्र वर्ण व चिपके-चिपके, चिपटे-चिपटे लेप से आवृत्त, किन्तु जिह्वा के दोनों ओर किनारों पर श्वेत लेप।

पाकस्थली (Stomach)—पाकस्थली प्रदेश का केटारह (Catarrh) व सर्दी भाव युक्त अवस्था मे जिह्वा, कैली सल्फ की पीत आभा और चिकनी मैल से आवृत आवृत्त (पिट आफ दी स्टमक-Pit of the Stomach) व मेदे के स्थान में अजीर्ण रोग के कारण खाने के बाद भारीपन का अनुभव करना।

उदर एव मल (Abdomen and Stool)—चाहे जैसी पेट की खराबी व दर्द हो, कैली सल्फ का प्रयोग करने से पहले इस औषधि का प्रकृतिगत जिह्वा का लक्षण और मल का रग इत्यादि देखकर व्यवहार करना चाहिये। प्रबल पेट दर्द के साथ अतिसार एव मल त्याग के समय मलद्वार या सरलान्त्र के निम्न प्रदेश मे दर्द की अनुभूति।

मूत्र-यन्त्र (Urinary Organ)—मूत्र थैली (Bladder) का प्रदाह होकर हरित वर्ण के चिकने-चिकने श्लेष्मा के समान मूत्र से निर्गत होता देखा जाय, पेशाब मे एल्ब्यूमिन (Albumin) व अण्डलाल पदार्थ हो, रात मे बार-बार मूत्र त्याग की इच्छा।

पुरुष जननेन्द्रिय (Male Organ)—गोनोरिया (Gonorrhoea) व प्रमेह पीड़ा मे नूतन व पुरातन अवस्था, यदि इस औषधि का स्वाभाविक लक्षण युक्त स्राव निकलते देखा जाय और इस पीड़ा में अचानक स्राव बन्द

होकर, अण्डकोषादि प्रदाह व मूत्र-द्वार से पीत-भाव सब्ज वर्ण का स्राव निकलता है जो सूखने पर पीला हो जाता है।

स्त्री जननेन्द्रिय (Female Organ)–स्त्रियों की प्रमेह व प्रदर अवस्था में यदि पीत भाव हरिद्र वर्ण का चिप-चिपा पतला पीब के समान स्राव देखा जाय और उसमें कभी-कभी मछली के समान गन्ध हो या मासिकधर्म का रजः अति सामान्य या विलम्ब से प्रकाश पाये।

श्वास-यन्त्र (Respiratory Organ)—ब्राकाइटिस (Bronchitis), न्यूमोनिया (Pneumonia) और क्षय खाँसी चाहे जिस प्रकार का रोग हो, अर्थात् वक्षस्थल आदि की प्रादाहिक अवस्था प्राप्त होकर द्वितीय अवस्था के बाद औषधि के स्वाभाविक लक्षण युक्त जिह्वा का वर्ण और लेप व श्लेष्मा आदि निर्गत हो।

रक्त-सचालन यन्त्र (Circulatory Organ)—दुर्बलकर पीड़ा के साथ-साथ नाड़ी की गति अति धीर व मृदु, हृद् प्रदेश का स्पन्दन, चमड़ा इत्यादि अति शुष्क, भद्दा व गर्म, सन्ध्या के समय देह का उत्ताप आदि एव अन्यान्य वृद्धि पाते हैं।

पृष्ठ, ग्रीवा व तन्तु विधान इत्यादि (Back, Neck, Tissue and Extremities)—सन्धि स्थान इत्यादि मे आमवातिक वेदना और यह वेदना एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमती फिरती है एव किसी प्रकार की वात की वेदना व स्नायुशूल की अवस्था हो जाय। यदि यह दर्द स्थान परिवर्तनशील और इस नमक के स्वाभाविक लक्षण के साथ हो तब कैली सल्फ से अवश्य लाभ होता है।

चर्म (Skin)—जिस प्रकार का क्षत व भाव हो और उस स्थान से यदि पतला हरिद्र वर्ण के पानी के समान स्राव निस्सरित होने लगे, क्षत के चारों ओर आकृति शुष्क भाव खुरण्ड से ढँका रहे, यदि यह खुरण्ड

उठा दिया जाये तब नीचे चमकदार रस के समान रहे, इन सब मे कैली सल्फ प्रयोग होता है।

निद्रा (Sleep)—निद्रा आदि अच्छी तरह से नहीं आती; स्वप्न अत्यन्त स्पष्ट दीखते हैं और निद्रा काल में मुँह ढँक कर सोते हैं।

ज्वर (Fever)—किसी प्रकार का ज्वर हो, जैसे सविराम, अविराम, टायफायड (Typhoid), खसरा, माता, चेचक, वसन्त ज्वर, जिस स्थान में इसका परिचायक लक्षण जैसे सन्ध्याकालीन वृद्धि व उपशम, गर्म घर के भीतर अशान्ति एवं शीतल वायु मे आने से शान्ति। यदि यह सब बुखार सन्ध्या ५ बजे से लेकर रात के १२ बजे तक वर्तमान रहे तब कैली सल्फ निस्सन्देह प्रयोग कर सकते हैं।

मन्तव्य—यह पहले ही कह दिया गया है कि जहाँ इस औषध के प्रयोग करने की आवश्यकता समझी जाय, वहाँ इस ओषधि के परिचायक लक्षण जैसे कि रोग की सायकालीन वृद्धि और शीतल वायु में आने से शान्ति और जिह्वा का हरिद्र वर्ण चिपकदार मैल से आवृत अवस्था आदि पर पहले दृष्टि डाल लेना चाहिए।

वृद्धि व उपशम—सायकाल और गर्म कमरे के अन्दर सब लक्षणों की वृद्धि और खास तरह से सध्या के ४-५ बजे से रात के १०-१२ बजे तक सब रोगों के लक्षणों की वृद्धि और ठण्डी आबहवा या खुली वायु मे बाहर आने से शान्ति अनुभव होना।

शक्ति क्रम (Dosage)—साधारणत. ६x अधिक व्यवहार होती है, परन्तु बहुत दिनों के पुरातन रोग इत्यादि में मात्रा कम करके १२x, ३०x, ६०x, २००x व्यवहार करने से अच्छा फल मिलता है।

कैली सल्फ की होमियोपैथिक औषधियो के साथ तुलना (Comparison)—पहले इस औषधि के साथ होमियोपैथी मे पल्सटिला ओषधि के साथ अच्छी तरह तुलना चल सकती है। अर्थात् सध्याकालीन सब

लक्षणों की वृद्धि और दर्द की परिवर्तनशील अवस्था इत्यादि। वातज व्याधि इत्यादि में इस औषधि का जिह्वा लक्षण और सन्ध्याकालीन वात मे वृद्धि और किस-किस वात में उपशम यह सब विचार करके होमियोपैथी में ब्रायोनिया, फासफोरस, लाइकोपोडियम, पल्सेटिला आदि के साथ तुलना चल सकती है।

मैग्नेशिया फासफोरिकम

(Magnesia Phosphoricum)

पर्याय नाम—इसी का दूसरा नाम फास्फेट आफ मैग्नेशिया है।

मुख्य कार्य—हम लोगों के शरीर के भीतर पेशी समूह, स्नायु, मेद-मज्जा, सौत्रिक पदार्थ, कनेक्टिव टीशूज (Connective Tissues) व संयोजक तन्तु, रक्त कणिका इन सब वस्तुओं के भीतर यह लवण उपस्थित देखा जाता है। पेशी एव स्नायु के भीतर जो सब सौत्रिक पदार्थ देखे जाते हैं यह सब अडलालिक पदार्थ से निर्माण कार्य करते व परिपुष्ट होते हैं। जैसे फेरम फास के अभाव से मासपेशी इत्यादि ढीली हो जाती है, उसी प्रकार 'मैगफास' के अभाव के कारण यह श्वेत सूत की भाँति पदार्थ की सकोचन अवस्था प्राप्त हो जाती है और इस सकोचन अवस्था से नाना प्रकार के आक्षेप, तड़का, खिन्चावट, हिस्टीरिया (Hysteria) रोग, स्नायविक वेदना इत्यादि प्रकाश पाते हैं। इस अवस्था को प्राप्त होने से समझना चाहिए कि शरीर में मैग फास नमक का अभाव हो गया है।

दर्द किसी प्रकार का हो, चाहे सिर पीड़ा, दन्त शूल, टिटैनस (Tetanus) धनुष्टकार रोग, मिरगी, हैजा इत्यादि में खिन्चावट के साथ दर्द व ऐंटन इस प्रकार बहुत से रोगों मे मैग फास (M. P.) के स्वाभाविक लक्षण होने से अवश्य प्रयोग हो सकता है।

ओंठ व मुख का क्षत व ओंठ फटना, इन सब नाना प्रकार के रोगों मे मेग फास अति सफलता के साथ प्रयोग हो सकता है। जिन वायु प्रधान धातु विशिष्ट स्त्री-पुरुषों का चेहरा फीका देखा जाता है व कृष्ण वर्ण दुबला-पतला इन सब प्रकार के व्यक्तियों के लिए अधिकतर सीधी ओर की पीड़ा मे विशेष रूप से इस नमक से उपकार होता है।

मन (Mind)—अधिक परिश्रम करने की इच्छा नही होती है और न सामर्थ्य ही होती है। मानसिक विकार से बुद्धि, मति इत्यादि ठीक नहीं रहती है अर्थात् मन्द हो जाती है।

मस्तिष्क (Head)—मस्तिष्क मे भयकर दर्द व सिर पीड़ा एव दर्द व दाद के पश्चात् ढिग से विजलीवत आरम्भ होकर सामने मस्तिष्क के भीतर फैलकर, अचानक आँख तक आक्रमण कर लेता है और थोड़ी देर बाद दर्द रुक जाता है। इस प्रकार स्पाज्मोडिक नेचर आफ पेन (Spasmodic Nature of Pain) व साथ मे आक्षेप युक्त दर्द व सिर पीड़ा के साथ भीतर में ठण्ड अनुभव करते हैं और वह शीतानुभूति मेरुदण्ड के भीतर से प्रवाहित होकर चली आती है।

चक्षु (Eye)—आँख के सामने छोटे-छोटे आकार के नाना रूप वर्ण दीखते हैं। द्विदृष्टि (Double Vision) अर्थात् एक वस्तु की दो वस्तु दिखाई देती है, चक्षु का तारा संकोचित, बत्ती इत्यादि की रोशनी नही सह सकते हैं।

कर्ण (Ears)—कर्ण प्रदेश का आक्षेपिक शूल, स्नायविक कारण हो जाने से कैली फास के साथ पर्याय क्रम मे देना चाहिए। कान से अच्छी तरह से सुनाई नही पड़ता है, दर्द के समय सेंकने से आराम बोध होना एवं ठण्ढ इत्यादि लगने से वृद्धि।

नासिका (Nose)—ठण्ढ लगाकर व सर्दी के कारण घ्राण शक्ति का लोप, नासिका के भीतर ऋतुवत आबद्ध भरी रहे, कभी पानी के समान

पतला श्लेष्मा प्रचुर परिमाण में निकलता देखा जाय, बायीं नासिका में जलन व क्षत के समान दर्द, मस्तिष्क प्रदेश मे ठंढ लगने के कारण कभी नासिका की एकदम शुष्क अवस्था, कभी पानी की भाँति क्षरण हो।

मुखमण्डल (Face)—मुखमण्डल के स्नायुशूल में संचलन शील व चलता हुआ दर्द, उत्ताप से उपशम व ठण्ढ से वृद्धि।

मुखमध्य (Mouth)—प्रसूति की धनुष्टङ्कार (Tetanus) पीड़ा में जबड़ा इत्यादि कस जाता है। इसके लिए यह नमक प्रधान औषधि है।

दन्त (Teeth)—बालक इत्यादि के दन्त उद्‌गम-कालीन तड़का व ऐंठन आदि में **कल्केरिया फास** के साथ और प्रबल ज्वर रहे तब **फेरम फास** के साथ पर्याय-क्रम में व्यवहार करना चाहिए।

जिह्वा (Tongue)—**मेग फास** की जिह्वा अधिक मैली नहीं होती है, तब भी नेट्रम म्यूर के समान बहुत समय शुष्क अवस्था में रहती है और बहुत समय उदरामय के साथ कैली म्यूर के समान जिह्वा श्वेत मैल से आवृत्त देखी जाती है।

गलमध्य (Throat)—गले के भीतर आक्षेप, संकोच भाव या श्वास नली के आक्षेप के कारण कण्ठरोध, कोई वस्तु यदि निगली जाय तब ज्ञात होता है कि दम घुट जायेगा। आक्षेपयुक्त खाँसी, बात-चीत करते-करते वायु नली की आक्षेप युक्त अवस्था होकर गले में खिंचावट एव गला घुटने के समान प्रतीत होता है और तीक्ष्ण व कभी पतली बारीक आवाज निकलने लगती है।

पाकस्थली (Stomach)—पाकस्थली का तीक्ष्ण काटने-छेदने के समान दर्द व स्नायुशूल और इसमें पेट के ऊपर चापने व कसने से आराम बोध होता है, परन्तु ठण्ढा पानी पीने से दर्द की वृद्धि होती है, खट्टा फल खाने की इच्छा, बहुत समय अजीर्ण से काटने-चबाने के समान प्रतीत होता है।

उदर एवं मल (Abdomen and Stool)—रक्तामाशय पीड़ा को भुगतने वालों के यदि पेट में निचुड़ता हुआ दर्द हो और यह दर्द इतना तीक्ष्ण व तीव्र हो कि सहा न जाय, रोगी को पेट पकड़ कर व चाप देकर आगे को झुक कर रहने से आराम बोध हो, उत्ताप से आराम हो। दर्द के दौरे में घर की चारों ओर घूमते हैं, इस अवस्था में घटे-घंटे पर गर्म पानी के साथ ३X शक्ति देने की आवश्यकता है।

अर्श रोगी को काटने-छेदने, व बिजली चमकने के समान दर्द, दर्द सहा नहीं जाता है, कभी-कभी मूर्च्छा आ जाती है, सिर्फ पेट के भीतर ही यह दर्द हो ऐसा नहीं, परन्तु मलद्वार के भीतर व बाहर मस्सा इत्यादि में इस प्रकार जलन के साथ दर्द होता है कि इस समय रोगी को न बैठे चैन और न खड़े चैन रहता है। शरीर के भीतर एक प्रकार की बेचैनी, इस अवस्था में मैग फास ६X घटे-घटे पर तो खिलाना ही चाहिए और इसी की २X शक्ति का चूर्ण मलद्वार के चारों ओर भीतर भी अच्छी तरह से लगा देना चाहिए।

पुरुष जननेन्द्रिय (Male Organ)—स्पाज़मोडिक रिटेन्शन आफ यूरिन (Spasmodic Retention of Urine) मूत्र का आक्षेपयुक्त अवरोध अवस्था विशेष में फेरम फास या नेट्रम सल्फ के साथ व्यवहार करना चाहिए। पेशाब करने के समय मूत्राशय या मूत्र नली के आक्षेप से मूत्र अवरोध होकर बहुत कष्ट और जलन, पेशाब बाहर आता ही नही, जोर लगाकर काँखना पड़ता है, हर समय में पेशाब त्याग करने की इच्छा, परन्तु खड़ा होकर रहने से या हिलने-डुलने से बार-बार मूत्र का वेग उपस्थित होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय (Female Organ)—जिन स्त्रियों को ऋतु सम्बन्धी गडबड़ी रहे, बाधक वेदना, इस सबमे मैग फास (M. P.) व्यवहार होता है।

गर्भ (Fregnancy)—प्रसव वेदना के समय भयंकर अस्थिरता, दर्द का वेग हुड-हुड कर, घूम कर आता है, फिर गायव हो जाता है। हाथ और पैर की माँसपेशी मे ऐंठन हो जाय तो इस अवस्था में कैली फास के साथ घटे-घटे पर गर्म पानी से अदल-वदल कर व दोनों को एक साथ मिलाकर देने से उत्तम फल होता है।

श्वास यन्त्र (Respiratory Organ)—एक प्रकार की आक्षेपिक खाँसी देखी जाती है और वहुत कष्टदायक होती है, खाँसते-खाँसते दम अटक जाने के समान हो जाय, खाँसी के साथ कुछ श्लेष्मा आदि उठता ही नहीं, इस प्रकार की छोटे-छोटे वच्चों की भी आपेक्षिक व काली खाँसी।

रक्त-सचालन यन्त्र (Circulatory Organs)—हृदय प्रदेश में शूल का दर्द और इसलिए आक्षेपिक लक्षण, उस प्रदेश में दर्द और स्पन्दन अनुभव, मासपेशी इत्यादि को मानो किसी ने खींच कर पकड़ लिया हो, घटे-वटे पर गर्म पानी के साथ व्यवहार करना उचित है।

पृष्ठ व अग-प्रत्यग इत्यादि (Back and Extremities etc.)—हाथ पैर एवं सर्व शरीर मे टन-टन शूल मारने के समान दर्द, वड़ी-वड़ी मासपेशी की जगह मे ऐंठन, दर्द कभी-कभी विजली की चमक के समान प्रवाहित होते देखा जाय, घूम-फिर कर दर्द अचानक आ जाय, दाढ़ एव पीठ की ओर अचानक चला जाये और आक्षेपिक दर्द, सेंकने से आराम वोध हो।

स्नायुमण्डल एव तन्तु विधान (Nervous System and Tissuse)—समस्त शरीर मे विजली के समान दर्द, पैरालिसिस एजिटैण्ट्स (Paralysis Agitants) अर्थात् रास्ते मे चलते-चलते स्नायु मडल विधान की दुर्वलता, आक्षेप के कारण हाथ-पावों को फैलकार मतवाले के समान चलते हैं

ज्वर (Fever)—मलेरिया संयुक्त ज्वर में जब भारी कम्पन अवस्था हो जाय, हाथ और पैर की पिण्डली में चापने और दबाने से आराम बोध हो, काँपने के कारण दाँत आपस में बजे, जाड़ा व ठण्ढ मेरुदण्ड प्रदेश के भीतर ठण्ढा-ठण्ढा लग कर प्रविष्ट होता है। इन सब स्थलों में लगभग थोड़ा बहुत स्नायविक लक्षण रहता है। इसलिए केलि फॉस के साथ बार-बार व्यवहार करना उचित है (निम्न शक्ति)।

निद्रा (Sleep)—नींद आती नहीं, ढुल-ढुल भाव, सर्वदा जम्हाई आती है। जम्हाई में जबड़े की जोड़ की हड्डी हट जाने के कारण बेचैनी।

मन्तव्य—इस औषधि के स्वभावसिद्ध लक्षण पर हमेशा ध्यान रखना चाहिए। दर्द के स्थान में सेंक या चाप लगने से आराम बोध हो, शरीर के दक्षिण भाग में बीमारी का आक्रमण अधिक होना, सिर घूमना व सिर-पीड़ा में खुली हवा में रहने से आराम मिलना।

क्रम,वृद्धि एवं उपशम—इसकी निम्न शक्ति अधिकतर व्यवहार होती है, आम तौर पर ६X सब लोग व्यवहार करते हैं। कभी १X, २X निम्न शक्ति के व्यवहार से उत्तम फल मिलता है; परन्तु अधिकतर निम्न शक्ति हम लोगों ने व्यवहार करके उत्तम फल प्राप्त किया है।

'मैग्नेशिया फास' की होमियोपैथिक औषधियों के साथ तुलना (Comparison)—प्रसूती स्त्रियों का अचानक जबड़ा इत्यादि बन्द होकर धनुष्टकार अवस्था अर्थात् जिस स्थान में इस प्रकार आक्षेपयुक्त दर्द देखा जाय उसमें इग्नेशिया (Ignatia), स्ट्रेमोनियम (Stramonium), हायोसियामस (Hyoscyamus), नक्स मस्केटा (Nux-Moscheta) इत्यादि लक्षण विचार कर व्यवहार करते हैं, इन सबके साथ मैगफॉस की तुलना करनी चाहिए। परिवर्तनशील दर्द (Wandering Pain) के लिए मैगफॉस के साथ साइलिसिया (Silicea),

पल्सेटिला (Puls), लैकेसिस (Lachesis), कोनायम (Conium), केली कार्ब (Kali Carb) इत्यादि, हर एक औषधि का चरित्रगत लक्षण देखकर तुलना करनी चाहिए।

नेट्रम म्यूरियेटिकम
(Natrum Muriaticum)

पर्याय नाम—इसी का दूसरा नाम सोडियम क्लोराइड (Sodium Chloride) और सक्षिप्त नाम एन० एम० (N. M.) है। बाजार मे बिकने वाले साधारण नमक से रासायनिक क्रिया द्वारा हमारा 'नेट्रम म्यूर' (N. M.) विशुद्ध रूप मे तैयार होता है।

मुख्य कार्य—शरीर में यदि जल की मात्रा परिमित परिमाण से अधिक हो और आवश्यक न हो, तब शरीर में शोथ रोग, आँख-मुख भारी व डब-डबाया, वर्ण फीका, आलस्य, क्लान्ति, आँख-मुख से पानी झरना, ठण्ढ अनुभव करना, इस प्रकार के बहुत-से लक्षण प्रकट हो जाते हैं और इन सब उपद्रवग्रस्त रोगी को अधिकतर नमकीन वस्तु खाने की इच्छा होती है। जिन व्यक्तियों को नशा आदि (शराब इत्यादि का) करके डिलिरियम ट्रेमेन्स (Delirium Tremens) नामक रोग की उत्पत्ति हो गई हो अर्थात् बड़ी-बड़ी बकना, हाथ-पैर काँपना, लाइट हेडेड (Light Headed) व हलका मस्तिष्क, दर्द के भाव इत्यादि अवस्था में समझना चाहिए कि इसका कारण नेट्रम म्यूर के नमक का अभाव है।

मन (Mind)—मस्तिष्क ठीक नहीं रहता है, एक बात कहते-कहते दूसरे प्रसंग पर आ जाते हैं, बात कहते-कहते दुर्बलता अनुभव करते हैं। मिजाज अति कठिन व रूखा, किसी की कुछ बात कहने से, चाहे वह बात अच्छी और शान्तिप्रद ही हो, परन्तु अच्छी नहीं लगती है और सही नहीं जाती है। जीवन भारस्वरूप ज्ञात होता है, निराशा-ग्रस्त दुःखित

अन्तःकरण व चित्त, अकेले रहने के समय कभी-कभी होते हैं। परन्तु रोने का कारण नहीं प्रकट कर सकते हैं।

सिर (Head)—सर्दी, गर्मी व लू लगना (Sun Stroke) पीड़ा के लिए यह एक महौषधि समझी जाती है।

चक्षु (Eye)—अधिक जलस्राव के साथ चक्षु का स्नायुशूल (**मैग-फॉस के साथ**)। नूतन ठण्ढ आदि लगकर, आँख, मुख, नाक से लगातार पतला पानी निकलना, किसी-किसी को ठण्ढी हवा चलने से या चक्षु में ठंढ लगने से पानी निकलने लगे तो १x, २x, ३x, व्यवहार करें।

कर्ण (Ear)—कान के भीतर जो एक नली यूस्टेचियन ट्यूब (Eustachian Tube) है उसी को ठंढ लगने के कारण या दूसरे किसी अन्य कारण से उसकी स्फीति भाव के साथ वधिरता।

नासिका (Nose)—ठंढ इत्यादि लगकर पानी-सा स्राव व जलन, छींक आना इत्यादि या पुरातन सर्दी में रक्तशून्य व्यक्ति को नमकीन श्लेष्मा का निर्गमन एवं मस्तिष्क में ठंढक लगकर भीतर में वह ठंढ बैठ जाना। इसीलिए छींक, सर्दी, खाँसी, बुखार, छाती में दर्द अर्थात् इन्फ्लुएञ्जा (Influenza) पीड़ा में इस प्रकार आँख, मुख से जलन के साथ पतला पानी गिरना व कभी अंडलालिक पदार्थ के समान श्लेष्मा का स्राव।

मुखमण्डल (Face)—मुखमंडल प्रदेश का स्नायुशूल, उसके साथ कोष्ठवद्धता। आँख, मुख से जलवत् श्लेष्मा व स्वच्छ स्राव निर्गमन व कभी पानी के समान श्लेष्मा वमन। ठोड़ा प्रदेश व मूँछ के बाल उड़ जाना। छोटा-छोटा जल पूर्ण दाना-दाना बाहर होता है और खाज, इस प्रकार मुख के दूसरे स्थान में खारिशदार क्षत से पानी के समान फफोले जैसा पतला स्राव।

मुखमण्ड (Mouth)—ठण्ढ इत्यादि के कारण से हो अथवा और किसी दूसरे कारण से हो, पीड़ा के भुगतने के समय में लार निस्सरण अथवा स्वच्छ पानी के समान पतला श्लेप्मा निस्सरण होना इस औषधि का प्रकृतिगत लक्षण है।

दन्त (Teeth)—ओडोण्टेलजिया (Odontalgia) व दन्त मूल के साथ प्रचुर परिमाण मे नाक-मुँह से पानी गिरना दाँत की जड़ में क्षत, और उसमे थोड़ा कुछ चवाने का कार्य करने से खून गिरते देखा जाता है, दाँत की जड़ हिली हुई, उस स्थान मे काटने-छेदने के समान दर्द। नेट्रम सल्फ (N. S.) के साथ पर्याय-क्रम में व कभी **मैग फास** (M. P.) के साथ।

जिह्वा (Tongue)—जिह्वा के ऊपर स्वच्छ पानी के समान पतला चिपकदार लेप, चारों ओर पानी के फेनयुक्त बुलबुले के समान देखा जाता है।

गलमण्ड (Throat)—गले के भीतर जो झिल्ली देखी जाती है, उसी की प्रदाह अवस्था प्राप्त होकर जब जलवत् स्राव इत्यादि निर्गत हो, लाल जीभ या कौवा के नीचे झुक जाय, इस औषधि का लक्षणयुक्त स्राव रहे, कल्केरिया फ्लोर (C. F.) के साथ पर्याय-क्रम मे दे।

पाकस्थली प्रदेश (Stomach)—इस प्रदेश की पीड़ा के कारण पतले पानी के समान लारस्राव या वमन होना, अधिकतर अजीर्ण घटित रोग के साथ इस प्रकार का स्राव होते देखा जाता है।

उदर एवं मल (Abdomen and Stool)—आँत की अवस्था ढीली हो जाना और इसलिए तरल मल के दस्त, कभी अतिसार, कभी कोष्ठबद्धता, इन अनेक कारणों से आँत के भीतर श्लेष्मिक झिल्ली आदि में खुश्की पैदा होकर कोष्ठबद्धता होती है। अर्श-पीड़ा में जब काँच निकल

आवे, खारिश अवस्था रहे, तब इस नमक के साथ कैल्केरिया फॉस (C. P.) की निम्न शक्ति का मलहम बनाकर लगाना चाहिए।

मूत्र (Urine)—मूत्र-त्याग करने के बाद जलन या काटने-छेदने के समान पीड़ा या दर्द। बहुमूत्र पीड़ा मे अत्यन्त प्यास, बार-बार मूत्र-त्याग करना, एक घण्टे मे चार-पाँच बार मूत्र की आवश्यकता और अधिक परिमाण में मूत्र।

पुरुष जननेन्द्रिय (Male Organ)—यह प्रमेह पीड़ा की एकमात्र औषधि है। इस पीड़ा का स्वभाव जलवत् मूत्र-त्याग, इसके बाद अधिक जलन कैल्केरिया फॉस (C. P.) के साथ पर्याय-क्रम मे। बहुत से समय पर इस प्रमेह पीड़ा के लिए कोई-कोई एलोपेथ डाक्टरों की सहायता लेकर नाइट्रेट ऑफ सिल्वर व लाल दवा, परमैंगनेट ऑफ पोटाश व कास्टिक लोशन इत्यादि की पिचकारी के द्वारा धुलाते हैं, इससे इन सब क्षेत्रों मे जलन इत्यादि तो कम हो जाती है, परन्तु एक प्रकार का स्वच्छ तरल स्राव मूत्र-द्वार मे लिपटा रहता है, इसमे नेट्रम म्यूर से आश्चर्यजनक फल प्राप्त होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय (Female Organ)—स्त्रियों के ऋतुकालीन स्राव की प्रकृति पतले पानी के समान, ऋतु विलम्ब से होता है इसके साथ मिजाज चिड़चिड़ा, सिर पीड़ा के साथ रोने लगे, जीर्ण-शीर्ण व खून की अल्पता, मन मे कोई उत्साह, आनन्द नहीं, कभी ऋतु के परिवर्तन मे पानी के समान पतला व साफ श्लेष्मा निकलना और इसके साथ कोष्ठबद्धता आदि इसी का स्वभाव सिद्ध लक्षण है।

गर्भ (Pregnancy)—पानी के समान पतला वमन और फेन-युक्त व झागदार, नमकीन स्वाद, प्रातःकालीन कै व उबकाई (Morning Sickness), गर्भ-अवस्था में शरीर सूख जाना, स्तन आदि शीर्ण अवस्था मे हो जाते है, सन्तान होने के बाद सूतिका अवस्था प्राप्त होना व सन्तान को

दुग्धपान अवस्था में 'मणिपुर प्रदेश' व नीचे स्थान के वाल उड जाना व सिर के वाल भी भूरे होकर उड जाते हैं। गर्भावस्था में कभी छींकते-छींकते या खाँसते-खाँसते पेशाव छिटक कर निकल पड़ता है।

रक्त संचालन यत्र (Circulatory Organs)—जिन व्यक्तियों को रक्तहीनता हो गई है, हृत्पिण्ड की दुर्वलता व दव-दव भाव, हृत्पिंड में चिड़िया के पर फड़फड़ाने का शब्द अनुभव करना व किसी के हृत्पिंड की वाल्व (Valve) या कपाट की पीड़ा में उपयोगी होता है।

पृष्ठ और अग-प्रत्यंग इत्यादि (Back and Extremities)—शिशु इत्यादि का गला पतला हो जाना, रिकेट्स (Rickets) एव मैरास्मस (Marasmus) पीड़ा, जलोदर (ऊँची शक्ति) ।

स्नायुमण्डल (Nervous System)—अत्यन्त क्रोध व मानसिक अवस्था हेतु पक्षाघात अवस्था और कभी हिस्टीरिया के दौरे के समान अवस्था, ताडव नृत्य पीड़ा, मिरगी रोग, मुख से फेन सदृश झागदार थूक निकलना, प्रातःकाल एव ठड के समय में वृद्धि।

चर्म (Skin)—चर्म पीडा चाहे जिस कारण से हो और चाहे किसी स्थान में हो, जहाँ पर पानी के समान रस इत्यादि निर्गत होते देखे जायँ, तब उसी स्थान में इसका प्रयोग होता है, कैलि सल्फ भी।

ज्वर (Fever)—ज्वर की चाहे जिस प्रकार की प्रकृति हो, कभी निद्रालुता, कभी घोर अचेतन व विकार अवस्था, वड़वड़ाना, वकना, हाथ-पैर चारों तरफ फेंकना, पेशी का स्पन्दन, पानी के समान झागदार पदार्थ का वमन, रात में अधिक पसीना आना, इन सब लक्षणों में नेट्रम म्यूर का अच्छी तरह प्रयोग होता है। अत्यधिक कुनीन सेवन कराने का कुफल अर्थात् मलेरिया कुरोग में इसकी उच्च शक्ति फलदायक होती है।

निद्रा (Sleep)—मस्तिष्क में जलसंचय के कारण तन्द्रा अवस्था,

दिन-रात नींद की हालत, अधिक आराम करने से भी तृप्ति नहीं होती है, निद्रा अवस्था में चमक-चमक उठना, उँघाई रहे मगर नींद न लगे।

तन्तु-विधान (Tissues)—साधारणत समस्त शरीर के तन्तु आदि के भी जलीय अंश जब असमान भाव मे विस्तृत देखा जाय तब हम लोगो को नेट्रम म्यूर का कार्य अधिक परिमाण में देखने आता है।

क्रम व शक्ति (Dosage)—इसकी सर्व प्रकार की शक्ति जैसे १x से लेकर २००x तक सफलता के साथ प्रयोग हो सकती है। साधारणतः ब्रायो-केमिक चिकित्सा में ६x शक्ति का व्यवहार करते हैं। साधारण ज्वर आदि अवस्था मे किसी-किसी ने निम्न शक्ति जैसे ३x व्यवहार करने का उपदेश दिया है।

'नेट्रम म्यूर' की होमियोपैथिक औषधियो के साथ तुलना (Comparison)—हमारी होमियोपैथी मे नेट्रम म्यूर के साथ वेलाडोना (Bell) का बहुत सम्बन्ध देखा जाता है अर्थात् मस्तिष्क प्रदेश में रक्ताधिक्यवश जहाँ आँख मुख लाल हो गया हो और दब-दब भाव हो, सिर का दर्द, कपाल की दोनों ओर कैरोटिक (Carotid) धमनी का धड़कना, इन सब क्षेत्रों मे वेलाडोना (Bell) उत्तम है, परन्तु नेट्रम म्यूर के उसी प्रकार रक्ताधिक्य-वश आँख-मुख या चेहरा फीका पड़ जाता है, इतना याद रखना चाहिये और अर्द्धशूल इत्यादि के लिए भी यह नमक अच्छा है। इसके साथ स्पाइजेलिया (Spigelia), सैंग्विनेरिया (Sanguinaria), सिमिसिफ्यूगा (Cimicifuga), मेडोरिनम (Medorrhinum), सिपिया (Sepia), इत्यादि के साथ तुलना कर व्यवहार हो सकता है।

हाइपरट्रॉफी ऑफ दी लिवर (Hypertrophy of the Liver) अर्थात् जिगर का निवर्द्धन और सख्त अवस्था के साथ रक्तहीनता होना, इसके उदरामय, कोष्ठबद्धता इत्यादि देखकर आर्सेनिक (Arsenic), चिनिनम आर्सेनिकम (Chininum Ars.), फेरमॉयड (Ferrumoid), फेरम आर्स (Ferrum Ars.), लैकसिस (Lachesis) एव

नक्स वामिका (Nux Vom); चाइना (China), मर्कसाल (Merc sol), इत्यादि दवाइयों का चरित्रगत लक्षण देखकर देना चाहिये ।

नेट्रम फास्फोरिकम

(Natrum Phosphoricum)

पर्याय नाम—सोडियम फॉस्फेट, फॉस्फेट ऑफ सोडा ।

मुख्य कार्य—कार्बोनेट ऑफ सोडा और फॉस्फोरिक एसिड के सयोग से यह लवण प्रस्तुत होता है । यह हड्डी के भस्म से भी तैयार किया जाता है । है दूनी मात्रा मे गर्म पानी और छः गुने ठण्ढे पानी मे गल जाता है। सुरासार में नहीं गलता ।

रक्त, पेशी, स्नायु, मस्तिष्क-कीटाणु और कोषाणुओं के भीतरी रस में यह लवण रहता है । यह लवण दुग्धाम्ल (Lactic acid) को विघटित कर कार्बोनिक एसिड और पानी मे परिवर्तित कर देता है ।

शरीर मे अगर दुग्धाम्ल बढ जाने के कारण कोई बीमारी हो जाय तो नेट्रम फास फायदा करता है । पैर का वात, सन्धिवात, नया और पुराना वात इत्यादि अम्ल से दूपित वातु प्रकृति वाले रोग में यह फायदा करता है । जिस रोग मे एसिडिटी पाई जाये उसमे यह आवश्यक है । अक्सर अन्य दवाओं के प्रभाव को बढाने के लिए दी जाती है ।

जो मनुष्य घी आदि मेद वाले पदार्थ पचा नहीं सकते या उन पदार्थों के खाने से अम्ल की अधिकता और अजीर्ण की वृद्धि हो जाती है, उनके लिए नेट्रम फास बहुत ही उपयोगी है, कैलि म्यूर भी देखिये ।

विशेष और निर्देशक लक्षण

मन (Mind)—दुश्चिन्ता और आशका, स्थूल बुद्धि और ऊँची अभिलाषा से रहित, रात के समय नींद खुलने पर घर की चीजों को मनुष्य समझ लेता है, थोड़े मे ही घबड़ा उठता है, जरा-सा में ही क्रोधित हो जाता है और बहुत सामान्य कारण से ही चिढ़ उठता है ।

सिर (Head)—माथे के बीच के स्थान में दर्द, खासकर सवेरे नींद खुलने के बाद, इसके साथ ही तालू में दूध की तरह सफेद तथा तर और पीली आभा लिए जीभ रहती है। यदि सुबह उठ कर मस्तिष्क प्रदेश में दर्द होने लगे, खासकर शिखर व चाँद प्रदेश में दर्द की अधिकता देखी जाय एवं उसके साथ-साथ इस ओषधि के जिह्वा आदि के लक्षण मिलने पर उससे उत्तम फल प्राप्त होते देखा गया है। प्रधान बात यह है कि जहाँ सिर पीड़ा आदि देखी जाती है, और साथ-साथ अजीर्ण आदि रोग; रोग के कारण अम्ल भावापन्न अवस्था रहे उस स्थान में नेट्रम फास (N. P.) कार्यकारी होता है। जिह्वा आदि का रङ्ग और लक्षण देखना आवश्यक है।

चक्षु (Eye)—कृमि रोग का उपद्रव रहने से यदि टेढी दृष्टि हो तब मैग फास (M. P.) के साथ व्यवहार करना उचित है। चक्षु के जलन के साथ स्राव, आँख के सामने नाना प्रकार की रोशनी के समान पदार्थ देखना, चक्षु के पपोटे के नीचे फफोले के समान दाना-दाना हो जाना, उसके साथ चक्षु का श्वेत अंश प्रदाहयुक्त, चक्षु के सामने यह मालूम होता है कि कोई आवरण के समान पड़ गया है और इसलिए धुँधली-धुँधली दृष्टि, नन सब में यह नमक खाने के लिए व्यवहार करना और २x या ३x निम्न शक्ति का साफ करने के लिए परिस्रुत जल डिस्टिल्ड वाटर (Distilled Water) के साथ मिलाकर लोशन रूप से व्यवहार कर सकते हैं। अभिष्यन्द अर्थात् आँख उठने की बीमारी, शुक्ल मण्ड का प्रदाह, पीला आभा लिए पीब का स्राव, सवेरे आँख की पलकें सट जाती हैं, जलन भरा आँसू का स्राव होता है; बालक-बालिकाओं को कृमि की वजह से टेढी दृष्टि, गण्डमाला धातु की वजह से आँख की बीमारी।

कान (Ear)—कान में दर्द, बाहरी भाग अकड़ा रहता है, जलन और खुजली होती है। अजीर्ण रोग और अम्ल की अधिकता से एक तरफ का कान लाल, गर्म और बार-बार खुजलाया करता है।

नाक (Nose)—नाक खोंटा करता है, इसके साथ ही अम्ल रोग और कृमि, नाक खुजलाती है; हमेशा ही एक तरह की वदबू आया करती है।

मुख मण्डल (Face)—मुख पर मुँहासा, कैली फास खास तरह, वालक-वालिकाओं की यौवनावस्था व हस्तमैथुन इत्यादि अभ्यास के कारण मुखमण्डल की स्फीति का भाव, आरक्त वर्ण, परन्तु इसके साथ बुखार नहीं देखा जाता है। नाक मुख में समय-समय पर खुजली होती है, और उसके चारों ओर सफेद फीका मालूम होता है।

दन्त (Teeth)—वालक की कृमि दोष घटित अवस्था हेतु रात को निद्रावस्था मे दन्त कड़मड़ करना एव दाँत निकलने के समय यह कृमि घटित व अम्लादि भावयुक्त होकर आमाशय प्रदेश मे नाना प्रकार की गड़वड़ अवस्था में कैल्केरिया फास (C. P.) के साथ समझ कर वारी-वारी से देना चाहिये।

मुँह के भीतर (Mouth)—तालू मे, खासकर तालू का पिछला भाग गाढ़ा पीली आभा लिये सफेद, मुँह का स्वाद हमेशा खट्टा रहता है, ताँवे की तरह स्वाद।

कण्ठ (Throat)—तर, पीली आभा लिये उपजिह्वा, तालु मूल और तालु स्थान में पीले रग के लेप के साथ कठ का भी प्रदाह। इस उपसर्ग के साथ अक्सर अम्ल और अजीर्ण की बीमारी लगी रहती है।

जिह्वा (Tongue)—जिह्वा के पीछे गीला और सुनहले रग व पीत वर्ण गाढ़ा लेप वर्तमान रहे, यही इस औषधि का स्वभावसिद्ध सर्वप्रधान लक्षण है। जिह्वा के ऊपर चारों ओर फफोले के समान देखा जाय व कभी-कभी मालूम होता है कि कोई वाल यहाँ अटक हुआ है।

पाकस्थली (Stomach)—सिर पीड़ा, मस्तिष्क घूमना, उदर व वक्ष प्रदेश में जलन बोध, पेट का अफरा, आहार के वाद पाकस्थली-

प्रदेश भारी व चाप बोध, गर्भिणी का प्रातःकालीन उबकाई व अम्ल वमन, यह सब उपसर्ग यदि आमाशय प्रदेश के गोलमाल के कारण देखा जाय और इस औषधि का खास-खास लक्षण रहे, तब निश्चित उपकार होगा।

उदर और मल (Abdomen & Stool)—कब्जियत की प्रकृति वाले बच्चों को कभी-कभी पतले दस्त आना, दस्त मे खट्टी गन्ध, उसका रंग हरा, गोंद की तरह श्लेष्मा, छेने की तरह मल, बार-बार सामान्य मल, दाहिनी ओर के पुट्ठे मे दर्द, जूस, जैसा टपक पडे।

मूत्र-यन्त्र (Urinary Organs)—आमवातिक रोग में मूत्र का रंग मलीन लाल वर्ण रहने से व्यवहार होता है। यकृत प्रदेश मे इस लक्षण हेतु बहुमूत्र रोग के लिए यह एक उत्कृष्ट औषधि है। बार-बार मूत्र त्याग करने की इच्छा, प्रचुर परिमाण में पेशाब होना, अधिकतर अम्ल आदि के साथ वर्तमान रहे, विशेष रूप मे जहाँ अधिक परिमाण मे मूत्र त्याग देखा जाता है। उसके पहले देखना चाहिए कि यह उपद्रव कृमि के कारण है या अम्ल दोष घटित, यह देखकर नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ एवं फेरम फास, वर्तमान अवस्था मे कौन उपयोगी होगा, उसको विचार कर देना चाहिए। यकृत की गडबड़ी या दोष की वजह से मधुमेह (Diabetes), हमेशा ही पेशाब का वेग, पेशाब की धार बीच-बीच मे रुक जाती है, खूब काँखना पड़ता है।

पुरुष-जननेन्द्रिय (Male Organ)—स्वप्न देखे बिना ही वीर्य स्खलन हो जाना, वीर्य पतला, पानी की तरह, रमण की इच्छा का बिल्कुल ही न रहना या रमण की इच्छा का बढ़ जाना और लिंग मे कड़ापन, अण्डकोष और शुक्र-नली में खींचन मालूम होना।

स्त्री-जननेन्द्रिय (Female Organ)—नियमित समय के पहले ही फीके रंग का मासिक ऋतु स्राव होना, तीसरे पहर आँखों मे दर्द के

साथ सिर दर्द आरम्भ हो जाता है। ऋतु के बाद बढ़ जाता है, ऐसा मालूम होता है कि जाँघ की सौत्रिक पेशी छोटी हो गई है।

वक्ष और श्वास-यन्त्र (Respiratory System)—हृत्-पिण्ड के पास कम्पन, पैर के अँगूठे का या अन्यान्य अंगों का दर्द दब कर हृद्पिण्ड के मूलदेश में चला आता है। हृत्कम्प, शरीर के कितने ही स्थानों में नाड़ी का स्पन्दन अनुभव में आता है।

स्नायु (Nervous System)—आँतों में कृमि रहने की वजह से स्नायविक उत्तेजना, वक्र दृष्टि, मुख-मण्डल की पेशी का फड़कना, थकान मालूम होना, पेट में खालीपन मालूम होना, गर्दन हिलाने पर खट-खट शब्द, कम्पन, बेचैन नींद, सहज में ही नींद खुल जाती है, रति सम्बन्धी सपने, स्वप्नदोष।

पीठ और हाथ पैर (Back & Extremities)—ग्रीवा ग्रन्थि का फूलना, घेघा (गलगण्ड), पीठ, हाथ, पैर में ताकत नहीं मालूम होना, चलने के समय पैर में ताकत नहीं मिलती, चलने के समय ढुलक पड़ता है। घुटना पैर की गाँठ, एड़ी, पैर का तलवा, सामने की हड्डी, सब में ही दर्द, घुटना हिलाने से ही खट-खट आवाज आती है।

ज्वर (Fever)—सविराम ज्वर और उसके साथ खट्टी कै, अत्यन्त खट्टी गन्ध मिला पसीना, दोनों पैर के तलवे दिन भर बर्फ की तरह ठण्डे रहते हैं, पर रात के समय जलन होती है, रोज तीसरे पहर उत्ताप उच्छ्वास और सिर दर्द।

चर्म (Skin)—सहज में ही खाल उघड़ जाती है, अम्ल रोग का एक्जिमा, रस गिरता है, गाढ़ा, शहद के रंग का चर्मोद्भेद, लाल आभा, उसमें पीली आभा लिए पपड़ी जमती है। आमवात, सारे शरीर में कीड़े काटने की तरह खुजली।

निद्रा (Sleep)—कृमि घटित उपसर्ग के कारण रात में नींद अच्छी तरह से नहीं आती, निद्रावस्था में भी दाँत कड़मड़ाना, कभी चौंक कर उठना व चिल्ला उठना, इसी अवस्था मे नाक, मुख इत्यादि की चुल व खारिश, सर्वदा निद्रायुक्त ढुल-ढुल भाव, थोडी देर बैठे रहने से किसी को निद्रा का आवेश हो जाता है और किसी को नींद ही आ जाती है, निद्रावस्था में काम, रति विषय के स्वप्न देखना, वदन की खारिश के कारण रात में नींद आना कठिन हो जाता है।

ह्रास-वृद्धि—रजः सम्बन्धी उपसर्ग तीसरे पहर और सध्या से बढ जाते हैं। कितने ही दर्द बादल की गरज और वज्रपात से बढ जाते हैं।

शक्ति और क्रम (Potency)—६x का ही साधारणतः प्रयोग किया जाता है, परन्तु ३०x और उससे भी उच्चतर शक्ति से भी आश्चर्यजनक फायदा दिखाई देता है, कृमि की चिकित्सा के लिए ६x द्रव पिचकारी द्वारा मलद्वार में प्रयोग किया जाता है।

'नेट्रम फास' की होमियोपैथिक औषधि के साथ तुलना (Comparison)—'नेट्रम सल्फ' का जो कुछ शरीर के ऊपर प्रभाव होता है, वह अधिकतर अम्ल लवण से ही प्रकाश होता है और कृमि घटित उपद्रव के लिए भी उत्तम है। बायोकेमिक मे इस औषधि के साथ नेट्रम सल्फ का बहुत ही सम्बन्ध है। होमियोपैथी में कल्केरिया कार्ब (Calc. Carb), इथूजा सिनैपियम (Aethusa Cynapium), मरक्यूरियस डलसिल (Merc. Dul.), मरक्यूरियस वाइवस (Merc. Vivus) इत्यादि औषधियों के साथ गण्डमाला धातु दोषयुक्त प्रकृति के मनुष्य के लिए जो कुछ उपद्रव की सृष्टि हो जाती है; इसके साथ तुलना करनी चाहिए।

गठिया का उपद्रव होकर पेशाब के साथ जब यूरिक एसिड जमने लगे तब लाइकोपोडियम (Lyco.), ग्वेकम (Guaicum), बेंजोइक एसिड

(Benzoic Acid), कालचिकम (Colchicum), नेट्रम सल्फ (N.S), कैल्केरिया फास (C. P.), मैगेनम एसेटिकम (Manganum Aceticum) इत्यादि के साथ तुलना करनी चाहिये। इस गठिया की शिकायत के साथ अजीर्ण अम्ल उद्‌गार यह सब वर्तमान रहे, कृमि घटित उपद्रव में नेट्रम फास के साथ मे 'सिना' (Cina), एमबेलिया राइबस (Embelia Ribes) इत्यादि के साथ तुलना चल सकती है।

नेट्रम सल्फ्यूरिकम

(Natrum Sulphuricum)

पर्याय नाम—सोडियम सल्फेट, सल्फेट ऑफ सोडियम, ग्लावर्स साल्ट।

मुख्य कार्य—समुद्र के पानी में, झरने के नमकीन पानी मे, रूस देश की नमक की झील में यह बहुत ज्यादा प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त खाने के साधारण नमक के साथ सल्फ्यूरिक एसिड मिलाकर भी यह तैयार होता है। यह ३३ डिग्री सेण्टाग्रेड की गरमी वाले पानी में घुल जाता है।

इसकी क्रिया 'नेट्रम म्यूरियेटिकम' के ठीक विपरीत होती है। ये दोनों लवण पानी का आकर्षण तो करते हैं, पर इनका उद्‌देश्य और परिणाम अलग-अलग ही होता है। 'नेट्रम म्यूर' पानी को खींचकर इसे ठीक वितरण करके शरीर-यन्त्र के काम में ही लगा देता है, परन्तु 'नेट्रम सल्फ' दूषित पानी को खींचकर बाहर निकाल देता है।

पित्त कोष के स्नायु में यदि इस लवण का प्रभाव बन्द हो जाता है, तो पित्त का निकलना ही या तो बढ जाता है या घट जाता है।

वृहदान्त्र के प्रक्षेपक स्नायु में यदि इस लवण का क्षय हो जाता है तो कब्जियत और आध्मान की वजह से शूल का दर्द हुआ करता है।

Hydrogenoid Constitution अर्थात्—श्लेष्मा धातु वाले के शरीर और प्रमेह विष से दूषित धातु वाले के लिए नेट्रम सल्फ की विशेष क्रिया दिखाई देती है :

विशेष और निर्देशक लक्षण

मन (Mind)—दुर्विनीत और क्रोधी, आत्महत्या करने की प्रकृति, बडे कष्ट से अपने को रोक रखता है, पित्त प्रकोप की वजह से असहिष्णुता सवेरे बढना, विषाद प्रकट करने वाले सुर की आवाज सुनने पर पित्त का विकार बढ जाता है, निराशा, गिरने अथवा माथे मे किसी तरह की चोट लगकर मानसिक विकार पैदा हो जाता है।

सिर (Head)—भयानक टपक का दर्द, ब्रह्मरंध्र की जगह पर तकलीफ की अधिकता, पाचन विकार के साथ सिर मे चक्कर आना, पित्त की अधिकता, जीभ पर पित्त की मैल या मुँह का स्वाद तीता, माथे के पिछले भाग मे दर्द।

कभी-कभी इस प्रकार सिर पीड़ा के साथ पित्त घटित प्रचुर उदरामय, पेट मे शूल का दर्द और उसके साथ पित्त का वमन व उबकाई, मुख का स्वाद कडवा और जिह्वा के पीछे के भाग मे इसका स्वभावगत लक्षण का लेपन देखा जाय अर्थात् कभी हरिद्रा वर्ण आभा के साथ, कभी धूसर वर्ण व पाडु वर्ण। मस्तिष्क मे रक्ताधिक्यवश मेरुमज्जा प्रदेश के आवरण का प्रदाह और उसके साथ नाना प्रकार के प्रलाप, वकना एव आक्षेपयुक्त लक्षण।

आँख (Eye) सफेद अंश—श्वेत-मण्डल पीली आभा लिये; छाले की तरह गुटिकायें, आँख उठने की पुरानी बीमारी, पलको के नीचे बहुत से दाने निकलते हैं, हरे रग की पीब निकलती है।

कान (Ear)—कर्ण शूल, दर्द के समय ऐसा मालूम होता है, मानों भीतर से कोई पदार्थ धक्का देकर बाहर निकला चला आता है। बरसात के दिनों में बढ़ना, कान में बिजली की लहर लगने की तरह झटका देने जैसा दर्द, कान मे घण्टा बजाने की तरह आवाज।

नासिका (Nose)—नासिकाप्रदेश कभी आबद्ध अवस्था मे रहे और खाँसी के साथ निकलने वाले श्लेष्मा का स्वाद लवणवत एव नासिका के पश्चात् भाग (Posterior Nostrils) से भी इस प्रकार का हरिद्रा वर्ण लवणवत स्राव निकलता है। नाक से किसी कारण से यदि नकसीर फूटे तव नेट्रम सल्फ से उपकार पाया जाता है। विकेरियस ब्लीडिंग (Vicarious Bleeding) व स्थानिक रजःस्राव में भी यह औषधि फलप्रद है

ऋतु के समय नाक से रक्त गिरना, उपशम की वजह से पीनस रोग, आकाश में वादल रहने पर रोग का बढ़ना, नाक वन्द रहना, नाक के भीतर सूखापन और जलन, नाक की दीवालें वहुत खुजलाया करती है।

मुख मंडल (Face)—चेहरा उतरा हुआ या पित्त की अधिकता की वजह से पीला रग, चेहरे पर व्रण और छाले, कनपटी के पास दर्द।

मुंह के भीतर (Mouth)—मुँह का स्वाद तीता, हमेशा थूक भर आता है, सफेद गाढा ऋतुस्राव, गलनली और पाकाशय से जोर से निकालना पड़ता है।

जीभ (Tongue)—गँदली, भूरी आभा लिए हरे रग की मैल चढी जीभ, लसदार लेप चढी जीभ, जीभ-दर्द में ठण्डी चीज खाने पर आराम मालूम होता है। जीभ लाल, जीभ की नोंक में जलन भरे छाले।

दाँत (Teeth)—दाँत में दर्द, धूम्रपान और ठण्डी हवा मे घटना, मुँह के भीतर ठण्डा पानी रखने पर घटना। मसूढों मे जलन, मसूढों पर छाले।

कंठ (Throat)—डिफ्थीरिया रोग में जव वीच-वीच-मे हरे रंग का वमन होता है उस समय अन्यान्य दवाओं के साथ इस लवण की जरूरत पड़ती है।

आमाशय (Stomach)—फूला, भार मालूम होता है, हमेशा ही मिचली वनी रहती है। तीसरे पहर प्यास अधिक हो जाती है, तिक्त

और खट्टी पित्त की कै होती है; हरे रग-से नमकीन स्वाद के पानी की कै; साथ ही पित्तम्ल और काला मल; वहुत क्रोध या विरक्ति के वाद कामला रोग । पाकस्थली प्रदेश की स्फीति, भारी जलन, साँस लेने में कष्ट, सब्ज रग का पतला वमन, अजीर्णजनित अम्ल उद्गार, उदरामय व डकार, पित्त शूल, छाती की जलन, पेट अफरना, अधिकतर सन्ध्याकालीन, पेट से लेकर मेदे के स्थान तक स्फीति व ठसा हुआ भाव, इसलिये श्वास आदि का कष्ट। वाँयीं जंघा की तरफ से दर्द व उसके साथ खाँसी का भाव, गाढ़ा श्लेष्मा उठना, कपड़ा कमर मे कस कर नहीं पहिना जाता, पित्त की विकृति व गाढी अवस्था होने के कारण पथरी उत्पन्न हो जाना। इसलिए कामला का प्रभाव इस प्रकार पित्त शिला के तीव्र-शूल दर्द में यदि इस औपधि की निम्न शक्ति से उपकार न हो, तव मैग फास ६x के साथ पर्याय-क्रम मे कुछ थोड़ी-थोड़ी देर वाद व्यवहार करना चाहिए।

उदर एव मल (Abdomen & Stool)—प्रातः विस्तर से उठते-उठते पाखाने को दौड़ते हैं एव जलवत् तरल पाखाना पिचकारी जैसा तेज, ठण्ढी वायु व वर्षा ऋतु मे अधिक देखा जाता है। मलीन, कब्ज, पित्त-सयुक्त मल अथवा पित्त वमन सहित अतिसार (जिह्वा के लक्षण देखना चाहिए)। उदर मे दर्द व उसके साथ पेट खुला रखना, यकृत प्रदेश में तीर के समान खोदने का दर्द, हाथ से छुआ नहीं जाता, धोती इत्यादि कसकर ढीली करनी पड़ती है। पित्तमय मल, स्राव मे जब मलद्वार एव आन्त्र प्रदेश का नीचे का भाग गरम वोध होता है, रक्त संचय हेतु यकृत प्रदेश मे दर्द, पेट में वायु सचय के कारण शूल का दर्द, (कभी मैग फास कभी फेरम फास के साथ पर्याय-क्रम मे)। पित्त-ज्वर के साथ उदर मे वायु सचय, पेट की दायी ओर वायु का संचार होकर तमाम पेट मे वह दर्द फैल जाना, गड़वड़ आवाज होना इत्यादि।

मूत्र यन्त्र (Urinary Organ)—डायविटीज मेलिटस (Diabetes

Mellitus) शर्करायुक्त-बहुमूत्र और अतिस्रावी बहुमूत्र (Diabetes Insipidus), दोनों अवस्थाओं के लिए यह एक अति मूल्यवान औषधि है, २x का प्रयोग उत्तम है।

मूत्र में एक प्रकार का लीथिक एसिड (L. A.) नामक पदार्थ देखा जाय एव मूत्र-पात्र की चारो ओर दीवार पर और नीचे भी ईंट की सुर्खी के समान तलछट बैठ जाय। जिन लोगों की पित्त प्रधान धातु है, उनकी वातग्रस्त अवस्था या मूत्र पथरी मे इसकी क्रिया बहुत अच्छी होती है।

पुरुष-जननेन्द्रिय—सूजाक नया और पुराना; धातुगत प्रमेह-दोष; लिंग की अग्र त्वचा और अडकोष की सूजन, छिला हुआ सूजाक, कोमल मासाकुर, सबसे हरे रग का स्राव, उपदश के दोष, लिंग में खुजली, सूजाक का स्राव हरा पीला, बिना दर्द, सूखने पर हरा हो जाय।

स्त्री-जननेन्द्रिय—योनि में प्रदाह, सूजन और रस भरी गुटिकाएँ, बहुत ज्यादा रस-स्राव; खाल उघड़ने वाला, कब्जियत और उदर शूल तथा सवेरे के समय अतिसार एव शीत मालूम होना, खाल उधेड़ने वाला प्रदर का स्राव, योनि प्रदाहित।

श्वास-यन्त्र और वक्ष—दमा रोग की यह श्रेष्ठ दवा है। तर हवा में और बरसात मे दमा बढ़ जाता है। स्वरभग, छाती में घड़-घड़ आवाज होती है, ढीला श्लेष्मा निकलना। ब्राकाइटिस रोग के बाद दमा।

पीठ और हाथ-पैर—नितम्ब और मेरुदण्ड के नीचे स्थान में कुचलने की तरह दर्द, कशेरुका घटित झिल्ली प्रदाह (Spinal Meningitis), गर्दन पीछे की ओर खिच जाती है, पीठ मे अकड़न, इस अवस्था की नेट्रम सल्फ एक बहुत ही श्रेष्ठ दवा है।

स्नायु—सुस्ती और थकावट मालूम होती है; घुटने मे शक्ति नहीं रहती, सारे शरीर में कम्पन, लिखने के समय हाथ काँपते हैं। निद्रित अवस्था मे हाथ और पैर की पेशियों का फड़कना; कब्ज के साथ ताडव रोग; तीसरे पहर और किताब पढ़ने के समय तन्द्रा, नींद आने लगना,

गहरे और दुश्चिन्ता से भरे सपने; जल के सपने, नींद खुलने पर दमा का दौरा हो जाना। प्रायः प्रत्येक रात मे सपने देखता है।

ज्वर—पित्त-ज्वर की सभी अवस्थाओं में ही लाभ करता है। पित्त वमन के साथ होने वाला बुखार, पित्त के कारण रेमिटेण्ट ज्वर। जाड़ा अधिक मालूम होना, सन्ध्या के समय शरीर वरफ की तरह ठण्ढा हो जाता है। वाहरी हवा से घृणा।

चर्म और तन्तु—माथा, आँख, मुखमण्डल, वक्षस्थल, मलद्वार प्रभृति स्थानों में मस्से। एक्जिमा, रस भरे दाने या उद्‌भेद, पीले हरे रङ्ग का पानी की तरह स्राव, तलहत्थी रूखी, दर्द भरी।

गर्भ—गर्भ अवस्था में प्रातःकालीन पित्तमय वमन, इसके साथ-साथ मुख का कड़ुवा स्वाद व पित्त वमन आदि। प्रसव के वाद ह्वाइट लेग अर्थात श्लेष्मिक शोथ इसमें अच्छा फल पाया है।

निद्रा—पित्त लक्षण जनित अवसाद व निद्रा, निद्रा भाव अर्थात् हर समय तवीयत गिरी हुई रहे। इसको पाडु रोग व कामला होने का संकेत समझना चाहिये। सुबह उठकर मन भरा हुआ-सा, अति आलस्य भाव, नींद छोड़ती ही नहीं, परन्तु शाम को थोड़ा-वहुत अच्छा रहना, हर प्रकार की खराव अवस्था में और प्रातःकाल लिखने-पढने के समय मे वृद्धि। शयन करने पर नाना प्रकार के स्वप्न, अच्छी नींद होती ही नहीं, कभी नींद में चौंक उठना, कभी वडबड़ाना।

ह्रास-वृद्धि—वायीं करवट सोने पर वरसात मे, सुबह व शाम साधारणतः सभी लक्षण वढ जाते हैं। गर्मी के दिनों मे, सूखी आबहवा में और खुली जगह में इसका रोगी अच्छा रहता है।

शक्ति और क्रम—शुशलर के मत से २x और ६x शक्ति व्यवहार करना चाहिए; पर हेरिंग वगैरह भिषगाचार्य गण ३० और २०० शक्ति व्यवहार करते थे।

नेट्रम सल्फ की अन्य हौमियोपैथिक ओषधियो के साथ तुलना—

वोरिक एण्ड टैफिल साहव कहते हैं कि नेट्रम या सोडे सल्फर के

साथ जिन-जिन दवाइयों को एकत्र मिलाकर प्रयोग होता है, उनके साथ इस नमक का बहुत ही सम्बन्ध देखा जाता है। पहले तो यह याद रखना चाहिए कि शारीरिक विकार से जो-जो रोग उत्पन्न होते हैं उन सब में यकृत के ऊपर इस नमक का विशेष कार्य देखा जाता है। इसी-लिये इसको लिवर-रेमेडी (Liver Remedy) या यकृत् की दवाई कहते हैं। आस्थानिक रजः (Vicarious Menstruation) जैसे कि नकसीर इत्यादि में पल्सेटिला, ब्रायोनिया के साथ तुलना कर सकते हैं। प्रातःकाल में बिस्तर से उठते ही भाग कर पाखाना जाने की जो अवस्था देखी जाती है, उसमें सल्फर, पोडोफाइलम, रियूम इत्यादि के साथ तुलना चल सकती है।

किसी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की इच्छा, दर्द एक जगह से दूसरी जगह बदल कर होता है। नेट्रम सल्फ के साथ पल्सेटिला, लैक कैनाइनम, कैलि सल्फ, कैलि बाइक्रोम इत्यादि की तुलना कीजिये।

साइलिशिया

(Silicea)

पर्याय नाम—इसी का दूसरा नाम सिलिका व सिलिका ऑक्साइड (Silica or Silicic Oxide) है। एसीडम सिलिकिन, सिलन्स तथा फ्लिन्ट क्वार्ट्ज आदि नामों से भी इसे पुकारते हैं।

मुख्य कार्य—यह लावणिक पदार्थ अस्थि, बाल, नाखून, सन्धि-स्थान, ग्रन्थि, मस्तिष्क स्नायु, मेरुमज्जा संयोजक तन्तु, श्लैष्मिक झिल्ली आदि स्थानों में क्रिया करके उन सब स्थानों की दृढ़ता व परिपुष्टि करता है। इस नमक का उन स्थानों में अभाव हो जाने के कारण से शारीरिक पोषण-क्रिया का व्याघात पैदा होकर गण्डमाला धातु-दोष के समान नाना

रूप पीड़ा उत्पन्न हो जाती है और परिपाक शक्ति में बाधा पैदा हो जाती है। जिस पीड़ा मे वह पीव उत्पन्न हो जाता है, उस क्षेत्र मे इसी के व्यवहार से उपकार होता है। साधारण व बड़े स्फोटक से लेकर नासूर के घाव इत्यादि तक जब उसमें पीव बनने की सम्भावना देखी जाय, तब इसी का प्रयोग करने का समय आ जाता है। इस नमक की इस प्रकार की क्षमता है कि शस्त्रादि के समान, स्फोटक फाड़कर भीतर की पीव आदि खींच कर बाहर को लाता है (नीची शक्ति), परन्तु यहाँ एक बात याद रखनी चाहिए कि यदि 'साइलिशिया' की पीव आदि आक्रांत स्थान से बह जाने पर स्थान बहुत दिन तक सूखता ही नहीं तब इस अवस्था में कल्केरिया सल्फ कुछ दीर्घ काल तक व्यवहार करने से उस स्थान में नई पीव न बनने देकर धीरे-धीरे सुखा कर आराम कर देता है। गाउट (Gout), फोड़ा संयोजक आदि तन्तुओं के भीतर जो दूषित पदार्थ देखा जाय, यह नमक उनको भी बाहर निकालने की क्षमता रखता है एवं रस-नली या रस-ग्रन्थि के भीतर दूषित पदार्थ जो कुछ संचित हो जाता है वह सब यदि कल्केरिया सल्फ के प्रयोग से शोषण न होने पावे तब उसके बाद साइलिशिया व्यवहार करने से बाकी शोषण कार्य का समाधान कर देता है। गण्डमाला धातुदोष व्यक्ति की पीड़ा मे यह औषधि विशेष लाभदायक है। पीव उत्पन्न होने के बाद इस औषधि की निम्न शक्ति धीरे-धीरे प्रयोग करना उचित है, परन्तु पीव बहना आरम्भ होकर जब सूखने में विलम्ब होता है, तब उच्च शक्ति व्यवहार करना उचित है। पीव उत्पन्न करना, बहना एव आखिरी सूखने की अवस्था तक इस नमक का व्यवहार चल सकता है। किसी डॉक्टर ने ठीक लिखा है कि—

'By supplying Silicea (Silica) in muscular the chemical effinity is restored and normal thought again established.'

प्रमुख लक्षण

मन—स्मरण शक्ति का ह्रास (कैलि फास) खास कर स्कूल के बालक-बालिकाओं को पाठ याद करने के समय सब गोलमाल हो जाता है और वे पाठ भूल जाते हैं। दिल में होता है कि जीवन बेकार है, किसी प्रकार का कार्य करने का भरोसा नहीं होता है, अर्थात् सर्वदा की तरह जीवन में हताश भाव।

मस्तिष्क—शिशु इत्यादि के मस्तिस्क मे अस्थि विकृत रोग (Rickets) या जल सचयता (२०० शक्ति)।

आँख—अंजनी रोग मे खाने और लगाने अर्थात् दोनों प्रकार से इसका प्रयोग होता है। यदि प्रदाह आदि की स्फीति भाव की अवस्था रहे, तब इस अवस्था विशेष में कभी कैली म्यूर कभी फेरम फास के साथ पर्याय-क्रम में व्यवहार करना उचित है। चक्षु के भीतर एक प्रकार की ग्रन्थि पायी जाती है जहाँ से चक्षु-स्राव निकलता है, अर्थात् इस चक्षु की धारावाही ग्रन्थि का नाम लैक्रीमल ग्लैंड (Lachrymal Gland) है, इस ग्रन्थि की नली का घाव या नासूर, प्रदाह, स्फीति भाव इत्यादि जिस प्रकार की भी अवस्था हो उसके लिए 'साइलिशिया' एक महोपकारी औषधि है।

कान—कर्ण प्रदेश के बाहर का प्रदाह जनित स्फीति भाव, कर्ण प्रदाह के छिद्र (Tympanic Cavity) व यूसटेचियन ट्यूब (Eustachian Tube) आदि का सर्दी जनित प्रदाह व स्फीति भाव, कान बन्द हो जाना और फट से खुल जाना, उस स्थान की प्रदाह अवस्था के बाद गाढ़ी सब्ज रंग की पीब स्रावित होती देखी जाय अर्थात् हम लोग जिसको कान पकने का रोग कहते हैं, उसके लिए उपयुक्त है।

नाक—मस्तिष्क प्रदेश में सर्दी का भावापन्न होकर नासिका से चिप-चिपा पीत वर्ण का दुर्गन्धयुक्त श्लेष्मा निस्सरण, ओजीना (Ozena) से

सर्दी दुर्गन्ध युक्त स्राव जब निकलते देखा जाये, नाक के दोनों बगल की ऊँची हड्डी के जोड़ के नीचे दर्द हो।

मुखमण्डल—मुखमण्डल प्रदेश में किसी प्रकार अर्बुद कल्केरिया फास के समान उद्भेद और वह पककर पीली-सी गाढ़ी पीब के समान स्राव निस्सरण होते देखा जाय; जबड़े प्रदेश की अस्थि का क्षत और उससे टुकड़ा-टुकड़ा हड्डी पीब के साथ बाहर निकले।

मुखमध्य—मुख के भीतर ग्रन्थि आदि प्रदेश के क्षत इत्यादि स्थान से रसों के लक्षण युक्त स्राव निर्गत होना; इस प्रकार की अवस्था में कभी-कभी लार के समान निकलते देखा जाय, मुख का तालु प्रदेश (Palate) का पचनशील क्षत होकर धीरे-धीरे छिद्र हो जाना; इस अवस्था में इसकी ऊँची शक्ति खिलाना तो चाहिए ही, परन्तु इस औषधि के साथ कैलि-म्यूर, कल्केरिया फास की निम्न शक्ति मिलाकर दिन-रात में तीन-चार बार गुरगुराना चाहिए।

दाँत—ठण्ढ इत्यादि लगकर दाँत के मूल प्रदेश में दर्द आरम्भ होकर एकदम शूल के समान अवस्था हो जाये। सेंक, ताप व ठण्ढ किसी भी चीज से उपशम न हो; रात में वृद्धि, पैर की तरफ प्रचुर परिमाण में दर्द आदि अचानक अवरोध होकर दन्त के शूल का दर्द उपस्थित हो जाये (यह पसीना आदि ठण्ढ होकर अवरुद्ध हो जाय)।

जिह्वा—जिह्वा की स्फीति व कठिन भाव, क्षत अवस्था, जिह्वा के ऊपर मोटी मैल श्लेष्मा से आवृत्त, जिह्वा के ऊपर एक आध बाल लिपटा रह गया है, ऐसा बोध होता है। सर्वदा के लिए अस्वस्थता भाव बोध करते हैं और थू-थू करके उसके थकने की कोशिश करते हैं।

गलमध्य—इसका जो कुछ विवरण मुखमध्य के लिखने के समय कह दिया गया है उस प्रकार की लक्षणयुक्त अवस्था होने से 'साइलिशिया' का प्रयोग होगा, जैसे गले के भीतर क्षत व फोडा व थायरायड ग्लैण्ड (Thyroid Gland) की वृद्धि इत्यदि में साइलिशिया (२००–१०००)

का लक्षण क्षत-स्राव से निर्गत होते देखा जाय, ऐसे ही टांसिल (Tonsil) इत्यादि की पीब में जब साइलिशिया का व्यवहार किया जाये तब इतना याद रखना चाहिए कि सूखने की अवस्था में कभी कल्केरिया सल्फ व्यवहार करना पड़ता है। गलगण्ड रोग में भी व्यवहार हो सकता है।

पाकस्थली प्रदेश—अजीर्ण रोग की पुरातन अवस्था में क्षुधा हीनता, भीतर में शीत भाव, हृदय प्रदेश में ज्वाला का अनुभव, खट्टी-खट्टी डकार उठना, यद्यपि नेट्रम फास, कल्केरिया फास के भीतर इन सब अवस्थाओं का विशेष वर्णन किया गया है, तथापि जब अधिक दिन अजीर्ण रोग भुगतने के उपरान्त अवस्था का उपशम न हो, तब इन नमक की ३०x मात्रा को देना चाहिए।

मूत्र यन्त्र—मूत्रकोप प्रदेश मे पीब उत्पन्न हो जाती है एव पेशाब के साथ कभी पीब, कभी श्लेष्मा इत्यादि भी रहे व कभी पेशाब के नीचे तलछट आदि जमा देखी जाय, मूत्र परीक्षा से यूरिक एसिड (Uric Acid) का भाग अधिक पाया जाय, अति पुरातन प्रमेह व उपदश रोग में जब अति गाढ़ी हरित वर्ण की पीब का दुर्गन्धयुक्त स्राव होता देखा जाय, तब यह औषधि प्रयोग की जाती है।

पुरुष-जननेन्द्रिय—मूत्राशय ग्रन्थि (Prostate) के प्रदाह आदि अवस्था के बाद जब उक्त ग्रन्थि में पीब का सचार हो जाय या उक्त ग्रन्थि में बहुत शोथ हो जाय तो नेट्रम फास ३०x तीन-तीन घण्टे के अन्तर के पर्याय क्रम में व्यवहार करना उचित है और दिन-रात में दो बार खाने के बाद कल्केरिया फास १x यदि थोड़े दिन व्यवहार किया जाय और साथ-साथ परहेज रखा जाय तब बहुत दिनों का अजीर्ण रोग आराम होते देखा जाता है। शिशु का मातृ स्तन पान करने के बाद ही वमन, परन्तु यह याद रखना चाहिए कि इस वमन मे अम्लयुक्त गन्ध रहती है (अवस्था विशेष में कभी फेरम फास के साथ, कभी कल्केरिया फास के साथ पर्याय-क्रम में व्यवहार करें)।

उदर एवं मल—यकृत प्रदेश में भयकर टनटनाता दर्द, हिलने-डुलने और स्पर्श करने से वृद्धि, यकृत प्रदेश की कठिन अवस्था, स्फोटक की विद्यमानता। बालक को दुर्गन्ध युक्त उदरामय पीड़ा, पेट उभर आना, मस्तिष्क प्रदेश में प्रचुर गर्म, पेट भर कर खाते-पीते हैं परन्तु शरीर मे गोश्त ही नहीं बनता।

स्त्री-जननेन्द्रिय—स्त्रियों के ऋतुकाल में अत्यन्त दुर्गन्धयुक्त पैर प्रदेश में पसीना आता है, साथ-साथ सब शरीर बर्फ के समान ठण्ढा रहे, कोष्ठबद्धता, ऋतु स्राव समय से पहले, अधिकतर स्त्रियों को स्वल्प स्राव व किसी को अधिक स्राव। स्त्रियों की वंध्यत्व अवस्था (बाँझपन), जो स्त्री ठण्ढे पानी मे खड़ी होकर काम करती हैं, उन सबकी अतिरज. अवस्था, उसमे जलन, खाज व क्षत बोध होना, अनियमित ऋतु सफेद-सफेद पानी के समान स्राव निकलना, ऋतु काल के मध्यवर्ती पतला खून के समान निकलना एवं योनि प्रदेश में छोटी छोटी रसौली के समान स्राव।

गर्भ—गर्भ अवस्था मे केवल स्तन प्रदाह आदि इसी से आराम होता है, यह नहीं, परन्तु कैली म्यूर इसकी सर्व प्रधान औषधि है और यदि ज्वर हो तब फेरम फास के साथ पर्याय क्रम में व्यवहार करना चाहिए। परन्तु इस औषधि को प्रथम अवस्था मे प्रयोग करने से यह भीतर पीब न बनने देकर, भीतर रस आदि को सुखा देती है और स्तन के आक्रान्त स्थान मे दबदबानी जलन व प्रदाह आदि अवस्था के बाद यदि पीबयुक्त स्फोटक मे परिणत हो जाय, तब केवल **साइलिशिया** ६x शक्ति बार-बार व्यवहार करने से उस स्फोटक आदि को फाड़ कर पीब बहा देता है, स्तनों में दूध न हो तो ३०x का व्यवहार करें।

श्वास-यन्त्र—श्वास यन्त्र रोग, चाहे जिस प्रकार की पीड़ा हो, जैसे ब्राकाइटिस, न्यूमोनिया, यक्ष्मा घटित पीड़ा, जहाँ इस औषधि के लक्षण-युक्त सब्ज आभा हरिद्र वर्ण का श्लेष्मायुक्त स्राव निर्गत होते देखा जाय

तव भी इसके और विशेष लक्षण देखने चाहिए। ब्रांकाइटिस और न्यूमोनिया आदि में पीव सचित अवस्था जब हो जाय, उसमें अत्यन्त खाँसी व गले के भीतर घड़-घड़ करना, क्षय अवस्था और दुर्गन्धयुक्त बलगम निकलते देखा जाय, यक्ष्मा ग्रस्त रोगी की तृतीय अवस्था में यह अधिकतर व्यवहार होता है।

पृष्ठ एव अङ्ग-प्रत्यङ्ग—मेरुदण्ड प्रदेश के ऊपर बड़ा स्फोटक व कारबक्ल, सोरियासिस, पेशी का स्फोटक, मेरुदण्ड प्रदेश बाँका हो जाय एवं वरटेबरा (Vartebra) प्रदेश के नासूर का घाव व ट्यूबरक्यूलस अवस्था व क्षय में कल्केरिया फास के साथ पर्याय-क्रम में। पुरातन सर्दी आदि में ताप लगने से दर्द इतना नहीं होता है। नाखून के कोने का घाव अंगुलहाड़ा रोग-ग्रस्त, पर बगल और जंघा का दुर्गन्धयुक्त पसीना और इस पसीने के अचानक ठण्ड आदि से दब कर या रुक जाने के बाद नाना प्रकार की पीड़ा की उत्पत्ति। सन्ध्याकाल व रात्रि में पैर के तलवे में जलन अनुभव करना, लिखने के समय हाथ की उँगली में बहुत देर तक ऐंठन रहती है, कमर व घुटने के नीचे स्थान में दर्द, पृष्ठ प्रदेश में ठण्ढी वायु लगकर दर्द उत्पन्न हो जाना। फीलपाँव (Elephantiasis)—कड़ी व सख्त अवस्था के साथ दर्द, कल्केरिया फ्लोर के साथ यह नमक खिलाना तो चाहिये ही, साथ ही दोनों औषधियों का मलहम बनाकर भी लगाना चाहिए, सोने में अंग सुन्न हो जाने।

स्नायुमण्डल विधान—गत में स्नायुशूल में पागल के समान हो जाय (मैगफास और कल्केरिया फास को एक साथ मिलाकर पर्याय-क्रम में व्यवहार करें) शरीर के नाना स्थान में इस प्रकार दर्द अनुभव करते हैं, जैसे [illegible] देर में घाव हो गये हों। स्नायुशूल व हिस्टीरिया (Hysteria) की बहुत बढ़ी हुई अवस्था हो जाने से या खास तरह रात्रि काल में वृद्धि।

चर्म—आघात, उपघात अवस्था प्राप्त होकर जो क्षय उत्पन्न होता है, उससे दरिद्र वर्ण के स्राव आदि लक्षण में इस औषधि का व्यवहार होता है। कुष्ठ व्याधि में पीव उत्पन्न होने से, खराब गो-बीज का टीका देने के कुफल स्वरूप ज्वर आदि नाना प्रकार के उपद्रव व ज्वर चर्म पीड़ाकर इत्यादि शरीर में सलाई की भाँति कोई चीज लगकर या घुसकर पीव उत्पन्न हो या शीत फटा पीड़ा, इस प्रकार चर्म की नाना प्रकार की व्याधि में इस औषधि का भीतर खाने और बाहर मलहम के रूप में लगाने, दोनों प्रकार से व्यवहार करते हैं।

निद्रा—निद्रा काल में हाथ-पैर फैलते रहें, शरीर का अवसन्न भाव जैसे हाथ-पैर उठाने की इच्छा नहीं, सर्वदा सोता रहे, निद्रावस्था में चमक कर उठना, अधिकतर चोर, डाकू इत्यादि का स्वप्न देखना। यक्ष्मा-ग्रस्त रोगी को शीतकाल में अत्यन्त निशा घर्म व निद्राहीनता अवस्था, नाड़ी द्रुत देह का उच्च ताप; हृत्पिण्ड का दबदबानी भाव इत्यादि।

ज्वर—यक्ष्मा ग्रस्त रोगी का बल क्षयकारी दुर्बलता व निशा घर्म रहित ज्वर, परन्तु यह ज्वर ऐसा प्रवल नहीं होता अर्थात् भयकर धीमा एवं दूषित ज्वर।

तन्तु विधान—स्फोटक आदि में दब-दब भाव रह कर जब भीतर से पीव उत्पन्न हो गई हो, रूखा जैसा मालूम हो, तब भा 'साइलिशिया' प्रयोग करने का उपयुक्त क्षेत्र समझना चाहिए।

उपशम व वृद्धि—समस्त लक्षणों की पूर्णिमा या अमावस्या की रात्रि में वृद्धि, शीतल हवा व खुली हवा मे, ठण्ढे मौसम मे, कभी-कभी प्रातःकाल पैर प्रदेश में ठण्ढ लगकर व अचानक पसीना दबकर इत्यादि-इत्यादि बहु रोगों की वृद्धि की अवस्था देखी जाती है। उत्ताप, गर्म घर व ग्रीष्म समय इत्यादि मे बहुत से लक्षणों का उपशम व शान्ति देखी जाती है।

क्रम व शक्ति—साधारणतः इस औषधि की ६x शक्ति व्यवहार होती है। डाक्टर सुशलर साहब ने १२x व्यवहार करने के लिए उपदेश किया है। परन्तु पीब उत्पन्न करने के लिए ६x शक्ति से अच्छा फल पाया जाता है। यद्यपि यह पीब स्राव बहुत दिन तक रह जाय और यह सूखने की हालत में न आवे, तब इस औषधि का २००x, १०००x शक्ति तक की छोटी मात्रा में व्यवहार करना चाहिए।

तुलना—वृद्धि व्यक्ति के मोतियाविन्द के लिए कास्टिम, कल्केरिया फ्लोर, कोनायम इत्यादि के लक्षण पर विचार कर और 'साइलिशिया' के साथ तुलना करके व्यवहार करना चाहिए। वडे-वड़े सोरियासिस एवसेस (Psoriaces Abcess) अर्थात् उस मन्थि स्थान की मासपेशी के ऊपर फोड़े व उन प्रदेश के भयानक बड़े-वडे फोडों के लिए इस नमक के साथ कल्केरिया हाइपोफास, कल्केरिया फास, हिपर सल्फर, सल्फर, कल्केरिया कार्व इत्यादि के ऊपर ध्यान रखना बहुत ही आवश्यक है। सिर-पीड़ा में इसी के स्वभावगत लक्षण नासूर में 'साइलिशिया' बहुत ही उपयोगी होती है। इस नमक का सिर-पीड़ा के साथ बहुत से लक्षण स्पाइजेलिया, जेल्मिमियम, संग्विनेरिया, काकुलस इत्यादि के साथ मिलते हैं। ब्लाइंडिंग हेडेक (Blinding Headache) के लिए अर्थात् जिस सिर पीड़ा में आँख के सामने अँधेरा आ जाता है, उसमे उपरोक्त औषधि के साथ तुलना चल सकती है। इसके बहुत से लक्षण पल्सेटिला के साथ मिलते हैं अर्थात जिस स्थान मे पल्सेटिला तरुण अवस्था की पीड़ा के लिए उपयोगी होता है, वही लक्षण यदि वर्तमान रहे और पुरातन अवस्था प्राप्त हो जाये, उस क्षेत्र में 'साइलिशिया' का व्यवहार चल सकता है। इसलिए कहा है—(Silicea is the Chronic to Pulsatilla)।

———

निम्न क्रम में कुछ अन्य अत्यन्त आवश्यक पूरक औषधियाँ

संखिया (Arsenic)—हमारे शरीर मे हर एक अंगों मे पाया जाता है। इसके विश्लेषण से पता चलता है कि Arsenic खून, चमड़ा और ग्रन्थियों में पाया जाता है।

आयोडिन (Iodine)—परीक्षण से शरीर के हर अंगों में, विशेषतः रक्त एवं ग्रन्थियों (Blood & Glands) में पाया जाता है।

अत्यन्त रक्तस्राव के बाद शरीर में Iodine नहीं रहता है। सब बचा हुआ Iodine ग्रन्थियों में जमा हो जाता है—Dr. Glay तथा Dr. Bourset ने इसे परीक्षणों से सिद्ध किया है।

मासिक रजःस्राव मे आयोडिन मिलता है, इसलिए आवश्यक है कि Arsenic तथा Iodine को रसायन-शास्त्र की औषधियों मे मिलाया जाय।

अब Arsenic और Iodine को मिश्रित करना, खासकर Calcium, Kali तथा Natrum से, विचार करने का विषय है। डॉ॰ शुशलर के अनुसार Ars. तथा Iodine की पुरानी बीमारी मे कमी रह जाती है। अतः इनकी आवश्यकता है। Arsenic तथा Iodine Cells की कमी को पुरानी बीमारियों मे पूर्ण करते हैं। अतः जब बीमारी असाध्यावस्था की तरफ अग्रसर होती हैं तथा जाती है तो इन दोनों को Cal., Kali तथा Natrum Salts से मिलाना आवश्यक हो जाता है।

जब Calcium तथा Kali Salts के लक्षण उपस्थित हों और उनके प्रयोग के बाद भी बीमारी अच्छी न होती हो तो Cal. Iod. तथा Kali. Iod. की आवश्यकता होती है।

जब शरीर (पूर्ण) खराब हो जाय तो Ars. Iod. and Phos. Iod. के प्रयोग बिना बीमारी के इलाज में कठिनता होती है।

डॉ॰ शुसलर ने Manganum को अपने Tissue Remedies में शामिल नहीं किया, परन्तु Manganum रक्त, यकृत् तथा शरीर के अन्य भागों में पाया जाता है। अतः इसकी जरूरत भी कभी-कभी पड़ती है।

क्षय हुए तन्तुओं को ठीक करने के लिए निम्नाकित औषधियों की भी आवश्यकता होती है। यद्यपि इनकी आवश्यकता कम होती है, परन्तु कमी-कमी इनके विना आरोग्य होना कठिन हो जाता है।

Alumina—निम्नाकित में पाया जाता है। (कम परिमाण में)—

(i) Spinal Marrow.

(ii) Nerves.

(iii) Skin.

(vi) Mucous (स्राव)

इसका कार्य Natrums तथा Kali-Salts से मिलता है। निम्नांकित जगहों पर इसको आवश्यकता होती है।

(i) स्वाभाविक स्राव की कमी से सूखापन।

(ii) शारीरिक परिश्रम से थकान—खासकर Albumen के निकल जाने पर। Physiological and Pathological Excretion—के निकलने पर।

(iii) सिकुड़न का भाव।

(iv) अखाद्य पदार्थों के खाने की इच्छा।

(v) रेंगने की अनुभूति तथा सुन्नपन शाखा अगों पर जब चलने फिरने में अक्षमता आती है।

(vi) चर्म रोगों में।

(vii) जो बीमारियाँ Cal. Phos., Kali Sulph., Natrum Mur., Kali Phos., Kali mur., Natrum Phos से अच्छी न हो पाये उनके लिए इसका प्रयोग आवश्यक है।

Bromium

इसका प्रयोग मानसिक बीमारियों में Kali Phos and Natrum phos के साथ किया जा सकता है। पुराने घावों के साथ अगर स्नायविक पीड़ा हो तो Kali, Cal. and Ars. के साथ इसका योग अत्यन्त आवश्यक है।

———

पाँचवाँ अध्याय

वायोकेमिक औषधियों का प्रयोग

कल्केरिया फ्लोर

12x. 30x. 200.x

(१) हड्डियों के फटे घाव ।

(२) रेशेदार तन्तुओं का ढीला हो जाना, ववासीर के मस्से, रक्तवाहिनी नलियों का वढाव, जरायु का लटकना, पेट का लटकना, वच्चा होने के समय दर्द का अभाव तथा वच्चा पैदा हो जाने के वाद अधिक रक्तस्राव ।

(३) चमड़े का खुरण्ड (Skin Crusts) ।

(४) खोपड़ी की फोड़ा (Cephalhaematoma) ।

(५) फोड़े जिनका किनारा अत्यन्त कड़ा हो । ग्रन्थियों का कड़ापन, ट्यूमर, ग्रन्थियों का ट्यूमर ।

(६) वच्चों का दाँत देर से निकलना ।

उपरोक्त इस औषधि के स्वाभाविक लक्षण हैं । इसलिए निम्नाकित स्थलों पर प्रयोग कर सकते हैं ।

(१) चोट हड्डियों का (फेरम फास के साथ) ।

(२) गलनली एवं वायुनली की वीमारियाँ ।

(३) खोपड़ी का घाव ।

(४) कान के ढोल पर हड्डियों का वनना ।

(५) दाँत का ढीलापन एवं दर्द ।

(६) मसूढों का कड़ापन एवं प्रदाह ।

(७) दाँत न निकलना या देर लगना (कल्केरिया फास के साथ) दाँत निकलते समय ।
(८) विलनी (Styes) ।
(९) आँख के पपोटों पर कड़े ट्यूमर एव विलनी ।
(१०) किसी भी जगह का कड़ापन (खासकर जीभ का) ।
(११) दाँत निकलने के समय कै होना ।
(१२) ववासीर (खाना एवं वाह्य प्रयोग) ।
(१३) चर्म पर मोटी पपड़ी एव कड़ापन ।
(१४) सिफलिस दोष से या अन्य कारणों से चमडे में दरार ।
(१५) विषव्रण (Carbuncles) ।
(१६) स्तन का प्रदाह (Kali Mur) ।
(१७) कड़े (Chancre) मलहम भी ।
(१८) हड्डियों का सिफलिस (२०० x)
(१९) कड़ापन ।
(२०) पैर के नसों का घाव ।
(२१) हड्डियों पर किसी कड़े प्रकार का ट्यूमर बढ़ाव ।
(२२) जरायु से रक्तस्राव ।
(२३) ववासीर के मस्सों से रक्तस्राव (फेरम फास के साथ) ।
(२४) बच्चा पैदा होने के समय क्षीण दर्द ।
(२५) कटिवात—जो चलने-फिरने पर कम हो ।
(२६) घाव जिनके किनारे कड़े हों ।
(२७) स्वरनली की शुष्कता और गला बैठना ।
(२८) हड्डियों तथा दाँतों का पोषण होना ।
(२९) पुराना घुटने का प्रदाह (Synovitis) ।
(३०) बार-बार छींकने की इच्छा (साइलिशिया) ।
(३१) मुँह के कोनों का फटना (Natrum Mur) ।
(३२) सिफलिस के कारण हड्डियों के पर्दे की सूजन (२००x)

(३३) वच्चों की अविकसित हड्डियाँ।
(३४) मोटे लोगों की नसों की सूजन।
(३५) Glenard's Disease.
(३६) Giant celled sarcoma of the upper maxilla.

कल्केरिया-फास

(2x, 3x, 200x)

यह औषधि निम्नांकित वीमारियों को आरोग्य करती है—

१—हड्डियों का विकास देर से होना, रिकेट, खोपड़ी का अर्बुद, फटी हुई हड्डियों का देर मे मिलना, सीयन खुला रहना तथा दाँत देर से निकलना।

२—शोषण तथा चमड़े की पपड़ी (Crusts)।

३—अकड़न, आक्षेप—रक्तहीनता के कारण अकड़न तथा आक्षेप, सुन्नपन, शीत वोध जो रात में वढे (Mag Phos, Kali Sulph, Sil, Kali Phos) से तुलना करें।

४—कम अथवा अधिक रक्तावरोध के कारण मालूम होना कि अंग वेदम हो गये हैं। खासकर—पेट, चूतड़, हाथ, अँगुलियाँ, अगूठे तथा एड़ी, पैर से घुटने तक खंजापन एव सुन्नपन, ऋतु परिवर्तन से वढ़ना, रात को वढना, सोचने से तथा खाने के वाद वढना।

प्रयोग

१—निर्यास (चर्वी का)।
२—वसायुक्त मूत्र (Albuminuria)।
३—डिफ्थीरिया।
४—काली खाँसी (पहले Kali Sulph वाद में Cal. Flour से तुलना करें)

५—ऐंठन, दर्द।

६—मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह।

७—पुराना मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह।

८—खोपड़ी का ट्यूमर (Craniotabes)।

९—बहुत दिनों तक चाँद का न भरना (३०x)।

१०—स्नायविक दर्द (कान में)।

११—दाँत निकलने के समय अकड़न बिना ज्वर के (१२x)।

१२—दाँत निकलने के समय आँखों का प्रदाह (२x बाहरी प्रयोग भी)।

१३—कनीनिका (Cornea) का प्रदाह जिससे पीव निकले।

१४—मसूढ़ों का पीलापन।

१५—दाँत निकलने के समय कै करना (Cal. Flour)। १२x।

१६—कुकुर खाँसी (१२x)।

१७—किसी भी स्थान से वसा के समान स्राव निकले।

१८—गूमड़ (Polypus) ३०x, २००x।

१९—जब नलियों में वसा भर जाय।

२०—चमड़े पर पीली आभायुक्त सफेद पपड़ी।

२१—अण्डकोष की सूजन (Natrum Mur, Sil.)।

२२—अण्डकोष का प्रदाह।

२३—हड्डियों का फटना।

२४—रिकेट (Rickets)।

२५—दूध पिलाने वाली माताओं के स्तन में दूध चढ़ना (६x)।

२६—कमर का दर्द जो रात में बढ़े।

२७—तालू की रक्तस्रावी रसौली—Hygroma Patellae Hydrops Genu (Natrum Mur)।

२८—जब-जब हवा सूखी और ठण्ढी हो, वात का दर्द ।

२९—तम्बाकू पीने की आदत (५x) ।

३०—रक्तहीनता एवं हरित पाण्डु ।

३१—रक्तहीन लोगों का सिरदर्द (Nat. Mur., Kali Phos., Sil.)
१२x, ३x, २००x

३२—स्नायुशूल १२x, ३०x, २००x.

३३—डिम्बाशय का प्रदाह (Ovaritis) ।

३४—कामोन्माद (३०x, २००x) ।

३५—चम्बल रोग (Glaucoma) २००x

३६—क्षय रोग का अतिसार (Natrum phos) ।

३७—पेशाब से फास्फेट निकलना (Phosphaturia) ।

३८—कठमाला के घाव (कभी भी १२x से नीचे न प्रयोग करें) ।

३९—शरीर की बाढ रुकना (२००x देर-देर पर दें) ।

४०—ऋतु होने के समय लड़कियों को बलकारक औषधि के रूप में दी जाती है, मानसिक सुस्ती हो ।

४१—ऋतु होने की उम्र में लड़कियों का कमर दर्द ।

४२—पुरानी टांसिल की बीमारी ।

४३—खाने के बाद सिर मे मन्द-मन्द दर्द ।

४४—नाभी के ऊपर मुँहासा, कील, फोड़ा हो, परन्तु नीचे कभी न हो तो इसका प्रयोग करें ।

४५—रात्रिकालीन कमजोर करने वाला पसीना ।

४६—अस्वाभाविक कमजोरी ।

४७—हाथ और चेहरे पर ठढा पसीना, बदन सूखा परन्तु ठंढा ।

४८—चमड़ा सूखा, परन्तु हाथ गीले और ठढे ।

४९—जवान स्कूली लड़कियों का सिर दर्द (मालूम होता है कि सिर पर बर्फ रखी है, मन्दाग्नि, अस्वाभाविक चीजों के खाने की भूख) ।

५०—जवान होने वाली लड़कियाँ जो अधिक खा नहीं सकतीं, खाने पर भी भूखी रहती हैं।
५१—अधिक दिनों तक दूध पिलाने के कारण प्रदर, कष्टरजः।
५२—ऋतु के पहले कामोन्माद।
५३—गर्मी की पलट निकलना, मूर्छा, योनि में दर्द।
५४—डर के कारण छोटी लड़कियों का नर्तन रोग।
५५—ठंढ लगने से ऋतु बन्द हो जाना।
५६—पूरी शरीर में शीत लगना।
५७—पैर बर्फ के समान ठंढे।
५८—सीढ़ी पर चढ़ने पर चक्कर आना।
५९—विशेषकर बाएँ डिम्बकोष की दर्दयुक्त सूजन जो ऋतु के समय बढ़े।
६०—स्थूलता।
६१—त्रिकोणास्थि का दर्द।
६२—ग्रन्थियों की सूजन, छूने में दर्द होना।
६३—जल्दी-जल्दी साँस लेना।
६४—आँखों के बन्द होने के पहले स्वप्न देखना। (Mag Phos, Natrum Phos)
६५—मस्तक पर पसीना।
६६—ऋतु बहुत जल्द, बहुत दिनों तक ज्यादा मात्रा में होना, (काली-फास, कल्के फ्लोर)।
६७—अण्डे खाने की विशेष इच्छा।
६८— विवृद्धि (Hypertrophy) अगों की प्रोस्टेट ग्रन्थि।
६९—ऋतु के पहले स्थानों की सूजन एवं दर्द (नेट्रम-म्यूर)।
७०—ऋतु के समय या दोष से मुँह के चारों तरफ दर्द होना एवं मस्से।

७१—हस्तमैथुन करने की इच्छा (२००x एक बार)।

७२—स्तनों के घाव।

७३—अफरा (Mag Phos. Sil. Natrum)।

७४—ऋतु के पहले याददाश्त की कमी।

७५—पूर्ण शरीर अथवा जननेन्द्रिय में खुजली।

कैल्केरि. ~~फॉस.~~ सल्फ

(30x, 200x)

इस लवण के निम्नांकित रोग, इसके स्वाभाविक लक्षणों के कारण आरोग्य होते हैं।

(१) संयोजक तन्तुओं की बीमारियाँ।

(२) पुरानी एवं लापरवाही से त्यागे गये रोग।

(३) चर्मोद्भेद एव सर्दी जिसमें गाढ़ा, सफेद-पीला स्राव निकलता हो।

इसलिये वायोकेमिक चिकित्सा-प्रणाली द्वारा इस लवण का निम्नांकित रोगों पर प्रयोग होता है—

(१) एलोपैथिक चिकित्सा के वाद पुरानी बीमारियाँ।

(२) रक्तस्रावी झिल्लियों से गाढ़ा, पीला-सफेद-स्राव।

(३) घाव (उपरोक्त स्राव की प्रकृति देखते हुए)।

(४) क्षयरोग।

(५) कनीनिका (Cornea) का घाव।

(६) दाँतों एवं मसूढ़ों का जख्म (मुख्य औषधि)।

(७) आमाशय (काली म्यूर के वाद)।

(८) जब सब दवाइयाँ असफल हो जायँ तब इसे अवश्य प्रयोग करके देखें।

(९) बहने वाले घाव।

(१०) काली म्यूर के प्रयोग के वाद जब स्राव पीला-सफेद हो जाय।

(११) नेट्रम फास एव साइलीशिया के वाद।

(१२) वढ़ी हुई ग्रन्थियाँ जो छूने मे दुखें।

(१३) पुरानी दाद।

(१४) साइलिशिया के वाद मवाद सुखाने के लिए।

(१५) नेट्रम सल्फ के प्रयोग के वाद, पित्ताशय, यकृत एव गुर्दों की वीमारियों में।

(१६) डिम्बकोप की विवृद्धि।

(१७) जननेन्द्रिय के घाव।

(१८) घावों में काँटा चुभे रहने की अनुभूति।

(१९) नसों की स्पर्शकातरता (३०x)।

(२०) वूढ़ों का स्नायुशूल का दर्द (१२x से विशेप लाभ)।

(२१) ताकतवर चीजों के पीने की इच्छा (३०x, २००x)।

(२२) सिर दर्द मालूम हो कि दिमाग मे खूँटी घँसी है।

(२३) प्रदाह कभी-कभी- गर्भ स्रावक (२००x)।

———

फेरम फास

(1x, 30x, 200x)

यह औषधि प्रदाह की पहली अवस्था, दर्द, रक्तस्राव (खासकर खून की कमी के कारण), ताजी चोट लगने में अत्यन्त उपकारी है। निम्नांकित वीमारियों की प्रथम अवस्था की प्रधान औषधि है—

१—ज्वर।

२—श्लैष्मिक झिल्लियों का प्रदाह।

३—रक्तहीनता।

४—मस्तिष्क-झिल्ली प्रदाह ।

५—प्लूरा का प्रदाह ।

६—हृदय की झिल्लियों का प्रदाह ।

७—अन्त्रावरक झिल्ली का प्रदाह ।

८—हृदयावरण प्रदाह ।

९—वृक्क प्रदाह ।

१०—आमाशय ।

११—आरक्त ज्वर ।

१२—चेचक ।

१३—पाकस्थली प्रदाह ।

१४—आँखों का प्रदाह ।

१५—काली खाँसी ।

१६—विसर्प ।

१७—मोच ।

१८—पाकस्थली प्रदाह ।

१९—ताजे घाव ।

आदि रोगों की प्रथम अवस्था की, द्वितीय अवस्था मे हमेशा काली म्यूर का प्रयोग लाभकारी होता है । इसके अतिरिक्त निम्नांकित बीमारियों मे इसे न भूलें ।

२०—बच्चों की प्रमुख औषधि ।

२१—शीत लगने की प्रथम अवस्था एवं तुरन्त खाँसी आना ।

२२—तुरन्त की सर्दी ।

२३—प्रदाहित स्थान आरक्त एव दर्दयुक्त ।

२४—हिलाने पर बढने वाले दर्द ।

२५—बच्चों का सिरदर्द ।

२६—सिर पर रक्तचाप के कारण चक्कर आना ।

२७—रक्तहीनताजनित दर्द और वहिरापन ।

२८—दर्द जो ठण्ढे पेय से घटे ।

२९—ज्वर के साथ दाँत निकलना ।

३०—अड़कन-ज्वर के साथ ।

३१—दाँत निकलने के दिनों में आँखों का प्रदाह ।

३२—मुँह, टांसिल स्वरनली प्रदाहित लाल एवं दर्दयुक्त :

३३—जीभ लाल, फूली हुई एव प्रदाहित ।

३४—अनपच की खट्टी कै ।

३५—रक्त की कै ।

३६—पेट का दर्द जो दबने से बढे (काली म्यूर) ।

३७—अनपच के दस्त ।

३८—शिरा प्रदाह ।

३९—व्याख्यानदाताओं के गले की खराश (Hoarseness)

(Kali Mar, Kali Sulph)

४०—नई, दर्दयुक्त खाँसी ।

४१—छोटे बच्चों का मूत्र रुकना ।

४२—कण्डराओं का दर्द (Tenalgia Crepitans)

४३—हड्डियों का फटना ।

४४—चमकीला लाल रक्तस्राव जो शीघ्र जम जाय ।

४५—जरायु तथा बवासीर से रक्तस्राव ।

४६—योनि का आक्षेप (Mag phos) ।

४७—ऋतु के समय दर्द, चेहरा लाल ।

४८—सूतिकोन्माद (Kali phos) ।

४९—दर्द हरकत से बढे ।

५०—जोड़ से कड़ाक-कड़ाक आवाज ।

५१—वृक्क का दर्द (प्रदाह) ।

५२—अत्यधिक रक्तस्राव (कल्के फ्लोर, काली फास)।

५३—कामोन्माद ज्वर, अकड़न, तेज दर्द।

५४—डिम्वाशय शूल के साथ तेज दर्द।

५५—डिम्वाशय प्रदाह के साथ तेज दर्द।

५६—दिन के समय बूँद-बूँद पेशाव करना।

५७—रक्तचाप के कारण अनिद्रा (२०X)।

५८—योनि का प्रदाह।

५९—चमकीला लाल चेहरा।

६०—टपकन के दर्द के साथ कष्टरजः।

६१—हथेली एवं तलवा की सूखी जलन।

६२—सिर दर्द आदि जो रक्तस्राव से कम हो जाय।

६३—अत्यधिक रक्तहीनता (Raynan's Disease)

६४—कफ प्रकृति।

६५—छाती पर दवाव।

६६—स्नायुदौर्वल्य (धड़कन के वाद कमजोरी), ३X वार-वार प्रयोग करें।

६७—स्नायुदौर्वल्य—जिसमें रक्तचाप, कमर में दर्द, मूत्रनली का प्रदाह, प्रदर, ववासीर तथा अत्यधिक रक्तस्राव हो ३X, ६X वार-वार प्रयोग करें।

६८—ववासीर के मस्सों मे कष्टदायक दर्द, प्रदाह जिससे रोगी वैठ न सके, वैठने पर तुरन्त वढ़ जाय (२X की एक टिकिया ५ मिनट मे दर्द दूर कर देगी)।

Kali Mur

(12x, 30x, 200x)

१—श्वेत एव भूरे रग के स्राव का शोषण ।

२—प्लास्टिक निर्यास जैसा नीचे की वीमारियों में पाया जाता है—

(अ) कष्टरजः ।

(ब) कष्टरजः, जिसमें झिल्ली निकले ।

(स) सर्दी, जिसमें सफेद भूरा स्राव निकले ।

(द) काली खाँसी तथा डिफ्थीरिया की झिल्लियाँ ।

३—प्रदाह की दूसरी अवस्था (फेरम फास देखें) ।

४— अकौता, विसर्प, घाव—सफेद रग सतह से ढँके ।

५—छाले जिसमें सफेद मवाद हो, अकौता, विसर्प घाव आदि ।

निम्नांकित वीमारियों में इसका प्रयोग सफलतापूर्वक होता है—

१—प्रदाह की द्वितीय अवस्था ।

२—रेशेदार तन्तुओं से स्राव का निर्यास (सफेद-भूरा) ।

३—नकली काली खाँसी ।

४—डिफ्थीरिया ।

५—चेचक (Variola) नेट्रम म्यूर से तुलना करें ।

६—सिर एव चेहरे का दर्द जिसमें सफेद भूरी कै हो ।

७—मध्यवर्ती कर्ण-नली की सूजन के कारण वहरापन ।

८—कर्णमूल प्रदाह (Mamps) ।

९—जीभ की जड़ का घाव ।

१०—फेफड़े के पर्दे का सयोजन (Plouritic Adhesions)

११—वात रोग में जोड़ों की सफेद सूजन ।

१२—मसूड़ों का फूलना एव दर्द (Cal. Flour) ।

१३—श्वेतमंडल का प्रदाह (Conjuctivitis) ।

१४—आँखों की पलक का दाना (Trachoma) कुकरे पोथकी।
१५—कनीनिका, आँख की पुतली का प्रदाह।
१६—कनीनिका (Cornea) का चौड़ा घाव।
१७—चक्षुपटल का स्राव-निर्यास।
१८—पाकस्थली प्रदाह जिसमें सफेद दस्त हो।
१९—जीभ सफेद मैल से ढँकी।
२०—मुँह आना, सफेद या भूरी जीभ।
२१—सफेद श्लेष्मा की कै।
२२—पेट का दर्द जिसमें जीभ सफेद मैल से ढँकी हो।
२३—दस्त—सफेद, खून की, श्लेष्मायुक्त, भूरी सफेद।
२४—प्रसूतावस्था के कब्ज को प्रसिद्ध औषधि।
२५—सूखी सर्दी।
२६—गले की खराश (Kali Sulph)।
२७—नई खाँसी में फेरम फास के बाद।
२८—दमा।
२९—रेशेदार स्राव।
३०—फफोले, जिनसे रेशेदार स्राव निकलें।
३१—आग अथवा गर्म जल से जलना (वाहरी प्रयोग भी)
३२—मासतन्तुओं की वृद्धि (बाहरी प्रयोग भी)
३३—हाथों पर मस्से।
३४—टीके के बाद चर्म रोग।
३५—सफेद पपड़ी।
३६—मुलायम शैंकर।
३७—पुरानी सिफलिस।
३८—Condylomata.
३९—उपतारा प्रदाह (Iritis) दूसरी अवस्था के बाद में (कल्केरिया फास)।

४०—हरित-पाण्डु में ग्रन्थियों की सूजन ।
४१—मिरगी रोग (साइलिशिया) ।
४२—रक्तस्राव—काला जमा हुआ दुर्गन्धित ।
४३—कमरमें दर्द (फेरम फास के वाद) ।
४४—धड़कन (फेरम फास के वाद) ।
४५—मशीन से चोट लगना (फेरम फास के वाद) ।
४६—स्तन प्रदाह ।
४७—नासिका ग्रन्थियों की वीमारी ।
४८—सूजाक (Natrum Phos) ।
४९—गर्मी (नेट्रम फास) ।
५०—मुँह की त्वचा का शोथ (Lupus) ।
५१—मसूढ़ों की सूजन, शीतादि रोग ।



Kali Phos

12x, 30x 200x

स्वभावगत लक्षण—

(१) उदासीनता ।
(२) कमजोरी-जो वाद में पक्षाघात का रूप ले ।
(३) स्नायु मण्डल की वीमारियाँ ।
(४) रुदन ।

प्रयोग-स्थल—

१—धमोत्तेजना के कारण स्नायुदौर्वल्य ।
२—स्वप्नदोष ।
३—नामर्दी, गुदास्थि में दर्द ।
४—उत्तेजना ।
५—आगार्दनता ।

६—बार-बार मूत्र वेग, Uric Acid निकलना।
७—अफरा (मैग फास, नेट्रम सल्फ)।
८—विभिन्न अंगों के निर्यास सड़ा हुआ, बदबूदार।
९—मवाद बदबूदार (Smeary)।
१०—पेशाब में श्वेतसार निकलना (Albuminuria)।
११—बच्चा होने का बार-बार वेग (२x बार-बार दीजिए)।
१२—प्रसूत ज्वर (नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास, मैग फास)
१३—टायफायड ज्वर (,, ,, ,,)
१४—सड़े घावों से रक्तस्राव ,, ,, ,,
१५—डिफ्थीरिया के सड़े घाव,, ,, ,,
१६—आमाशय जिसमें मुर्दे की महक का पाखाना हो।
१७—चेचक तथा दूसरे प्रकार के रोग (चर्मोद्भेद निकलने वाले) जिसके साथ अत्यन्त रक्तहीनता।
१८—स्नायविक लोगों का सिर दर्द, चेहरे का दर्द, कान दर्द आदि।
१९—किसी प्रकार के दर्द के बाद अत्यन्त थकान।
२०—सिर के केश झड़ना (बदबूदार मुर्दे के जैसा) पाखाने के साथ—(नेट्रम म्यूर)।
२१—मस्तिष्क में चौंध (मुर्दे के जैसा बदबूदार पाखाने के साथ नेट्रम म्यूर)।
२२—प्रलाप (नेट्रम म्यूर)।
२३—स्नायविक चक्कर।
२४—मसूड़ों से रक्तस्राव एवं उनके किनारे लाल होना।
२५—स्नायविक प्रकाशातंक (Photophobia)।
२६—डिफ्थीरिया के बाद आँख का भेंगापन (Strabismus)।
२७—डिफ्थीरिया के बाद पक्षाघात।
२८—तैल के जैसी चिकनी जीभ।

२६—बदबूदार श्वास (Fetorex Ore) ।

३०—Noma एक प्रकार का चर्म रोग जो चेहरे पर, (जवान लड़कियों की जनेन्द्रिय पर निकलता है) ।

३१—पतला, काला न जमने वाला रक्तस्राव ।

३२—एलोपैथिक दवा के बाद नया पाकस्थली प्रदाह ।

३३—पेट के घाव (१२x) ।

३४—पेट बढ़ना (१२x) ।

३५—सड़े हुए दस्त (१२x) ।

३६—माढ़ के ऐसा दस्त (Natrum Sulph) ।

३७—दमा ।

३८—काली खाँसी (Pertusis) ।

३९—श्वासकष्ट (Dyspnoea) ।

४०—बदबूदार सड़ा हुआ स्राव ।

४१—त्वचा को छीलने वाले स्राव ।

४२—स्नायविक दौर्बल्य जनित पेशाब का रुकना ।

४३—फफोले जिसमें रक्तमिश्रित, खराश पैदा करने वाला स्राव निकले ।

४४—बदबूदार दस्त के साथ बच्चों के मलद्वार की खाल निकलना ।

४५—हुनाक—मूत्रनली से रक्त निकलना ।

४६—लिंगाग्र प्रदाह ।

४७—छाले (खासकर Pemphigus Malianus) ।

४८—मशीनों के चोट से सैन के जैसा स्राव ।

४९—[illegible] रोग, (बदबूदार अतिसार के साथ) ।

५०—पतला लाल रंग का स्राव ।

५१—काला रक्तस्राव ।

५२—जरायु से रक्तस्राव ।

५३—[illegible] ।

५४—अत्यन्त मात्रा में ऋतु के समय खून जाना।

५५—कमर में दर्द लँगड़ा कर देने वाला (Mag. Phos)।

५६—स्नायु दौर्बल्यता में आक्षेपिक एवं स्नायविक दर्द (मैग फास)।

५७—दर्द धीरे-धीरे चलने पर कम हो, ज्यादे हरकत से बढे।

५८—वृक्क का स्नायुशूल।

५९—धड़कन (हृदय की) २०० x,

६०—मिरगी (काली म्यूर) काली फास १२x,

६१—स्नायविक अकड़न (कल्के फास)।

६२—अत्यधिक परिश्रम से किसी अंग की अकड़न।

६३—भीड़ में जाने से भय (Agoraphobia)।

६४—नील रोग (Chlorosis)।

६५—Appendicitis (काली म्यूर, नेट्रम सल्फ) अगर दर्द के दौरे आये तो (Mag Phos)।

६६—ज्वर अत्यन्त कम हो जाय, नाड़ी क्षीण हो जाय (२x वार-वार प्रयोग कीजिए)।

६७—एलोपैथिक दवाई के वाद पहली औषधि है, ३०x शक्ति से शुरू कीजिये।

६८—तलुओं का मुलायम पड़ना तथा सड़न।

६९—शैय्याक्षत (Bed-Sore, Decubitus)।

७०—पोषण की कमी और अवसन्नता।

७१—मांसपेशियों का क्षय होना उसके साथ शक्ति की कमी।

७२—नींद में घूमना।

७३—Fretting Children।

७४—सव प्रकार के दर्द जो आराम करने तथा हरकत शुरू, करने पर वढें।

१७—दमा जिसमे कैलि सल्फ का स्वभावगत श्लेष्मा निकले ।

१८—कान तथा कर्नीनिका का प्रदाह, जीभ पीली, लसलसी ।

१९—पेट में शूल का दर्द ।

२०—सर्दी (कैली म्यूर के वाद)

२१—गले की खराश ।

२२—कुक्कुर खाँसी ।

२३—पुराना आतशक ।

२४—जननेन्द्रिय की जड़ में दर्द ।

२५—क्षय रोग (नेट्रम म्यूर के वाद),

२६—क्लिग्राम-प्रदाह ।

२७—पाकस्थली एव द्वादश अगुल आन्त्र प्रदाह ।

२८—पपड़ी के नीचे गाढी लसलसी मवाद जलन पैदा करने वाली निकलना ।

२९—चमड़ा छूटना, चर्म रोगों के वाद ।

३०—रक्तहीनता (नेट्रम म्यूर एव कल्के० फास के वाद) ।

३१—अकड़न (मैग्नेशिया फास के वाद) ।

३२—वच्चों की अकड़न ।

३३—जगह वदलने वाला वात का दर्द ।

३४—छाती में श्लेष्मा की घड़घड़ाहट (Coarserales) ।

३५—वच्चों की आँखों का प्रदाह—पीली मवाद निकलना ।

३६—नाक, मूत्राशय, जरायु आदि की सूक्ष्म झिल्लियों का गूमड़ (Polypus) ।

३७—(Lupus) मुँह की त्वचा का शोथ (वाहरी प्रयोग ३x, भीतरी १२x) ।

३८—जवान का स्वाद फीका ।

३९—खुली ठढी हवा की इच्छा (कैलि फास से तुलना करें)
४०—चर्म-रोगों की प्रसिद्ध औषधि।
४१—मलेरिया (नेट्रम सल्फ के वाद)।
४२—थोड़ी देर की अकड़न (६x)।

मैग्नेशिया फास

(1x, 30x, 200x)

स्वाभाविक लक्षण—

१—विभिन्न प्रकार का आक्षेप।
२—दर्द जो भीतर से वाहर फैले, किसी प्रकार गर्मी पहुँचाने पर आराम हो (गर्म, पतले अतिसार के साथ)।
३—जलने, कोचने, विजली के झटके के समान दर्द।

प्रयोग स्थल—

१—हाथ एव शरीर काँपने के साथ स्नायविकता।
२—पैर के तलवे की अकड़न (नेट्रम सल्फ से तुलनीय)।
३—सिर का स्नायुशूल जो सिर को वाँधने पर कम हो।
४—हटी प्रकार का पाकाशय शूल (२x)।
५—खुली हवा वर्दाश्त न होना।
६—चुपचाप पड़े रहना असम्भव।
७ आँख के ऊपरी भाग का स्नायुशूल।
८—सब शरीर पर स्नायविक खुजली।
९—पाकाशय शूल में अनियमित समय पर दौरा होना।
१०—मूत्राशय का स्नायुशूल।
११—हिचकी (कल्के फास, कैलि सल्फ से तुलनीय)।
१२—कम्पन पक्षाघात।
१३—दाँतों का स्नायुशूल (कल्के फास)।

१४—वार-वार मूत्र वेग।

१५—कामला।

१६—लेखकों के हाथ की स्नायविक पीड़ा।

१७—चक्कर (कल्के फास, कैलि फास से तुलना कीजिये)।

१८—अफरा (Natrum Sulph, Kali phos)।

१९—आमाशय (Natrum Sulph)।

२०—चेहरा, कान, दाँत का दर्द।

२१—दाँत निकलने के समय स्वरनली का आक्षेप जव ज्वर न रहे।

२२—आँखों का प्रदाह, अत्यन्त जलन (वातजनित)।

२३—आक्षेपिक आँखों का भींगापन।

२४—टासिल में दर्द (कल्के फास)।

२५—पाकाशय का स्नायुशूल।

२६—अफरे के कारण पेट में दर्द कुछ घँसाने ऐसा।

२७—नाभि की चारों तरफ दर्द।

२८—वच्चों का अफरा, पेट में दर्द।

२९—पित्त पथरी शूल (इसी के साथ चिकित्सा शुरू की जाती है)।

३०—पानी ऐसा अतिसार, दस्त होने से पहले दर्द।

३१—विना प्रदाह के ववासीर के मस्सों मे दर्द।

३२—पुराना नजला, पीनस रोग।

३३—कुकुर-खाँसी।

३४—मूत्राशय मुखशायी ग्रन्थि का वढना।

३५—वूँद-वूँद कर पेशाव कष्ट से आना।

३६—खुजली (कैलि फास, कल्के फास)।

३७—कण्ठमाला (नेट्रम फास, साइलिसिया, २००X केवल एक खूराक)।

३८—गलगड (२००X एक खूराक सिर्फ)।

३९—बच्चा पैदा होने का दर्द आक्षेपिक (बार-बार १X)।

४०—क्रम्प (१X बार-बार प्रयोग)।

४१—कष्टरजः (ऊँची शक्ति, एक खूराक)।

४२—कमर एव शाखा अंगों में दर्द (ऊँची शक्ति, एक खूराक)।

४३—योनि का आक्षेप (ऊँची शक्ति, एक खूराक)।

४४—कैन्सर (ऊँची शक्ति, एक खूराक)।

४५—अकड़न एव आक्षेप, गलनली का आक्षेप। जबड़े अकड़ जाना। मांसपेशियों का अकड़न, नर्तन रोग एवं हिचकी।

तुलना

कैली म्यूर मे दवाव एवं गर्मी से रोग वृद्धि।
कल्के फास, मैग्नेशियम फास के सदृश्य है, उसके साथ सुन्नपन रहता है।
कैलि सल्फ—दर्द का दौरा किसी खास समय पर होता है।
नेट्रम म्यूर के दर्द भी समय बाँध कर आते हैं।
फेरम फास—ठण्ढ से आराम होता है चाहे अकड़न हो या दर्द।
कैलि फास—प्रत्येक बार अकड़न के बाद रोगी कमजोर हो जाता है।
परन्तु मैग फास मे रोगी प्रत्येक अकड़न के बाद अच्छा रहता है।



(Natrum Muriaticum)

(1x, 30x, 200x, 1000x)

यह शरीर के जलीय अंश को शोषण कर शरीर में ही लगा देता है। इसके निम्नांकित प्रयोग-स्थल हैं :

१—नाक, चमकीला एवं पानी ऐसा श्लेष्मा का स्राव।

२—पानी ऐसा पतला एवं पानीदार रक्त।

३—छाले (Blisters)।

४—रक्तहीनता ।

५—सर्दी ।

६—मन्दाग्नि ।

७—शोथ ।

८—आन्त्रशोथ ।

९—सन्धिवात ।

१०—पेशाव में वसा ।

११—जल निकलने वाले फफोले ।

१२—चेचक ।

१३—दर्द ।

१४—तन्द्रा भाव ।

१५—सविराम ज्वर ।

१६—सिर दर्द, साफ श्लेष्मा की कै, साफ जीभ, खारा आँसू, लार निकलना ।

१७—दर्द—साफ श्लेष्मा की कै

१८—सिर पर खुरण्ड (१X का वाहरी प्रयोग) ।

१९—वाल झडना (१X वाहरी प्रयोग) ।

२०—सकम्प प्रलाप (कैलि फास से तुलनीय) ।

२१—मध्यवर्ती कर्णनली से सफेद, साफ पानी ऐसा श्लेष्मा ।

२२—कर्णमूल प्रदाह ।

२३—दाँत दर्द, लार निकलना, आँसू गिरना ।

२४—काललनल प्रदाह में श्लेष्मा निकलना ।

२५—योनि की खुजली एव शुष्कता ।

२६—रक्तहीन लडकियों को समय से पहले एवं आध्यात्मिक रक्तस्राव होना ।

२७—रोगी को पीठ के वल सोने से आराम होना ।

२८—पोपण की कमी, चेहरा पीला।
२९—पुरुष एव औरतों में सभोग के वाद उदासी।
३०—चोट का दर्द (फेरम फास २००x देने के वाद)।
३१—कामोन्माद (२००x–१०००x)।
३२—भग प्रदाह।
३३—जरायु का (Polypus)।
३४—पुराना, सवेरे होने वाला सिर दर्द (२००x)।
३५—कठिनता से मल निकलना।
३६—एक तरफ का स्नायुशूल (१२x वार-वार)।
३७—ऋतु के पहले उदासी (३०x)।
३८—नाक की जड़ में दर्द।
३९—धूप एव ठडी ऋतु में रोग का वढना।
४०—पेट धँसते जाना।
४१—दाँत निकलने के समय लार अधिक आना।
४२—श्वेत पटल प्रदाह में पानी ऐसा स्राव।
४३—कर्नीनिका पर फफोले।
४४—कर्नीनिका पर धब्बे।
४५—उपतारा प्रदाह।
४६—कष्ट दृष्टि अथवा हीन दृष्टि में पानी निकलना।
४७—आँख में दर्द के साथ आँसू निकलना।
४८—जवान पर दानेदार श्लेष्मा।
४९—जीभ के किनारे बुलबुले।
५०—नम [illegible], पानी ऐसा श्लेष्मा की कै।
५१—उपजिह्वा प्रदाह।
५२—लार ऐसा श्लेष्मा (Natrum Sulph के वाद)।
५३—कामला रोग (काली म्यूर एवं नेट्रम सल्फ के वाद)।

५४—पेट में दर्द, मुँह में पानी भर आना ।

५५—मुँह में पानी, जबान साफ, बिना दर्द दस्त (२००x)

५६—पानी के ऐसा श्लेष्मायुक्त दस्त ।

५७—लम्बे एवं गोल कृमि-केचुआ ।

५८—लगातार बहनेवाली सर्दी ।

५९—दमा (२००x, १०००x एक खूराक) ।

६०—नेट्रम म्यूर तथा नेट्रम सल्फ में अन्तर यह है कि नेट्रम सल्फ में भी मुँह में पानी भर आता है, परन्तु यह तीता होता है, बदबूदार होता है तथा श्लेष्मा अधिक रहता है। नेट्रम फास में सड़ा, खारा, खट्टा, एवं जलन पैदा करने वाला होता है ।

६१—काली खाँसी ।

६२—फेफड़े का शोथ ।

६३—पालीपस (Polypus) ।

६४—फफोले जिससे साफ पानी ऐसा स्राव हो ।

६५—सफेद पपड़ी ।

६६—दाद ।

६७—छाले ।

६८—कीड़ों का डंक (Kali Mur) ।

६९—पुरानी गर्मी की बीमारी, साथ में सूजाक (१०००x) ।

७०—सूजाक की पुरानी अवस्था का स्राव (Gleet), पारदर्शक ।

७१—अण्डकोष की सूजन ।

७२—लिंग-मुण्ड की सूजन ।

७३—मशीनों की चोट ।

७४—गुदास्थि की पुरानी चोट ।

७५—कमर में दर्द ।

७६—मिरगी (काली म्यूर २००x देकर १०००x नेट्रम म्यूर का प्रयोग करने से विशेष लाभ होता है)।

७७—गण्डमाला (कल्के फास)।

७८—नया क्षयरोग।

७९—नमकीन स्वाद।

८०—गर्भवती स्त्रियों का हरापन लिए दूध निकलना।

८१—गर्भावस्था में स्तन का बहुत बढ़ जाना (२००x)।

८२—किसी अंग में पानी भरना, अगर पीला हो तो कैलि सल्फ प्रयोग करे।

८३—हाथ की फटन (Salt Rheum)।

८४—पानी ऐसा फूला चेहरा (थका, रोने की प्रवृत्ति)

८५—शीत कातरता, हाथ-पैर ठण्ढे।

८६—रीढ़ में शीत का बोध होना।

८७—नमक खाने की दुर्दमनीय इच्छा।

८८—श्लेष्मास्रावी बवासीर।

८९—चमड़े की खुजली (पेट की खराबी से)।

९०—खूब खाते-पीते रहना, परन्तु सूखते जाना।

९१—एलोपैथिक औषधि खाने के बाद (कैलि फास)।

९२—मूर्च्छावायु (Kali Phos)।

९३—खुजली, जननेंद्रिय की।

९४—योनि की खुजली।

९५—रसायन (नेट्रम-फास)।

९६—कष्टरज के साथ नील रोग या हरित रोग।

९७—हैजा।

९८—हाजा तथा पुराने चर्म रोग, अगर चेहरे का लक्षण मिले (चेहरा द्वारा निदान) देखें।

नेट्रम फास

(12x, 30x, 200x)

स्वाभाविक लक्षण

१—पेशाब में मूत्राम्ल होने की प्रवणता (Uric Acid Diathesis)।
२—क्षय रोग का विकास।
३—प्रदाह।
४—पीब का बनना।

प्रयोग-स्थल—

१—अम्ल के लक्षणों के साथ आक्षेप।
२—बच्चों की बीमारियाँ, दूध एव चीनी के कारण लैक्टिक ऐसिड (Lactic Acid) का पैदा होना, खट्टी कै, अतिसार में खट्टे दस्त, पीले-हरे दस्त उसके साथ आक्षेप तथा ज्वर।
३—शाम को अथवा आँधी-पानी-तूफान के समय रोग लक्षणों का बढ़ना।
४—वसायुक्त-मूत्र (Albuminuria)।
५—फैलने वाले प्रदाह।
६—नया-सन्धि वात।
७—सड़न की प्रथम अवस्था में।
८—गरिष्ट-भोजन के कारण मन्दाग्नि।
९—पैर का गठिया, हाथ का गठिया, वात।
१०—डिफ्थीरिया रोग में टासिलों पर पीली झिल्ली का होना।
११—चेचक।
१२—चिकना पीला, गाढ़ा मवाद का स्राव।
१३—आँख का चिकना, पीला, गाढ़ा स्राव।
१४—नये बच्चों के आँख का प्रदाह (१२x)

१५—कण्ठमाला जनित आँखों का प्रदाह।

१६—बायीं तरफ सोने से रोग बढ़ना।

१७—कनीनिका का प्रदाह।

१८—आँखों के सामने लाल-लाल चित्ती उड़ना।

१९—कृमि के कारण आँखों का टेढ़ापन।

२०—वात के कारण आँत में अत्यन्त तेज दर्द।

२१—Anaemia Tonsillaris Acute

पुराना मैग फास

२२—जीभ पीले लेप से ढँकी तथा तर।

२३—मुँह में पीले छाले।

२४—खून की कै (कैलि फास)।

२५—खट्टा मक्खन की तरह कै।

२६—सामुद्रिक मिचली।

२७—कलेजा जलना।

२८—गरिष्ठ भोजन से पाकस्थली का रोग।

२९—पथरी बनना रोकने के लिए।

३०—लसलसी मवाद की तरह खून मिला मल।

३१—शराब पीने के कारण गठिया रोग।

३२—नसों की सिकुड़न।

३३—अम्लयुक्त मल के कारण मलद्वार की खाल गलना।

३४—लैक्टिक एसिड (Lactic Acid) के कारण अतिसार।

३५—सूत जैसा लम्बा कृमि।

३६—कण्ठमाला दोष वालों की सूखी सर्दी।

३७—पीनस (Ozena)।

३८—पीब जैसा स्राव।

३६—मूत्राशय प्रदाह।

४०—कृमि के कारण अनजान में पेशाव होना।

४१—खुजलाने वाली ज्वर-पित्ति, सूखा फटा चर्म।

४२—अनजान मे वीर्यस्राव, सम्भोग की प्रबल इच्छा।

४३—पीली पपड़ी के नीचे मधु ऐसी पीब।

४४—नया ग्रन्थि-प्रदाह, स्तन-प्रदाह।

४५—नव प्रसूता का स्तन-प्रदाह।

४६—वसास्रावी ग्रन्थियों की सूजन।

४७—टीका लगाने के बाद का चर्म रोग।

४८—बच्चों की खराश, रगड़।

४६—विसर्प, उसमें रस भरना।

५०—क्षयरोग (साइलिसिया एवं मैग सल्फ)।

५१—साधारण क्षयरोग (कल्के फास)।

५२—औदरिक ग्रन्थियों की सूजन (मैग फास, काली म्यूर, साइलिसिया, कल्के फ्लोर)।

५३—सूजाक (प्रथम अवस्था)।

५४—सूजाक के कारण वात।

५५—सूजाक के कारण सधिवात।

५६—पीठ मे कड़कड़ आवाज।

५७—वृक्क वात तथा त्रिक् में दर्द।

५८—मिरगी (कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर)।

५६—ताम्बे का स्वाद।

६०—ऋतु के समय रोग बढ़ना।

६१—काम विषयक सपना।

६२—कामोत्तेजना पैदा करने वाली जननेन्द्रिय की खुजली।

६३—अफीमचियों का उन्माद ।

६४—नेट्रम सल्फ की वृद्धि से तुलना कर प्रयोग करना चाहिए ।

नेट्रम सल्फ

(2x, 12x, 30x 30th, 200th)

स्वाभाविक कार्य—

(i) जलीय अंश का शोषण ।

(ii) चर्म उत्तेजक ।

(iii) स्नायु को ताकत देना तथा चैतन्य स्नायु तथा चालक स्नायु को उत्तेजना प्रदान करना ।

इस लवण की अनुपस्थिति में पानी ऐसा पारदर्शी रक्त हो जाता है। बायोकेमिक औषधियों में इसका प्रयोग रोग-निदान पर विशेष किया जाता है। लक्षणों की विशेष चिन्ता नहीं की जाती है ।

प्रयोग-स्थल—

१—प्रातःकाल रोग बढ़ना तथा दिन में ३ बजे से धीरे-धीरे रोग घटना।

२—पूरे शरीर का खिंचाव, आक्षेप, ऐंठन ।

३—नींद में हाथ-पैर का आक्षेप, ऐंठन, खिंचाव ।

४—चोट लगने के बाद मस्तिष्क का प्रदाह ।

५—प्रातःकाल अत्यन्त क्रोध आना ।

६—इन स्वाभाविक लक्षणों को रोग निदान की दृष्टि से देखकर इस लवण का प्रयोग किया जाता है ।

७—रुका हुआ कमरा बर्दाश्त न होना।

८—पुराना सूजाक (Gleet)।

९—स्राव (Glossy), वायु नलियों आदि का।

१०—बाहर जाने पर कम होने वाले कष्ट।

११—पीनस रोग (गर्मी की बीमारी के कारण) बिना दर्द।

१२—जंघा के बाहरी तरफ का घाव।

१३—कपड़ा निकालने पर खुजली बढ़ना।

१४—बूढ़ी औरतों का प्रातःकालीन अतिसार।

१५—कब्ज।

१६—सविराम ज्वर।

१७—बहुमूत्र।

१८—गुर्दे की बीमारी।

१९—यकृत की बीमारी।

२०—पित्त-पथरी।

२१—क्लोम ग्रन्थि के रोग।

२२—रक्त मे श्वेत कणों के बढने से मारात्मक रोग।

२३—रंगसाजों की शूल वेदना।

२४—अतिसार।

२५—हैजा।

२६—बच्चों का हैजा।

२७—मूत्रावरोध।

२८—एपेण्डिक्स।

२९—विसर्प।

३०—पुराना सूजाक।

३१–१५-३० तक बीमारियों के कारण ज्वर।

३२—यकृत छूने में अत्यन्त कष्ट।

इन बीमारियों की यह मुख्य औषधि है।

३३—वात वेदना।

३४—यकृत प्रदेश की विभिन्न बीमारियाँ।

३५—दमा।

३६—पेशाब का.... ... .(Augmentation)।

३७—पित्त कोष, क्लोम ग्रन्थि तथा आँतों की उत्तेजना।

३८—रक्त का पानी ऐसा पारदर्शक हो जाना, लाल कणों का घटना (Hydraemia)।

३९—किसी एक अंग की सूजन।

४०—यकृत की बीमारी के कारण शोथ।

४१—फफोलों में हरा, पीला, पतला, पानी ऐसा स्राव।

४२—सूखो दाद।

४३—मूत्रावरोध।

४४—दाद (Herpes Circinatus)।

४५—तर ऋतु एव वायु में रोग बढना।

४६—नीचे के घरों में रहने से रोग बढ़ना।

४७—कामला रोग।

४८—बिवाई फटना—

४९—मलद्वार तथा योनिद्वार पर मस्सों का होना।

५०—स्तनों का दूध सुखाने के लिए प्रयोग।

५१—स्नायुशूल।

५२—Herpes Tonsurans (दाद का एक भेद)।

५३—आँखों का हरा, पीला स्राव।

५४—जीभ गन्दी, भूरी, हरी-पीली तथा तीता स्वाद।

५५—विराम ज्वर।

५६—पेट का दर्द (वायु अधिक हो जाने के कारण)।

५७—वायुशूल तथा कब्ज।

५८—पानी ऐसा मल।

५९—रगसाजों के दर्द में २x प्रयोग किया जाता है; परन्तु २००x से भी अच्छा फल मिलता है।

६०—एपेण्डिक्स (कैलि फास, कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर, मैग फास, कल्के सल्फ)।

६१—उपदंश } में काली फास, काली म्यूर, नेट्रम म्यूर, मैग फास
६२—विसर्प } तथा कल्के सल्फ से तुलना कीजिये।

६३—हरा, पानी ऐसा सर्दी का स्राव।

६४—हरा पानी जैसा (पीला भूरा) श्लेष्मा का स्राव।

६५—बच्चा पैदा होने पर मूत्रावरोध (मूत्रनली पर दबाव)।

६६ – रात में अनजान में पेशाब (फेरम फास, नेट्रम फास)।

६७—चर्म रोगों में पीली खुरंड।

६८—(Veruca)।

६९—पोषण।

७०—सूजाक।

७१—अण्डकोष की सूजन।

७२— लिंग मुण्ड की सूजन।

७३—Hydrocele-पोते का बढ़ना एव कड़ा होना (नेट्रम म्यूर), १२x नया, पुराना २००x.

७४—विस्तर में पैर ठढा होना।

नेट्रम सल्फ—दाद में अगर उच्च शक्ति में व्यवहार किया जाय तथा बार-बार न दिया जाय तो विशेष आरोग्य करता है। इसको २००x या और भी उच्च शक्ति में एक बार कुछ अधिक दिनों पर देना चाहिये।

साइलिसिया

(12x, 30x, 200x, 1000x)

स्वाभाविक लक्षण—

१—कल्केरिया फास के प्रयोग के उपरान्त मवाद, खून का शोषण करना।
२—संयोजक तन्तुओं की पुरानी बीमारियाँ। (नाखून, चर्म आदि)
३—कड़ापन दूर करना।
४—बहुत दिनों का पक्षाघात।
५—तन्तुओं में फँसे बाहरी वस्तुओं का निकालना।
६—पतला एवं वसा सदृश स्रावों का शोषण।
७—पुराना रोग का दूर करना।

प्रयोग-स्थल—

१—पोषण की कमी के कारण कमजोरी।
२—ऋतु के समय बर्फ के जैसा शीत बोध (प्रत्येक अंग का)।
३—कब्ज के साथ पैर का दुर्गन्धित पसीना।
४—पुराने आतशक के कारण कड़ी सूजन।
५—बाल झड़ना (इसके प्रयोग से बाल गिरना रुक जाता है)।
६—क्रोध, उदासीनता।
७—सिर दर्द—पश्चात् मस्तक से चाँद तक तथा आँखों के ऊपरी प्रदेश तक फैलना। कसकर बाँधने से आराम।
८—प्रकाश, आवाज तथा हरकत से लक्षणों का बढ़ना।
९—भीतरी शीत बोध (ठनठस)
१०—गर्म भोजन की अनिच्छा।
११—दूध तथा पदार्थ न होना।
१२—ऋतु के समय भीतरी शीत बोध।

१३—रीढ़ का प्रदाह, अधिक गर्मी से आराम।

१४—आक्षेपिक प्रदर, विशेष गर्मी से आराम।

१५—मिचली, विशेष गर्मी से आराम।

१६—क्रोधी प्रकृति परन्तु शान्त भाव, विशेष गर्मी से आराम।

१७—कब्ज के कारण मलद्वार का फटना (नेट्रम म्यूर के बाद)।

१८—रात में अनजान में पेशाब (नेट्रम फास के बाद)

१९—प्रदर तथा ऋतु का स्राव कम अथवा अधिक त्वचा को प्रदाहित करने वाला।

२०—बूढ़ों को अत्यधिक बलगम निकलना।

२१—स्नायु-दौर्बल्य में गर्दन की पेशियों में दुखन तथा इसका स्वाभाविक दर्द।

२२—पुराना स्नायु प्रदाह।
२३—लम्बी हड्डियों की सड़न।
२४—कंठमाला धातुओं का स्तन प्रदाह
२५—अतिसार।
२६—सर्दी।
२७—पुराना मूत्राशय प्रदाह।
२८—जलना।
२९—फफोले, पीले मवाद भरे, पपड़ी वाले।
३०—जलना (Burn)
३१—Panaritium।

(२२ से ३१ तक:) नेट्रम फास के बाद इसका प्रयोग कीजिए तथा कल्के सल्फ से तुलना कीजिए।

३२—Caro Luxuriance।
३३—Rhinitis Acutes।

(३२, ३३:) काली म्यूर के बाद

३४—कब्ज अथवा कब्ज के वाद ऐंठन में।
३५—पत्थर का काम करने वालों का दमा।
३६—अनिद्रा (काली फास)।
३७—नर्तन रोग (मैग फास से तुलना कीजिए)।
३८—अर्द्धाङ्ग का लकवा।
३९—हड्डियों का घाव।
४०—निम्न पेट मे पत्थर ऐसा कड़ा ट्यूमर।
४१—आँखों का नासूर।
४२—Tals Dorsalis.
४३ कान वहना (काली म्यूर के वाद)।
४४—लसलसा घाव के साथ जलन।
४५—नवयुवकों का सूखते जाना।
४६—फैलने वाले प्रदाह।
४७—वात प्रकृति।
४८—मूत्र-पथरी से वचाव।
४९—Apoplexia (३०x सवसे उत्तम है)।
५०—हड्डियां तथा सिर पर कड़ी सूजन।
५१—मध्य कर्णनली की सूजन।
५२—Se retus (Eye) नेट्रम फास के वाद।
५३—Hypopion (क्ल्के सल्फ के वाद)।
५४—जीभ का घाव।
५५—Furu ulosis.
५६—अण्डकोष वृद्धि (नेट्रम सल्फ के वाद)।
५७—Hydrops, Hygroma, Patellae.
Ankylosis (फ्ल्के फास)।
५८—Encysted Tumas (२००,x १०००x)।

५६—मिरगी का रात्रि मे दौड़ा।

६०—फोड़े को पकाने के लिए।

६१—शरीर का ठण्ढापन (कल्के फास से तुलना करे)।

६२—घाव होने की प्रकृति।

६३—Scybala होने की प्रकृति।

६४—कैन्सर (काली सल्फ एव नेट्रम म्यूर के बाद)।

———

छठवाँ अध्याय

चिकित्सा खण्ड

अतिसार

(Diarrhoea)

बार-बार बहुत ज्यादा परिमाण में पतले दस्त आने को 'अतिसार' कहते हैं। इस रोग की पुरानी अवस्था संग्रहणी कहलाती है।

गर्मी के दिनों में बहुत गर्मी और जाड़े के दिनों में बहुत जाड़ा लगने, उपवास, शारीरिक या मानसिक परिश्रम, सड़ी-गली चीजें खाने आदि कारणों से यह रोग होता है।

पहले साधारण दस्त होते हैं, पत्पश्चात् पतले दस्त होने लगते हैं। उनसे रस या आँव जैसा पदार्थ अथवा खायी हुई चीजें ज्यों-की-त्यों मिली हुई दिखाई पड़ती हैं। दस्तों का रंग कभी सफेद, कभी हरा, कभी पीला, कभी मटमैला और कभी कुछ और रहता है।

चिकित्सा

कल्केरिया फास ६x—दाँत निकलने के समय बच्चों को अतिसार हो, इसी रोग में जब बालकों को हरा पाखाना हो, हरा आँव मिला हुआ दुर्गन्धित फट-फट की आवाज के साथ पाखाना हो, कंठमाला की प्रकृति वाले बच्चों का अतिसार हो।

कल्केरिया सल्फ ३x—रक्त आँव मिला हुआ मल, जिह्वा पर मिट्टी के रंग की मैल।

कैलि म्यूर ३x—गरिष्ठ भोजन करने के पश्चात् अतिसार, सन्निपात

ज्वर में अतिसार हो, पीले या सफेद रंग का मल अथवा मल में रुधिर हो, जिह्वा सफेद हो।

कैली सल्फ ६x—पीला मल, आँव, मल पानी के समान अथवा पीव मिला हुआ, जिह्वा पर पीली मैल, ऐंठन विशूचिका के लक्षण, मल में दुर्गन्ध।

नेट्रम फास ३x—पेट में खट्टापन अधिक होने के कारण अतिसार, हरे रङ्ग का मल, जिसमें खट्टी दुर्गन्ध हो, गुदा में खुजली, खराश हो, दही के समान टुकड़े वमन में निकलें, ग्रीष्म ऋतु का अतिसार, पाचन शक्ति ठीक न हो, भोजन विकार से अतिसार। रेशेदार, अम्लयुक्त एवं हरा मल।

नेट्रम म्यूर ३x—पतला पानी के समान आँव का अथवा फेनदार मल, बालकों को जब सूखा रोग होता है और गर्दन पतली हो जाती है उस समय यह औषधि विशेषकर लाभदायक होती है।

फेरम फास ६x—मल अधिक मात्रा में पानी के समान पीड़ा के साथ हो अथवा वमन हो; अनपचा भोजन मल में निकले और इसके साथ ज्वर, हरा आँव अधिकतर निकला करे, पीड़ा के कारण रोगी कराहे और अपना सिर इधर-उधर ढुलकाये, मूत्र कम, नाड़ी तीव्र, सोने में चौंकना, दाँत निकलते हों, त्वचा शुष्क तथा उष्ण हो, प्यास अधिक हो।

मैग्नेशिया फास ६x—अतिसार के समय पेट में पीड़ा, पक्षाघात को पीड़ा के मारे रोगी दोहरा हो जाये, पतली रगों में ऐंठन, रह-रहकर अत्यन्त पीड़ा होने में लाभ करता है।

साइलिशिया ६x—बालकों का अतिसार, मल में सड़े हुए मांस की-सी दुर्गन्ध हो, सिर का पसीना, पेट फूला हुआ हो।

अतिरजः

(Menorrhagia)

ऋतु के समय बहुत खून निकलना, चार दिनों की अपेक्षा अधिक समय

तक ऋतुस्राव होते रहना या महीने में दो-तीन वार ऋतुस्राव होना अति-रजः कहलाता है। अधिक सवहास, वहुत पुष्टिकर भोजन खाना, जरायु की वीमारी, स्नायविक उत्तेजना, वारम्वार गर्भसचार, ऋतुकाल मे स्वामी सह-वास आदि कारणों से रोगोत्पत्ति होती है। वदन मे दर्द, आलस्य, सिर दर्द, कमर दर्द प्रभृति लक्षण होते हैं।

चिकित्सा

फेरम फास६x, कैली फास ६x—जव नाड़ी तीव्र चलती हो, चेहरा और आर्त्तव का रङ्ग लाल हो, रजोधर्म एक महीने में दो-वार हो जाता हो, स्वभाव में तीव्रता और दुर्वलता हो, क्रोध शीघ्र आता हो, मामूली वुरी वातों मे रोगिणी रो पड़ती हो तो इन दो औषधियों को पर्यायक्रम से सेवन करना चाहिये।

साइलिशिया १२x, फेरम फास १२x—जव ठण्ढक के कारण या पानी मे पैर रहने से रजोधर्म अधिक दिनों तक जारी रहता हो, अजीर्ण हो और आर्त्तव में अत्यन्त तीव्र गन्ध हो तो इन दोनों औषधियों को क्रमानुसार देना चाहिये।

फेरम फास १२x—जव नाड़ी अति शीघ्र-शीघ्र चलती हो, आर्त्तव तथा चेहरे का रङ्ग लाल हो और सिर में दर्द हो।

अपथ्य—चाय, दुग्ध, गुड़, तेल, लाल मिर्च, मास, सूर्य की गर्मी में वैठना आदि।

पथ्य—मसूर, मूंग की दाल, कद्दू, टिण्डे, तोरई, रोटी, अगूर, नास-पाती, फाल्सा, अनार मीठा।

अनिद्रा

(Sleeplessness)

नींद विल्कुल न आना या अच्छी तरह न आना, अनिद्रा रोग कह-लाता है। इसमें रोगी जाग-जाग पड़ता है और स्वप्न देखा करता है।

जब माथे में खून का दबाव होता है तो नींद नहीं आती। मानसिक उत्तेजना, उत्कण्ठा, सुस्ती या पाकाशय की गड़बड़ी की वजह से अथवा दूसरी भी बीमारी के साथ लक्षण के रूप में नींद न आने की बीमारी पैदा हो जाती है।

चिकित्सा

कैलि फास ६x— मानसिक परिश्रम की अधिकता, उत्तेजना, वाणिज्य या व्यवसाय सम्बन्धी दुश्चिन्ता प्रभृति साधारण सामयिक कारणों से नींद न आना, नींद की गड़बड़ी की यह सबसे बढिया दवा है। बारम्बार जम्हाई आना, अंगों का फैलना, अँगड़ाई लेना, सपना देखना इत्यादि बहुत से उपसर्ग इस लवण से घट जाया करते हैं। बीमारी के स्थायित्व के अनुसार उपयुक्त समय तक इस दवा का सेवन करते रहना आवश्यक है। २०x से विशेष उपकार होता है।

फेरम फास ६x—मस्तिष्क में रक्त की अधिकता की वजह से नींद न आने पर यह लवण कैली फास के साथ पर्यायक्रम से काम में लाया जाता है। बेचैनी, उत्कण्ठा भरे या उत्कण्ठा पैदा करने वाले सपने देखना, संध्या होते ही तन्द्रा आने लगना।

नेट्रम म्यूर ३x—ऊँघाई आना, अस्वाभाविक नींद और इसके साथ ही समय-समय पर लार बहा करती है। अभ्यास के अनुसार नींद से भी थकावट दूर नहीं होती; सवेरे श्रान्ति और सुस्ती मालूम होती है। इसमें धीमा बुखार रहने के साथ ही साथ बहुत अधिक तन्द्रालुता और बेहोशी का भाव होता है।

नेट्रम सल्फ ३x—कामला रोग अथवा पित्त सम्बन्धी बीमारी के पहले की तन्द्रालुता; जीभ की आकृति की तरफ नजर रखकर इसका प्रयोग करना उचित है। पानी के स्वप्न देखना।

एक्जिमा या अकौता

(Eczema)

चमड़े के प्रदाह के साथ लसी निकलने पर उसे पाता या अकौता कहते हैं। पहले जलन पैदा करने वाली लाल-लाल फुन्सियाँ दिखाई देती हैं, इसके बाद ये सभी फुन्सियाँ खुजलाते-खुजलाते घाव हो जाता है। जख्म से सदा पानी की तरह या पीली पीब की तरह रस निकलता है। ज्यादा खुजलाने पर कभी-कभी खून भी आ जाता है। यह रोग शरीर के सब स्थानों पर हो सकता है, पर विशेषतया पैर के निचले भाग में, कान, बगल और सिर में होता है।

सोडा, साबुन वगैरह हमेशा काम में लाना, माँ के दूध में खराबी आ जाना आदि कारणों से रोगोत्पत्ति होती है। बाह्य प्रयोग के मलहम से तुरन्त लाभ तो अवश्य प्रतीत होता है, परन्तु भविष्य में परिणाम बुरा ही होता है।

चिकित्सा

फेरम फास ६x—चर्मरोग मालूम होते ही प्रदाह, ज्वर, रक्त की अधिकता प्रभृति दमन करने के लिए इनका व्यवहार होता है।

कैलि म्यूर ६x - चर्म रोग में जल भरी फुन्सियों वाले उद्भेद, गाढ़ा सफेद रस रहना जो वसन्त रोग का टीका लेने के बाद होता है। एक्जिमा के उद्भेद बच्चे और बालक-बालिकाओं के माथे में भी होता है।

क्रस्टा लैक्टिया (Crusta Lactea)—नामक पपड़ी जमा हुआ एक्जिमा, भूसे की तरह सूखी रूसी निकल पड़ती है। इस लवण के भीतरी प्रयोग के साथ चर्म के ऊपर छिड़क देने पर ज्यादा फायदा होते देखा जाता है।

कैलि सल्फ ३x—एक्जिमा से पीली आभा लिए चमकीला रस या पीब की तरह स्राव होता है, दग्ध ब्लायर या किसी दूसरे कारण से

चर्मोद्भेद बैठ कर बहुत तरह के दूसरे उपसर्ग पैदा हो जाने पर इस लवण के साथ पर्याय क्रम से फेरम फास का प्रयोग करना चाहिये। यदि पसीना पैदा कर दिया जाय तो दबी हुई फुंसियाँ फिर से निकल कर रोगी की जान बच जाती है। चर्म रोग के लिये इस लवण का प्रयोग करते समय जीभ की अवस्था देखकर प्रयोग करना चाहिये। इसकी खुजली शाम को बढती है।

नेट्रम म्यूर ३x—ज्यादा नमक व्यवहार करने की वजह से, ज्यादा नमक मिले खाद्य पदार्थ खाने के बाद चर्मोद्भेद का निकलना, छोटी-छोटी रस-भरी फुन्सियों का छाले की तरह उद्भेद। मछली के चोयटे की तरह खाल निकल आती है और पानी की तरह स्राव हुआ करता है। एक्जिमा, उद्भेद से नमकीन रस का बहना।

'नेट्रम म्यूर' लवण के प्रयोग का विशेष लक्षण हो, भौंह से और कान के पीछे एक्जिमा, सूक्ष्म त्वचा का निकलना। चमकीलापन, चिकनाहट और सिझाये हुए आरारोट की तरह इस लवण के रस और स्राव की विशेषता है। पानी से धोने में तकलीफ बढ़ती है।

नेट्रम फास ६x—अम्ल रोग के साथ के एक्जिमा की यह उत्कृष्ट दवा है। मधु की तरह स्राव पीली आभा लिये पपड़ी जमती है। जीभ के पिछले भाग में पीले रंग का गाढा लेप, बहुत खुजलाने वाला एक्जिमा, खुजलाने के बाद शहद की तरह के रंग का गाढा स्राव होता है।

काली फास ३x—बहुत सहिष्णुता और स्नायविक अस्थिरता के साथ एक्जिमा। खुजलाने के बाद खून मिले पतले रस का स्राव होता है, इसके बाद उससे खून जाने पर चर्बी मिली, चमड़े की तरह पपड़ी जमती है और उसमें से बहुत ही अधिक बदबू निकलती है। थोड़ा ही परिश्रम करने पर थक जाने वाले और जिन्हे बहुत पसीना होता है, ऐसे रोगियों के लिये यह ज्यादा उपयोगी है। मनोरंजन से रोग कम रहे।

कल्केरिया फास ३x, ६x—जिनमे खून तथा कैल्शियम की कमी रहती

है। और जो बहुत दुबले रहते हैं। उनके एक्जिमा में यह ज्यादा उपयोगी है। वृद्धों को बहुत खुजली के साथ एक्जिमा रोग में कैली फास के साथ पर्याय-क्रम से यह लवण ज्यादा फायदा करता है।

नेट्रम सल्फ—जिन मनुष्यों को बरसात में जलाशय के पास रहने पर, तर घर में रहने पर या पानी में खड़े होकर काम करने पर बीमारी हो जाया करती है, पर शुष्क वातावरण में अच्छी रहती है उनके एक्जिमा रोग में यह लवण ज्यादा उपयोगी है। वैसा एक्जिमा जिसमें चमड़ा फूल जाता है, पीली आभा लिये बहुत-सी पानी भरी फुन्सियाँ निकलना और उनसे रसस्राव होना जो सूखने पर हरा हो जाये। अगर रोगी की धातु में प्रमेह दोष रहे तो इस लवण से ज्यादा फायदा होता है।

विशेष एक्जिमा रोग वाले मनुष्य जितना ही कम पानी व्यवहार करें उतना ही अच्छा है। कुछ गरम रहते-रहते खौलाये हुए पानी द्वारा एक्जिमा साफ कर एबजर्वेंट (Abosbent) रुई से बहुत जल्द पानी सुखा लेना चाहिये। इसके बाद खौलाया हुआ ओलिव-आयल ठण्ढा कर, उसे रुई के फाहे से एक्जिमा पर अच्छी तरह लगा देना चाहिये। इस तरह एक्जिमा को तेल से तर कर रखने पर उसमें जलन और खुजली कम होती है।

मलहम लोशन, प्रलेप इत्यादि को त्याग देना चाहिये।



अजीर्ण या अग्निमांद्य

(Dyspepsia)

पचने की क्रिया की गड़बड़ी ही अग्निमांद्य है। पेट फूलना, कब्ज, पतले दस्त आना, डकार, मिचली या कै, छाती या गले में जलन, पेट में भार, मुँह से पानी निकलना, भोजन के बाद में दर्द, सिर दर्द आदि इसके प्रधान लक्षण हैं।

बिना समय के अधिक घी या तेल की बनी चीजें खाना, खाने की चीजे अच्छी तरह चबाये बिना निगल जाना, चाय या शरबत पीना, अस्वास्थ्यकर मकानों मे रहना आदि कारणों से यह रोग होता है।

चिकित्सा

फेरम फास ६x—उदर की रक्तवाही-नाड़ियों की पेशी प्राचीर की शिथिलता की वजह से उत्पन्न अजीर्ण रोग, छूने पर दर्द मालूम होना, जलन, चेहरा लाल और गरम, जीभ की अवस्था के अनुसार उपयोगी लवण के साथ पर्याय क्रम से प्रयोग करना चाहिए। ज्वर-भाव के साथ भूख न लगना, सर्दी लग कर पेट मे दर्द और पतले दस्त या डिस्पेप्सिया-मन्दाग्नि, इसके साथ ही उदर में टपक का दर्द, जीभ साफ अथवा खाई हुई चीज की कै, पाकाशय का प्रदाह (गैस्ट्राइटिस) के साथ दर्द, सूजन, स्पर्श का सहन न होना और बिना पची हुई चीज की कै, पाकाशय घटित ज्वर की पहली अवस्था मे यह उपयोगी है। पाकाशय पर गरम सेंक देने पर घटता है या ठण्ढा पानी सेवन पर आराम मालूम होता है।

कैलि म्यूर ३x—पाकाशय और पित्त विकार, जीभ सफेद या उस पर धुमैला लेप चढा रहता है, खास कर दोपहर के पहले। यकृत की गड़बड़ी की वजह से उत्पन्न अजीर्ण रोग की भी कैली म्यूर बढ़िया दवा है। यकृत प्रदेश मे भार मालूम होना और दर्द या दाहिने अग फलकास्थि क्षेत्र (Right Shoulder Blade) के नीचे दर्द, सफेद लेप चढी जीभ और आँख का गोला बाहर निकला हुआ रहता है।

बहुत गरम चाय पीने के कारण गैस्ट्राइटिस। बहुत गरम खाद्य या पानी पीने के कारण अगर जीभ, मुँह का भीतरी भाग, कठ का भीतरी भाग या पाकाशय की श्लैष्मिक-झिल्ली पर यह पहुँच जाये या कुछ जल जाये तो कैली म्यूर से बहुत जल्द आरोग्य हो जाता है। कब्जियत के साथ अग्निमान्द्य की बीमारी। घी की बनी या चर्बी मिली गुरुपाक चीजें खाने के कारण पाकाशय का विकार, बेचैनी और मिचली मालूम होना।

कल्केरिया फास ३x—उदर मे वायु पैदा होना रोकने की वहुत वढ़िया दवा है। अधिकांश स्थानों मे खाद्य पदार्थ अच्छी तरह न समाहित होने के कारण ही डिस्पेप्सिया के सब लक्षण प्रकट होते हैं। कल्केरिया फास्फोरिका लवण, खाद्य पदार्थों के परमाणुओं को विघटित कर डालता है। वहुत से विज्ञ चिकित्सकों का मत है कि हरेक वार खाने के वाद ही इस लवण का प्रयोग करना चाहिए तथा इसके साथ ही पर्याय क्रम से वह लवण देना चाहिए, जिससे लक्षण प्रकट हों। इससे आश्चर्यजनक लाभ दिखाई देता है। पाकाशय के दोष की वजह से पैदा हुए ज्वर (Gastric Fever) के वाद कुछ दिनों तक कल्केरिया फास्फोरिका नियमिय रूप से सेवन करने पर नष्ट हुए तन्तु वहुत जल्द फिर से वनने लगते हैं और पथ्य के पचने मे भी सहायता पहुंचती है।

नेट्रम फास ३x—अम्ल की अधिकता के लक्षण के साथ पैदा हुए अजीर्ण रोग की यह एक श्रेष्ठ दवा है। खट्टी डकार, खट्टी कै, जीभ के पिछले भाग में पीली आभा लिये लेप हो। आँव, टासिल या तन्तु के स्थान पर भी पीले रंग का लेप दिखाई देता है। मुँह का स्वाद हमेशा खट्टा वना रहता है। कलेजे की जलन के रोग में इस लवण के साथ पर्यायक्रम से फेरम फास का प्रयोग करने पर फायदा होता है। पाकाशय का जख्म, भयानक दर्द, खट्टी डकार और काफी के चूर की तरह पदार्थ की कै होना, ज्यादा दूध और चीनी खाने की वजह से वच्चों की अम्ल की अधिकता होकर बीमारी, खट्टी गन्ध लिए छेने की तरह पदार्थ का वमन, हरे रंग की खट्टी गन्ध लिए दस्त।

नेट्रम म्यूर ३x—अजीर्ण रोग, पेट में भार मालूम होना और लार वहना, खारे रस पानी चढ़ आता है, पर कै खट्टी नहीं होती। फेन भरा या साफ पानी की तरह वमन। धूम्रपान तथा रोटी खाने से अरुचि, रोटी सहन भी नहीं होती, [illegible] कब्जियत के साथ अजीर्ण रोग का होना।

कैली फास ३x—स्नायविक उपसर्ग के साथ अजीर्ण रोग, भय या उत्तेजना के कारण उत्पन्न उदर शूल और पाचन क्रिया मे गड़वड़ी। स्नायविक अवसाद के साथ अजीर्ण रोग, डकार आना, पेट फूलना, भोजन के वाद ही भयानक भूख लगना। पेट में वायीं ओर तकलीफ देने वाला धीमा दर्द, हृत्पिण्ड की ओर वायु धक्का देता रहता है और कमजोरी मालूम होती है। उदर की एक छोटी-सी जगह में वरावर दर्द वना रहना, पाकाशय के परिपोपक आयु की विशृङ्खलता की वजह से जख्म होना।

टायफायड या सान्निपातिक ज्वर के वाद अथवा किसी दूसरी कमजोर करने वाली वीमारी के वाद जव रोगी की भयानक भूख किसी तरह भी नहीं दवती तव इसके प्रयोग से वहुत अधिक लाभ होता है। अगर गैस्ट्राइटिस की वीमारी की पहली अवस्था की उपेक्षा करने की वजह से रोग वढता जाय और सुस्ती आने लगे तो कैली फास इसकी श्रेष्ठ दवा है। अन्यान्य जैव लक्षणों का लक्षण-निणय कर उसके साथ ही पर्याय क्रम से प्रयोग करना चाहिए।

मैग्नेशिया फास ६x—मरोड़, अकड़न ऐंठन, काटने की तरह दर्द इत्यादि सव तरह के आक्षेपिक दर्दों की श्रेष्ठ दवा है। दूसरे-दूसरे लवणों के अनुसार निर्देशित लक्षण के साथ पर्याय क्रम से प्रयोग किया जाता है। जीभ साफ, डकार आने पर घटना; गरम पानी पीने और गरम सेंक के प्रयोग से घटता है। पाकाशय प्रदेश को छूने पर दर्द का वढना, पर दवाने पर घटना।

कैली सल्फ ६x—पीले रङ्ग की चिकनी मैल चढी जीभ और मुँह का स्वाद विगड़ा हुआ रहता है। पाकाशय में दवाव और भार मालूम होना, दर्द, मुँह में पानी भर आना। अगर नेट्रम म्यूर और कैली म्यूर से फायदा न हो तो कैली सल्फ वहुत फायदा करता है। इसके अलावा ऐसा भी देखा गया है कि उदर-शूल रोग मे मैग्नेशिया फास से फायदा न होने

पर कैली फास से फायदा होता है। यह पुराने गैस्ट्राइटिस की एक श्रेष्ठ दवा है। जीभ पर ध्यान देकर इसका प्रयोग करना पडता है। पाकाशयिक ज्वर, रात के समय ज्वर बढ़ता है और सवेरे के बाद घट जाता है, गन्धक की महँक की वायु खुलती है।

नेट्रम सल्फ ६x—पित्त विकार की वजह से अजीर्ण रोग, मुँह का स्वाद तीता, हमेशा थूक भर आता है। थूक सफेद गाढा और लसदार होता है। पित्त शूल, सवेरे भोजन के पहले पेट खाली रहने के समय स्थूलान्त्र की सल्वटों के पास अर्थात् (Signoid Flexure) के निकट आध्मान की वजह से शूल का दर्द। यकृत के पास तकलीफ और काटने की तरह दर्द; बायीं कोख में दर्द, बायीं करवट सो नहीं सकता, छाती में जलन, मुँह में खट्टा पानी भर आना, आध्मान, आध्मान-शूल (वायु का शूल) दाहिने पुट्ठे के पास से आरम्भ होकर समूचे पेट में फैल जाता है। पित्त और खट्टा पित्त का वमन हरे रङ्ग का, नमकीन स्वाद के पानी का वमन, नेट्रम सल्फ के रोगी की बीमारी सीड़-भरे घर में रहने, जलाशय के पास रहने अथवा पानी में खड़े होकर काम करने से बढ़ जाती है, सूखी पारिपार्श्विक अवस्था में ही वह अच्छा रहता है। सीसक-शूल रोग की यह श्रेष्ठ दवा है। मन्दाग्नि के साथ वात रोग, पेट में भारीपन रहना, भूख न लगना।

अण्डकोष की वृद्धि

(Hydrocele)

अण्डकोष की दोनों गोलियाँ या कौड़ियाँ दो पर्दों से ढँकी हुई रहती हैं अर्थात् यों कहिए कि दोहरे चमड़े की एक थैली में अंडकोष की गोलियाँ जन्म के समय से लटकी रहती हैं, इस थैली में एक तरह का जलीय पदार्थ हमेशा रहा करता है और वह थैली के चमड़े को तर रखता है। इस

थैली में जल संचय हो जाना रोग की उत्पत्ति है। इस रोग को पानी उतरना भी कहते हैं। इसमें धीरे-धीरे पानी बढ़ता जाता है और अण्डकोष फूलकर बहुत बड़ा हो जाता है। कभी-कभी उसमें कड़ा पदार्थ या चर्बीला पदार्थ भी जमा हो जाता है।

चिकित्सा

कैल्केरिया फ्लोर ३x—अण्डकोष की सूजन तथा कड़ापन, अण्डकोष के पानी को पसीना लाकर बाहर निकालता है और अण्डकोष के ढीले-ढाले पट्ठों को खींचता है।

कैल्केरिया फास ६x—यदि नेट्रम म्यूर कार्य न करे तो दूसरी औषधि के साथ देना चाहिए। जिनके पोतों में कभी-कभी सूजन होती है।

नेट्रम सल्फ ३०x—अण्डकोष मे पानी उतरने के साथ जहरबादी माद्दा हो तो नेट्रम म्यूर के साथ देते हैं।

साइलिशिया २००x—दूसरी औषधि के साथ उपरोक्त लक्षणों की उपस्थिति मे दी जाती है। नयी ओर पुरानी सूजन में प्रयोग किया जाता है।

अण्डकोष प्रदाह

(Orchitis)

इस रोग के होने पर अण्डकोष की थैली मे प्रदाह होता है। प्रायः इसमें एक ओर का अण्डकोष प्रदाहित होता है। अण्डकोष लाल हो जाना, फूल जाना और ज्वर के साथ प्रदाह इसके प्रमुख लक्षण हैं। कभी-कभी अण्डकोष में पीव पड़कर अपने आप फूट जाता है।

चिकित्सा

कैल्केरिया फ्लोर ३x—अण्डकोष में शोथ, कड़ापन, पीड़ा। सूजाक दब जाने के कारण जो विकार उत्पन्न होते हों उनके लिये कैलि म्यूर एक ही औषधि है। अण्डकोष मे शोथ व पीडा।

फेरम फास ६x—मूत्रकृच्छ्र दब जाने के कारण अण्डकोष मे शोथ, तीव्र ज्वर, श्वास उलझन। सूजाक की मवाद के दब जाने पर रोग की प्रथम अवस्था मे इसको नेट्रम म्यूर ३x मे मिला कर दीजिये।

कैलि म्यूर—अगर हाल में ही सूजाक की मवाद दब कर अण्डकोष प्रदाह हो जाय तो यह विशेष लाभकारी है। यह मवाद बनने के पहले दी जाती है।

आँख उठना या आँख आना

(Opthalmia)

आयुर्वेद मे इसी का नाम 'नेत्राभिष्यन्द' रोग है। यह आँख के भीतरी भाग की श्लैष्मिक झिल्ली के प्रदाह के सिवाय और कुछ नहीं है।

आँख में धूल या बालू के कण गिरना, सर्दी या ठण्ढ लगना, चोट या धुआँ लगना, चेचक की बीमारी होना आदि कारणों से आँख मे प्रदाह होता है, पानी गिरता है, सोने पर पलकें जुड़ जाती हैं आदि।

चिकित्सा

फेरम फास ६x—प्रदाह की वजह से पैदा हुए लक्षणों की प्राथमिक अवस्था की श्रेष्ठ दवा है।

नेट्रम फास ६x—बच्चों का नेत्राभिष्यन्द रोग, तुरन्त के पैदा हुए बच्चों की आँख में पस पैदा हो जाना, दूध की तरह पीव निकलना। पीली आभा लिए स्राव इस लवण का निर्देशक लक्षण है।

कैलि सल्फ ६x—हरी आभा लिए पीव का स्राव होने पर यह फायदा करता है।

कैल्केरिया सल्फ ३x (पानी में घोलकर)—बहुत जल्दी से पीव पैदा हो जाना, बहुत ज्यादा पीव, स्याही या खून मिली पीव।

आँतों का शोथ
(Appendicitis)

इसमें खून की पेशाव होती है और जल्दी-जल्दी पेशाव नहीं लगती। दर्द दाहिने पुट्ठे से ३-४ इन्च ऊपर की तरफ होता है। यह जगह भी फूल उठती है। रोगी पीठ के बल लेटता है और अपना बायाँ पैर सिकोड़ कर रखता है। बीस वर्ष की अवस्था तक यह रोग अधिक होता है। यह एपेंडिक्स ग्रन्थि की सूजन है।

चिकित्सा

मुख्य औषधियाँ—कैलि म्यूर, मैग फास एवं साइलिसिया।

मैग फास—अगर तलपेट की मासपेशियाँ कड़ी हो। पेट फूला हो (१x)

कैलि फास—कमजोर अधिक हो (कभी-कभी नेट्रम म्यूर)।

कल्केरिया सल्फ ३x—पेड़ू की दाहिनी ओर सूजन तथा पीड़ा मे लाभ पहुँचाती है, आँतों के घाव अच्छा करती है तथा आन्त्र प्रदाह को दूर करती है।

कैलि म्यूर ३x—सूजन, कड़ापन, ऋतुवत् निकलता हो।

कैलि सल्फ ६x—ऐंठन वाली पीड़ा, कड़ापन, सूजन। यह औषधि पीव को पिघलाती है तथा सुखाती है। पेड़ू की सूजन को कम करती है। शाम को रोग बढ़े।

नेट्रम सल्फ १x—वायु की पीड़ा दाहिनी ओर से आरम्भ हो पेट में आकर कार्य न करती हो। एपेण्डिक्स के निकट मीठी-मीठी पीड़ा, छोटी आँतों मे पीड़ा होती हो, लगातार वमन होते हों, दबाने से पीड़ा बढे। कड़ा लगातार रहने वाला कब्ज हो।

फेरम फास ३x—शोथ, तीव्र ज्वर, प्यास, उलझन वाली तीव्र पीड़ा।

साइलिसिया ६x—आँतों में शोथ होने के पश्चात् पीव पड़ गयी हो तथा फोड़ा बनता हो और सूजन हो।

उन्माद रोग

(Insanity)

दिमाग मे जख्म और प्रदाह होने के कारण या चोट लग जाने की वजह से मन की स्वाभाविक क्रिया मे गड़बडी हो जाती है। इसी को उन्माद रोग अथवा पागलपन कहते हैं।

आयुर्वेद में लिखा है—

मदयन्त्युद्गता दोषा यस्मादुन्मार्गमागतः।
मानसोऽयमतो व्याधिरुन्माद इति कीर्तितः॥

अर्थात् विरुद्ध मार्गों तथा मस्तिष्क मे पैदा हुए दोष, मनुष्य के मन को चचल कर देते हैं। इसी कारण मानसिक रोग उन्माद कहलाता है। इससे यह सिद्ध हुआ कि स्नायु गह्वर की खराबी की वजह से मस्तिष्क का सिकुड़ना, उसमें मोटाई या प्रदाह आदि लक्षण दिखलाई पड़ते हैं। वंश परम्परा से आया हुआ दोष, उपदंश, कण्ठमाला, बहुत अधिक शराब पीना, मस्तिष्क पोषण में कमी, नींद न आना, अत्यधिक मानसिक परिश्रम, शोक इत्यादि इसके प्रमुख कारण हैं।

इस बीमारी में तीन प्रकार की भ्रान्तियाँ दिखलाई पड़ती हैं—

(१) भ्रान्त देखना अर्थात् बाहरी चीजों में भ्रम समझना।

(२) अवास्तव देखना अर्थात् जो चीज नहीं है वही मालूम होना।

(३) बद्धमूल भ्रान्त विश्वास अर्थात् बहुत दिनों तक भ्रम देखना या अवास्तव देखना आदि का मन पर अधिकार हो जाने पर चित्त पर उसकी छाप जम जाती है।

नींद न आना, सिर दर्द, चेहरा या आँखों की भावभगी बदलती हुई, लगातार बकना, चित्त में भ्रम पैदा होना, कभी रोना, कभी चिल्लाना, कभी हँसना आदि लक्षण प्रकट होते हैं। अनिद्रा और भूख न होना, इस रोग के प्रमुख लक्षण हैं।

यह रोग ४ प्रकार का होता है—

(१) तेज उन्माद रोग या पागलपन, (२) विषाद वायु (Melancholia), (३) बुद्धि वैकल्य या मानसिक शक्ति की कमी (Demantia) तथा (४) बकवाद के साथ पक्षाघात ।

चिकित्सा

नेट्रम म्यूर ३०x, कैलि फास ३०x—इन दोनों औषधियों को पर्याय क्रम से ४ घण्टे के अन्तर से खिलाना चाहिए। कुछ नीरोग होने पर ऊँचे नम्बर की औषधियाँ सेवन करना चाहिए ।

नेट्रम सल्फ ३०x—यदि सिर में चोट लगने से रोग उत्पन्न हुआ हो तो यह अति लाभदायक है ।

अपथ्य—मसूर, उरद की दाल, गर्म, खट्टे तथा अजीर्ण उत्पन्न करने वाले पदार्थ, वैगन, मूली देर में पचने वाले पदार्थ, लहसुन, प्याज, चाय, मछली, अण्डे, मास, परिश्रम के कार्यों से बचना चाहिए ।

पथ्य—मूँग, अरहर की दाल, कद्दू, पालक, खर्फा, तरबूज, ककड़ी, शलजम, टिंडे, रोटियाँ, विस्कुट, दूध, वार्ली का खीर, सेव, अनार, सन्तरा, बकरी का मास ।

उपदंश या गर्मी

(Syphilis)

आयुर्वेद के ग्रन्थ 'भावप्रकाश' मे उपदंश को 'फिरग' रोग कहकर बतलाया गया है । डॉ० हैनिमैन के कथनानुसार सब तरह के चिर रोगों की जड़ सोरा, सिफिलिस और साइकोसिस है । यही सिफलिस हिन्दी में उपदश, गर्मी, आतशक आदि नामों से पुकारा जाता है । प्रश्न यह उठता है कि इसे वेनेरल डिजीज (Veneral Disease) क्यों कहते है ? वेअर रेमेडीज लिमिटेड (जर्मनी) ने अपनी प्रकाशित पुस्तक में लिखा है—

Syphilis is a chronic disease which is acquired usually through sexual intercourse hence the name 'Veneral.'

इसलिए इसका नाम रतिज रोग है, क्योंकि यह पुरुष-स्त्री के प्रसंग से उत्पन्न होता है। उपदंश रोग वाले पुरुष के साथ स्त्री तथा स्त्री के साथ पुरुष का सहवास होने से यह होता है। पहले जननेन्द्रिय के चमड़े में किसी स्थान में छिलकर जख्म या घाव हो जाता है। बाद में उससे रक्त दूषित होकर क्रमशः अन्यान्य उपसर्ग प्रकट होते हैं।

उपदंश के घाव को अंग्रेजी में शैंकर कहते हैं, जो दो प्रकार का होता है—(१) हार्ड शंकर (कठिन उपदंश क्षत) और (२) साफ्ट शैंकर (कोमल उपदंश क्षत)।

ट्रेपोनेमा पैल्लाइडम नामक जीवाणु कठिन क्षत उपदंश के तथा डुक्रे नामक जीवाणु कोमल क्षत उपदंश के मूल कारण हैं।

इस रोग का विष शरीर में दो तरह से आता है— (१) पिता-पितामह द्वारा (Hereditory) और (२) स्वयं अपने दोष से (Acquired)।

अर्जित उपदंश तीन प्रकार की अवस्थाओं में प्रकट होता है—(१) प्राथमिक अवस्था, (२) द्वितीयावस्था और (३) तृतीयावस्था। घाव के उत्पन्न होने को प्रथम, शरीर में रक्त दूषित होने पर नाना प्रकार की बीमारियों के उत्पन्न होने पर द्वितीय, तथा शरीर के तन्तुओं पर आक्रमण होने पर तृतीय अवस्था समझते हैं। प्रथमावस्था के विषय में लिखा है कि—The disease remains localized at the site of the infection and in the regional lymph nodules.

अर्थात् इस अवस्था में पुरुषों के लिंगेन्द्रिय के पिछले भाग में जहाँ [illegible] वहाँ तक स्त्रियों के योनि कपाट में हार्ड शंकर होता है। [illegible] के भीतर, स्तन, ओंठ आदि में यह हो जाता है। शुरू में [illegible] स्थान का चमड़ा छिल जाता है। तत्पश्चात् कम से कम ३ सप्ताह के बाद उस स्थान में खुजली होती है और वहाँ कटा-सा दिखाई पड़ता है। बाद में [illegible] जैसी बिना किसी तरह के दर्द के [illegible] है। यहाँ आगे चलकर घाव होता है और इसके चारों

और ग्रन्थियाँ कड़ी हो जाती हैं। हार्ड शैंकर मे केवल एक ही घाव होता है किन्तु साफ्ट शैंकर में वहुत-से घाव होते हैं। उपदंश के बीज रक्त के साथ मिलने के दो-तीन दिन के भीतर ही उस स्थान के कोमल घाव हो जाता है और क्रमशः बढ़ता जाता है। साफ्ट शैंकर के अन्तर्गत दो शैंकर और माने गये हैं (१) फैजेडिनिक और (२) श्लौफिंग। पहले वाले घाव का किनारा कटा-फटा-सा दिखाई पड़ता है और इसकी पीव बदबूदार तथा भद्दी होती है। गिल्टी में तनाव का दर्द होता है, रोगी लँगड़ा कर चलने लगता है, अन्त में गिल्टी पक जाती है और घाव बढ़कर कभी-कभी पेड़ू तक फैल जाता है, किन्तु दूसरे प्रकार में प्राय बाघी नहीं होती, खून मिली पीव की तरह पतली मवाद निकलती है और कभी-कभी सुपारी सड़कर नष्ट हो जाती है।

दूसरी अवस्था मे (Various kinds of eruptions appear almost exclusively on the skin, showing thereby that the disease has become generalized in the system.) अर्थात् मुँह, तालू, टांसिल, आँखों आदि मे नाना प्रकार के 'उद्भेद, निकलते हैं तथा घाव भी हो जाते हैं। इसलिए इसकी दूसरी अवस्था उस समय तक मानी गई है जब तक रक्त दूषित होता जाता है। यह कम-से-कम दो-तीन महीने और ज्यादा से ज्यादा दो-तीन वर्ष तक माना गया है। इस स्थिति मे गर्भवती स्त्री के फूल पर रोग के आक्रमण होने पर गर्भ गिर जाता है।

तीसरी अवस्था के बारे मे लिखा है—

The generalized infection of the second stage once again becomes localized in well defined tissues. अर्थात् इस अवस्था में लसिका ग्रन्थियाँ, सन्धियाँ, अस्थि-आवरक का पर्दा आदि बुरी तरह आक्रान्त हो जाते हैं। यह कभी द्वितीय अवस्था के बाद होता है और कभी-कभी पहली अवस्था के बाद ही इसके लक्षण आ जाते हैं।

अर्थात् द्वितीय अवस्था आती ही नहीं और कभी-की तृतीय अवस्था द्वितीयावस्था के साथ-ही-साथ दृष्टिगोचर होने लगती है। यह समय अत्यन्त कष्टकर और भयानक होता है और इसी मे रोगी को जीवन भर रुग्ण रहकर कष्ट भोगना पड़ता है। कभी-कभी तो मस्तिष्क के प्रधान यन्त्रों पर भी रोग का हमला हो जाता है और रोगी की मृत्यु हो जाती है।

माता की योनि में उपदंश का घाव हो और सन्तान-प्रसव के समय बच्चे की देह में उस घाव का विष लगकर शैंकर हो जाय तो इसे अर्जित उपदंश कहते हैं, किन्तु पिता के वीर्य और माता के डिम्बाणु से उपदंश विष परिचालित होकर सन्तान पर आक्रमण करे तो उसे खानदानी या पूर्व पुरुषागत उपदंश कहते हैं। बच्चा पैदा होने के कम से कम डेढ़ महीने के भीतर और कभी-कभी ज्यादा दिन पर भी उपदंश के लक्षण दिखलाई पड़ते हैं। बच्चे के होठों के किनारे, मलद्वार में, नाक के भीतर आदि में चकत्ते निकलते हैं। बाप-माँ से पाया हुआ उपदंश बहुत ही खतरनाक होता है।

उपदंश रोग ग्रसित व्यक्तियों की प्रायः सभी तकलीफें सूर्यास्त से सूर्योदय के समय तक अर्थात् रात्रि के समय बढ़ती हैं। जीवन में किसी मनुष्य को एक बार से ज्यादा गर्मी की बीमारी नहीं होती। बार-बार इस रोग का आक्रमण होना ही उपदंश का जहर खून में छिपा हुआ समझना चाहिए।

चिकित्सा

साइलिसिया ६x—त्वचा के घाव, पारे का अधिक सेवन किया हो, पुराना दमन, पुराना उपदंश जिसमें सूजन हो अथवा पीव पड़ गई हो, गिल्टी, हड्डी का सड़ना, दुर्गन्धित मवाद निकले।

फेरम फास ६x—अण्डोला (बाघी) जिनमें ज्वाला, लाली, पीड़ा रहा करती हो।

कालि म्यूर ३x—सड़े सूजे हुए, कोमल घाव, अण्डोला में शोथ।

कभी-कभी काली म्यूर के लोशन का भी वाह्य प्रयोग किया और काली म्यूर उपदंश के लिए रामवाण औषधि है।

कैलि सल्फ ३x—जब उपदंश के सभी कष्ट सायकाल मे बढ़ते हो, कष्ट जीर्ण हो। पुराना उपदंश।

कैलि फास ३x—उपदश का घाव कड़ा हो। फैलने वाली वाघी एवं घाव। सड़न अवस्था और स्नायविक उत्तेजना।

नेट्रम सल्फ ३x—उपदश के विष के कारण मलद्वार पर घाव हो।

'नेट्रम म्यूर'—यह औषधि जीर्ण उपदश के लिए लाभकारी है; जब घाव से हरी पीव निकलती हो।

कल्केरिया फ्लोर ६x—उपदश के कडे प्रकार के घाव।

कल्केरिया सल्फ ६x—यह औषधि उपदश के घावों मे पीव पडने तथा पीव को निकालने में मुख्य प्रभाव रखती है। वाघी के मवाद को नियन्त्रित करने के लिये उपदंश में प्रयोग करना चाहिए।

साइलिशिया—वाघी पकाने और फोडने के लिए ३x और सुखाने के लिए ३०x का प्रयोग करें।

कामला या पाण्डु

(Jaundice)

आयुर्वेद में लिखा है कि—

जब पित्त नलिका वन्द होने के कारण रक्त मे अधिक पित्त का मिश्रण हो जाता है और रक्त कणों की कमी हो जाती है तो पाण्डु रोग और भी अधिक पित्त के मिश्रण से कामला (कुम्भकामला इसी का भेद है) तथा इससे भी अधिक मिश्रण से हलीमक हो जाता है। क्योंकि पित्त पीत भी है और नीला भी। अतः तीनों के वर्ण (रङ्ग क्रमशः पाण्डु (ईषत्

पीत ', हरिद्र (अधिक पीत) एवं हरित (पीत-नील मिश्रित हरा) होते हैं।

ऐयाशी, मेहनत न करना, मानसिक उद्वेग वगैरह की वजह से यह बीमारी होती है।

इस रोग में शरीर का चमड़ा, आँख का कोया, नख की जड़ और पेशाब पीला होता है। यहाँ तक कि रोगी जिधर और जिस चीज को देखता है वह भी पीली दिखाई पड़ती है।

चिकित्सा

फेरम फास ६x—यकृत में रक्त की अधिकता, दर्द, पीड़ा, बहुत बुखार प्रभृति लक्षणों के साथ प्रदाह की प्राथमिक अवस्था में यह उपयोगी है।

कैलि म्यूर ३x—आँतों में पित्त आने की कमी की वजह से फीके रंग का मल, इसके साथ ही कब्जियत। भूरी आभा लिए सफेद लेप चढ़ी जीभ, मल का रंग फीका। यकृत की जगह पर और दाहिनी स्कन्ध-सन्धि के नीचे दर्द, छोटी आँत के प्रथम अंग में (Duodenum) के स्थान पर सर्दी लग जाने की वजह से कामला रोग पैदा हो जाना। यकृत की क्रिया मन्द पड़ जाना अथवा यकृत का निष्क्रिय हो जाना। कृमि की वजह से उत्पन्न कामला रोग में भी यह उपयोगी है।

नेट्रम म्यूर ३x—पर्याय-क्रम से कब्जियत और उदरामय, अजीर्ण, बीमारी की वजह से कामला रोग और इसके साथ ही तन्द्रालुता, नमकीन चीजें खाने की इच्छा।

कैलि सल्फ १२x—पीले रंग की चिकनी या पीली सरसों की तरह मैल चढ़ी जीभ, कभी कभी जीभ के किनारे सफेद मैल से ढँके रहते हैं। घी और तेल मिला खाद्य पदार्थ पाचन करने की शक्ति का न रहना, थकान मालूम होना, सिरदर्द। दूसरी निर्देशित दवा के साथ पर्याय-क्रम से इसका व्यवहार होता है।

कल्केरिया सल्फ १२x—यकृत में पीड़ा हो जाने पर दर्द, मिचली और कमजोरी, पीव पैदा होना रोकने के लिए बहुत उपयोगी है।

नेट्रम फास १x—डॉ० बोरिक के अनुसार यह अति लाभदायक है।

कंठमाला

(Scrofula)

डॉ० एस० के० बोस ने लिखा है :—

'It is constitutional disease characterized by enlargement of lymphatic gland, in various parts of the body, bone affections etc. in children.'

कहने का तात्पर्य यह है कि खून खराब होने पर; शरीर के बहुत से स्थानों जैसे गला, गर्दन, बगल आदि की गाँठों मे सूजन होने तथा सूजन लाल रंग की और दर्द भरी होना आदि लक्षण प्रकट होते हैं। बाप-माँ को कण्ठमाला या गर्मी का दोष होने पर भी अक्सर बच्चों को यह बीमारी हो जाती है। सीड भरी जगहों में रहना, ठीक-ठीक पोषण न होना, साफ हवा का न मिलना।

चिकित्सा

कण्ठमाला तथा यक्ष्मा का एक ही विष है, इस रोग में **मैग्नेशिया फास** ६x आरम्भिक दशा में लाभदायक होता है। माध्यमिक अवस्था मे **नेट्रम फास** ३x कार्य करता है। यदि क्षय का विष आँतों मे है और हरा दुर्गन्धित अतिसार, निर्बलता इत्यादि है तो **कल्केरिया फास** ३x से काम लेना चाहिए। इसी मुख्य दवा **कैलि म्यूर** ३x, ६x है।

कब्जियत

(Constipation)

मलनली में मल इकट्ठा होना और मल की गाँठें बँध जाना, दस्त साफ न आना आदि लक्षणों के उपस्थित होने पर कोष्ठबद्धता या कब्जियत की शिकायत कहलाती है।

यकृत रोग, अनियमित आहार-विहार और परिश्रम करने, मानसिक उद्वेग, विशेष विषय-वासना से यह रोग होता है।

इस रोग के होने पर सिर मे भार, आँतों और पाकस्थली में दबाव मालूम पड़ना, बुखार को तरह अनुभव होना, बार-बार पैखाना जाने की चेष्टा या बिल्कुल ही पैखाना न लगना आदि लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा

कल्केरिया फ्लोर ६x—मल बहुत बड़ा और कड़ा, गाँठ-गाठ। बहुत काँखने पर भी मल नहीं निकलता। पहला भाग कडा फिर पतला मल।

कल्केरिया फास ३०x—वृद्ध मनुष्यों की कब्जियत में विशेष फायदा करता है। इसका मल कड़ा और उसमें खून के छींटे रहते हैं। इसके साथ ही मानसिक सुस्ती, सिर में चक्कर आना और सिर में भार का लक्षण वर्तमान रहता है। खासकर रक्तहीन मनुष्यों के कब्ज में लाभकारी है।

फेरम फास ३x आँतों के कौक सूत्रों की क्षीणता की वजह से कब्जियत और इसकी वजह से तलपेट में गर्मी मालूम होना। बहुत गहरी कब्जियत के साथ आँत निकल आना अथवा बवासीर का मस्सा निकल पड़ना, इसके साथ रक्तहीनता, पीला चेहरा, गर्मी चेहरे पर आना, हाथ-पैर ठंढे, धड़कन, भूख न लगना, पेट फूलना तथा मांस खाने से घृणा।

नेट्रम म्यूर ३x—कब्ज के साथ सफेद रंग की लेप चढ़ी जीभ, घी

या चर्बी मिला भोजन सहन नहीं होता; केक और पीठी की चीज खाने पर बीमार हो जाता है। यकृत की क्रिया का कम पड जाना, पित्त की कमी के कारण खाकी रग का मल। बहुत दिनों के कब्ज की बीमारी मे विशेष लाभ होता है।

कैलो फास ६x—मल का रग एकदम भूरा और इसके साथ ही पीली आभा लिए हरे रग की श्लेष्मा की रेखायें मल पर लिपटी-सी दिखाई पड़ती है। बड़ी आँत मलभाण्ड और मलद्वार की निष्क्रिय अवस्था। सम्पूर्ण जीवनी शक्ति की क्षीणता।

नेट्रम म्यूर ३x—यह अभ्यासगत कब्जियत की बहुत बढिया दवा है। बालक-बालिकाओं के लिए बहुत ही लाभदायक है। पाखाना हो जाने के बाद मलद्वार में जलन, फट जाने की तरह अनुभव होना और खून निकलना, आँतों की कमजोरी और सूखेपन की वजह से कब्जियत, आँत की श्लैष्मिक झिल्ली में तरी का रहना, पर इसके साथ ही अन्यान्य अगों में रक्तस्राव का ज्यादा होना। जैसे जल की कै, जल भरी आँखें, मुँह से ज्यादा लार बहना, जीभ तर इत्यादि। मुँह मे पानी भर आना और तन्द्रा से घिरा भाव, आँत की सलवटों में दर्द, मलद्वार का प्रदाह, बवासीर की बीमारी के साथ कब्ज, मल कड़ा सूखा, बड़े कष्ट से निकलता है। कब्जियत के साथ सिर दर्द बना रहता है। हृदय की कमजोरी के साथ मोटे-ताजे लोगों का कब्ज। मल सूखा, भुरभुरा, बिखर जाये, जल्दी न निकले।

नेट्रम फास ६x—बहुत अधिक दुर्दमनीय कब्जियत। बालक-बालिकाओं को अभ्यासगत कब्ज के साथ पर्याय-क्रम से पतले दस्त आना अर्थात् एक बार कड़ा, एक बार पतला दस्त होना। कृमि के साथ कब्ज। बच्चों को खाद्य-सामग्री में यह दवा मिलाकर देने से सहज में और सुन्दर भाव से कोष्ठ-शुद्धि हो जाती है। ६ महीने के बच्चे के लिए प्रति मात्रा ५ से १० ग्रेन तक दिन में तीन बार प्रयोग की जाती है। रेडी का तेल प्रभृत

दूसरी-दूसरी दस्तावर दवाओं की तरह इस दवा से भी न साफ होनेवाली कब्जियत।

नेट्रम सल्फ ६x, २००x—कड़ा और साकल की तरह बँधा मल, मल के साथ में खून की लकीर लगी रहती है। पाखाना होने के पहले और पाखाना होने के समय मलद्वार खुजलाया करता है। कोमल मल निकलने में भी तकलीफ होती है। बहुत ज्यादा परिमाण में बदबूदार अधोवायु निकलती है। आँतों में मल ढकेलने की शक्ति न हो।

साइलिसिया ६x—मलद्वार की मल निकालने की शक्ति मानों एकदम नष्ट हो जाती है। मल थोड़ा-सा मलद्वार से निकल कर फिर भीतर घुस जाता है। मलद्वार में जलन और सुई गड़ने की तरह दर्द और डंक मारने की तरह यन्त्रणा। पुराने कण्ठमाला रोगी के और किसी जगह पर पीब पैदा हो जाने के साथ कब्ज मौजूद रहने पर उसकी साइलिसिया सबसे श्रेष्ठ दवा है। पोषण की कमी के कारण जिन बालक-बालिकाओं का चेहरा बदरंग रहता है, मिट्टी के रङ्ग का दिखाई देता है, उनके कब्ज में ज्यादा फायदा करता है। पक्षाघात रोगाधिकार में माथे में बहुत अधिक पसीना होने के साथ ही साथ कब्जियत रहने पर साइलिसिया का प्रयोग करना चाहिए।

नोट—बहुतों का ख्याल है कि कब्ज में निम्न शक्ति की औषधि लाभप्रद है। परन्तु पुराने कब्ज की बीमारी में उच्च शक्ति की औषधि विशेष लाभप्रद है।

कर्णमूल प्रदाह

(Parasites or Mumps)

एक तरह के खास जीवाणु इस रोग की उत्पत्ति के कारण हैं। ये छूने से फैलते हैं। दो-तीन सप्ताह सुप्तावस्था में रहने के बाद यह संक्रामक रोग प्रत्यक्ष आकार धारण कर लेता है।

कान के सामने और नीचे कई एक गिल्टयाँ रहती हैं। इन गिल्टियों में प्रदाह होने पर वह कर्णमूल प्रदाह कहलाता है। यह रोग प्रायः वर्षा और जाड़े में होता है। कभी-कभी कान की गिल्टियों का दर्द बन्द होकर स्त्रियों के स्तन और पुरुषों के अण्डकोष में यह बीमारी प्रकट होती है। यह रोग बच्चों और जवान को ही ज्यादा होता है। बूढ़ों और स्त्रियों को बहुत कम होता है।

चिकित्सा

फेरम फास ६x और कैलि म्यूर ६x – जब सिर मे दर्द तथा ज्वर हो। कनफड़े निकल आये हों, सूजन हो, कोई चीज निगलने में कष्ट हो।

कैलि म्यूर ६x—फेरम फास के साथ प्रयोग करें। फूलना, बढ़ना।

नोट—जब लार बहुत गिरती हो, गर्म बहुत अधिक हो गया हो, सर्दी के कारण सूजन अण्डकोषों में बढ़ गई हो तो नेट्रम म्यूर ६x बताई हुई औषधियों के साथ देना चहिए। फ्लानेल से कनफड़े को सेंकना चाहिए और फेरम फास ६x कैलि म्यूर २x का मलहम बनाकर लगाना चााहिए। उस पर रुई से सेंक कर बाँध देना चाहिए।

इस रोग मे कैलि म्यूर तथा नेट्रम म्यूर मुख्य औषधियाँ हैं। अगर कड़ापन अधिक हो तो कल्के फ्लोर तथा बेराइट-आयोड लाभकारी है।

अपथ्य—रोगी को सर्द वायु से बचना चाहिए। प्रत्येक दशा में सम्पूर्ण ठण्ढे पदार्थों से बचना, आवश्यक है।

पथ्य—दूध, दलिया, डबल रोटी और शोरबा।



कटिवात

(Lumbago)

वात अगर कमर की मासपेशियों मे जम जाय तो उसे कटिवात कहते

हैं। कमर की ये पेशियाँ पीठ की रीढ का भार वहन करती हैं। इसीलिए साधारणतः इस वात के ज्यादा हो जाने पर रोगी न तो सीधा बैठ सकता है और न खड़ा हो सकता है। डा० भट्टाचार्य ने इसे इस प्रकार वतलाया है—

'It is an affection of the back muscle that support the spine to erect posture.'

सर्दी का लगना, पानी में भीगना, भारी चीज उठाना आदि कारणों से यह रोग एकाएक पैदा हो जाता है। कमर में तेज दर्द, धीमा बुखार और बुखार का न रहना, दबाने या हिलने-डुलने से दर्द का बढ़ना, दर्द बहुत तेज हो जाने पर खाट से उठ न सकना आदि लक्षण दिखलाई पड़ते हैं। इसमें सूजन नहीं होती। साधारणतः रोग ८–१० दिन में अच्छा हो जाता है।

चिकित्सा

माइलिनिया ३x—पीठ में अकड़न की वजह से खिंचाव, रोगी को झुककर सोये रहना पड़ता है। मेरुदण्ड के ठीक बीच में लगातार ऐंठन का दर्द। झुकने के बाद सीधा होने में कष्ट।

फेरम फास ६x—पीठ, कमर और मसाने के ऊपर यन्त्रणा; हिलने-डुलने पर दर्द बढ़ जाता है।

कैलि म्यूर ६x—फेरम फास के प्रयोग से फायदा न होने पर इस लवण का प्रयोग करें।

कैलि फास ६x—बैठे रहने के बाद उठने की चेष्टा करने पर या चलना आरम्भ करते ही दर्द बहुत बढ़ जाता है, दर्द से मानों एकदम लँगड़ा हो जाता है। रोग वाली जगह एकदम शक्तिहीन मालूम होती है। धीरे-धीरे चलने पर दर्द और अकड़न क्रम से घटती जाती है, पर ज्यादा देर तक चलने पर दर्द बढ़ जाता है।

कल्केरिया फास ३x—रोगवाले स्थान में अकड़न, ठण्डक के साथ सुरसुरी

मालूम होना और सिर दर्द, विश्राम के समय और रात में दर्द का बढ जाना। फेरम फास के साथ पर्याय-क्रम से प्रयोग किया जाता है। कमजोरी लाने वाली बीमारी के बाद अगर ऐसा दर्द पैदा हो जाय तो कैल्केरिया फास के प्रयोग से जल्द आराम हो जाता है। सवेरे नींद खुलने के बाद शैय्या से उठने के समय कमर में अकड़न।

कैलि सल्फ ६X, १२X—इधर-उधर हटने वाला दर्द। गर्म घर मे और सन्ध्या समय दर्द की अधिकता; खुली ठण्ढी हवा में घटना।

मैग्नेशिया फास ३X—तीर वेधने की तरह, छेदने की तरह पर्यावर्तक इधर-उधर उठने वाला स्नायविक प्रकृति का दर्द; गर्म प्रयोग से घटना।

कल्केरिया फ्लोरिका ३X—मेरुमज्जा के प्रदाह की तरह कटिवात; पीठ के निचले भाग मे एक तरह की थकावट जैसी अनुभूति और दर्द तथा भार मालूम होना और जलन अनुभव होना। उसके साथ कब्जियत, कटिवात, चलना आरम्भ करते ही बढ जाता है, पर लगातार चलने रहने पर घट जाता है।

नेट्रम म्यूर ६X—कड़ी शय्या पर चित् सोने पर घटता है। इसके साथ ही इस लवण के खास तरह की जीभ पर ख्याल रखना चाहिए। जीभ पर बुलबुले, फेन भरी लार लिपटी रहती है। बहुत देर तक सामने की ओर झुक कर काम करने के बाद, कुचल जाने की तरह दर्द पीठ में, कमजोरी, सवेरे बढ जाना; मेरुदण्ड में स्पर्श के अनुभव की अधिकता व गर्दन पतली और सिकुड़ी, सुस्ती और अकड़न।

नेट्रम सल्फ ६X—पीठ मे जख्म की तरह तकलीफ, दर्द रात भर बना रहता है। केवल करवट सो सकता है। गर्दन और समूचे मेरुदण्ड में दर्द।

नेट्रम फास ३X—सवेरे सो कर उठने पर कमर की एक तरफ से दूसरी तरफ तक दर्द।

———

कार्बंकल

(Carbuncle)

यह एक प्रकार का विष-व्रण है। इसमें स्फोटक पास-पास उत्पन्न होते हैं और उनके प्रादाहिक टीशू स्फोटक की अपेक्षा बहुत बड़े होकर चमड़े के नीचे विस्तृत हो जाते हैं। इनका आकार स्फोटक की अपेक्षा बहुत बड़ा होता है और यह अत्यन्त कष्टदायक बीमारी है।

यह गर्दन के पीछे पीठ, जाँघ और नितम्ब की हड्डी पर अधिक होता है। साधारणतः फोड़े में केवल एक मुँह रहता है, किन्तु इसमें वैसा न होकर बहुत से छेदों वाला यानी मधुमक्खी के छत्तों जैसा मुँह होता है और उसमें से थोड़ी-थोड़ी पीब निकलती रहती है। इसमें टीस, दर्द, जलन आदि बहुत जोरों की होती है, भीतर आग-सी जलती रहती है। किसी एक जगह सुर्खी और चमक रहती है, फिर एक दो दिन बाद वहाँ काली आभा दिखाई देती है। पकने के पहले कुछ नीला या काला रंग दिखाई पड़ता है। पकने पर छेदों में से खून मिश्रित बदबूदार मवाद निकलती रहती है। भीतर सड़ा हुआ अंश निकल कर ऊबड़-खाबड़ घाव उत्पन्न होता है।

इसमें बुखार, कमजोरी, प्यास, सिर दर्द, भूख की कमी, अनिद्रा आदि लक्षण प्रकट होते हैं। यह बीमारी उन्हीं लोगों को ज्यादा होती है जिनके पेशाब में शुगर आता है अथवा उन वृद्धों को होती है जिनके हृत्पिंड का रक्तनाली सम्बन्धी कोई बीमारी है।

चिकित्सा

फेरम फास ६x—आरम्भ में खिलाना चाहिए, इस औषधि से फूट भी जायेगा और मवाद भी निकल जावेगा। यदि मवाद न पड़ा हो तो फेरम फास ६x और काली म्यूर ६x खिलाना चाहिए। जब मवाद पड़ने लगा हो अथवा पुराना रोग हो गया हो उस समय साइलिसिया

३०x, २००x और खिलाना चाहिए। यदि इससे लाभ न हो तो कल्केरिया सल्फ ३०x व २००x मवाद के न बनने के लिए खिलाना चाहिए।

कल्के फ्लोर—रोग की प्रारम्भिक अवस्था में जब कड़ापन हो तो विशेष लाभकारी है।

कैलि फास—बीमारी की दूसरी अवस्था (स्टेज) मे प्रयोग करना चाहिए। रेंगन, खुजली, कलबलाहट में नेट्रम म्यूर के साथ।

क्रूप खाँसी

(Whooping Cough)

इसका अन्य नाम हूपिंग कफ, काली खाँसी आदि भी है। साधारणतः २ वर्ष से नीचे के बच्चों को ही यह होती है। यह जीवन मे केवल एक बार होती है।

अवस्थायें

(१) कैटेरल (Catarrhal), (२) कन्वल्सिव (Convulsive), (३) क्रिटिकल (Critical)।

चिकित्सा

कैली फास ३x—स्नायविक निर्बलता वाले रोगों मे इसको दूसरी औषधि के साथ देते हैं। इसके साथ Mag. Phos के प्रयोग से विशेष लाभ होता है।

कैली म्यूर—यह काली खाँसी की मुख्य औषधि है। जिह्वा सफेद, कफ निकले, दौरे वाली खाँसी जिसमें उल्टी साँस न होती हो।

कैली सल्फ ६x—काली खाँसी, उसके साथ पीला कफ निकले। उपसर्ग रहित काली खाँसी।

नेट्रम म्यूर ३x—पानी के समान पतला, साफ और तारदार या झागदार कफ।

फेरम फास 6x— काली खाँसी, ज्वर, अधिक खाँसी आने से वमन में रक्त निकले।

मैग्नेशिया फास 6x—काली खाँसी, ऐंठन वाले दौरे जिसके साथ उल्टी साँस खिंचती हो और हाथ-पैर में ऐंठन होने लगती हो तो इसे लगातार प्रयोग करना चाहिए।

कैन्सर

(Cancer)

कैन्सर पैदा होने की जगह के अनुसार उसकी प्रकृति का प्रभेद दिखाई देता है। इस बीमारी की एक विशेषता यह है कि यह अपने पास के तन्तुओं की भी प्रकृति अपनी तरह की बना लेती है अर्थात् उनमें भी फैल जाती है तथा एक जगह से हट कर, दूसरी जगह भी प्रकट हो सकती है। कैन्सर का जख्म आप ही फट जाता है और रोगी का जीवन संकट में पड़ जाता है।

कैन्सर एक धातुगत रोग है, तथापि इसका विष भीतर ही भीतर फैल कर रोगी के शरीर में बहुत-से प्राणघातक उपसर्ग पैदा करता है। पाकाशय, निचला ओंठ स्थान, जरायु, डिम्बाशय, जीभ, मलद्वार, योनि प्रभृति स्थानों में यह उत्पन्न होता है। कर्कटिका रोग, हमेशा दो तरह का प्रकट होता है, कठिन और कोमल। पाकाशय, स्तन और मलद्वार प्रभृति स्थानों में कठिन आकार में, अन्यान्य स्थानों में कोमल अकार में यह पैदा हुआ करता है।

यह प्रौढ़ावस्था और बुढ़ापे की बीमारी है और यह बीमारी स्त्रियों को ही अधिक होती है। दुबलापन, निराशा, पीली आभा लिये शरीर के रंग के साथ यह रोग पैदा होता है। कैन्सर रोग बहुत दिनों तक शरीर में सुप्तावस्था में पड़ा रह सकता है और फिर एकाएक कोई आघात लगने पर प्रकट हो सकता है।

अगर स्तन के किसी स्थान पर बहुत दिनों तक कड़ापन बना रहे, तो उस पर ध्यान न देना हानिकारक है। मलद्वार में इस तरह कड़ापन दिखाई देने पर तुरन्त उस पर ध्यान देना चाहिए।

इस रोग में जलन, यन्त्रणा, दुर्गन्ध और एकाएक रक्तस्राव असहनीय-सा हो जाता है।

क्लोरोफार्म से बेहोश कर इलाज किया जाता है। और नश्तर लगाया जाता है। धातु दोष रहने की वजह से नश्तर लगवाने और कटवाने के बाद भी यह नये सिरे से पैदा हो जाया करता है।

बायोकेमिक चिकित्सा से केन्सर की जलन, बदबू, रक्तस्राव प्रभृति आराम हो जाया करते हैं। यह बहुत दिनों तक रोगी को जिन्दा रखती है। रोग की आरम्भावस्था में ही यदि उपयुक्त मात्रा में बायोकेमिक लवण का प्रयोग किया जाता है तो रोग वाली जगह की सूजन, लाली वगैरह चली जाती है और वह स्थान फिर स्वाभाविक अवस्था में आ जाता है।

नश्तर लगवाने के बाद अगर बार-बार कैन्सर होता रहे तो हताश न होकर बायोकेमिक इलाज कम से कम रोगी को भयंकर तकलीफ से बचाने के लिए करना चाहिए। इसी तरह धीरज से इलाज करने पर रोगी को बहुत दिनों तक जीवित रखा जा सकता है।

चिकित्सा

मैग फास—आक्षेपिक दर्द, शूल, चमक इत्यादि।

फेरम फास—कैन्सर के दर्द मे अत्यन्त उपयोगी औषधि है। जीभ के कैन्सर में इससे विशेष उपकार हुआ है।

नेट्रम फास ६x—जीभ के कैन्सर रोग में यह ज्यादा फायदा करता है। अगर दर्द अधिक रहे तो इसके साथ पर्याय-क्रम से **फेरम फास** का प्रयोग करना चाहिए। भीतरी प्रयोग अर्थात् खिलाने के साथ-ही-साथ पानी में घोल कर कुल्ला करने को भी दिया जाता है।

कैलि सल्फ—उपत्वचा से पैदा हुआ कैन्सर, चर्म और श्लैष्मिक झिल्ली के संगम स्थान का कैन्सर, चर्म के ऊपरी भाग का कैन्सर; पतला पीले रङ्ग का, रस की तरह पीब का स्राव। इसका भीतरी और बाहरी दोनों ही प्रयोग होता है।

कैलि फास ३x, ६x—बहुत ही तकलीफ देने वाला कैन्सर, बदबूदार स्राव, चर्म और तन्तु सब बदरङ्ग हो जाते हैं। कैन्सर के इलाज की सबसे श्रेष्ठ दवा है, यदि ऐसा कहा जाय तो भी अत्युक्ति न होगी। अगर ट्यूमर हटा दिया गया हो तो भरने में विशेष सहायक होता है।

नेट्रम म्यूर ३x, ६x,—जीभ के नीचे कोमल उद्भेद, इसके साथ पर्याय क्रम से फेरम फास का प्रयोग किया जाता है।

साइलिसिया ६x—जरायु में बगल की ग्रन्थि में, गले को गाँठ में, चेहरा या निचले ओंठ का कैन्सर, स्तन के कैन्सर रोग की यह एक उत्कृष्ट दवा है। रोग वाली जगह कड़ी होकर धीरे-धीरे पका करती है। रोग वाली जगह बर्फ की तरह ठण्डी रहती है। जरायु के कैन्सर रोग में योनि से भूरे रंग का बदबूदार पीब की तरह स्राव, सड़े मास की तरह बदबूदार प्रदर की भाँति का स्राव होता है।

कैल्के फ्लोर ३x—स्तन का नया कैन्सर, जो छूने से दुखे और भीतर कुन्दम ग्रन्थियाँ अनुभव में आवें।

कृमि

(Worms)

प्रत्येक व्यक्ति के पेट में कुछ न कुछ कृमि सदा मौजूद रहती ही हैं, किन्तु खान-पान की गड़बड़ी से इनकी संख्या अक्सर बढ़ जाती है और शरीर को रोगी बना देती है।

किरमियाँ दो तीन प्रकार की होती है—(१) छोटी-छोटी सूत की तरह (Small, Thread Worms), (२) गोल्ही लम्बी केचुए की तरह

(Long Round Worms) और (३) खूब लम्बी फीते की तरह (Tape Worms) ।

पहले प्रकार की कृमि दल बाँधकर मलद्वार के पास रहती हैं। कभी मूत्रनली या योनिद्वार में भी जाती हैं जिस कारण इन स्थानों में खुजली होती है और धातु निकल जाता है। कृमि के मौजूद रहने से नाक के अगले भाग और गुह्यद्वार में खुजली होती है। रोगी नींद में दाँत भी कड़ामड़ाया करता है। दूसरे प्रकार की कृमि छोटी आँत मे रहती हैं। कभी पाकस्थली की राह से मुँह में आकर कै के साथ निकलती हैं। कभी पाखाने के साथ ही बाहर निकल जाती हैं। इनके रहने से मुँह मे बराबर पानी भर जाता है, दाँत कटमडाता है और नाक के अगले भाग और गुदा मे खुजली होती है। इसकी लम्बाई ४ इञ्च से १२ इञ्च तक होती है। तीसरे प्रकार की कृमि सादी, चिपटी और गाँठ-गाँठ होती है। उसकी लम्बाई १० फीट से २० फीट तक होती है यह मनुष्य के शरीर मे एक से ज्यादा नहीं रहती ।

चिकित्सा

नेट्रम फास ६x—शरीर में जब दुग्धाम्ल अधिक हो जाता है, उसी समय कृमि पैदा होने की सम्भावना होती है। इसके विपरीत इस लवण के द्वारा वह अम्ल की अधिकता दूर हो जाती है। अतएव सब तरह की कृमि की वजह से उत्पन्न उदरशूल, नाक खुजलाना, मलद्वार की खुजली, दाँत कड़कड़ाना, उचटी हुई नींद, Pin-Worms नाम की सूक्ष्म कृमि का उपद्रव रहने पर इस लवण के भीतरी प्रयोग के साथ इसका जलीय द्रव पिचकारी से मलद्वार की राह से प्रयोग किया जाता है। लवण नियमित रूप से कुछ दिनों तक सेवन करने पर धातु-दोष दूर हो जाता है।

कल्केरिया फ्लोरिका ६x १२x—मलद्वार में फटे घाव और खुजली। कितनी ही बार कृमि की वजह से ऐसा होने का भ्रम हो जाता है। ऐसे

स्थान पर यह लवण उपयोगी है। आँतों की लम्बी गोल, सूत कृमि, उसके साथ अम्ल का लक्षण, नाक में अँगुली डालना। पेट में दर्द, बेचैन नींद, मुँह के पास सफेदी, रात में बच्चों का दाँत कड़कड़ाना (Pin Worms)। यह औषधि लैक्टिक-एसिड को दूर कर कीड़ों को पैदा नहीं होने देती है।

कैली म्यूर ६x—छोटी-छोटी पतली महीन सफेद-कृमि, मलद्वार में खुजली, सफेद लेप चढ़ा जीभ। नेट्रम फास के साथ पर्याय-क्रम से प्रयोग किया जाता है।

फेरम फास ६x—कृमि रोग में ज्वर, अजीर्ण, खायी हुई चीज मिला उदरामय या वमन।

खसरा या छोटी माता

(Measles)

यह स्पर्शाक्रामक बीमारी है और साधारणतः बच्चों को होती है। पहले सर्दी, खाँसी, छींक, बदन में दर्द, सिर दर्द होता है, इसके बाद गोटियाँ निकलती हैं। दाने पहले मुँह में, इसके बाद गर्दन और छाती पर निकलते हैं।

चिकित्सा

कैली म्यूर ३x—नजला, खाँसी, जिह्वा पर सफेद मैल; शीतला के उपरान्त कफ, बहरापन, कण्ठ में पीड़ा।

काली सल्फ ३x—दाने दब गये हों, त्वचा सूखी हो, इस औषधि के सेवन करने से दाने फिर उभड़ जाते हैं।

फेरम फास—छोटी माता की प्रत्येक अवस्था में खासकर प्रथम प्रादाहिक अवस्था में तथा छाती, आँख, नाक, कान आदि प्रदाहित हों।

नेट्रम म्यूर—जब आँख और लार विशेष निकलती हो तो बीच-बीच में इसे देना चाहिए।

खाँसी

(Cough)

'Cough is not a disease but a Symptom' अर्थात् खाँसी स्वयं की कोई बीमारी नहीं है बल्कि किसी दूसरे रोग का लक्षण मात्र है। वह श्वास-यन्त्र का रोग माना जाता है। सर्दी, पाकाशय की गड़बड़ी, फेफड़े में प्रदाह और यकृत वगैरह रोगों के साथ अक्सर खाँसी दिखाई पड़ती है। यह दो प्रकार की होती है—(१) सरल खाँसी अर्थात् जिसमें श्लेष्मा निकलता है और (२) सूखी खाँसी अर्थात् जिसमें श्लेष्मा नहीं निकलता है।

चिकित्सा

कल्केरिया फ्लोर ३x—खाँसी में छोटे-छोटे पीले कफ के टुकड़े निकले, घण्टी बढ़ जाने से कण्ठ में गुदगुदी होकर खाँसी उठे, सीने पर बढ़े अथवा नजला कण्ठ के अन्दर गिरता हुआ प्रतीत होकर खाँसी आवे।

कल्केरिया फास ६x, १२x—खाँसी में अण्डे की सफेदी के समान कफ निकले, क्षय वाली खाँसी में अन्य औषधि के साथ देते हैं। बालकों का दम घुटने वाली खाँसी जो कि लेटने से कम हो।

कल्केरिया सल्फ ६x, १२x—खाँसी में पानी के समान रक्तमिश्रित सड़ा हुआ कफ निकले।

कैली फास ३x—वायु की नली में खराश होकर खाँसी हो, छाती दुखे, गाढ़ा, पीला, नमकीन, दुर्गन्धित कफ।

कैली म्यूर ६x—अत्यन्त तीव्र खाँसी जो मेदे से उठे, थोड़ी-थोड़ी ऐंठन वाली खाँसी के समान खाँसी के साथ छाती में चूं-चूं, भौं भौं, भू-भू का शब्द निकले, पीले कफ बाहर निकलते हुए प्रतीत हों। काली खाँसी-खाँसते समय रोगी छाती को हाथ से पकड़ ले, पसली की खाँसी में आवाज पड़ी हुई, खाँसी में गाढे अण्डे की सफेदी के समान कफ निकले, क्षय वालों को गाढा सफेद कफ निकले, जिह्वा पर सफेद मैल हो।

कैल्कि सल्फ ६x—पीले, चिकने लसदार कफ के साथ खाँसी, जो सायंकाल को, गरम कमरे में अधिक हो, कफ निकल कर फिर अन्दर चला जाय, छाती में घड़घड़ाहट, कफ कठिनता से निकले।

फेरम फास ३x—पीड़ा के साथ अत्यन्त सरसराहट उत्पन्न करने वाली प्रादाहिक खाँसी, वायु की नली में खराश होकर खाँसी हो, थोड़ी सूखी ऐंठन वाली खाँसी, कफ न निकले, छाती में पीडा, छाती में कफ लड़खड़ाये, रात्रि को कष्ट अधिक हो।

नेट्रम म्यूर ६x—खाँसी के साथ बहुतायत से झागदार, पनीला कफ निकले, क्षय वालों में सायंकाल की खाँसी में नमकीन कफ, खाँसने से यकृत में कम्पन हो, मेदे की खराबी होकर थोडी-थोडी सूखी खाँसी दिन तथा रात्रि को हो।

नेट्रम सल्फ ३x—खाँसी के साथ ऐसा प्रतीत हो कि वक्षस्थल खाली हो गया है। गाढ़ा पीला, हरा पीब मिश्रित कफ निकले, निर्बलता तथा पीड़ा के कारण वक्षस्थल को हाथ से दबावे।

मैग्नेशिया फास ३x—दौरे के साथ ऐंठन वाली खाँसी, रात्रि को चैन न आवे, काली खाँसी, रोगी कहे कि खाँसी के दौरे कण्ठ में खराश होकर उठते हैं। खाँसने में वक्षस्थल दुखने लगे, बालकों की तीव्र ऐंठन वाली खाँसी में इस औषधि का ध्यान रखना चाहिए।

साइलिशिया ६x—शीतल द्रव पदार्थ पीने से खाँसी उठे, वक्षस्थल में दुखना, निर्बलता जो कि उष्ण तरल वायु से न्यून हो, प्रातःकाल नरखरे में खराश होकर खाँसी उठे, लसदार गाढ़ा कफ निकले, झुकने अथवा सिर हिलने से श्वास फूले। रात में दम घुट वाली खाँसी जगा दे।

———

गर्भस्राव या गर्भपात

(Abortion)

उपर्युक्त दोनों शब्द एक ही अर्थ के द्योतक हैं, इसमें सन्देह नहीं, किन्तु वास्तव में ये थोड़ा-सा अन्तर भी रखते हैं। आयुर्वेद की पुस्तक

शार्ङ्गधर संहिता में लिखा है—चौथे मास पर्यन्त गर्भ पतली अवस्था में होने से यदि स्रवे तो उसे 'गर्भस्राव' कहते हैं और पाँचवे-छठे महीने पर्यन्त शरीर के बनने के बाद यदि गर्भ निकले तो उसे, 'गर्भपात' कहते हैं। गर्भपात या गर्भस्राव के होने से सन्तान तो जीवित रहती ही नहीं, वरन् रोगिणी (प्रसूति) की दशा भी विशेष शोचनीय हो जाती है। बहुधा मृत्यु ही देखने में आती है। सात महीने के बाद और नवें महीने के पहले सन्तानोत्पत्ति को 'अकाल प्रसव' कहते हैं। इसे ही अठवाँसा सन्तान कहते हैं।

गर्भपात होने के कारण—जरायु के साथ अच्छी तरह गर्भ का सयोग न होना, गर्भावस्था में पति-सहवास, दीर्घ काल तक स्थायी प्रदर स्राव, गर्भस्थिति में कसकर कपड़े पहनना, अधिक परिश्रम करना, रेलगाडी तथा अन्य सवारियों पर चढ़ना, दौड़-धूप करना, गिर पडना, भारी चीज उठाना, जोर से गोटी खेलना, अंगुली पर भार देकर खडे होना, तेज औषधियों का सेवन करना, योनिशूल, ज्यादा भय, अत्यधिक चिन्ता आदि प्रमुख कारण माने गये हैं।

लक्षण—पहले शरीर मे थोड़ी शीत और कँपकँपी मालूम पडती है। इसके बाद ही तबीयत खराब जान पड़ती है। बार-बार अंगड़ाई लेना, आलस्य भाव, कमर और तलपेट के नीचे दर्द, ऐसा ज्ञात होना मानो बच्चा पेट के नीचे खसक आयेगा। खून या श्लेष्मा का निकलना, प्रसव की दर्द की तरह दर्द होना, दर्द का स्थायी न रहना, दर्द के साथ ही साथ रक्तस्राव मे भी वृद्धि होती है और कभी गहरा लाल और कभी काला थक्का-थक्का और कभी पतला रक्तस्राव होना आदि इसके खास लक्षण माने गये हैं।

कहावत है 'एक बार गर्भपात बार-बार गर्भपात।' इसमें एकदम सन्देह नहीं कि किसी स्त्री को यदि किसी मास में एक बार गर्भपात हुआ है तो

दुबारा उन्हीं मास में पुनः होता है। ऐसी चीजें यदि मालूम हो जायँ तो उनका समुचित उपाय करना चाहिये। क्योंकि इस पर ध्यान न देने से विशेष क्षति उठानी पड़ती है।

चिकित्सा

कल्केरिया फास ३०X—जब गर्भिणी को आवश्यकीय कार्य करना भी अच्छा मालूम न होता हो, स्वभाव की अस्थिरता हो, स्मरण करने की शक्ति कम हो, मुखमण्डल का रंग सफेद, बादामी, पीला, मटमैला हो, मिट्टी के सदृश स्वाद रहता हो, मुख में पानी भर आता हो।

कैलि फास ३०X— जब रोगिणी निर्बल हो, दिमागी कार्य करना पड़ता हो, चिड़चिड़ा स्वभाव की हो, असन्तोष करना मामूली बात हो, मिष्ठान्न, सिरका खाने की अधिक इच्छा हो, कड़ुवा स्वाद रहता हो, दुर्गन्ध आती हो, अधिकतर गर्भ पतन हो जाता हो तो सप्ताह में दो बार रात्रि को ताजे पानी के साथ सेवन करना चाहिए।

यदि अचानक शंका हो गई तो नीचे लिखी औषधियों का सेवन करना चाहिये और रोगिणी को खाट पर शयन कराना चाहिये जिसका सिरहाना नीचा रहना चाहिये।

फेरम फास ३X, ६X—जब दर्द हो, रुधिर का धब्बा आने लगा हो। [illegible] हो तो इस औषधि की कई मात्राएँ शीघ्र-शीघ्र अर्थात् २०-२० मिनट पर ३X, ६X को बारी-बारी से देना चाहिये।

कल्केरिया फास ३X या ६X और 'कैलि फास' ६X—परिवर्तन कर फेरम फास के साथ सेवन कराना चाहिये।



गृध्रसी वात

(Sciatica)

चूतड़ से लेकर जाँघ के पिछले भाग से होकर सायटिका नाम की जो एक सबसे बड़ी और मोटी नर्व पैर की एड़ी तक चली गई है उसमे प्रदाह होने को कटि स्नायुशूल, गृध्रसी या सायटिका कहते हैं।

अत्यधिक सर्दी लगना, आँतों में गाँठ-गाँठ मल इकट्ठा होकर सायटिका नर्व पर दबाव पड़ना, जरायु के निकटवर्ती किसी स्थान पर अर्बुद आदि होकर या भ्रूण के साथ जरायु का सायटिका नर्व पर दबाव देना, वात या गठिया, फारसेप से प्रसव कराना, कशेरुका रोग आदि कारणों से यह बीमारी होती है। इस रोग से धीरे-धीरे 'मेरुमज्जा का क्षय' (Locomotor ataxia) रोग पैदा हो जाता है।

चिकित्सा

कैलि फास ३x, ६x, ३०x—डाक्टर वाकर इस लवण की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। यह सायटिका बीमारी की सबसे श्रेष्ठ दवा है। जाँघ के पिछले भाग से होता हुआ यह दर्द जाँघ से सन्धि तक चला जाता है। खींचना मालूम होना, अकड़न, दर्द और बेचैनी, स्नायविक अवसन्नता, चलने या हिलने-डुलने की शक्ति का बिगड़ जाना, धीरे-धीरे थोड़ी देर तक शरीर हिलाने पर थोड़े समय के लिए घटना, मगर फिर हिलाते ही बढना।

मैग्नेशिया फास ६x—बहुत तेज अकड़न की तरह दर्द हो तो यह लवण गरम पानी में घोल कर देना चाहिए। दूसरे-दूसरे निर्देशित लवणों के साथ पर्याय-क्रम से इसका व्यवहार हुआ करता है। इसका दर्द गर्मी में घटता है।

नेट्रम सल्फ—सायटिका के साथ अगर सन्धिवात का लक्षण रहे तो यह फायदा करता है। Hip Joint में दर्द, बैठ कर उठने पर तथा करवट बदलने से दर्द बढता है।

फेरम फास 3x—अगर बुखार का ताप मौजूद हो तो दूसरे-दूसरे लक्षण के अनुसार प्रयोग किये जाने वाले लवणों के साथ पर्याय-क्रम से इसका व्यवहार किया जाता है।

साइलिशिया—पुराना गृध्रसी वात। घूमने-फिरने पर दर्द का बढ़ना। कूल्हों (Hips) में दर्द। चलने पर पैर छोटे मालूम होते हैं।

कल्केरिया फास 3x—इस बीमारी में दूसरे-दूसरे निर्देशित लवणों के प्रयोग के समय बीच-बीच में कल्केरिया फास का प्रयोग करने पर स्थायी फायदा दिखाई देता है। अगर 'मैग्नेशिया फास' से फायदा न हो तो वहाँ कल्केरिया फास फायदा करते देखा जाता है। दर्द के साथ झुनझुनी। Hip Bone के फाड़ने तथा गोली लगाने जैसा दर्द, जाड़े में दर्द फिर लौट आना।

नेट्रम म्यूर—कुनैन के सेवन के बाद पुरानी सायटिका की बीमारी, दाहिनी तरफ का सायटिका, खिंचाव व दर्द, रुक-रुककर दर्द होना—पैर सन्न जाना, छूने में दर्द होना। करवट बदलने पर दर्द का घटना या फिर पैदा हो जाना। दोपहर में दर्द बढ़ना तथा गर्मी में कम होना।

गुल्म वायु या हिस्टीरिया

रुक जाने का भाव नहीं रहता। दौरा के समय रोगिणी हाथ-पैर पटकती है। कभी हँसती और कभी रोती है। दौरा खत्म हो जाने पर बहुत ज्यादा परिमाण में साफ पेशाब होता है। कभी-कभी दूसरी स्त्रियों को रोग के समय देखने से भी स्वस्थ शरीर वाली स्त्रियों को भी यह रोग हो जाता है।

बेहोशी में दाँत लग जाना, मुँह से फेन निकलना, हाथ-पैर अकड़ जाना आदि लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा

कैली फास ६x—स्नायु-प्रधान धातुवालों के लिए यह ज्यादा उपयोगी है। आकस्मिक और गम्भीर भाव पूर्ण हँसने और रोने के साथ हिस्टीरिया, ऐसा मालूम होना कि गोले की तरह पदार्थ कण्ठ की ओर चढ रहा है। बार-बार जम्हाई आना, हिस्टीरिया की बीमारी में अकड़न, बेहोश हो जाना और धीमा प्रलाप।

नेट्रम म्यूर ३x—उदासी, भाव प्रवणता अथवा अनियमित रजःस्राव के साथ हिस्टीरिया, अत्यन्त विषाद और शंका, पेशाब में अण्डलाल की अधिकता, अकड़न और कमजोरी, रोगिणी को अगर बहुत ज्यादा पसीना हो तो सब लक्षण दब जाते हैं। कैली फास के साथ पर्याय-क्रम से प्रयोग करना चाहिये।

मैग फास ३ —आक्रमण होते ही, मुँह में रखते ही रोग गायब हो जायगा।

———

चेचक

(Small Pox)

यह लरछुत होती है। शीतला दो तरह की होती है-(१) संयुक्त (सटी हुई) और (२) असंयुक्त (अलग-अलग)। संयुक्त शीतला अधिक खतरनाक होती है। शरीर में दर्द, शीत, कँपकँपी, वमन, तेज

बुखार आदि इसके प्रधान लक्षण हैं। बुखार आने के दो-तीन दिन बाद ही गोटियाँ निकलने लगती हैं और बुखार की तेजी घटने लगती है। ५--६ दिनों में इन गोटियों में पानी भर जाता है और पीव पैदा हो जाती है। तापमान १०३ से १०८ डिग्री तक रहता है। असंयुक्त चेचक के रोगी का बुखार उतना तेज नहीं होता।

कल्केरिया सल्फ ३x—जब दानों से पीव निकले।

कैली फास—निर्बलता, रक्त में विषैलापन, दुर्गन्ध, रक्त दूषित होने के कारण कमजोरी तथा अवसन्नता।

कैली म्यूर ३x—यह इस रोग की मुख्य औषधि है, क्योंकि इसका प्रभाव छाले पड़ने पर होता है। लन्दन के डॉक्टर सोडर का मत है कि कैली म्यूर इस रोग को रोकता है, जिन दिनों इस रोग की अधिकता होती है उन दिनों यह कैली म्यूर बराबर दिया जाय तो टीका लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी और न शीतला ही निकलेगी।

कैली सल्फ ३x—पपड़ी गिराने तथा त्वचा को सुन्दर बनाने में सहायता देती है।

नेट्रम म्यूर ६x—मुंह से लार बहना, बहुत से दानों का आपस में मिल जाना। अनावधानी।

फेरम फास—ज्वर, प्यास, बेचैनी, सिर पीड़ा, उलझन। पहली दवा—कैली म्यूर के साथ।

नेट्रम फास—जब गोटियों में मवाद भर जाय इसका लक्षणानुसार प्रयोग होता है।

निषेध—यदि गोटियाँ भरपूर न निकलकर बैठ जायँ तो अच्छा नहीं है। ऐसी हालत में गर्म पानी में गमछा डुबोकर खूब निचोड़कर बीच-बीच में रोगी का बदन पोंछते रहना अच्छा है। चावलों का पानी, सागू, [illegible], [illegible] आदि पथ्य हैं। मांस-मछली का सेवन सर्वथा वर्जित है।

टॉन्सिल-प्रदाह
(Tonsilitis)

तालुमूल के पास बादाम जैसी ग्रन्थियाँ होती हैं। ये ग्रन्थियाँ टान्सिल कहलाती है। मुँह खोलने को कहकर, जीभ की जड़ के पास देखने पर उपजिह्वा दिखायी देती है। यदि यह देखने में आये कि उपजिह्वा ठीक दोनों ओर से फूली हुई है; लाल हो रही है, वहाँ लसदार सर्दी लगी हुई है तो समझ लें कि टान्सिलाइटिस हुआ है। इसी रोग को हिन्दी मे घण्टी बढ़ना कहते हैं।

ऋतु परिवर्तन, रक्त की अधिकता और कण्ठमाला धातु के मनुष्यों को पसीना होने के समय एकाएक सर्दी लगकर पसीना बन्द हो जाना प्रभृति कारणों से यह बीमारी होती है। माता-पिता को यह बीमारी होती है तो बच्चे को भी हो जाती है।

यह दो प्रकार की होती है—(१) नयी और (२) पुरानी।

चिकित्सा

फेरम फास ३x—रोग की पहली अवस्था में ज्वर, कण्ठ का प्रदाह और दर्द इत्यादि बहुत से उपसर्ग इस लवण का बार-बार प्रयोग करने पर दब जाते हैं। गरम पानी डालकर इस लवण का द्रव कुल्ला करने को देना अच्छा है। यह नेट्रम म्यूर के साथ व्यवहार करें।

कैली म्यूर ३x—बढ़ी हुई ग्रन्थि के ऊपर सफेद या धुमैले रंग के बिन्दु की तरह बहुत से उद्भेद निकल आते हैं। तालुमूल ग्रन्थि इतनी बड़ी हो जाती है और इतनी फूल जाती है कि उसकी वजह से रोगी साँस नहीं ले सकता। यह लवण गरम पानी मे घोल कर कुल्ला करना या 'स्प्रे' के रूप मे प्रयोग करना अच्छा होता है। तालुमूल-प्रन्थि प्रदाह अर्थात् टान्सिलाइटिस की बीमारी में इस लवण के साथ फेरम फास का पर्याय क्रम से प्रयोग करना चाहिए। मोटी, सफेद रंग का लेप चढ़ी जीभ के प्रति

लक्ष्य रखना भी उचित है। पुरानी तथा नई दोनों प्रकार की बीमारियों में जब गला बूजा हो।

कल्केरिया सल्फ ३x—टॉन्सिलाइटिस की बीमारी में अगर पीब पैदा हो जाय तो इस लवण को प्रयोग करना चाहिये।

कल्केरिया फास ६x—तालुमूल ग्रन्थि की पुरानी और दीर्घ काल तक स्थायी सूजन, निगलने में दर्द होता है, कण्ठ का भीतरी भाग शिथिल और दर्द भरा रहता है; मुँह खोलने में तकलीफ होती है, बराबर स्वरभंग बना रहता है। चुनी हुई दूसरी-दूसरी दवाओं के साथ पर्याय-क्रम से इसका व्यवहार होता है। तालु-मूल ग्रन्थि प्रदाह के साथ बहरापन।

नेट्रम फास ६x—उपजिह्वा, तालु और टान्सिल के उपर पीले रंग का लेप रहने के साथ ही साथ कण्ठ का सब तरह का प्रदाह, पीली आभा लिए तर लेप इस लवण का निर्देशक लक्षण है, रात के समय दर्द का बढ़ना। टान्सिल की पुरानी सूजन के साथ पेट में अम्ल के लक्षण।

नेट्रम म्यूर ३x—कंठ में दर्द, तालुमूल ग्रन्थि पर सफेद बलगम लगा रहता है, उपजिह्वा बढी और प्रदाह ग्रस्त, लसदार, चिकने, साफ और जल भरे श्लेष्मा से जीभ मानो लिपटी रहती है; साँस में बदबू आया करती है। पुरानी बीमारी में ३०x या और ऊँची शक्ति फायदा करती है।

डिफ्थीरिया

(Diphtheria)

यह एक तीव्र संक्रामक रोग है। इसमें सिर दर्द, कमर दर्द, वमन, १०१–१०५ डिग्री ज्वर, तेज नाडी, निगलने में कष्ट, क्षुधानाश, बहुत कमजोर आदि सामान्य लक्षण होते हैं। परन्तु इस रोग की विशेषता यह है कि गले में गाढी मैल, श्वेत रंग की एक झिल्ली बन जाती है जो वहाँ से धीरे-धीरे नासा, कण्ठ, नाड़ी आदि में फैलकर श्वासावरोध

उत्पन्न करती है। झिल्ली में विष बनकर वहाँ से रक्तलसिका द्वारा समस्त शरीर में फैलता है और उपर्युक्त लक्षण उत्पन्न होते हैं। इस विष का असर हृदय मस्तिष्क, सिरस्थ नाड़ियों, गुर्दा आदि पर अधिक होता है। यदि रोग सौम्य हो तो ५ से १४ दिनों मे झिल्ली नष्ट होकर रोगी चंगा हो जाता है। रोग तीव्र होने से चौथे से छठें दिन तक ज्वर चढता है, हृदय की दुर्बलता बढ़ती है, हाथ पैर ठंटे होते हैं, नाड़ी क्षीण होती है और हृदयावसाद से मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा

कल्केरिया फ्लोर—
कल्केरिया फास— } विषैला विकार, वायु नली तक असर हो जाये, कंठ में सफेद धब्बा दिखलाई दे।

कैलि फास ६x—कंठ के भीतर मुरदार झिल्ली, रोगी अत्यन्त निर्बल, मुँह से दुर्गन्ध आये, रोग शान्त हो जाने के पश्चात् बोलने, देखने में निर्बलता।

कैलि म्यूर ६x—रोग के आरम्भ काल में यह औषधि फेरम फास के साथ १०— ५ ग्रेन गरम पानी में डालकर २—२ घण्टे पर सेवन करा दें।

फेरम फास ६x—ज्वर की प्रथमावस्था में कैली म्यूर के साथ उत्तम है।

नेट्रम फास ६x—कंठ की गिल्टी पर पीला पर्दा पड़ गया हो, कंठ के नीचे पीली झिल्ली हो।

नेट्रम म्यूर ३x—जिह्वा सूखी, खर्राटेदार श्वास, मुखमण्डल में सूजन, पीले पतले अतिसार, लार बहे, तन्द्रा।

नेट्रम सल्फ६x—उदर से मुख तक कफ आये, हरे विषाक्त जल का वमन हो।

किसी भी हालत मे चूने का पानी, कार्बोलिक एसिड, बर्फ का पानी

इन औषधियों के साथ प्रयोग नहीं करना चाहिये। डॉ० सुशलर के अनुसार इससे औषधियों की क्रिया में गड़बड़ी पैदा होती है

ताण्डव रोग या नर्तन रोग

(Chorea)

इच्छा न होने पर भी चेहरा या किसी दूसरे अंग की पेशियों का फड़कना, ताण्डव रोग कहलाता है। यह रोग बालक-बालिकाओं को अधिक होता है।

भय, प्रेम में निराशा, हस्तमैथुन, मानसिक उत्तेजना, वात, कमजोरी, कृमिदोष, डर जाना, युवतियों के मासिक ऋतुस्राव में गड़बड़ी आदि के कारण यह बीमारी पैदा होती है।

चिकित्सा

मैग्नेशिया फास ३x—अंग-प्रत्यंग का अनैच्छिक अर्थात् इच्छा न करने पर भी हिल उठना और सिकुड़ना अकड़न, चुपचाप बिना कुछ बोले कातर दृष्टि से देखते रहना। इन सब लक्षण वाले ताण्डव रोग की यह प्रमुख दवा है।

किसी खास स्थान का (कोरिया) नर्तन रोग, तोतलाना, लेखकों का हाथ काँपना आदि।

फेरम फास ३x—कृमि या अधिक अम्ल मौजूद रहने पर इसका प्रयोग करना चाहिये। जीभ के पिछले भाग में पीली आभा लिये या दूध की तरह सफेदी रहना, यह इस लवण का निर्देशक लक्षण है।

कल्केरिया फास ३x—मैग्नेशिया फास के प्रयोग से अगर पूरा-पूरा फायदा न हो तो उसके बाद इस लवण का प्रयोग करना चाहिए। जिनको कण्ठमाला धातु है अथवा जिन रोगियों में खून की कमी है, उन्हें मैग फास लवण का पर्याय-क्रम से व्यवहार करना चाहिए। साथ में कैली फास भी आवश्यक है।

साइलिसिया ३x—विकृत आँखें, पीला चेहरा, अकड़न, भयानक सपने देखना, नींदवाली अवस्था में अंग-प्रत्यंग का फड़कना और झटका लगना, सामान्य क्रोध आने पर ही रोग लक्षणों का बढना, अगर कृमि रहे तो इसके साथ पर्याय-क्रम से नेट्रम म्यूर का प्रयोग करना चाहिये।

नेट्रम म्यूर ६x—पुरानी बीमारी, भय के बाद कोई चर्म का उद्भेद चेहरे का खास कर अगर दब गया हो और इसी वजह से बीमारी पैदा हुई हो तो इसे देना चाहिए।

रक्तहीन, हरित पाण्डु अथवा मलेरिया की हालत मे यह रोग हो तथा पूर्णिमा को बढ या अधिक प्यास या ज्वर हो तो इसे प्रयोग करना चाहिए (उच्च शक्ति)।

दमा

(Asthma)

यह बड़ी उम्र के लोगों को अधिक होता है। फेफड़े की वायु वहन करने वाली नालियों की छोटी-छोटी पेशियों में जब अकड़न भरा सकोचन पैदा होता है, उस समय साँस मे तकलीफ होने लगती है, इसे ही दमा या श्वास-कास कहते हैं। यह अधिकाशतः बाप-दादों से प्राप्त होता है। इस रोग में बड़ी तकलीफ होती है, यद्यपि मृत्यु नहीं होती। इसका दौरा अक्सर रात्रि मे होता है। दमा के जोर से रोगी सो नहीं सकता, उसे बिछावन पर उठकर बैठ जाना पड़ता है। खुली हवा के लिए व्याकुल हो जाता है। खाँसते-खाँसते बड़े कष्ट से थोड़ा-सा बलगम निकलता है। आला लगाने पर साँय साँय आवाज आती है। लोगों का ख्याल है कि दमा के रोगी अधिक दिन तक जीते हैं। धूल, तम्बाकू, चूना, सन या घास के कण साँस मे जाना, रात्रि मे अधिक भोजन, शारीरिक या मानसिक उत्तेजना, सर्दी लगना आदि कारणों से यह रोग होता है।

चिकित्सा

कल्केरिया फ्लोर—बहुत खाँसने पर कफ का छोटा टुकड़ा निकलता है जिसका रंग पीला होता है। श्वासावरोध, गलनली का बन्द होना।

मैग्नेशिया फास ३x—आक्षेपयुक्त सूखी खाँसी, सीने पर कष्ट मुख्यतः बढ जाता है। आध्मान की वजह से तकलीफ। आक्षेपयुक्त स्नायविक प्रकृति का दमा, गरम पानी के साथ बार-बार सेवन करने को देना चाहिये।

कैलि सल्फ ३x—श्वास नली का आक्षेप, पीले रंग का बलगम निकलना, गरमी के दिनों में बढना, बलगम की घर-घर आवाज। भोजन के बाद श्वास-कष्ट आरम्भ हो जाता है। रोगी का चेहरा बदरंग हो जाता है, आँखें धँस जाती हैं और रोगी क्रमशः दुबला-पतला होता जाता है।

नेट्रम सल्फ ६x—प्रमेह विष से दूषित धातु, सवेरे ४ या ५ बजे के समय अकड़न आरम्भ होती है। चमकीला, चिकना पतला बलगम या बहुत ज्यादा हरे रंग का श्लेष्मा निकलना; खायी हुई चीज का वमन, बरसात में, तर हवा में, तर कमरे में रहने की वजह से, गीले वस्त्र पहनने की वजह से बढ जाता है। सवेरे शय्या से उठने के बाद पतले दस्त; बच्चा और बालकों का दमा, श्वास-नली प्रदाह (Bronchial Catarrh) के साथ दमा, आकाश और हवा में तरी पैदा हो जाने पर रोग का बढ़ जाना।

साइलिसिया ६x—बादल गरजने से ही रोग बढ़ जाता है। इतना ज्यादा श्वासकष्ट होता है कि रोगी की दोनों आँखे मानों धक्का देकर बाहर आना चाहती हैं। रोगी अपने कमरे की खिड़की दरवाजे खोल देने के लिए कहा करता है। र[illegible] का धातुगत दोष संशोधन के लिए इसका नेट्रम सल्फ के साथ पर्याय क्रम से प्रयोग करना चाहिये।

कैलि म्यूर ३x—पाचन में विकार के साथ दस्त; जीभ सफेद या हरी आभा लिये मैल से ढँकी; सफेद और कोमल बलगम, पर सहज में

निकाला नहीं जा सकता। ऐसा मालूम होता है कि फेफड़ा और हृत्पिण्ड संकुचित हो गये हैं। इसको काली फास के साथ पर्याय-क्रम से प्रयोग करना चाहिए।

कैलि फास ३x—स्नायविक लक्षण वाला दमा, श्वासकष्ट और स्नायविक सुस्ती, सर्दी और छींक के साथ थोड़ा भी खा जाने से दमा बढ जाता है।

कल्केरिया फास ६x—श्वास नली से उत्पन्न दमा, साफ, सफेद, पर चमड़े की तरह कड़ा श्लेष्मा, बच्चा या बालक को शय्या से उठने पर ही दम रुकने का उपक्रम हो जाता है। यह लवण बच्चों और बालकों के लिए ज्यादा उपयोगी है।

नेट्रम म्यूर ६x—हरेक निःश्वास मानो झटके से ग्रहण करता है। बहुत ज्यादा फेन भरी श्लेष्मा निकलती है। खाँसी आने पर बहुत आँसू चेहरे पर बहने लगता है। कैलि फास के साथ पर्याय-क्रम से प्रयोग करना चाहिए। २००x की एक ही मात्रा दीर्घकाल तक लाभ करती है।

कल्केरिया फास ६x—बच्चों की साँस पालने से उठाने पर रुकना। बार-बार आक्रमण करने वाला वायुनलियों का दमा (Bronchial Asthma)।

दन्तशूल

(Toothache)

अजीर्ण, गर्भावस्था, सर्दी लगना, ऋतु परिवर्तन, वात का दर्द आदि कारणों से दाँत में दर्द होता है।

चिकित्सा

कल्केरिया फ्लोर ३x—दाँत हिले, दाँत में पीड़ा, दाँत मैले, यदि भोजन अथवा कोई वस्तु दाँत में छू जाये तो अत्यन्त अधिक पीड़ा हो।

कल्केरिया फास ३x—गर्भ काल में दाँत की पीड़ा रात्रि को अधिक हो, दाँत शीघ्र सड़ने लगें।

काली म्यूर ३x—दाँत में पीडा, मसूढों में सूजन तथा सफेद पीव।

काली फास ३x—निर्वल, चिड़चिड़े, कृश मनुष्यों के दाँत की पीड़ा। मसूढों से रक्त निकले, दाँत में दर्द, दाँत किटकिटाना, सडे हुए दाँत दुखें।

काली सल्फ ६x—दाँत की पीडा जो गरम कमरे में वढे। सायकाल को अधिक शीतल वायु में शान्ति मिले।

फेरम फास ३x—मसूढों में पीडा, मसूढे लाल, मसूढों में दर्द, उष्णता से कष्ट हो, शीतल जल से शान्ति, पीले दाँत की पीडा में नेट्रम म्यूर के साथ उत्तम लाभदायक है।

दाँत निकलना

(Teething)

वच्चों को ६ से लेकर १० महीने के भीतर ही दाँत निकला करते हैं। पहले निचले मसूढों में दो, फिर ऊपर वाले मसूढों में दो, इसी तरह तीन वर्ष में सव दाँत आ जाते हैं। वुखार, कब्जियत, आक्षेप, अनिद्रा इत्यादि उपसर्ग दाँत निकलते वक्त दिखाई देते हैं।

चिकित्सा

फेरम फास ६x, कल्केरिया फास ६x—जव दाँत निकलने मे देर होती हो, दस्त आने लगते हों अथवा दुध पीने के पश्चात् अपक्व अन्न व दूध का वमन हो जाता हो। दस्त में आँव आता हो या न आता हो। दुर्वलता हो तो दोनों औषधियाँ एकान्तर क्रम से २-२ घण्टे वाद देना चाहिए।

मैग्नेशिया फास ६x, कल्केरिया फास ६x—जव वालक को ज्वर हो, पीला पीला पतला दस्त हो, पेचिश हो, अधिक दर्द होता हो।

नेट्रम म्यूर ६x, कल्केरिया फास ६x—जव दाँत निकलने में देर हो, पतला अतिसार हो, मुख से लार वहती हो, तृष्णा हो।

कल्केरिया फ्लोर ६x—जब दाँत निकलने में देर होती हो, बालक रोते रोते मूर्च्छित हो जाता हो, कुबड़ा हो अथवा भली-भाँति हड्डियों का पालन न हुआ हो; चल न सकता हो तो यह औषधि अति लाभदायक सिद्ध हुई है।

नेट्रम फास ६x, फेरम फास ६x—जब बालक को ज्वरातिसार हो, मुखमण्डल अत्यन्त लाल तमतमाया हुआ हो, व्याकुल हो, बच्चा चिड़चिड़ा हो गया हो, दूध की कै करता हो, जिससे खट्टी बू आती हो।

साइलिसिया ६x, कल्केरिया फास ६x—जब बालक के दूध, भोजन का परिपाक न होता हो, बालक का पालन-पोषण भली-भाँति न हुआ हो, सिर बढ़ गया हो; सिर की हड्डियों के जोड़ अच्छी तरह से बलवान न हुए हों, उदर बढ़ गया हो, चमड़ा दुर्बल, पतली हो गई हो।

धनुष्टङ्कार
(Tetanus)

इस रोग में शरीर धनुष की तरह टेढा हो जाता है। शरीर के किसी जगह कट जाने पर उसमें धूल के साथ एक तरह के जीवाणु घुसने पर यह रोग पैदा होता है। घोड़े की लीद में इस रोग के बीज बहुत रहते हैं। यह बहुत ही प्राणघातक बीमारी होती है और अक्सर आरोग्य नहीं होती। इसका प्रधान लक्षण है—दाँत लगना और अकड़न। पहले ही जबड़े अटक जाते हैं। रोगी मुँह नहीं खोल सकता, मुँह और गर्दन की मासपेशियो में खिचाव हुआ करता है, गर्दन पर हाथ लगने से ऐसा मालूम पडता है मानो एक कड़ी लकड़ी है।

प्रकार भेद

(१) आघात जनित धनुष्टंकार (Traumatic Tetanus) उसे कहते हैं जिसमें किसी स्थान के कट जाने या छिल जाने से रोग की उत्पत्ति हुई हो।

(२) सर्दी लगकर वीमारी के होने पर सर्दी जनित टंकार या स्वयम्भूत टंकार (Indiopathic Tetanus) कहते हैं ।

(३) बच्चे का जन्म होते ही नाल काटने के समय छूरी के साथ वह जीवाणु प्रवेश कर जाता है और कभी-कभी धनुष्टकार हो जाता है जिसे शिशु धनुष्टकार (Tetanus Neonatorum) कहते हैं ।

चिकित्सा

मैग्नेशिया फास ३x—यह सब तरह की अकड़न और सब अंङ्गों के आक्षेप में उपयोगी है । पेशियों का अकड़ना, सिकुड़ना, नाचना, फड़कना, वेहोशी इत्यादि लक्षणों में गर्म पानी के साथ इसका वार-वार प्रयोग करना चाहिए । इस समय अगर रोगी को दाँती लग जाय या जवड़े अटक जायँ तो रोगी के मसूढे में दवा घिस देने से ही फायदा हो जायगा । चेहरे की पेशियों का आक्षेप, चेहरे के दोनों ओर के ओंठ का वार-वार फड़कना, कोई चीज निकालने की चेष्टा करने पर वार-वार कण्ठनली आक्षेप-ग्रस्त हो पड़ता है ।

कैलि फास ६x—भय की वजह से अकड़न । चेहरा रक्त रहित या भूरे रंग का, अकड़न के समय इसके साथ पर्याय-क्रम से मैग्नेशिया फास का प्रयोग करना चाहिए । अकड़न दव जाने के वाद कुछ दिनों तक केवल कैलि फास का प्रयोग करने पर डर की वजह से पैदा हुई सुस्ती दूर होकर मानसिक शक्ति और स्थिरता हो जाती है । इस लवण के द्वारा मस्तिष्क के स्नायु केन्द्र परिपुष्ट और सवल हो जाया करते हैं ।

कल्केरिया फास ३x—दुवले क्षीण वच्चों की अकड़न में, अकड़न वन्द होने के वाद कुछ दिनों तक इसका प्रयोग करने पर अकड़न होने की प्रवणता दूर हो जाया करती है । वच्चों के दाँत निकलने के समय का आक्षेप । इस लवण के द्वारा दाँत जल्दी निकलता है और कमजोर वच्चों का पोषण हो जाया करता है ।

कैली म्यूर ३x, ६x—टंकार के बाद का अपस्मार रोग, मिरगी (Epilepsy) रोकने के लिये यह लवण एक अव्यर्थ दवा कही जा सकती है । टंकार वाली अवस्था में केवल मेग्नेशिया फास का प्रयोग कर जब वह दब जाय तो कुछ दिनों तक कैली म्यूर का प्रयोग करना पड़ता है ।

फेरम फास ३x—दाँत निकलने के साथ अकड़न के साथ ज्वर मौजूद रहने पर इस लवण का प्रयोग करना चाहिये । मैग्नेशिया फास के साथ पर्याय-क्रम में प्रयोग किया जाता है ।

नामर्दी

(Impotency)

Kev. Father Augustus Muller कहते है :—

'It is generally the result of self abuse or sexual excesses. It is quite necessary for successful treatment that patient should abstain from exercise of sexual functions until normal tone is restored.'

मर्दों का स्त्री-संग एकदम या कुछ-कुछ न कर सकने का नाम 'ध्वजभङ्ग' है। इस रोग में सन्तान पैदा करने की शक्ति भी नहीं होती है ।

एक योग्य चिकित्सक ने लिखा है–

'Inability to perform the sexual act is called impotency.'

चिकित्सा

कल्केरिया फास १२x—जब सूजाक, शुक्रमेह, हस्त-क्रिया के कारण हो। वीर्य एल्ब्यूमिन के समान निकलता हो। अण्डकोषों में

पानी उतरता हो, पथरी हो, हाथ पैर काँपते हों, फड़कते हों, अर्ध रात्रि के पश्चात् निद्रा आती हो। सिर में दर्द रहता हो, जो स्पर्श करने से बढ़ता हो।

कैलि फास ३०x—जब सूजाक, शुक्रमेह, हस्त-क्रिया के कारण हो। मूत्राशय पर वर्म आ गया हो, नेत्रों के सम्मुख अन्धेरा मालूम होता हो। विषय की इच्छा अधिक हो, परन्तु सम्भोग की वार्ताओं के समय ढीला-ढाला हो जाता हो। दिमाग कमजोर हो जाता हो, रोगी चिड़चिड़ा हो, मिथ्या ध्यान बनाता हो।

नेट्रम म्यूर ६x, ३०x—जब अधिक सम्भोग करने के कारण दुर्बलता हो गई हो। विषय की इच्छा बहुत न्यून हो गई हो या जाती रही हो, क्रिया का ध्यान करने पर भी उन्मत्तता बहुत कम हो अथवा न हो, परन्तु वीर्य क्षरण हो जाता हो व स्वप्नदोष भी हो जाता हो। ऐसा भी प्रतीत हुआ है कि जिस रोगी को नेट्रम म्यूर देने की आवश्यकता होती है उसका स्त्री के साथ भोग करने में वीर्य देर से स्खलित होता है और उसके पहले ही ढीलापन हो जाता है।

नेट्रम फास ३x—जब लगातार कई दिन तक स्वप्नदोष होता हो। जागने पर भी हो जाता हो। घुटने बहुत दुबले मालूम हों, सम्भोग करने की अभिलाषा अधिक हो। वीर्य क्षीण होने के पश्चात् शीघ्र ही इन्द्रिय सुस्त, ढीली-ढीली हो जाती हो, रोगी को सूजाक, मूत्रकृच्छ्र ने घेर लिया हो। वीर्य में खट्टी महँक।

साइलिसिया ३०x—जब पुराना सूजाक, उपदंश इसका कारण हो। लाल रेत, वीर्य पतन होता हो। विषय-भोग की इच्छा कम हो गई हो या बिल्कुल न हो। अण्डकोषों में खुजलाहट, दुर्गन्ध वाला स्वेद, आता हो।

अपथ्य— तेल, गुड़, लाल मिर्च, बैगन, खट्टे पदार्थ, अरहर, मसूर की दाल, विष्टम्भी (गरिष्ठ, कड़ा) पदार्थ।

पथ्य— उड़द, मूंग की दाल, रोटियाँ, भुना हुआ मांस, बिस्कुट, हाल के अण्डे, सेब, अंगूर, नाशपाती, चिलगोजे, बादाम, अखरोट।

नाक से रक्तस्राव

(Epistaxis)

साधारण प्रकार के होने पर दवा देने की आवश्यकता नहीं, किन्तु यदि बार-बार हुआ करे तो समुचित चिकित्सा आवश्यक है। खून हमेशा एक ही तरफ की नाक से निकला करता है। कभी-कभी यह खून नाक की तरफ से न आकर, स्वरनली, गलकोष या आमाशय से आ जाता है।

सिर में चोट लगना या रक्ताधिक्य, ऋतु या बवासीर का खून बन्द हो जाना, पेट के कृमि आदि कारणों से यह रोग होता है।

चिकित्सा

फेरम फास ३x—चमकीले लाल रंग का स्राव हो तो बालक-बालिकाओं के लिए यह ज्यादा उपयोगी है। खून जल्दी जम जाये।

कैलि फास ३x—कमजोर, दुबले मनुष्य की नाक से रक्तस्राव। वृद्ध मनुष्यों के लिए उपयोगी है; काला, पतला रक्त, काफी के चूरे की तरह जमा रक्त निकलना; कमजोर व्यक्तियों की नाक से रक्त जाने का लक्षण रहने पर इस लवण से बहुत जल्दी फायदा होता है।

नेट्रम म्यूर—पनीला, पतला खून, देर में जमे।

न्यूमोनिया

(Pneumonia)

यह एक प्रकार की संक्रामक बीमारी है। न्यूमोकोक्स नामक एक तरह के जीवाणु के होने की वजह से ऐसा हो जाया करता है।

प्रकार भेद

साधारणतः यह दो प्रकार का होता है—

(१) ब्राको न्यूमोनिया (Capillary Bronchitis) ।

(२) कैटेरल न्यूमोनिया (Lobular Pneumonia) ।

इस रोग में वगल का तापमान साधारणतः १०४ डिग्री तक रहता है और नाड़ी का स्पन्दन प्रति मिनट अनुमानतः १२० वार, श्वास प्रति मिनट ४० वार । वढी अवस्था में यही लक्षण दिखाई देता है ।

न्यूमोनिया रोगी के पेशाव में हरित लवण (Chloride) की कमी रहती है । पेशाव में अण्डलाल (Albumen) अक्सर निकलता है ।

चिकित्सा

आकाश में हवा के साथ हमेशा आसमानी तरी या आर्द्रता और वैद्युतिक प्रवाह में जव गडवडी पैदा हो जाती है, उस समय मानव-शरीर में कैलि म्यूर लवण के परिमाण की गड़वडी उत्पन्न हो जाया करती है । कैलि म्यूर लवण के क्षय हो जाने की वजह से (Fibrin) रक्त का अग विद्युतर होकर इस तरफ फेफड़े की श्लैष्मिक झिल्लियाँ इस फाइब्रिन के भारी भार से दव जाती हैं और कमजोर हो जाती हैं । इस समय सुयोग देखकर 'न्यूमोकोक्कस' जीवाणु वहाँ अपना घर वनाते और वशवृद्धि किया करते है । यही न्यूमोनिया रोग का उत्तेजक कारण है । इसके साथ ही फेरम फास लवण का क्षय होकर, रक्त की अम्लजन ग्रहण करने की शक्ति नष्ट हो जाती है । इसलिए शरीर के सभी तन्तुओं को अम्लजन पूर्ण करने के लिए रक्त को वडे वेग से दौड़ लगानी पडती है । रक्त की यह अस्वाभाविक द्रुत गति और अत्यधिक कार्य ही ज्वरीय उत्ताप के रूप में प्रकट हाता है ।

अतएव यह प्रत्यक्ष दिखाई देता है कि उपयुक्त चिकित्सा के लिए न्यूमोकोक्कस जीवाणु का वनाया हुआ उपनिवेश अगर ध्वस कर दिया जा सके तो रोगी मनुष्य का फेफड़ा आरोग्य और सशोधित होगा ।

क्षय हुए कैली म्यूर लवण के परमाणुओं की पूर्ति के लिए इस समय रोगी को अगर फेफड़े में सचित फाइब्रिन के साथ मिलाकर उसको विश्लिष्ट कर देता है और फुफ्फुस की झिल्ली भी उससे मुक्त हो जाती है तो अपने रहने का उपयुक्त स्थान न देखकर न्यूमोकोक्कस जीवाणु भी इस स्थान से हट जाते हैं।

अधिकतर प्रदाह रक्त के ज्वर प्रभृति उपसर्ग फेरम फास के प्रयोग से आरोग्य होते हैं। इस लवण के द्वारा नया और अधिक परिमाण में अम्ल-जन मिलकर रक्त का गुण और शक्ति बढ़ा देते हैं। रक्त के प्रवाह की तेजी रोककर हृत्पिण्ड को जो ज्यादा परिश्रम करना पड़ता था, वह भी बन्द हो जाता है। दूसरे लक्षण उपसर्ग के लिए इसी अनुरूप अजैव लवण विद्यमान हैं। यहाँ तक कि ज्वर का प्रचण्ड उत्ताप घट जाने पर भी कई मात्रा कैली सल्फ लवण गर्म पानी के साथ प्रयोग करने पर बहुत जल्द बहुत-सा पसीना होकर रोगी को आराम मिलते देखा गया है। कब्जियत अगर बहुत अधिक हो तो थोड़े गरम पानी में थोड़ा-सा नेट्रम म्यूर घोलकर रोज मलद्वार की राह से पिचकारी दी जाती है तो यह दो चार दिन में ही दूर हो जाती है। अगर कब्जियत दूर नहीं हो जाती है तो हृत्पिण्ड के अवसन्न होने में ज्यादा देर नहीं लगती।

फेरम फास ६x—इसको रोग की पहली अवस्था में ही कैली म्यूर के साथ प्रयोग करना उचित है। इसमें बहुत जल्द रोग की गति पर अधिकार किया जा सकता है। फेफड़े में प्रदाह होने की सूचना, ज्वर, रक्त, की अधिकता, पार्श्व में दर्द; श्वास छोटी, कफ न निकलने वाली सूखी खाँसी अथवा जंग के रङ्ग का बलगम निकलना; न्यूमोनिया के रक्त कास को भी यह लवण रोकता है। इसका बार-बार प्रयोग करने पर रोग बहुत जल्द दब जाता है। अगर ज्वर का उत्ताप बहुत बढ जाय, तो इसके साथ पर्याय-क्रम से कैली म्यूर गरम पानी के साथ प्रयोग करना चाहिये।

फेरम फास ३x—न्यूमोनिया द्वारा उत्पन्न फाइब्रिन रस क्षरण होकर, फेफड़े में कड़ापन पैदा हो जाने का उपक्रम, ज्वर की अधिकता मौजूद रहने पर इसके साथ पर्याय-क्रम से फेरम फास का प्रयोग करना चाहिए। इसमें निकला हुआ वलगम सफेद रहता है, जीभ पर सफेद लेप चढ़ी रहती है या सूखी रहती है। जीभ पर चिकनी धुमैली आभा लिए सफेद रङ्ग की मैल लिपटी रहती है। अगर सफेद गाढ़ा वलगम निकलता है, तो भी इस लवण से फायदा होता है। न्यूमोनिया की द्वितीय अवस्था में सफेद लसदार वलगम निकलना, श्वास नली में गाढ़ा लसदार वलगम रहने की जगह से निःश्वास मे खिंचाव, कों-कों शब्द, अण्डा फूटने की तरह आवाज; पर श्लेष्मा निकालने में कष्ट।

कैली सल्फ ३x—कैली म्यूर के सेवन के वाद कैली सल्फ का अगर प्रयोग किया जाता है, तो काफी काम पूरा हो जाता है और वहुत जल्द वीमारी आरोग्य हो जाती है। अगर फेरम फास के साथ पर्याय-क्रम से इसका प्रयोग किया जाता है तो पसीना निकलने में सहायता पहुँचाता है। वलगम निकलता है, आक्रमण के समय वड़े-वड़े वुलवुले फूटने की तरह आवाज होती है, घर-घर शब्द होता है, पानी की तरह पतला वलगम निकलता है या पीले रङ्ग का गाढा वलगम निकलता है। वलगम गले तक आकर फिर नीचे उतर जाता है। रोगी निकालकर फेंक नहीं सकता, वाध्य होकर उसे निगल जाना पड़ता है। रोगी गरमी सहन नहीं कर सकता, ठण्ढी हवा खोजता है। नाड़ी तेज, पर इतनी क्षीण रहती है कि सहज में अनुभव में वह नहीं आती।

नेट्रम म्यूर ६x—घर-घर आवाज के साथ खाँसी, ढीला वलगम निकलना, स्टेथोस्कोप, के सहारे आकर्षण के समय पतले श्लेष्मा की आवाज मिलती है। वलगम फेन भरे रस की तरह रहता है। निकालने में तकलीफ होती है। जीभ के दोनों ओर वलगम में बूँद-बूँद की तरह फेन भरा तार लगा रहता है। खाँसी के साथ माथे में तेज दर्द, गाल तक आँसू वहा करता है। सूखी क्षुद्र खाँसी वरावर आया करती है। अगर

फेरम फास के प्रयोग से आरोग्य न हो तो नेट्रम म्यूर का प्रयोग करना चाहिए।

कल्केरिया सल्फ ६x—निकला हुआ बलगम पीव मिला हुआ रहता है। न्यूमोनिया की तीसरी अवस्था में पीव मिला रक्त मिश्रित बलगम निकलता है। फेफड़े से तत्व मिला बलगम निकलता रहता है।



पक्षाघात या लकवा

(Paralysis)

चोट लगने, विषैले पदार्थ खाने या अन्य किसी बीमारी के कारण स्नायु की चालन-शक्ति नष्ट हो जाने का नाम पक्षाघात है। लकवा बहुत तरह का होता है जैसे मेरुदण्ड में चोट लगने के कारण पक्षाघात, मुखमण्डल का पक्षाघात, कँपकँपी लिये पक्षाघात, नीचे तथा ऊपर के अंग का पक्षाघात।

चिकित्सा

कैली फास ६x—धीरे-धीरे अवस्था आकस्मिक, सब तरह के पक्षाघात की बीमारी की यह प्रधान दवा है। स्वर-यन्त्र के पक्षाघात की वजह से स्वरलोप। गति-स्नायु (Motor Nerves) का पक्षाघात, संज्ञावह स्नायु के दर्द के साथ पक्षाघात, स्नायविक दौर्बल्य की वजह से सुस्ती, डिफ्थीरिया के बाद की वक्र दृष्टि, पलकों का गिरना, दृष्टि-शक्ति और अनुभव शक्ति में गड़बड़ी, स्नायविक दौर्बल्य की वजह से बहरापन अथवा आवाज का सहना न होना। डिफ्थीरिया के बाद स्वरभंग, स्वर लोप, आनुनासिक स्वर (नकिया कर बोलना), स्वर-तन्त्री का पक्षाघात या अंग विशेष का पक्षाघात। मुखमण्डल पर मुख के किसी अंग का स्नायविक या पैशिक पक्षाघात। मूत्राशय की पक्षाघात-ग्रस्त अवस्था। पेशाब रोकने की शक्ति का न रहना। स्वप्नदोष या जलन भरा वीर्य-स्खलन। लिंगोच्छ्वास का पूरा-पूरा न होना, ध्वजभंग, संगमेच्छा बिलकुल ही न होना, पर बहुत कुछ लुप्तप्राय,

रति-क्रिया के वाद सुस्ती आ जाना। पक्षाघात के साथ सारे शरीर का अथवा किसी खास अंग का शीर्ण पड़ जाना, जीवनी शक्ति अवसन्न, मल-मूत्र आदि में सडी गन्ध, अर्द्धांग का पक्षाघात, सकम्प पक्षाघात के शुरू का मज्जा का पक्षाघात और क्षय। शैशवावस्था का पक्षाघात।

मैग्नेशिया फास ६x—वात नाड़ी के श्वेत-सूत्रांश का पक्षाघात, सकम्प पक्षाघात—इस अवस्था में कल्केरिया फास के साथ इसका पर्याय क्रम से प्रयोग करना चाहिये। वहिर्वाही (Epperent) वात नाड़ी की क्रिया की गड़वड़ी पर वीमारी की वजह से हुआ पैशिक पक्षाघात। पक्षाघात के साथ आक्षेप, सकोचन और अंगों का खिंचाव, इच्छा न रहने पर भी हाथ का काँपना और सकम्प पक्षाघात (Paralysis Agitans), पियानो, नेहाला और सितार वजाने वाले, लेखक और किरानियों की कलाई और अँगुली की अकड़न। कैली फास के साथ इसका पर्यायक्रम से उपयोग उचित है।

कल्केरिया फास ६x—निम्नांग का ठंढा हो जाना, सुन्न पड़ जाना, चींटी रेंगने की तरह अनुभूति, विसर्पी (Creeping) पक्षाघात, धीरे-धीरे समूचे अंग में घूमने वाला पक्षाघात। यह लवण मैग्नेशिया फास्फोरिका का अनुपूरक है। कल्केरिया फास के साथ मैग्नेशिया फास का वीच-वीच में प्रयाग करने की जरूरत है।

साइलिसिया ६x—कशेरुका मज्जा के क्षय रोग से पैदा हुआ पक्षाघात। सन्धियों की पक्षाघात की तरह दुर्वलता। मेरुदण्ड में चोट लगने के वाद वहुत-से स्नायविक उपसर्ग और पक्षाघात। लिखने के समय हाथ अकड़ जाते हैं। वाहु और हाथ में भार और पक्षाघात। पैर के तलुवे का पसीना रुककर पक्षाघात आदि वहुत तरह के उपसर्ग यदि हो जायें, तो साइलिशिया के प्रयोग से पसीना होकर रोग आरोग्य हो जाता है। अगर अधिक स्त्री-ससर्ग के कारण पक्षाघात हो जाये और

बहुत अधिक कामोच्छ्वास, अदम्य यौन-चिन्ता तथा वार-वार स्वप्नदोष होने के उपसर्ग दिखाई दें तो उन सव रोगियों को साइलिसिया सेवन कराना उचित है। इस लवण की क्रिया गम्भीर होती है और वहुत दिनों तक स्थायी होती है। वीच-वीच में इसके साथ कैलि फास का प्रयोग करना उचित है। शरीर या रोग-ग्रस्त भाग में वर्फीली ठण्ढक।

फरम फास ३x—वात रोग की वजह से पक्षाघात। रात के समय बेचैनी उद्वेगजनक सपने। कैलि फास के साथ पर्याय-क्रम से प्रयोग करना चाहिये।

———

प्रदर

(Leucorrhoea)

प्रदर वह रोग है जिसमे जरायु की झिल्ली से अथवा जरायु के भीतर से जरायु मुख से एक प्रकार का स्राव वहा करता है। स्राव खासकर सफेद रङ्ग का होता है, इसी से इसे श्वेत प्रदर कहते हैं। हमारे देश की स्त्रियाँ इसे कपडे में दाग लगना कहती है।

ल्युकोरिया अग्रेजी के दो शब्दों से अर्थात् ल्युको और ओरिया से वना है। ल्युको का अर्थ है—श्वेत और ओरिया का अर्थ है—स्राव। इस प्रकार ज्ञात हुआ कि श्वेतस्राव को ही ल्युकोरिया कहते हैं। किन्तु इससे यह न समझ लेना चाहिये कि स्राव और रंग का होता ही नहीं, वल्कि कभी-कभी, पीला-नोला, दूध की तरह, मटमैला, मास के धोवन की तरह या काले अलकतरे की तरह का स्राव होता है। कभी पानी जैसा पतला अथवा भात के माँड़ की तरह गाढ़ा होता है। कभी वदबू होती है, कभी नही होती। कभी स्राव जहाँ लगता है वहाँ सफेद दाग पड़ जाता है और जलन होने लगती है।

सर्दी लगना, कृमि, गन्दा रहना, अनियमित ऋतु, जरायु का स्थान-च्युत हो जाना, रक्तहीनता, गण्डमाला धातु, विलासिता, आलस्य, उत्तेजक

पदार्थों का खाना-पीना, अत्यधिक प्रसंग, बार-बार गर्भस्राव, खूब कसकर साडी पहनना आदि कारणों से रोगोत्पत्ति होती है।

रोग की अवस्था मे मन खिन्न रहता है और याददाश्त की कमी हो जाती है, साथ ही साथ उत्साहहीनता, भूख का न लगना, कलेजा की धड़कन या धँसता जाना, सिर, कमर और पेट मे दर्द, पिठासे का फटना, चेहरे का पीलापन आदि लक्षण उपस्थित हो जाते हैं।

चिकित्सा

कल्केरिया फास ६x—अण्डे की सफेदी के समान स्राव निकले, मासिक धर्म के पश्चत् प्रदर, प्रसग की निर्वलता के लिये पुष्टिकारक है, अन्य औषधियों के साथ दिया जा सकता है।

कैलि सल्फ ३x—खराश और दाह उत्पन्न करने वाला स्राव निकले, प्रदर गर्मी (हाब्स) के कारण निर्वलता।

कैलि म्यूर ६x—दूध के समान स्राव, खराश उत्पन्न न करता हो, कोष्टवद्धता।

कैलि सल्फ ३x—पीला, हरा, पतला, पानी के समान स्राव निकले।

नेट्रम फास ६x—पतला, मधु के समान, मलाई जैसा प्रदर।

नेट्रम म्यूर ३x—पतला खराश करने वाला, चिलक उत्पन्न करने वाला स्राव, उसके साथ सिर-पीड़ा, कमर तथा शरीर में पीड़ा, गुप्तेन्द्रिय मे खुजली, कॉस्टिक की पिचकारी लेने के पश्चात् हितकर है।

प्रमेह या सूजाक
(Gonorrhoea)

एक योग्य डॉक्टर लिखते हैं—

'When a man contacts gonorrhoea there is an inflammation of the urinary passage, accompanied by

a whitish or yellowish discharge, the disease is caused by the gonorrhoea germ and is caught by sexual intercourse with person wao has gonorrhoea'

सूजाक लाइकोसिस का ही नामान्तर है। सूजाकी पुरुष या स्त्री के सयोग से एक दूसरे मे यह बीमारी पैदा हो जाती है। इस बीमारी के कारण गोनोकोक्कस नामक जीवाणु होते हैं जो भले चंगे शरीर में प्रवेश करके उनके रक्त को दूषित कर देते हैं। पुरुषों की मूत्रनली के १ इञ्च पीछे एक गड्ढा होता है जिस स्थान में इस रोग की शुरुआत होती है। वहाँ से धीरे-धीरे बढ़कर मूत्रनल, मूत्राशय ओर अण्डकोष तक रोग फैल जाता है। स्त्रियों की योनि के पास वाले यन्त्र तथा मूत्रनली, मूत्राशय, जरायु आदि प्रथम रोगाक्रान्त हो जाते हैं। इसकी पीब शरीर के किसी स्थान को श्लैष्मिक झिल्ली में लगकर उस स्थान को भी रोग से ग्रसित कर देती है।

यह दो प्रकार का होता है—(१) यकृत या सर्वांगीण प्रमेह और (२) स्थानिक या एकागीण प्रमेह।

इसकी तीन अवस्थाएँ होती हैं—(१) प्रथम, (२) द्वितीय (एक्यूट स्टेज) और (३) तृतीय (क्रॉनिक स्टेज)। इन तीनों अवस्थाओं मे से द्वितीय अवस्था वहुत ही ख़तरनाक होती है।

प्रथमावस्था में पहले मूत्रनली के मुँह पर और उसके अन्दर थोड़ी सुरसुरी होती है, खुजली आती है और उसके अन्दर गर्मी मालूम पड़ती है, मूत्र-यन्त्र लाल सुर्ख हो जाता है, सूजन आ जाती है, मूत्र-मार्ग का छेद पीव जैसे रस से चिपक जाता है। फिर दूध जैसा सफेद या पीब जैसा मवाद निकला करता है। यह अवस्था प्रायः एक सप्ताह से अधिक नहीं रहती। द्वितीयावस्था में पेशाब करने में बड़ी तकलीफ होती है, पेशाब बूँद-बूँद और कष्ट से निकलता है, असह्य पीड़ा होती है। हरा, पीला मिश्रित सफेद-पीला स्राव होता है। यह अवस्था ७ से २१ दिन तक रहती

है। तृतीयावस्था में सूजन, जलन, कड़क कुछ भी नहीं रहती, स्राव तरल, स्वच्छ और कम होता है। बीमारी ज्यादा दिन की हो जाने पर पेशाब के पहले महीन सूत की तरह मवाद निकलती है।

प्रमेह का प्रदाह जब तक मूत्रनली में रहता है तब तक प्रायः एक न एक उपसर्ग बना ही रहता है, जैसे लिंगोद्रेक (Chordee) अर्थात् इन्द्रिय का कड़ा या कभी-कभी टेढा हो जाना (Balanitis), सुपारी का ढँक जाना (Phimosis), लिंगावरण चर्म रोग, जिसमें सुपारी के ऊपर की चमड़ी खुलती नहीं। उल्टी चमड़ी (Paraphimosis) अर्थात् मलद्वार और जननेन्द्रिय के बीच के स्थान पर फोड़ा, मूत्रावरोध (Retention of the urine) और बढ़कर पेशाब निकलने का छेद बिल्कुल बन्द कर देता है और ऐसी स्थिति में अधिकतर रोगी अच्छा नहीं होते।

कभी-कभी प्रमेह मूत्रनली के पीछे की तरफ चला जाता है। जिससे नाना प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं जैसे उपकोष-प्रदाह, मूत्राशय-प्रदाह, डिम्बप्रणाली-प्रदाह, जरायु-प्रदाह आदि।

पुरुष तथा स्त्री दोनों को यह रोग होता है, किन्तु स्त्रियों को मूत्रमार्ग के बहुत छोटा होने के कारण पुरुषों की तरह अधिक कष्ट नहीं होता।

चिकित्सा

कैलि म्यूर ३x—यह गोनोरिया रोग की सबसे श्रेष्ठ दवा है और जननेन्द्रिय की सूजन आरोग्य करने वाली प्रधान दवा है। गाढा सफेद या पीली आभा लिए सफेद रंग का पीब स्राव होता है। चलना-फिरना और व्यायाम करना मना है।

फेरम फास ६x—गोनोरिया के साथ वाले प्रदाह को दबाने के लिए यह एक खास दवा है। कैलि म्यूर के साथ पर्याय-क्रम से सेवन करना चाहिये।

कल्केरिया सल्फ ६x—खून और पीब मिला स्राव या लसदार स्राव।

कैली फास ६x—लिंग मुण्ड में नया गोनोरिया और उसी स्थान का प्रदाह, इसका भीतरी और बाहरी प्रयोग करने पर प्रदाह तुरन्त दब जाता है। तीसरी शक्ति का विचूर्ण बीस ग्रेन की मात्रा में लेकर छः औंस पानी में घोलकर उसमें लिण्ट या साफ कपड़े का टुकड़ा भिंगोकर उस स्थान में प्रयोग करना चाहिए। जब सूख जाय तो फिर तर करना चाहिए। इसी तरह बार-बार तर करते रहना चाहिए। यन्त्रणादायक लिङ्गोच्छ्वास और स्वप्नदोष में भी फायदा करता है।

नेट्रम म्यूर ३x—पुराना प्रमेह रोग, पतला और साफ स्राव, लसदार पानी की तरह जलन भरा विदाही स्राव। ग्लीट रोग मे यह लवण कल्केरिया फास के साथ पर्यायक्रम से प्रयोग किया जाता है। कास्टिक लोशन के द्रव की पिचकारी के व्यवहार का दुष्परिणाम, नेट्रम म्यूर के सेवन से संशोधित हो जाया करता है।

कल्केरिया फास ३x—सूजाक के साथ कमजोरी और रक्तहीनता की अवस्था, चिकना, लसदार, अण्डलाल की तरह सफेद स्राव। नेट्रम म्यूर के साथ पर्यायक्रम से इसका प्रयोग किया जाता है। कृश, रक्ताल्प रोगी की पुरानी सूजाक की बीमारी, लिंङ्ग में दर्द और खुजली, अण्डकोप की सूजन।

कैली फास ३x—लसदार पीली या हरी आभा लिए स्राव के साथ सूजाक। ग्लीट वा पुराने सूजाक के रोग में पीले रग का स्राव निकलने पर इस लवण का प्रयोग करना चाहिए। प्रमेह रुक कर अण्डकोष का प्रदाह।

नेट्रम सल्फ ६x—श्लेष्मा प्रधान धातु और प्रमेह दूषित धातु में यह विशेप उपयोगी हैं। बिना दर्द का गाढ़ा, पीली आभा लिये हरा स्राव होने वाला पुराना सूजाक; बहुत दिनों का स्थायी रोग, छिपा हुआ प्रमेह; मुखशायी ग्रन्थि का (Prostate) बढ़ना, लिंग की अग्र-त्वचा या अण्डकोष का फूलना, लिंग में खुजली। हरा-पीला स्राव कम दर्द के साथ या बिना दर्द के।

साइलिशिया २००x—बहुत दिनों का स्थायी प्रमेह, गाढा वदवूदार स्राव निकलना, रोगी को बहुत जाड़ा मालूम होता है, व्यायाम के वाद भी शीत मालूम होती है। लिंगमुण्ड का प्रदाह, अण्डकोष में बहुत ज्यादा पसीना होना और खुजली।

मैग्नेशिया फास ६x—सूजाक में सुई गड़ने की तरह तेज दर्द, स्राव के रंग और प्रकृति के अनुसार निर्देशक औषधि के साथ पर्यायक्रम से प्रयोग करना उचित है। अकड़न दूर करने वाली यह एक श्रेष्ठ दवा है। इसीलिए प्रमेह रोग के साथ अगर सवृत्ति (Stricture) और मूत्रावरोध का लक्षण हो तो इससे फायदा होता है। कम शक्ति की दवा कुनकुने पानी में घोलकर पिचकारी लेना लाभदायक है।



प्ल्युरिसी
(Pleurisy)

फेफड़े को ढँकने वाली झिल्ली (प्ल्युरा) के प्रदाह को प्ल्युरिसी कहते हैं। ठढ और सर्दी लगना, एकाएक पसीना वन्द हो जाना, किसी तरह चोट लगना, अधिक शारीरिक परिश्रम आदि के कारणों से यह रोग होता है। जाड़ा लाकर बुखार आना, स्तन के पास अधिक दर्द मालूम पड़ना, खाँसने पर कफ न निकलना, वलगम में दर्द, कभी-कभी बहुत ही कष्टदायक खाँसी, खोंचा मारने और कतरने जैसा दर्द इसके प्रधान लक्षण हैं। ब्राइट-डिजीज; कैन्सर आदि के साथ इस रोग के होने पर मृत्युभय रहता है।

चिकित्सा

फेरम फास ६x—रोग के आक्रमण की पहली अवस्था में नेट्रम म्यूर के साथ, ज्वर, दर्द, पार्श्व-शूल, छोटी हल्की खाँसी, श्वासकृच्छ्रता के कारण गहरी साँस न लेना और श्वास-प्रश्वास की लम्बाई घट जाना। अगर बहुत जोर का पार्श्वशूल हो तो गरम पानी भरी रबर की थैली दर्द वाली जगह पर प्रयोग करने से सामयिक लाभ होता दिखाई देता है।

कैली म्यूर ३x—रोग का दूसरा पर्याय, गाढ़ा, जमा हुआ बलगम, बहुत तकलीफ से निकाला जा सकता है, सफेद लसदार चिपकने वाला बलगम, जीभ पर सफेद मैल चढ़ी हुई, जीभ पर चिकनी धुमैली आभा लिये सफेद रङ्ग की मैल।

कल्केरिया फास ३x—रोग की तीसरी अवस्था, पीव पैदा हो जाना। रोगी को जरा भी हिलना नहीं चाहिये।

प्लेग (महामारी)

(Plague)

१४ वीं शताब्दी में ब्लेक डेथ के नाम से इस रोग का आविर्भाव हुआ था।

Dr. Philip H. Manson Bahr (London) ने इस रोग के विषय में बतलाया है कि—

'Plague is a specific, inoculable & otherwise communicable epidemic disease common to man and many lower animals.'

अर्थात् यह संक्रामक तथा स्पर्शाक्रमक रोग है जो विशेषतया मनुष्यों तथा छोटे जानवरों मे पाया जाता है। कोको वैसिलस नामक जीवाणु इसके प्रादुर्भाव के कारण माने गये हैं। खासकर चूहे इस रोग के दूत माने जाते हैं। इसके जीवाणु अँधेरी कोठरियों, तर, सीड़ भरी जगहों मे बढते हैं।

Drs. Bhatia & Suri ने लिखा है कि—

'The Plague germ is a minute organism, which is found in the blood of rats suffering from plague and is conveyed from rat to rat through the agency of the

rat, flea, which lives in the hair of the rat and feeds on its blood.'

अर्थात् प्लेग के सूक्ष्म जीवाणु उन चूहों के रक्त मे पाये जाते हैं जिन्हे यह रोग हो जाता है और उनके द्वारा एक-एक करके अनेकानेक चूहों मे रैट फ्ली (rat flea) के द्वारा जो उनके बालों में रहते हैं तथा उनके खून पीकर जीवन निर्वाह करते हैं, फैल जाते है। इन चूहों के मरने के पश्चात् ये जीवाणु उनके शरीर से निकल कर स्वस्थ शरीर पर हमला करते हैं। बच्चों और जवानों को यह रोग अधिक होता है।

डॉ० डाइसन और कैलवर्ट के मत से इसके ४ प्रकार हैं :–

(१) सड़ने वाला (Septicaemic), (२) गाँठों वाला (Bubonic), (३) फेफड़ेवाला (Pneumonic) तथा (४) आँतोंवाला (Intestinal)। कुछ लोग टान्सिलरी और हाइड्रोफोबिक को भी दो प्रकार और मानते हैं। भारत मे ब्युबोनिक प्लेग ही बहुधा होता है।

रोग के आक्रमण होने के बाद एक सप्ताह तक रोग गुप्तावस्था मे रह सकता है, किन्तु साधारणतः दूसरे से पाँचवे दिन के अन्दर ही गाँठ निकल आती है।

पैथालॉजी के विज्ञान में बतलाया गया है—

'The discovery of the bacillus in the glands; blood, sputum or discharges is the only thoroughly reliable test.'

अर्थात् मूत्र, थूक, रक्त आदि की कायदे के अनुसार यदि परीक्षा की जाय तो नि सन्देह इस जीवाणु का पता चल जायगा और यही जानने का सर्वश्रेष्ठ तरीका है।

जैसा कि लिखा है—

'After death from plague, the surface of the body very frequently presents numerous patches, the number and extent these very apparantly, indifferent epidemics.'

अर्थात् प्लेग से मृत्यु होने के पश्चात् शरीर के चर्म के ऊपर अनेकानेक दाग दिखाई पड़ते हैं जो गिनती में स्थिति के अनुसार ज्यादे या कम होते हैं।

एक बड़े योग्य चिकित्सक ने लिखा है —

'Abortion almost invariably occurs in pregnant women.'

अर्थात् गर्भवती स्त्री पर इस रोग का हमला होने पर गर्भपात अवश्य हो जाता है।

चिकित्सा-मर्मज्ञों का मत है कि—

'Relapses of forms of plauge, though rare, do occur and are dangerous.

अर्थात् यद्यपि प्लेग की पुनः आवृत्ति बहुत ही कम होती है, किन्तु होती अवश्य है और जब होती है तब स्थिति चिन्ताजनक हो जाती है।

चिकित्सा

कैली म्यूर ३x—इस रोग की श्रेष्ठतम दवा है। फेरम फास के साथ दे। टान्सिलर श्रेणी के प्लेग में यह ज्यादा लाभ करता है। तालू, मूत्र-ग्रन्थि का प्रदाह और शोथ, कंठ का फूलना, मुँह में छाले, मुँह, गले में घाव। न्यूमोनिक श्रेणी के प्लेग में रोग की द्वितीय अवस्था में लसदार कड़ा बलगम निकलना। औदरीय श्रेणी के प्लेग में पहले पतले दस्त, जीभ की जड़ में सफेद या धुमैला लेप, जगह-जगह की गाँठों का फूल जाना, इस लवण के साथ पर्याय-क्रम से फेरम फास का सेवन करना चाहिये।

कैली फास ३x—प्लेग रोग में बहुत तेजी से हृदय-यन्त्र का निस्तेज होते जाना और हृदय-यन्त्र का पतन होने की आशंका में इस दवा का पहले से ही प्रयोग करना आवश्यक है। अन्यान्य निर्वाचित औषधियों के

साथ इसका पर्यायक्रम से प्रयोग करना चाहिये। अगर चेतना सम्बन्धी, स्नायु सम्बन्धी और औदरीय उपसर्ग रहें, बदबूदार पाखाना होता हो, सड़ने वाले जख्म हों, सेप्टीसीमिया अर्थात् सर्वांगीण पीव में दोष हो जाय तो यह दवा बहुत फायदा करती है। रोगी की बात की कमजोरी दूर करने के लिए इस लवण की बहुत सुख्याति है। न्यूमोनिक श्रेणी के प्लेग में कैली म्यूर और कैली सल्फ लवण के साथ पर्यायक्रम से इसका प्रयोग करना चाहिये। निकले हुए बलगम का रूप और प्रकृति के अनुसार बायोकेमिक दवा का चुनाव कर उसके साथ ही पर्याय-क्रम से इस लवण का प्रयोग किया जाता है।

फेरम फास ६x—ज्वर की अधिकता और प्रदाह के आरम्भ से ही इसका बार-बार प्रयोग किया जाता है। ज्वर कम या ज्यादा है इस पर ख्याल न कर सभी अवस्थाओं में इसका प्रयोग होता है। दूसरी-दूसरी चुनी हुई दवाओं के साथ पर्याय-क्रम से इसका व्यवहार होता है। रक्तस्राव प्रबल रहने पर भी यह उपयोगी है। नाड़ी का वेग, विकार, मस्तिष्कप्रदाह से उत्पन्न लक्षण इस दवा से जल्द दूर हो जाते हैं।

मैग्नेशिया फास ६x—अकड़न, बेचैनी, अगों का खिंचना, उत्तेजना, सिर दर्द, अग शूल, हिचकी। हाइड्रोफोबिक प्लेग, गलनली की अकड़न, तरल पदार्थ निकलने में कंठ में आक्षेपयुक्त सकोचन और कंठरोधन हो जाने की तरह अनुभव होना। गर्दन और कण्ठ की ग्रन्थियाँ सब फूल जाती हैं और उनमें प्रदाह हो जाता है। फेरम फास लवण के साथ पर्याय-क्रम से इसका प्रयोग किया जाता है। मैग्नेशिया फास को गर्म पानी में घोल कर प्रयोग करने से बहुत जल्दी फायदा करता है। निम्न शक्ति के क्रम से अगर फायदा न हो, तो ऊँची शक्ति के प्रयोग से आश्चर्यजनक लाभ देखा गया है। कल्केरिया फास इस लक्षण की दवा है। टांसिलर प्लेग में कैलि म्यूर के साथ पर्याय-क्रम से प्रयोग करना चाहिये।

नेट्रम म्यूर ३x—सर्दी, श्वासनली और फेफड़ों का प्रदाह। हृत्पिंड का काँपने की तरह स्पन्दन, न्यूमोनिक प्लेग, फेन भरा रस की तरह बलगम, बलगम निकालने मे तकलीफ होती है। वक्ष मे श्लेष्मा के कारण घरघराहट होती है। कैली फास के साथ क्रम से प्रयोग करना चाहिये।

साइलिसिया ६x—बाघी और अन्यान्य लसिका ग्रन्थियों का नया प्रदाह दूर होने के बाद उसमे अगर रस-पीब पैदा हो जाय तो इसका प्रयोग होता है। न्युमोनिया, बहुत ज्यादा पीली आभा लिए हरे रंग का गाढा बलगम निकलना अथवा पीला पीब मिला बलगम निकलना। शारीरिक उत्ताप की कमी, हाथ-पैर ठण्ढे, बहुत ज्यादा जाडा मालूम होना, कड़ी पीब रहित, फूली और प्रदाह के साथ बाघी अगर बहुत दिनों तक रह जाय तो फेरम फास के साथ पर्याय-क्रम से प्रयोग करना चाहिये। यह लवण पानी में घोलकर उसमें साफ कपड़ा तर कर, फूली हुई ग्रन्थि पर रखना चाहिये।

फोड़ा या स्फोटक

(Boils)

चमडे पर सूजन के साथ अगर वहाँ दर्द और गर्मी मालूम हो तो उसे फोड़ा कहते है। इसमे हमेशा नोंक निकला करती हैं। व्रण की तरह इसमें पहले प्रदाह होता है, फिर पीब पैदा होती है। उसमे मुँह हो जाता है। फोडे के भीतर के अंश को जो बीच मे रहता है उसे खील कहते हैं। खील पीब के साथ निकल जाने पर जलन और तकलीफ कम हो जाती है।

खून खराब होने या देह दुबली हो जाने पर, छोटे या बडे फोड़े होते हैं। कोई कोई फोड़ा बिना पके ही बैठ जाता है।

चिकित्सा

फेरम फास ३x—छोटा या बड़ा फोड़ा, कार्बङ्कल, अगुलहाड़ा इत्यादि किसी तरह के भी फोड़े के प्रदाह की पहली अवस्था की यह श्रेष्ठ दवा है। रोगवाली जगह लाल, गर्म, रक्त की अधिकता; ज्वर। इस लवण के साथ पर्याय-क्रम से कैलि म्यूर का प्रयोग करने पर, रोग आगे नहीं बढ पाता; दूषित जैव पदार्थ उसी स्थान से सोखा जाकर दूसरी राह से निकल जाता है।

कैली म्यूर ३x—प्रदाह की दूसरी अवस्था मे जब रोग वाली जगह पर सूजन आ जाती है, पर उस समय भी पीब नहीं पैदा रहती है। यदि उस समय भी रोग वाले स्थान में गर्मी रहे तो इसके साथ कई मात्रा फेरम फास देना चाहिए। स्तन के फोड़े की तरह की सूजन वाली दूसरी अवस्था मे यह ज्यादा फायदा करता है। इससे सूजन बहुत जल्द दूर होकर एकदम आरोग्य हो जाता है। इसके भीतरी प्रयोग के साथ, इस लवण जातीय जलीय द्रव में लिण्ट या साफ कपड़े का टुकड़ा भिगा कर फोडे के ऊपर लगा देना चाहिये और सूखने पर बार-बार तर कर देना चाहिये।

साइलिसिया ३x—यदि उपरोक्त दवा का प्रयोग करने पर भी पीब पैदा होने लगे तो उस अवस्था मे साइलिसिया फायदा करता है। इसके ३x या ६x मे फोड़ा बहुत जल्द पक जाता है और फट जाता है। नस्तर लगवाने की जरूरत ही नहीं पड़ती। फोड़ा फट जाने के बाद पीब निकलते रहने पर इसका भीतरी और बाहरी प्रयोग करना चाहिये। अगुलहाड़ा रोग मे भी इस लवण के भीतरी और बाहरी प्रयोग से पीब निकलने मे सहायता प्राप्त होती है और सड़ा हुआ नख गिर जाता है तथा उसकी जगह पर नया-

नया नाखून पैदा हो जाता है, क्योंकि साइलिशिया लवण नख का प्रधान उपादान है। अंगुलहाड़ा की साइलिशिया से बढ़कर दूसरी दवा नहीं है। रोग की पहली अवस्था में प्रत्येक दो घण्टे का अन्तर देकर प्रयोग करने पर प्रायः २४ घंटे में सभी उपसर्ग आरोग्य हो जाते हैं।

कल्केरिया सल्फ ३x—फोड़े के पास वाले तन्तु और कोषों को निस्तेज अवस्था की वजह से अगर बहुत दिनों तक पीब का स्राव होता रहे और सूखने में विलम्ब हो तो यह लवण फायदा करता है। फोड़ा, कार्बङ्कल, स्तन का पकना, अंगुलहाड़ा इत्यादि सभी क्षेत्रों में पीब सम्बन्धी ऐसी अवस्था देखकर कल्केरिया सल्फ का प्रयोग करने में विलम्ब न करना चाहिए। साइलिशिया लवण फोड़ा पकाकर और फाड़कर पीब निकाल देता है, पर कल्केरिया सल्फ पीब निकालने की क्रिया को रोककर पीब सुखा देता है। इस लवण में साइलिशिया की तरह बदबूदार स्राव नहीं रहता। मलद्वार के बगल में बहुत दर्द भरा फोड़ा होने पर भी कल्केरिया सल्फ विशेष उपयोगी है। पर किसी अङ्ग के गम्भीरतम स्थान में फोड़ा होने पर साइ-लिशिया उस फोड़ा को चर्म के ऊपर निकाल देता है और पका डालता है; किसी दूसरे लवण में ऐसा नहीं होता।

नेट्रम सल्फ ६x—बहुत दिनों का स्थायी नासूर का घाव, खासकर अगर यह निम्नागी किसी जगह पर हो जाय तो नेट्रम सल्फ से आराम हो जाता है। पानी की तरह पीब तथा जख्म के चारो ओर एक नीला घेरा इनमें बना रहता है और स्राव सूखने पर हरे रंग का हो जाता है।

कल्केरिया फ्लोरिका ३x—अस्थि रोग की वजह से फोड़ा, पीब का स्राव होने के साथ छोटे-छोटे हड्डी के टुकड़े निकलते हैं। अस्थि दोषों के कारण पैदा हुआ अस्थिप्रदेश का फोड़ा और उसमें नासूर पड़ जाने का लक्षण या नासूर ही हो जाना, जख्म के किनारे कड़े, एकदम लचीले रहना, स्तन में बहुत दिनों का नासूर का घाव मिला स्तन का प्रदाह होने पर इस नमक की अद्भुत आरोग्यकारिणी शक्ति दिखाई देती है।

कैली फास ३x—फोडा, अंगुलहाड़ा, कार्वङ्कल इत्यादि पीव के स्राव होने वाले फोडे और जख्म की वजह से कमजोरी तथा इसके समय ही अगर दूषित पीव का स्राव भी होता हो, तो यह लवण एक उत्कृष्ट दवा है। सड़ा, वदवूदार, खून मिला, गँदला भूरे रग का वदवूदार पीव स्राव होने वाले स्तन के प्रदाह मे यह दवा वहुत उपयोगी है।

वहुव्यापक सर्दी
(Influenza)

यह एक तरह की लरछुत और वहुत फैलनेवाली सर्दी की वीमारी है। जीवाणु इसके प्रमुख कारण हैं।

जाड़ा लगना, वुखार, सिर दर्द, पलकों में दर्द, आँख से पानी गिरना, छींक, खाँसी, देह टूटना, प्रभृति इसके प्रधान लक्षण हैं। इसका ज्वर १००° से १०३° तक चढता है। कभी-कभी ज्वर १०६° तक हो जाता है।

चिकित्सा

फेरम फास ३x—प्रदाह, ज्वर का उत्ताप, दर्द के साथ आक्रमण होने पर यह विशेष उपयोगी है। अगर उत्ताप अत्यन्त उग्र प्रकट हो तो एक घटे के अन्तर से औषधि का प्रयोग करना चाहिये। रोग यदि हलका होगा तो पसीना होकर ज्वर और अन्यान्य उपसर्ग दूर हो जायँगे।

नेट्रम सल्फ ३x—कोष के भीतर के रस-क्षरण की अधिकता का सशोधन करने की यह प्रधान दवा है। खासकर उन रोगियों के लिये तो यह वहुत ही उपयोगी है, जिनमें पैत्तिक लक्षण मौजूद रहते हैं। गाढे खाकी रग की मैल चढ़ी जीभ, मुँह का स्वाद तीता, पैत्तिक वमन। इस दवा से खूव पेशाव होकर इसकी अधिकता दूर हो जाती है।

कैली म्यूर ६—सफेद या धुमैले रग की मैल चढ़ी जीभ, वात दर्द की तरह सन्धि स्थानों मे दर्द, कठनली मे दर्द, स्वरभग, जाड़ा मालूम

होना। ग्रीवाग्रन्थि और कर्णमूल ग्रन्थि की सूजन, श्वासनली के कारण उत्पन्न उपसर्गों के लिए।

कैली फास ६x—सन्ध्या के समय या बन्द कमरे में सभी उपसर्गों का बढ़ जाना, फेरम फास के साथ पर्याय-क्रम से सेवन करने पर पसीना हो जाता है, थकावट और भार मालूम होता है। सिर में चक्कर आना, उदासी, माथे में दर्द, अंग-प्रत्यंग में दर्द रहता है। जाड़ा मालूम पडता है। कलेजा काँपता है। मुँह का स्वाद बिगडा हुआ जीभ चिकनी पीली आभा लिए मैल चढ़ी रहती है। माथे में श्लेष्मा की अधिकता की वजह से सामने की ओर माथा झुकाने में तकलीफ मालूम होती है। इन्फ्लुएञ्जा और ग्राइप की बीमारी के बाद न्यूमोनिया हो जाने पर इससे बहुत फायदा होता है। परिवर्तनशील स्नायविक दर्द में भी यह लाभदायक है। ठण्ढी खुली हवा के लिए आकांक्षा इस दवा एक संकेत है।

नेट्रम म्यूर ३x ६x- पानी की तरह पतला, साफ स्राव नाक और आँख से बहुत ज्यादा परिमाण में निकला करता है। बार बार छींक आती है अथवा सूखी सर्दी के साथ पर्याय-क्रम से पतला स्राव। श्वास-नली का नया प्रदाह, साफ फेन की तरह पानी जैसा श्लेष्मा खाँसी के साथ निकलता है। कभी-कभी ढीला बलगम निकलने में भी तकलीफ होती है। न्यूमोनिया—वक्ष में पतले श्लेष्मा की आवाज सुन पड़ने पर भी निकालने में तकलीफ होती है। मेरुदण्ड में दर्द और स्पर्श का सहन न होना।

कैली फास ३x—स्नायविक लक्षण की प्रबलता की श्रेष्ठ दवा है। रोग की बाढ की कमजोरी दूर करने की बेजोड दवा है। मानसिक दुर्बलता, पित्त विकार, पेशियों की कमजोरी और पतला पड़ जाना; पतनावस्था में रोगी भय से व्याकुल रहता है। स्नायविक दुर्बलता के कारण थोडी-सी आवाज से चौंक उठता है। सहज में ही जाग उठता है। निद्रितावस्था में

बका करता है। बहुत अधिक सुस्ती, बहुत ज्यादा और कमजोर करने वाला बदबूदार पसीना होता है।

बवासीर
(Piles)

'Piles are small tumours consisted of swollen veins in the anel region' इस रोग के होने पर मलद्वार के भीतर और बाहर की नसे फूल जाती हैं और चमड़ा सख्त और संकुचित होकर मस्से पैदा हो जाते हैं। यह देखने में अगूर जैसे होते हैं। ये कभी मलद्वार के अन्दर होते हैं और कभी बाहर। इनमें खुजली, वेदना, तनाव और जलन होती है। मस्सों से खून निकलने पर खूनी और खून न निकलने पर वादी बवासीर कहा जाता है।

घी, तेल की चिकनी चीजें, मसालेदार चीजें खाना, शराब पीना, पेट में वायुसचय, यकृत की खराबी, गर्भावस्था में कसकर कपड़े पहनना आदि कारणों से यह रोग होता है।

चिकित्सा

कल्केरिया फ्लोर ३x—बवासीर में रक्त प्रवाह मस्तिष्क की ओर हो, भीतरी बवासीर के साथ कोष्ठबद्धता हो, मस्से नरम तथा रेशेदार हों, कमर में कभी-कभी पीड़ा हुआ करे, लाल रक्त निकले, अधिक परिश्रम करने से खाँसी आये।

कैली फास ३x—जीर्ण बवासीर में निर्बल मनुष्यों को अन्य औषधियों के मध्य में इसे देना चाहिए।

कैलि म्यूर ३x—खूनी बवासीर मे काला, गाढा, रेशेदार अथवा जमा हुआ रक्त निकले।

नेट्रम म्यूर ३x—मल कठिन हो, गुदा तथा मूत्र नली में चुभन, गुदा में जलन तथा उसके निकट दाने, गुदा में खुजली हो।

फेरम फास ३x—बवासीर सूजी हुई, लाल रक्त निकलने, यकृत तथा पाचन-शक्ति का विकार, रक्त के लोथड़े जम जाये प्रथम इसके कि सूजन जीर्ण हो जाये।

मैग्नेशिया फास ३x—अत्यन्त अधिक पीड़ा, बिजली के समान पीडा में चमक हो, बाहरी मस्सों में पीड़ा तथा ऐंठन हो।

साइलिसिया ३x—बवासीर में अत्यन्त अधिक पीड़ा हो तथा पकने के निकट हो, खुजली अधिक हो। गुदा तथा अण्डकोष में पीड़ा हो।

बहुमूत्र

(Diabetes)

इसे ग्लाइकोसुरिया, मूत्रमेह या मधुमेह भी कहते है। इसके दो प्रकार हैं—डाइबिटीज मेलिटस (मधुमेह) तथा (२) डाइबिटीज इन्सिपिडस (मूत्रमेह)।

बहुत ज्यादा परिमाण में बार-बार पानी की तरह पेशाब हो तथा रक्त में जो चीनी पैदा हो जाती है वह पेशाब के साथ ज्यादा मात्रा में निकलने लगे और इसी कारण शरीर पोषण मे बाधा पड़े तो इसे मधुमेह कहते हैं। यदि अधिक परिमाण में जल्दी-जल्दी पेशाब होती हो; किन्तु पेशाब में चीनी या और कोई दूषित पदार्थ न रहे तो उसे मूत्रमेह कहते हैं।

अधिक मात्रा में श्वेतसार खाने, वंशगत दोष, विशेष चिन्तन, श्वास-कास, यकृत, मस्तिष्क और मेरुमज्जा में चोट लगने, गठिया, मलेरिया आदि का होना इस रोग की उत्पत्ति के कारण माने जाते हैं।

कब्जियत, बहुत अधिक प्यास इसके प्रधान लक्षण हैं। इसके बाद शरीर धीरे-धीरे क्षीण होता है, पैर फूलता है और स्त्रियों के स्त्री-अङ्ग में खुजलाहट पैदा होती है और दुष्टव्रण (कार्बङ्कल) पैदा होकर रोगी की मृत्यु तक हो जाती है।

चिकित्सा

कल्केरिया फास ६x—प्यास अधिक, मूत्र अधिक तथा कई बार, जिह्वा तथा मुँह सूखा; मधुमेह के रोग से जब फुफ्फुस अपना कार्य करना बन्द कर देते हैं, हरारत तथा पाचन विकार नहीं होता है, उस समय यह औषधि अत्यन्त गुणकारी होती है।

कैलि म्यूर ३x—मूत्र में अत्यन्त अधिक शक्कर आये, जिह्वा पर सफेद मैल, कोष्ठबद्ध, कफ-विकार, सूखी खाँसी।

नेट्रम म्यूर ३x—मूत्र अधिक बार हो, प्यास इतनी अधिक हो कि बुझे नहीं, निर्बलता, निराशा, ज्वर अत्यन्त अधिक, निर्बलता, निद्रा।

नेट्रम सल्फ ३x—मधुमेह के लिए यह मुख्य औषधि है, इसका मुख्य प्रभाव गुर्दों तथा क्लोम ग्रन्थि के कार्य की न्यूनता पर होता है। इस औषधि के सेवन करने से शक्कर बनना कम क्या बिल्कुल बन्द हो जाता है।

फेरम फास ६x—शुष्कता, प्यास, हरारत, नाड़ी में तीव्र उलझन, पीडा।

विशेष—श्वेतसार मिला भोजन, मछली, खटाई और मीठी चीजें हानिप्रद हैं। पुराने चावल का भात कभी-कभी हालत ठीक रहने पर खाया जा सकता है। जौ की रोटी, ताजी तरकारी, मक्खन निकाला दूध, कोमल बकरे का मास पथ्य है।

बन्ध्यत्व या बाँझपन

(Sterility)

स्त्रियों को सन्तान न होना बाँझपन कहलाता है। शारीरिक दुर्बलता, जरायु में अर्बुद, जरायु का टेढा हो जाना, योनि सकीर्णता, शरीर मे चर्वी का बढ जाना, ऋतु में गड़बड़ी, प्रदर रोग, अत्यधिक मैथुन, जननेन्द्रिय विकार प्रभृति कारणों से इस रोग की उत्पत्ति होती है।

आयुर्वेद के मत से इसके ७ कारण माने गये हैं। यथा कॅवल मे वाई, पानी भर जाना, कँवल के ऊपर मास चढ जाना, पितृ दोष, प्रेत वाधा आदि।

गर्भ रहने के लिए स्त्री के रज और पुरुष के वीर्य दोनों को निर्दोष होना चाहिए। दो में से किसी एक के दोष से गर्भाधान नहीं हो सकता है। अनेक वार पुरुषों के दोष से अर्थात् उपदश, प्रमेह, शुक्र निकलने वाली राह का रुकना, शिश्न का पतलापन या बहुत मोटापन, क्षय-कास आदि कारणों से भी स्त्रियों को बच्चे नहीं होते, किन्तु घर के वाहर की स्त्रियाँ उनका ही दोष देती हैं।

स्त्री-पुरुष के वाँझपन की परीक्षा-विधि—

वङ्गसेन ने लिखा है—

वीजस्य प्लवनं न स्यात् यदि मूत्रञ्च फेनिलम्।
पुमांन्यात्लक्षणै रेते विपरीतैस्तु षण्डकः॥

अर्थात् यदि वीज पानी में डालने से न डूवे और पेशाव मे झाग उठे तो उसे दोष रहित समझना चाहिये।

हकीमी पुस्तक 'इलाजुल गुर्वा' मे लिखा है कि दो मिट्टी से भरे हुए गमलों में गेहूँ या जौ के सात-सात दाने डाल दो। फिर उन गमलों मे स्त्री-पुरुष अलग-अलग सात दिन तक पेशाव करें। जिसके गमले मे दाने उग जायँ वह वाँझ नहीं है और जिसमें न उगें उसे वाँझ समझना चाहिए।

सगम के समय समस्त शुक्र वाहर निकल जाता है, इस कारण गर्भ स्थिर नही होता। ऐसी स्थिति में योनिद्वार में शुक्र के प्रवेश करते ही साव-धानी से नितम्ब देश ऊँचा कर जाँघ को छाती की ओर झुका रखने पर शुक्र का वाहर निकलना रुक जाता है।

वाँझ के प्रकार—(१) जन्म-वन्ध्या, (२) मृत-वन्ध्या और (३) काक-वन्ध्या।

जन्म-वन्ध्या उसे कहते हैं जिसे जन्मभर सन्तान ही न हो। जिसे होती है, पर होकर मर जाती है उसे मृत-वन्ध्या कहते हैं तथा जिसे एक सन्तान होकर पुनः सन्तानोत्पत्ति न हो उसे काक-वन्ध्या कहते हैं। डाक्टर भट्टाचार्य का कहना है कि :—

'The cause of it is more often present in the male than in females.,

चिकित्सा

नेट्रम फास २००x या ३ x—रोगिणी शोकमय हो, जाग्रत होने पर उसको ज्ञात हो कि कोई अजनवी मनुष्य कमरे में है, जिह्वा का पिछला भाग सुनहरा। मद्य, मसालेदार पदार्थ की इच्छा हो, रोटी-मक्खन अच्छे न लगते हों। भोजन करने के दो-ढाई घण्टे पश्चात् उदर में दर्द हो जाता हो। मूत्र का रोकना कठिन प्रतीत होता हो, प्रातःकाल को चित्त उदास रहता हो। मासिकधर्म यथार्थ रूप से न होता हो, मूर्च्छा सम्पूर्ण दिन रहती हो, निद्रा न आती हो।

नेट्रम म्यूर ३x या २००x—रोगिणी चञ्चल हो, मेल-जोल से घृणा रखती हो, अलग, अकेला रहना पसन्द हो, गृह के काम-काज की भी कुछ चिन्ता न हो। हठीली हो, उपद्रव करने वाली हो, उत्साह, साहस से अप्रसन्न हो। प्रातःकाल को मुख का स्वाद कड़वा रहता हो, अजीर्ण रहता हो अथवा पानी की भाँति रजोधर्म होता है। मासिक-धर्म देर से होता हो या किसी कारण से रुक गया हो, प्रदर, नींद अधिक आती हो, स्वप्न मे व्याकुलता हो।

नेट्रम सल्फ ३०x—जब कुचों की ढेपुनियाँ भीतर भी ओर खिन्ची हुई हों। मासिकधर्म शीघ्र और न्यून आता हो, रोगिणी व्याकुल रहती हो।

ज्ञातव्य -हर तीन औषधियों में से दो औषधियाँ नीचे लिखे लक्षण ढूँढ़कर मासिकधर्म से छुटकारा पाने के पश्चात् प्रातःकाल और सायकाल उष्ण जल के साथ सेवन कराना चाहिए। प्रत्येक मास में १२ दिन सेवन

करना आवश्यक है। उपर्युक्त नियम के अनुसार सम्भोग करना चाहिए। कम से कम एक वर्ष तक ऐसा करने के पीछे निराश न होना पडेगा।

अपथ्य—वादीकारक पदार्थ; खट्टी, वुरी वस्तुएँ, भिण्डी, अरुवी, आलू, खुरफी, पालक इत्यादि।

पथ्य—मूँग-अरहर की दाल, करैला, रोटी, नानपाव, विस्कुट, मास, सेव, खुवानी, दुग्ध, मुनक्का।

वाधक वेदना

(Dysmenorrhoea)

ऋतुस्राव के समय वहुत दर्द होने को ऋतुशूल या वाधक वेदना कहते हैं। सर्दी लगना, जरायु प्रदाह, डिम्बकोष की वीमारी, कब्जियत, जरायु-ग्रीवा के पथ का सकुचित होना इत्यादि कारणों से यह रोग होता है। इस रोग के होने पर पीठ, कमर, जाँघ, जरायु आदि स्थानों में दर्द और तलपेट मे प्रसव वेदना मालूम होती है। ये शिकायतें ऋतुस्राव के पहले या ऋतुस्राव वन्द होने के समय शुरू होती हैं और दो एक दिन या ऋतुस्राव होने तक मौजूद रहती हैं। जव तक यह रोग रहता है तव तक स्त्रियों को प्रायः वच्चे नहीं होते।

चिकित्सा

फेरम फास ३x—ऋतु के समय रक्त की अधिकता, चेहरा लाल, नाड़ी वहुत तेज, स्राव चमकीले लाल रंग का होता है, योनि सूखी और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता। ऋतु-समय अजीर्ण, खाई हुई चीज की कै होती है और उसका स्वाद खट्टा होता है। तीन सप्ताह का अन्तर देकर ऋतुस्राव होता है और आर्त्तव के साथ तलपेट और नितम्बों में दवाव और भार मालूम होता है तथा माथे के वीच में दर्द होता है; झिल्ली निकलने वाला ऋतुस्राव। अगर प्रत्येक वार ऋतुस्राव के समय फेरम फास लवण के ये ऊपर लिखे लक्षण दिखाई दें, रजःस्राव होने

के एक सप्ताह पहले फेरम फास का सेवन करने पर रोगिणी की प्रगति होती दिखाई देती है, यह दवा प्रतिपेधक का भी काम करती है। कैली फास के साथ पर्याय-क्रम से सेवन पर बहुत फायदा होता है।

कल्केरिया फास ६x—जिन रोगिणियों की पेशियाँ सकुचित और शिथिल रहती हैं तथा जो दुबली-पतली रहती हैं, उनके रजःविकार में यह फायदा करती है। यह ऋतु-शूल जवानी में सावधान न रहने के कारण होता है। ऋतु के पहले और ऋतु के साथ दर्द, प्रसव के दर्द की तरह, सिर-दर्द, सिर में चक्कर आना, माथे में टपक का दर्द, ऋतु के समय काम की अधिकता, किसी तरह भी रति-इच्छा की तृप्ति नहीं होती, ऋतु के बाद बहुत कमजोरी और सुस्ती, रोगिणी हमेशा लेटे रहना चाहती है, उठने और चलने-फिरने से उसे बहुत तकलीफ होती है; वात धातु वाली स्त्री। जिन युवतियों को बँधे हुए ऋतु के समय के पहले ही ऋतुस्राव होता है और जिन प्रौढ़ाओं का ऋतु का समय पीछे हटता जाता है उन दोनों के लिए ही कल्केरिया फास फायदेमन्द है।

मैग्नेशिया फास६x—यह ऋतु-शूल की सबसे बढ़िया दवा है। मरोड़ की तरह दर्द रहता है; ऋतु के कुछ पहले ही अथवा ऋतुस्राव के साथ-साथ दर्द होता है, चलने-फिरने पर दर्द बढ़ जाता है और गरम सेंक देने पर घटता है। झिल्ली निकलने वाला ऋतु शूल, इस नमक को गरम पानी में घोलकर देने पर बहुत जल्द फायदा होता है। यह नमक थोड़ा-सा लेकर गरम पानी में घोल लेना चाहिए और उसमें कपड़ा तर कर रोगिणी के पेट पर जरायु की जगह लगा देना चाहिए। इससे दर्द तुरन्त दब जाता है। रोगिणी जितना गरम सहन कर सके, उतना ही गरम-गरम लगाना चाहिए और गर्मी बनी रहे इसलिए ऊपर आयल्ड सिल्क अथवा मोटा फ्लानेल लपेट देना चाहिए।

कैली फास ६x—खून की कमी वाली रोगिणी, स्नायुकृच्छ्रता, स्त्रियों का ऋतु-शूल। ऋतुरोध या ऋतुस्राव होने के साथ सुस्ती,

कमजोरी और स्नायविक दुर्बलता; बहुत थोड़ी मात्रा मे ऋतुस्राव अथवा बहुत ज्यादा मात्रा में गहरे लाल रङ्ग का या काली आभा लिये ऋतुस्राव, ऋतुस्राव में कभी-कभी तेज गन्ध होती है। स्नायविक प्रकृति की रमणियों का ऋतु, समय के पहले ही ऋतुस्राव हो जाया करता है, परिमाण मे भी ज्यादा होता है या ऋतुस्राव अनियमित रहता है। देर से होता है बहुत थोड़ी मात्रा मे और बदबूदार स्राव होता है। इसके साथ ही तलपेट में भार मालूम होता है। जीभ पर पीली मैल चढ़ी रहती है। ऋतु के पहले पति सहवास की बहुत अधिक इच्छा रहती है।

नेट्रम म्यूर ३x—मासिक ऋतुकाल के पहले ही ऋतुस्राव हो जाता है, स्राव बहुत ज्यादा होता है, इसके साथ ही बहुत तेज दर्द होता है, ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फट जायगा, बार-बार सिहरावन और कँपकँपी मालूम होती है। ललाट मे दर्द आरम्भ होकर ऋतुस्राव के समय बहुत उदासी रहती है और नित्य सवेरे सिरदर्द होता है। सिर दर्द और कमर मे दर्द, उठने में तकलीफ होती है, कड़ी जगह में सोने पर आराम मालूम होता है।

युवतियों का ऋतुरोध अथवा बहुत अधिक समय का अन्त देकर थोड़ा-सा ऋतुस्राव, उदर में दर्द, खाई चीज का वमन, कमजोरी और बेहोशी पैदा हो जाने का लक्षण, खट्टी चीज खाने की इच्छा, पर मांस, रोटी या रसोई खाने की इच्छा न हो, कब्जियत या पर्याय क्रम से कब्जियत और अतिसार।

कैली फास ३x—बहुत देर से और बहुत थोड़े परिमाण मे ऋतुस्राव, तलपेट भरा और उसमें भार मालूम होना, सिर दर्द, पीली लेप चढी जीभ 'मेट्रोरेजिया' अर्थात् 'रजसाधिक्य'।

साइलिसिया ६x—ऋतु के समय समूचा शरीर बर्फ की भाँति ठढा हो जाता है। कब्जियत, मल कुछ निकलता और फिर भीतर चला जाता

है, ऋतुस्राव बहुत तेजी लिये होता है, कमर में दर्द और पक्षाघात की तरह मालूम होता है। ऋतुस्राव आगे समय बढ़ाकर होता है, परन्तु परिमाण में थोड़ा होता है, शायद ही कभी ज्यादा मात्रा मे होता हो। स्तन से दूध पिलाने के समय बहुत दिनों का पुराना ऋतुस्राव।

भगन्दर
(Fistula in-ano)

मलद्वार के ठीक चारों तरफ एक तरह का नासूर होता है, जिसे भगन्दर कहते हैं। इस जाति का नासूर अधिकतर स्वास्थ्य भङ्ग होने पर हुआ करता है।

यह तीन प्रकार का होता है—

(१) कम्पलीट फिश्चुला, (२) ब्लाइण्ड इण्टरनल फिश्चुला और (३) ब्लाइण्ड एक्स्टरनल फिश्चुला।

गुह्यद्वार के भीतर (म्युकस मेम्ब्रेन में) क्षय या घाव होता है और वह क्रमशः बढकर चमडे के पास आ जाने से फिश्चुला हो जाता है। गुह्यद्वार के कैन्सर से फिश्चुला हो जाता है। अतिसार, अर्श, पेचिश इत्यादि रोगों मे लगातार वेग देते रहने की वजह से मलद्वार की आकुञ्चक पेशी का चालन होता है और उससे फिश्चुला हो जाता है।

चमड़े के ऊपर बारीक छेद से हर वक्त पीव या पीव सरीखी एक तरह की तरल मवाद निकला करती है।

चिकित्सा

फेरम फास ६x—कैली म्यूर ६x—प्रारम्भ में देना चाहिये, यदि न बैठे और पकने के योग्य न हो तो आटे की पुल्टिस बाँध कर साइलिसिया २x उस पर डालकर गर्म कर बाँध देना और साइलिसिया खिलाना चाहिये। इसके सेवन से शीघ्र फोड़ा फूट जायगा। मौजूदा मवाद को निकालने और नये मवाद को बनने से रोक देने के लिए कुछ

दिनों तक कल्केरिया सल्फ ६x खिलाना चाहिए। जब मवाद चू जावे उस समय कुछ दिनों तक कल्केरिया सल्फ २००x देना चाहिये। इसके उपरान्त साइलिसिया २००x देना चाहिए। हर दो औषधियाँ सम्पूर्ण निरोगिता के योग्य विश्वसनीय पाई गई हैं।

नोट—इन दो औषधियों में से जो खिलाई जाये, उसी का लोशन या मलहम लगाना चाहिये।

मलेरिया ज्वर
(Malarial Fever)

डॉक्टर फिलिप एच० मैनसरवर [लन्दन] लिखते हैं—

'The term Malaria is applied to certain fevers which are produced by protozoa parasites belonging (zoologically to the class sporozoa. These parasites are peculiar to man, who consitutes their intermediary host, and in whose red blood carpuscles they live and multiply, and may give rise to a periodic fever associated with anaemia, enlargement of spleen and the deposit of black pigment in that organ and elsewhere.'

तात्पर्य यह है कि यह रोग जीवाणु के द्वारा होता है। एनीफिलिस नामक एक तरह के मच्छड की देह में यह जीवाणु पाया जाता है। यह मच्छड मलेरिया को मनुष्यों में पहुँचाता है। जब यह किसी भले-चगे आदमी को काटता है तो मलेरिया का जीवाणु उस मनुष्य के रक्त के लाल कण में घुस जाता है और बहुत ही थोड़े दिनों में समूचा खून दूषित कर देता है।

डॉ० एस. एम. वारिस एम. डी. सी. एस. (एडिनवरा) कहते हैं—

'Malaria is a disease of parasitical origin characterized by splenic enlargement, brief febrile attacks which recur periodically, malanaemia and a tendency in protracted cases to irregular fever and extreme anaemia.'

कहने का मतलव यह है कि इस रोग से पीडित रहने पर रोगी की तिल्ली और यकृत वढ़ जाते हैं तथा और भी वहुतेरी शिकायतें पैदा हो जाती हैं। ज्वर अनियमित ढङ्ग से आता है तथा रक्त की वहुत कमी हो जाती है।

जिस भाँति इस शब्द की वनावट है उसका अर्थ तो स्वय जाहिर है। Mala और Aria दो इटालियन शब्दों से यह वना है जिसका अर्थ है दूषित हवा। इसे विषम ज्वर, कम्प-ज्वर, जूडी बुखार आदि कई नामों से पुकारते हैं।

नीची और तर, सीड़ भरी जमीन में रहना, अनियमित आहार-विहार, वहुत परिश्रम, मादक पदार्थों का सेवन, रात्रि मे ठण्ड और ओस लगना आदि इसके कारण हैं।

कभी-कभी रोगी को बुखार चढकर पूर्ण रूप से उतर जाता है और कुछ समय का अन्तर देकर पुनः चढ़ता है। ऐसे बुखार को सविराम ज्वर (Intermittent Fever) कहते हैं। कभी ज्वर अच्छी तरह से नहीं उतरता, केवल कुछ समय के लिए उसकी तेजी कम हो जाती है और पुनः चढ जाता है, इसे स्वल्पविराम ज्वर (Remittent Fever) कहते हैं।

पहले जाडा लगता है, फिर बुखार चढ़ता है, वाद में पसीना आकर ज्वर उटता है। यह बुखार कभी २४ घण्टे में एक वार, कभी

एक दिन का अन्तर देकर, कभी दो दिन के अन्तर से, कभी तीन दिन के अन्तर से आता है। ऐसे बुखार एकजरा, दुजरा, तिजरा और चौथिया पुकारे जाते हैं।

चिकित्सा

फेरम फास ६x या ६, नेट्रम म्यूर ६x या ६—जब ज्वर चढा हुआ हो सिर में दर्द हो, प्यास अधिक हो।

फेरम फास ६x या ६, कौल म्यूर ६x या ६—जब ज्वर चढ़ा हो, अजीर्ण हो, सिर मे दर्द होता हो और बारम्बार ठण्ड प्रतीत हो।

फेरम फास ६x या ३, मैग्नेशिया फास ३x या ६—जब ज्वर हो, सिर मे दर्द हो, हाथ-पैर में अकड़न हो।

फेरम फास ६x या ६, कैलि सल्फ ६x या ६—जब ज्वर हो, सिर में दर्द हो, व्याकुलता हो, कै आती हों और उबकाइयाँ आती हो, कभी दस्त भी प्रारम्भ हो जाते हों।

फेरम फास ६x या ६, साइलिसिया ६x या ६—जब ज्वर हो, सिर में दर्द हो, पसीना बहुत आता हो, दुर्बल कर देने वाला हो, ज्वर उतारने के लिये फेरम फास मुख्य औषधि है। दूसरी औषधि लक्षण मिलाकर देनी चाहिये। जब निर्बलता हो तो कैलि फास ६x या ६ देना चाहिए। यदि नाड़ी कमजोर हो जाये अथवा कुछ देर पश्चात् दब जाये तो साइलिसिया ६x, काली फास ६x परिवर्तन कर अवश्य देना चाहिए।

यदि कोई रोगी एलोपैथिक डाक्टर के यहाँ से आवे और उसको ज्वर चढा हो तो फेरम फास ६x, नेट्रम म्यूर ६x या ६ देना चाहिये, ज्वर रोकने के प्रति नेट्रम सल्फ ६x या ६ और नेट्रम म्यूर ६x या ६

हर दो औषधियो को पर्याय-क्रम से देना चाहिये, मुख्यतः जब कि ज्वर चढने का समय बारह बजे से पहले हो।

नेट्रम म्यूर ६x या ६, कैलि म्यूर ६x या ६—जब ज्वर न हो केवल रोकना स्वीकार हो, पहले कुनेन दी गई हो। इन औषधियों में भी ज्वर चढने का समय १२ बजे के पूर्व है।

नेट्रम सल्फ ३x, साईलिसिया ३x—जब ज्वर सर्दी से आता हो और दिन के बारह बजे के बाद चढता हो, व्याकुलता, पित्त का वमन; दस्त हो जाते हों; अति ठण्ढक, पसीना बिना प्यास, पसीना होने से ज्वर कम न हो।

नोट—यदि ज्वर पुराना हो गया हो तो जो औषधि नियत करना चाहते हों उसका ६० न० या २०० न० सेवन कराना चाहिये।

अपथ्य—खराब, देर में पचने वाली; ठण्ढी, खट्टी वस्तुएँ, आलू, अरवी सेवन न करना चाहिए।

पथ्य—मूँग की दाल, रोटी, दुग्ध, चावल, पोदीना की चटनी, ज्वर उतर जाने पर देना चाहिये। ज्वर की दुर्बलता के लिए दुग्ध-साबूदाना खिलाया जा सकता है।

मस्तिष्क में पानी भर जाना

(**Hydrocephalus**)

यह रोग विशेष रूप से ४ मास के बालकों को होता है। दिमाग के पर्दे में पानी भर आता है, सिर बड़ा तथा दुर्बल हो जाता है। बालक नाक, होंठ नोचता है। निद्रा बहुत कम हो जाती है।

चिकित्सा

कल्केरिया फास ६x—जब मस्तिष्क में जल भर आता है, उसके लिए यह मुख्य औषधि है, सिर के जोड़ चिपटे, जिस वंश में लड़कों को मस्तिष्क शोथ हुआ करता है, माता को यह औषधि सेवन कराने से यह रोग नहीं होता है।

कैलि म्यूर ६x, फेरम फास ६x—पश्चात् में यह औषधि काम मे आती है।

नेट्रम सल्फ ३x—मस्तिष्क के निम्न भाग मे ऐसी पीड़ा प्रतीत हो कि खोपड़ी को दवाये हुए है और चोट लगने के पश्चात् मस्तिष्क सूज जाय।

फेरम फास ३x—मस्तिष्क शोथ की प्रथमावस्था में ज्वर प्रवल हो, नाड़ी तीव्र हो।

मुँहासा
(Puberty Boils, Acne)

जवानी के उठने के समय स्वास्थ्य खराव होने और ऋतु की गड़वड़ी होने की वजह से युवक-युवतियों के शरीर की गाँठें फूलकर, ज्यादातर चेहरा, नाक और गले में फुन्सियाँ या छोटे-छोटे खीलदार फोडे पैदा हो जाते हैं, इन्हे मुँहासा कहते हैं।

चिकित्सा

कल्केरिया फास ६x—मुख्य दवा है।

कैलि म्यूर ३x—चेहरा और गर्दन पर व्रण, छूने से दर्द, चर्वी मिले खाद्य पदार्थ सहन नहीं होते, गुरुपाक चीजें खाने पर व्रण अधिक निकलते हैं, व्रण सूख जाने पर गेहूँ की भूसी की तरह उस पर से छाल निकला करती है।

साइलसिया ३x—दोनों तरह के व्रणों की ही यह श्रेष्ठ दवा है। कब्जियत, व्रण पकने और दाग पड़ने की तैयारी, रति-लिप्सा वहुत अधिक, आँखों में वार-वार अँजनी या गुहौरी हुआ करती है, कष्ट के समय व्रण में यह ज्यादा फायदा करता है। इसकी निम्न शक्ति का प्रयोग कर आराम होने के वाद उच्चतम शक्ति की एक मात्रा प्रयोग कर देने से भविष्य में मुँहासे निकलने की सम्भावना नहीं रहती और रोगी का धातुदोष संशोधित हो जाता है।

कल्केरिया सल्फ ३x—पीव भरे व्रण; एक-एक मुँहासा बहुत दिनों तक कष्ट देता है।

नेट्रम म्यूर ३x—छात्र और छात्राओं के चेहरे पर, खासकर गाल मे और कपाल में वार-वार मुँहासे निकलना और इसके साथ ही सिर दर्द।

अपथ्य—माँस, मछली, प्याज, साबुन, लहसुन और गरम मसाला।

मूत्र-पथरी

(**Urinary Calculus**)

शरीर की स्वस्थ दशा में हमारे शरीर से वैसे पदार्थ वाहर निकला करते हैं जिनकी शरीर में पोषण के लिए जरूरत नहीं पड़ती, परन्तु परिपोषण कार्य में जब गड़बड़ी पैदा हो जाती है तव उसका उल्टा परिणाम होता है। उस समय एक साफ शीशी में थोड़ी देर तक पेशाव रखने पर यदि ईंट के चूर या वालू के कण की तरह उसके नीचे कुछ जम जाये तो समझना चाहिए कि मूत्र पथरी रोग हो गया है। इस समय वहुत ही छोटे वालू के कण (Sand) के समान या सरसों के दाने की तरह पत्थर के कण (Gravel) की तरह सेम के वीज जैसे पत्थर के टुकड़े (Stone) की तरह छोटी, वड़ी, मझोली, वहुत तरह की पथरी मूत्रपिंड-मसाना (Kidneys) या मूत्राशय (Bladder) मे दिखाई देती हैं।

औरतों की अपेक्षा मर्दों में यह वीमारी ज्यादा पाई जाती है।

वृक्क से मूत्राशय मे पथरी उतरने के समय पीठ, उरु, पुट्ठा, अण्डकोष प्रभृति में वहुत दर्द पैदा हो जाता है।

चिकित्सा

कल्केरिया फास ३x—अश्मरी होना रोकने के लिए यह श्रेष्ठ दवा है। वातग्रस्त रोगी को यदि पित्तशूल हो जाता है तो इस लवण के

साथ पर्याय-क्रम में नेट्रम सल्फ का प्रयोग करने पर पूरा-पूरा फायदा होते देखा जाता है।

मैग्नेशिया फास ६x—पित्त-शूल यन्त्रणा रोकने वाली महौषधि है।

नेट्रम फास ६x शरीर में अम्लाधिक्य के कारण पथरी रोग होना।

मेनिञ्जाइटिस

(**Meningitis**)

मस्तिष्क या दिमाग ३ पर्दो से ढँका है। इन पर्दों को मस्तिष्क आवरक झिल्ली कहते हैं। इनमें ही जब प्रदाह हो जाता है तो उसे मेनि-ञ्जाइटिस या मस्तिष्क झिल्लीप्रदाह कहते है। इस रोग में प्रलाप की प्रधानता रहती है।

तेज बुखार, मस्तिष्क में तेज दर्द, लाल चेहरा, तेज नाड़ी, सुस्ती, बदहवासी इसके लक्षण हैं। इसका रोगी नींद में एकाएक जोर से चिल्ला उठता है और आँखे बन्द कर बड़बड़ाया करता है।

चिकित्सा

फेरम फास ३x—सब तरह के मस्तिष्क प्रदाह रोग की पहली अवस्था में, मेनिञ्जाइटिस की बीमारी में मस्तिष्क घटित ज्वर में, उत्ताप में तथा रक्त की अधिकता दूर करने के लिए यह बहुत उपयोगी है। नाड़ी के वेग और विकार तक इस दवा के द्वारा बहुत जल्द आरोग्य हो जाते हैं।

कैलीम्यूर ३x—रोग के दूसरे पर्याय में रस पैदा हो जाने के समय **फेरम फास** का प्रयोग करने के बाद अथवा उसके साथ ही पर्याय-क्रम से इसका व्यवहार होता है।

नेट्रम सल्फ ३x—माथे में चोट लगने के बाद पित्त घटित या मस्तिष्क घटित उपसर्ग, समूचे माथे में रक्त की अधिकता, माथे के पिछले भाग में तेज दर्द, मस्तिष्क के तलदेश में भयानक दर्द, भार मालूम होना, चर-चर

कर डालने की तरह तकलीफ। डाक्टर कैण्ट कहते हैं—"आधुनिक कशेरुका घटित मेनिन्जाइटिस बीमारी के लिए यदि मेटेरिया मेडिका की सभी दवाओं मे से कोई मुझे एक दवा छाँट लेने के लिए कहे तो मैं नेट्रम सल्फ लवण छाँट लूँगा, क्योंकि अधिकाश स्थानों मे इससे आक्रमण रुकता है और इससे रोगी की जान वच जाती है। अगर लक्षण मिल जाते हैं, तो यह आश्चर्य रूप से रोग की प्रगति को नष्ट कर डालता है। इस बीमारी में रक्त की जो अधिकता दिखाई देती है, वह नेट्रम सल्फ से तुरन्त दवती देखी गयी है।

कल्केरिया फास ६x—Hydrocephaliod अर्थात् मस्तिष्क की दवा हो जाने पर, खुला हुआ ब्रह्मरध्र, माथे का शिखर देश समतल या उठा हुआ, इस तरह के आकार की अवस्था में यह सबसे पहली और सबसे श्रेष्ठ दवा होती है। फेरम फास या कैलि फास लवण के साथ पर्याय क्रम से इसका प्रयोग किया जाता है। दुबली-पतली देह, हाथ-पैर ठण्ढे, जगह-जगह सुन्न पड़ जाना, रात में अधिक पसीना होना, जीवनी शक्ति का अवसन्न हो जाना।

मैग्नेशिया फास ६x—मस्तिष्क की बीमारी के साथ अगर अकडन हो जाय तो इससे वहुत लाभ होता है। दूसरी-दूसरी निर्देशित दवा के साथ पर्याय-क्रम से इसका प्रयोग होता है।

मोतियाबिन्द

(Cataract)

वहुमूत्र, बुढ़ापा, शारीरिक दुर्बलता, चोट आदि कारणों से यह रोग होता है। इसमें पहले सब चीजें धुँधली दिखाई देती हैं, बाद को ऐसा मालूम होता है कि इन सब चीजों पर एक जाल-सा बिछा हुआ है। इन शिकायतों को लोग धुन्धी या जाला कहते हैं। इसके बाद रोग बढ़ने पर दृष्टि-शक्ति एकदम लुप्त हो जाता है और रोगी अन्धा हो जाता है।

कल्केरिया फ्लोर ३x—धुँधली दृष्टि, मोतियाबिन्द तेजी से बढता जाता है। इस नमक से पर्दा फट जाता है। उपदश वाले धातु मे ज्यादा फायदेमन्द है। कड़ी वस्तु सचयता मे लाभदायक है।

कल्केरिया फास ३x—माथे के दाहिने अश मे तकलीफ, आँखों के चारो ओर दर्द और यन्त्रणा, आँखों मे थकान-सी मालूम होना, आँख अँकड़ी और क्षीण होना, सिर मे चक्कर आना। ये सब लक्षण इसके सेवन से दूर हो जाते हैं। इस रोग की यह उत्तम दवा है।

कैलि म्यूर ३x—कोमल सफेद या भूरी चर्वी जमा होना।



मिरगी या अपस्मार

(Epilepsy)

इसका वास्तविक कारण अभी तक ज्ञात नहीं। यह आवेश सम्बन्धी बीमारी है। यह किसी यन्त्र की बीमारी नहीं। एकाएक बेहोश हो जाने के बाद अकड़न पैदा होकर यह रोग पैदा होता है। इसके पूर्व का लक्षण है—सारे शरीर मे कीड़ा रेंगने की तरह अनुभव होना, पर कितनी ही बार ये लक्षण प्रकट भी नहीं होते।

दुःख, शोक, भय, क्रोध आदि मानसिक आवेग, अधिक इन्द्रिय-सेवन, हस्तमैथुन आदि दुराचार, मादक पदार्थों का सेवन और माता-पिता को यह रोग होना आदि इसके उत्तेजक कारण हैं।

दाँती बँध जाना, श्वासकष्ट, चेहरा बिगड जाना, आँख की पुतली का ऊपर चढ जाना और घूमते रहना, आँखे खुली रहना, मुँह से फेन निकलना आदि लक्षण प्रकट होते हैं। ५ से २० मिनट तक और कभी कुछ अधिक समय तक यह अवस्था रहती है। कभी-कभी खींचन आदि बन्द हो जाने पर भी रोगी होश मे नहीं आता और कुछ समय तक चुपचाप नींद मे पड़े रहने के बाद स्वस्थ होता है। पेड़ पर चढने वालों को पेड़ पर भी मिरगी

आती है और वे नीचे गिर कर मर जाते हैं या उनके हाथ-पैर टूट जाते हैं।

चिकित्सा

कैलि फास ३x—दौरे में आकृति पर निर्बलता छा जाय, दौरे के पश्चात् अत्यन्त अधिक अकडन हो।

कैलि म्यूर ३x—यह इस रोग की मुख्य औषधि है, मुख्यतः जब दाने दब जाने के कारण दौरे होते हों। यह औषधि इस रोग को जड से दूर करने मे सहायता करती है तथा तन्तुओं को ठीक कर देर में अपना प्रभाव करती है। अतः इसको कुछ दिनों तक सेवन करना चाहिये।

नेट्रम फास ३x—अधिकतर जब पेट में कीड़े पड़ जाने के कारण दौरे आने लगते हैं तब यह औषधि दूसरी औषधियों के साथ दी जाती है।

नेट्रम सल्फ ६x—चोट लग जाने के कारण (मुख्यतः सिर मे) मिरगी के दौरे।

फेरम फास ३x—रक्तप्रवाह सिर की ओर होकर दौरा हो।

मैग्नेशिया फास ३x—बुरी आदतों के कारण मिरगी। उन बुरी आदतों को छोड देना चाहिये।

साइलिसिया ६x—रात्रि को मुख्यतः शुक्ल पक्ष के आरम्भ में मिरगी के दौरे। दौरे के प्रथम शीत प्रतीत हो, दौरे कौड़ी के निकट से उठते जान पड़ें, स्नायु निर्बल हों।

नेट्रम म्यूर २००x—मुँह से झाग आना।

यकृत-प्रदाह

(Hepatitis)

क्रोध और शोक आदि मानसिक उत्तेजना, चोट लगना, कै और दस्त करानेवाली तेज दवाओं का सेवन, शराब पीना आदि कारणों से

यह रोग होता है। यकृत पेट मे दाहिनी ओर पसलियों के नीचे स्थित है। इस रोग के होने पर उस स्थान पर दर्द और कनकनी होती है। हाथ से थपथपाने या दवाने पर; जोर से साँस छोड़ने पर और खाँसी आने पर दर्द होना, दाहिने कन्धे और हाथ मे दर्द, मल का रङ्ग कीचड़ की तरह आदि लक्षण होते हैं।

प्रारम्भिक स्थिति में थोड़ा पेशाब, बहुत प्यास, जाड़ा लगकर ज्वर आना, मिचली और कै रहती हैं। बीमारी साधारण होने पर कभी-कभी ज्वर नहीं भी रहता या कम रहता है। प्रदाह शीघ्र आराम होने पर बहुत-से फोडे के रूप में परिणत हो जाता है और फोडा फटने पर कै, थूक और मल के साथ पीब निकलती है।

कल्केरिया सल्फ ६x—यकृत के निकट दाहिनी ओर पेडू में पीड़ा, निर्बलता, मतली, उदर में पीडा।

कैलि म्यूर ६x—यकृत में पीड़ा, यकृत का कार्य ठीक न हो, जिह्वा पर सफेद मैल हो, काँवर।

नेट्रम फास ६x—यह औषधि नीची शक्ति में यकृत के कड़े हो जाने में तथा इस प्रकार के मधुमेह मे जिसमें कि यकृत विकार से रोग आरम्भ हुआ हो तथा दाने अधिक निकलते हों, गुणदायक होती है।

नेट्रम म्यूर ६x—काँवर; कोष्ठबद्धता, आलस्य, यकृत में पीड़ा, प्यास, जिगर और तिल्ली का बढ़ना, रक्तहीनता।

नेट्रम सल्फ ६x—वमनेच्छा के दौरे, ताप की अधिकता, यकृत में दाह, वमन में पित्त गिरे, जिह्वा पर हरी मैल, आँख के दीदों में पीलापन, यकृत में शोथ, पीड़ा, अधिक मानसिक काम करने के कारण यकृत में कष्ट। जिगर रोग, कामला इत्यादि की उत्तम औषधि है।

फेरम फास ६x—यकृत-शोथ की दशा में ज्वर, पीड़ा, शुष्क प्यास।

साइलिशिया ६x—यकृत में औधा फोड़ा हो, यकृत में पीव पड़ने के कारण टपकन हो।

यक्ष्मा

(Tuberculosis)

यह संक्रामक बीमारी है। इसके रोगी के थूक और तन्तुओं मे एक तरह के जीवाणु रहते हैं। ये जीवाणु गाँठों के आकार के होते हैं। भले-चंगे आदमियों के शरीर में प्रवेश कर जाने पर वहाँ के तन्तुओं में एक तरह की गोटियाँ पैदा हो जाती हैं। उस समय उसे गुटिका दोष या यक्ष्मा कहते हैं। शरीर के भीतर वाले किसी भी अग में गुटिका दोष हो सकता है; परन्तु इस रोग में जो रोगी दिखाई देते हैं उनमें फेफड़ा आक्रान्त होने वाले गुटिका रोगियों की सख्या ही अधिक होती है। इस रोग को लोग थाइसिस के नाम से भी पुकारते हैं।

अधिक मानसिक परिश्रम, खराब भोजन, अधिक स्त्री-प्रसंग, हस्तमैथुन, अधिक शराब पीना, पारे का अपव्यवहार, गर्मी या कण्ठमाला दोष होना आदि इस रोग के कारण होते हैं।

इस बीमारी की गाँठे मस्तिष्क, जरायु, हड्डी, पाकाशय, आँत, यकृत और फेफड़े आदि में पैदा हो सकती हैं। ये जिस स्थान मे पैदा होती हैं वहाँ से क्षय की बीमारी शुरू होती है।

इस रोग का आक्रमण वहुत धीरे-धीरे और गुप्त रूप से होता है। आरम्भ में वीमारी का अन्दाज मुश्किल से होता है। पहले सूखी खाँसी, वाद में तर, कफ में पीव या खून, शरीर का क्षय, शाम के वक्त हल्का बुखार और रात्रि में पसीना इसके प्रधान लक्षण हैं। अजीर्ण, मन्दाग्नि, आलस्य, गला वैठना, चलने पर हाँफना आदि लक्षण भी धीरे-धीरे दिखलाई पड़ते हैं।

चिकित्सा

फेरम फास ३x—ज्वर या बीच-बीच में चेहरे का गरम भाव और चेहरा लाल रङ्ग का हो जाता है। श्वास मे कष्ट, बहुत अधिक सूखी खाँसी, श्वास नली का प्रदाह, वक्ष मे दर्द, निकले हुए बलगम के साथ खून का छींटा। बहुत अधिक रक्तोत्कास के लिए भी फेरम फास उत्कृष्ट दवा है। फेनयुक्त चमकीला लाल रक्त इसकी विशेषता है।

कल्केरिया फास ६x—धीमा-धीमा क्षय रोग। दुबलापन की प्रधानता रहने पर यह दवा बहुत फायदा करती है। इसके ही साथ दूध, मक्खन और शर्करा प्रधान भोजन देना चाहिए। क्षय रोग में ताकत बनाये रखने के लिए दूसरी दवाओं के साथ पर्यायक्रम से इसका प्रयोग लाभदायक है।

कल्केरिया सल्फ ६x—निकला हुआ श्लेष्मा पीब मिला, मास के धोये पानी की तरह रंग का खून मिला श्लेष्मा, लगातार बलगम निकला करता है। बलगम निकलने मे कोई तकलीफ नहीं होती।

नेट्रम म्यूर ६x—क्षय रोग में पानी की तरह साफ तरल और फेन भरा या रक्त मिला श्लेष्मा, सामान्य हिलने-डुलने पर भी रोगी को बहुत कमजोरी मालूम होती है और वह खाट से लग जाता है। वक्ष मे पतले श्लेष्मा की वजह से घर-घर आवाज होती है। क्षय-रोगी की पुरानी खाँसी के साथ फेन भरा बलगम निकलना। समुद्र के किनारे के जहाँ की हवा में लवण की मात्रा अधिक रहती है, जिन रोगियों की अवस्था अवनति की ओर अग्रसर होती जाती है, उनके लिए नेट्रम म्यूर उपयोगी दवा है। तेज रक्तोत्कास रोकने के लिए नेट्रम म्यूर और इसके साथ पर्याय क्रम से फेरम फास का प्रयोग करने से तुरन्त फायदा दिखाई देता है। उपदश के अनुसार लवण द्रव मल की राह से प्रयोग करने पर रक्तोत्कास के कारण पैदा हुई कमजोरी और पतनावस्था शीघ्र दूर हो जाती है।

साइलिशिया ६ x—२०० और १००० शक्ति—क्षय रोग की यह एक श्रेष्ठ दवा है। इस वीमारी के प्रायः सभी लक्षणों खास कर रोगी की अन्तिम अवस्था के सभी उपसर्गों के लिए साइलिसिया उपयोगी है। गाढा, पीली आभा लिये हरे रङ्ग का वदवूदार पीव की तरह वलगम निकलना, इसके साथ ही रोगी के मुँह में एक मीठा वदस्वाद रहता है। सव समय वना रहने वाला हल्का पीत ज्वर, तलवे में जलन अनुभव होना, रात के समय माथे में अधिक पसाना, कब्ज वना रहता है। तलवे के पसीने में वहुत वदवू, ढीली, घर-घर शब्द करने वाली खाँसी, वहुत अधिक श्लेष्मा निकलना।

कैलि फास ६x—क्षय रोग में खाँसी के साथ श्लेष्मा निकलना, वलगम गले तक आकर फिर नीचे उतर जाता है, निकल नहीं सकता। ठढो खुली हवा की इच्छा होती है। शाम के वक्त सव उपसर्ग वढ जाते हैं, चर्म रूखा और सूखा।

कैली म्यूर ६x—गाढ़ा और सफेद श्लेष्मा निकलना, सफेद या पीली आभा लिये लेप चढ़ी जीभ। कण्ठनली में प्रदाह, श्वास में कष्ट और हृत्पिण्ड का तेजी से काँपना।

कैलि फास ६x—गहरी साँस नहीं ले सकता। तेज और हल्का श्वास-प्रश्वास, निकले हुए श्लेष्मा में सड़ी गन्ध आती है। सर्वांगीण दुर्वलता और पतनावस्था में कैली फास दवा से वहुत सरक्षण मिलता है। क्षय रोग की निद्राहीनता की यह वहुत वढ़िया दवा है।

नेट्रम सल्फ ६x—वक्ष में अधिक कमजोरी मालूम होना, खाँसी के साथ पीव मिला पीली आभा लिये हरे रङ्ग का श्लेष्मा निकलना, नेट्रम सल्फ के रोगी के वरसात के समय जलाशय के निकट रहने, तर घर में पानी में खड़े होकर काम करने, मछली खाने या पानी के पास की जगह में पैदा हुए फल या तरकारी खाने पर उसकी वीमारी वढ़ जाती है। उसके शरीर मे श्लेष्मा की अधिकता (Hydrógeniod Condition) मौजूद

रहती है। प्रमेह-दूषित धातु में भी नेट्रम सल्फ की विशेष क्रिया दिखाई देती है।

मैग फास और नेट्रम फास की डॉ० बोरिक ने बड़ी सराहना की है।

रक्त-वमन

(Haomatemesis)

पाकस्थली से खून ऊपर को उठकर वमन के रूप में मुँह से निकलता रहे तो उसे रक्त-वमन कहते हैं। यह कै कभी-कभी इतना अधिक होती है कि उससे मृत्यु तक हो सकती है।

पाकस्थली का कैन्सर, रक्ताधिक्य, पाकस्थली प्रदाह, औरतों का अनु-कल्प रजः, विषैली चीजें खाना आदि कारणों से रोग होता है।

प्रथम तो यही निर्णय करना आवश्यक है कि रक्त पाकस्थली से आ रहा है या फेफड़े से। पाकस्थली से जो खून आता है उसका खून मैला होता है, पर फेफड़े से निकला हुआ रक्त चमकीले लाल रंग का होता है। पाक-स्थली के रक्त में फेन नहीं रहता: फेफड़े के खून में फेन रहता है। पाकस्थली के खून में खाई हुई चीज मिली रहती है, परन्तु फेफड़े के रक्त में लार मिली रहती है। पाकस्थली का रक्त बहुत ज्यादा होता है, फेफड़ा का रक्त खाँसी के साथ बहुत थोड़ा निकलता है।

चिकित्सा

फेरम फास ६x, १२x—चमकीले लाल रङ्ग के खून की कै और खून मिलकर थक्का बँध जाये तो इस दवा का विशेष उपयोगिता के साथ व्यव-हार हो सकता है। माथे में खून इकट्ठा होना और चेहरा लाल।

कैली फासफोरिकम ६x, १२x—क्षीण, कमजोर और रक्तस्राव के रोगियों के पतले, काले रंग के रक्तस्राव में यह लाभदायक है। रक्त शून्य

रोगियों को वार-वार रक्तस्राव होने पर इसका फेरम फास के साथ पर्याय-क्रम से व्यवहार किया जाये तो वहुत फायदा हो सकता है ।

कैली म्यूरिएटिकम ६x, १२x—काला, थक्के-थक्के खून की कै होने पर यह लाभ करता है ।

नेट्रम म्यूरिएटिकम १२x, ३०x—पानी की तरह पतले अथवा हल्के लाल रग के खून की कै और जिस खून का थक्का नहीं वँधता है, उसमे यह विशेष लाभ करता है ।

कल्केरिया फासफोरिकम ६x—रक्तशून्य व्यक्तियों की खून की कै में यह लाभदायक है । वार-वार खून की कै होने पर फेरम फास के साथ पर्याय-क्रम से देने पर विशेष फायदा मिल सकता है ।

रक्तामाशय

(Dysentery)

डॉ० भट्टाचार्य लिखते हैं ।

It is a disease in which ulceration occurs in the large intestines (especially in the sigmoid flexure) as the result of bacterial infection. The germs commonly resposible for dysentery are two the amoeba coli and the bacillus dysenteria Hence there are two kinds of dysentery—'Amoebic' and 'Bacillary '

कहने का तात्पर्य यह है कि वड़ी आँतों में घाव वाले प्रदाह का नाम रक्तामाशय है । जीवाणु इस वीमारी की पैदाइश के खास कारण हैं । रक्तामाशय दो तरह का होता है—(१) 'अमीवा से पैदा हुआ रक्तामाशय और 'वैसीलस' से पैदा हुआ रक्तामाशय ।

पेट में दर्द, पैखाने के समय काँखना, सफेद या लाल आँव पड़ना । रोग के वढ़ने पर रोगी के शरीर से एक तरह की वदबू आने लगती है ।

खाने-पीने में ठीक व्यवस्था न होना, खूब गर्मी या सर्दी लगना, दूषित पेय पीना इत्यादि कारणों से जब शरीर कमजोर पड़ जाता है, तब जीवाणु सहज ही में शरीर पर आक्रमण कर देते हैं।

चिकित्सा

कार्बोलिक एसिड ६x — रक्त तथा पीव मिश्रित मल, जब काली म्यूर से लाभ न हो।

कैलि फास ६x — सड़ा दुर्गन्धित मल, सन्निपात, मल में केवल रक्त ही, उदर में आध्मान, मलत्याग के पश्चात ऐंठन।

कैलि म्यूर ३x — पेट में अत्यन्त पीड़ा हो, ऐसा प्रतीत हो कि कोई चाकू से काट रहा है, बहुत आम-सहित पाखाना आवे।

फेरम फास ३x — रोग की प्रथमावस्था में तीव्र ज्वर, आँतों में सूजन, दर्द, बेचैनी हो, लेकिन यदि ऐंठन हो तो यह औषधि न देनी चाहिये। प्रायः कैलि म्यूर के साथ प्रारम्भिक अवस्था में यह पर्याप्त है।

मैग्नेशिया फास ६x — अत्यन्त अधिक ऐंठन की पीड़ा जिसके कारण रोगी दोहरा हो जाये या झुक जाय, मल-मूत्र की आवश्यकता हो, गुदा में पीड़ा हो।



रजः तथा रजोधर्म

(Menstruation)

वाग्भट्ट ने लिखा है—

मासि मासि रजः स्त्रीणा रजस् स्रवति त्र्यहम्।

वत्सराद् द्वादशादूर्ध्वं यादि पञ्चाशतः क्षयम्॥

अर्थात महीने-महीने स्त्रियों के रस से रज बनता है और वही रज हर महीने में तीन दिन तक उनकी योनि से बहता है। यह रजःस्राव या रजोधर्म १२ वर्ष की उम्र से होने लगता है और ५० साल की उम्र तक होता रहता है। उसके बाद नहीं होता यानी बन्द हो जाता है।

आर्त्तव या रजः भी डिम्बाशय से उत्पन्न होता है और प्रायः २८ दिन पर मासिक स्राव के रूप में शरीर से बाहर निकलता है। किंग जार्ज मेडिकल कालेज, लखनऊ के लेक्चरर डॉ० त्रिलोकीनाथ वर्मा एम० बी० बी० एस० ने लिखा है कि जब कन्या जवान होने लगती है तब उसकी योनि से प्रति मास एक लाल तरल बहने लगता है। इसको 'आर्त्तव' या 'ऋतु' कहते हैं। आर्त्तव निकलने को कन्या का रजस्वला या ऋतुमती होना कहते हैं। आर्त्तव का पहली बार निकलना रजोदर्शन कहलाता है। रजोदर्शन इस बात का चिह्न है कि कन्या अब जवान होने लगी है। रजोदर्शन के साथ-साथ यौवन के और भी चिह्न दिखाई देने लगते हैं, जैसे स्तनों का बढ़ना, कामाद्रि पर बालों का उगना। कन्या की मानसिक दशा में भी विचित्र परिवर्तन होने लगते हैं।

आर्त्तव का परिमाण सब स्त्रियों में एक-सा नहीं होता। इसका परिमाण एक छटाँक से तीन या चार छटाँक तक कहा जा सकता है।

आर्त्तव कैसे निकलता है

आर्त्तव निकलने से पहिले गर्भाशय की श्लैष्मिक कला अधिक रक्तमय हो जाती है। अधिक रक्त के कारण कला पहिले से छोटी हो जाती है। अब रक्तकेशिकाओं में से रक्त निकलकर कला में जगह-जगह इकट्ठा हो जाता है। जगह-जगह रक्त के इकट्ठा होने से श्लैष्मिक कला मुलायम और कुछ पिलपिली-सी हो जाती है। फिर रक्त श्लैष्मिक कला में से होकर बाहर निकलता है। कहीं-कहीं पृष्ठ की सेलें रक्त के दबाव से गिर जाती हैं। जब रक्त निकल जाता है तो श्लैष्मिक कला सिकुड़ कर पूर्व की दशा को प्राप्त होती है। गिरी हुई सेलों की जगह नई सेलें बन जाती हैं।

आर्त्तव निकलने के दिनों में जननेन्द्रिय के शेष अवयवों में भी कुछ परिवर्तन हुआ करता है। डिम्ब ग्रन्थि, डिम्ब प्रणालियाँ और योनि अधिक रक्तमय हो जाती हैं और उनका रङ्ग गहरा हो जाता है। गर्भाशय का परिमाण भी बढ़ जाया करता है।

मासिक के सम्बन्ध में सेक्सोलॉजी (Sexology) नामक पुस्तक में डॉ० घोस ने लिखा है—'When three or four days after the monthly course, the flow of the blood ceases, the delicate fine sex-organs grow very strong, and it is only at this time that women feel very much excited. It is for this reason that this period (excluding 3 or 4 days) is regarded as the best time for sexual intercourse.

भावार्थ यह है कि मासिक से साफ हो जाने के पश्चात् जननेन्द्रियाँ बड़ी पुष्ट हो जाती हैं और इन्द्रियाँ सम्भोग के लिए आतुर होने लगती हैं और इसी कारण सम्भोग तथा सन्तानोत्पत्ति के लिए यह समय सर्वोत्तम समझा जाता है।

शुद्ध आर्त्तव

आयुर्वेद की सुप्रसिद्ध पुस्तक 'चरक' में लिखा है कि स्त्री महीने-महीने में ऋतुमती हो और उसकी योनि से ५ रात्रि से अधिक खून न गिरे और उस ऋतु का खून दाह, पीड़ा और चिकनाई से रहित तथा बहुत कम न हो तो शुद्ध ऋतु कहते हैं। यदि इसका खून चिरमटी के रंग का, लाल कमल के रंग का अथवा महावर या वीरबहूटी के रंग का हो तो विशुद्ध ऋतु समझना चाहिए।

वैद्य विनोद में लिखा है कि मासिक का रक्त खरगोश के खून जैसा या लाख के रस के समान हो और खून से कपड़ा तर करके पानी से धोने पर खून का दाग न रहे तो शुद्ध आर्त्तव समझना चाहिए।

आर्त्तव दोष

आर्त्तव अर्थात् स्त्रियों के यौवन में प्रति मास जो योनि के द्वारा रज निकलता है उसके आठ प्रकार के दोष होते हैं—वातज, पित्तज, कफज, पूयाभ, कुषप, ग्रन्थि, क्षीण और मलसम।

ऋतु की आवश्यकता

रजोधर्म होना कोई रोग नहो वरन् स्त्रियों की आरोग्यता की निशानी है। यही वह समय है जव युवतियों में शारीरिक वल और दृढता आती है और गर्भ धारण करने की शक्ति पैदा होती है। रजोधर्म न होने से गर्भाशय का मुँह न खुल सकेगा और गर्भाधान न होगा।

ऋतुकाल

यद्यपि रज' तीन दिन तक गिरता है, किन्तु जिस गर्भाशय से यह रजः निकल कर वाहर वहता है, वह १६ दिन तक खुला रहता है। इसी से ऋतुकाल १४ दिन का माना गया है। इन्हीं दिनों मैथुन करने से गर्भ स्थिर होता है। इसी समय पुरुष का वीर्य रज से मिलकर गर्भ का रूप धारण करता है। १४ दिन के वाद मैथुन किया जाय तो गर्भ स्थिर न होगा, क्योंकि गर्भाशय का मुँह वन्द हो जाता है। इन १४ दिनों में मैथुन करने से पुरुष का वीर्य योनि के और हिस्सों में (गर्भाशय से वाहर) गिरता है। यही कारण है कि चतुर वेश्या इन्हीं दिनों मैथुन कराती हैं। सन्तानोत्पत्ति के लिए ऋतुकाल में ही सम्भोग करना चाहिए।

चिकित्सा

कल्केरिया फास ३x—नवयुवतियों के मासिक स्राव शीघ्र हों, वृद्ध स्त्रियों के मासिक स्राव देर में हों, प्रसङ्ग की इच्छा पूरी न हो सके, निर्वलता या वातजन्य दुर्वलता हो।

कल्केरिया फास ६x—मासिक स्राव देर में, कुछ काल तक स्थिर रहे, सिर पीड़ा, निर्वलता, शरीर में ऐंठन।

कैली फास ३x—चिड़चिड़ी निर्वल प्रकृतिवाली स्त्रियों के मासिक स्राव की अनियमितता, मासिक स्राव के समय में पीड़ा, तवीयत का वैठ जाना, मासिक स्राव कमी के साथ अथवा अधिक हो, पतला रक्त गहरा लाल अथवा कालापन लिये हुए अधिक परिमाण में हो, दुर्गन्ध अधिक

हो, जिह्वा पर पीली-पीली मैल, सिर में पीड़ा, कमर में पीड़ा, मासिक के पश्चात् प्रसंग की इच्छा बहुत अधिक हो।

कैलि सल्फ ६x—मासिक देर में, बहुत कमी के साथ, पेट तथा सिर में पीड़ा, जिह्वा पर पीली मैल।

कैलि म्यूर ६x—रजोबाहुल्य, काले लोथड़े अथवा तारकोल के समान काला स्राव देर तक रहे तथा शीघ्र-शीघ्र हुआ करे।

नेट्रम म्यूर ६x—सिर में पीड़ा, उदर में पीड़ा, चिन्तित, मासिकस्राव शीघ्र तथा अधिक, पीला या गुलाबी, पानी के समान निकले जो जल्दी न जमे।

नेट्रम सल्फ ३x—मासिक स्राव खराश उत्पन्न करने वाली पीड़ा के साथ, गुप्तेन्द्रिय में पीड़ा, छाले, पेट में सूजन, दाह, सूजन, चलने में ही स्राव प्रवाहित हो।

फेरम फास ३x—रुधिर का जम जाना, मासिकधर्म के समय आकृति भरभराई हुई, नाड़ी तीव्र, मासिक के समय में वमन, नली में पीड़ा, पेडू पर बोझ, मासिक स्राव के पहले इस औषधि के देने से पीड़ा इत्यादि कम हुआ करती है।

मैग्नेशिया फास ३x—मासिक पीड़ा में यह औषधि अत्यन्त लाभदायक है, अत्यन्त पीड़ा जो सेकने से कम होती हो, स्राव कालापन लिये डोर के समान हो। कमर, कूल्हे, रान में अत्यन्त पीड़ा हो।

साइलिसिया ६x—बहुत दुर्गन्ध युक्त स्राव, कोष्ठबद्धता, शीत जान पड़े, कमर में पीड़ा, स्राव शीघ्र तथा कमी के साथ, दूध पिलाने के दिनों में कुछ काल तक स्राव हो।

रक्तस्राव

(Haemorrhage)

प्रसव के बाद ज्यादा खून निकलने पर प्रसूती के लिए बड़ी चिन्ता की बात हो जाती है। प्रसव के समय खून कम निकले, इस बात पर ध्यान रखना चाहिए।

कल्केरिया फ्लोर ३x—बच्चेदानी के ढीलापन से अधिक रुधिर निकले, ववासीर के मस्सों से रुधिर निकले, मुँह क थूक से रक्त निकले, थोड़ी-थोड़ी खाँसी हो, फेरम फास १२x के साथ देना उत्तम है।

कल्केरिया फास ३x—जब रुधिर की न्यूनता अधिक हो तो इस औषधि को अन्य औषधियों के साथ दे सकते हैं। यह कमजोरी को कम करती है।

कैल्केरिया सल्फ ३x—नाक से रक्त वहे अथवा नाक से ऐसा स्राव निकले जिसमें रक्त मिला हो।

कैलि फास ६x—निर्वल-स्वभाव स्त्रियों को काला अथवा कालापन लिये पतला रक्त निकले, 'पाण्डु रोग' की तरह विषैला रक्त निकले, बच्चेदानी से रक्त निकले।

कैलि म्यूर ६x—काला अथवा काला जमा हुआ रक्त निकले। तीसरे पहर नाक से रक्त निकले।

नेट्रम म्यूर ३x—पीला, पतला, पानी के समान गुलावी रंग का रक्त निकले जो जमे नहीं, खाँसने में जब झुके तब नाक से रुधिर बहे।

फेरम फास ६x—ऐसा लाल रक्त निकले जो शीघ्र जम जाया करे जैसे फुफ्फुस से रक्तपात हो अथवा वमन में लाल रक्त निकले; नाक से रक्त वहे, घाव से रक्त निकले। तात्पर्य यह है कि चाहे शरीर के किसी भी अंग से रक्तपात हो, यह औषधि हितकर है। कटने इत्यादि के आघात में अति लाभदायक है।

रजःस्राव बन्द हो जाना

(**Amenorrhoea**)

रक्तस्वल्पता, सर्दी लगना, फेफड़ा, हृत्पिण्ड, जरायु की वीमारी, शोक-दुःख, प्रवल मानसिक उद्वेग या उत्तेजना आदि कारणों से यह वीमारी पैदा हो जाती है। गर्भ रह जाने पर ऋतु बन्द हो जाता है। इसमें मासिक ऋतुस्राव आरम्भ होकर फिर बन्द हो जाता है या कुछ

दिनों तक रुका रहता है। सिर दर्द, मिलची, पेट में दर्द, अकड़न, प्रलाप, हिस्टीरिया आदि लक्षण होते हैं।

चिकित्सा

ज्यादा सर्दी लग जाने की वजह से रजःस्राव बन्द (रजोरोध) हो जाने पर; ऋतु-काल के कुछ दिन पहले से ही रोगिणी को रोज गर्म पानी से भरे टब में कमर तक डुबोकर आधा घण्टे तक बैठा देना चाहिए। इस पानी में थोड़ी सी राई की बुकनी मिला देनी चाहिए। जब खून की कमी शरीर में हो जाय और कमजोरी आ जाये तो पौष्टिक भोजन की बहुत अधिक जरूरत पड़ती है। चित्त में आनन्द बनाये रखना जरूरी है।

नेट्रम म्यूर ६x—यह युवती स्त्रियों के लिए बहुत ही फायदेमन्द दवा है। पहली बार ही मासिक ऋतुस्राव होने में देर या बहुत थोड़ा स्राव और बहुत देर से मासिक ऋतुस्राव होता है। किसी-किसी स्थान पर दो-दो तीन-तीन मास का अन्तर देकर ऋतु होता है।

कल्केरिया फास ६x—रक्त की कमी के कारण रजोरोध, दुबली-पतली स्त्री, प्रेम के बदले में प्रेम न प्राप्त करने के कारण मन का सुस्त पड़ जाना; अण्डलाल की तरह स्राव वाला प्रदर।

कैलि म्यूर ६x - यकृत का क्रिया-विकार; सफेद लेप चढ़ी जीभ, ग्रन्थियों का निश्चेष्ट बना रहना।

कैलि सल्फ ६x—बहुत थोड़ा या रुका हुआ मासिक ऋतुस्राव, तलपेट में भार और भारीपन मालूम होना।

कैलि फास ३x—रजोरोध, चित्त में सुस्ती, कमजोरी, आलस्य, रजोरोध की वजह से कलेजा धड़कना और श्वास में कष्ट हो जाता है। प्रौढ़ावस्था में ऋतु का एकदम बन्द हो जाना और इसी वजह से नाना प्रकार के स्नायविक और शारीरिक उपसर्ग पैदा हो जाना।

———

रक्तस्वल्पता

(Anaemia)

स्वस्थ मनुष्य के रक्त में प्रति हजार १२० भाग लालकण होते हैं। इन लालकणों की कमी हो जाना और खून में नमक का अंश या सफेद कणों का घट जाना ही रक्तहीनता रोग कहलाता है। इसी चीज को एक योग्य चिकित्सक ने इस प्रकार लिखा है—

Anaemia literally means bloodlessness. But strictly speaking this is an unhealthy condition of blood in which the red corpúscles are deficient. This unhealthy condition is indicated by a general pallor of complexion

एनीमिया दो श्रेणियों में विभक्त है—(१) प्राथमिक और (२) गौण। प्राथमिक या प्राइमरी एनीमिया जैसे हरित् पाण्डु रोग और साघातिक रक्तहीनता। गौण रक्तहीनता जैसे रक्तस्राव, मोतीझरा, ववासीर, शून्योदरता, कण्ठनली का कैन्सर आदि।

नाड़ी का क्षीण हो जाना, कमजोरी, आलस्य, भूख न लगना, श्वास की कमी, कलेजा काँपना, सिर दर्द प्रभृति लक्षण उपस्थित हो जाते हैं।

चिकित्सा

विश्राम, लघु और पुष्ट भोजन, खुली हवा मे घूमना, स्वास्थ्यप्रद स्थान में रहना, आवहवा का वदलना, चित्त सदैव प्रसन्न रखना, नदी का पानी या गर्म पानी ठंढा कर कुछ सुसुम रहते ही उसे पानी से या धूप में गरमाये पानी से नहाना, साफ सुथरा रहना, इस रोग की चिकित्सा का प्रधान अंग है। शरीर हमेशा ढँका रहना चाहिए, जिससे सर्दी न लग जाय।

[illegible] आ जाने के पहले ही (Transfusion of Blood) [illegible] और बलिष्ठ व्यक्ति का रक्त [illegible] ज्यादा फायदा होता है।

[illegible] पड़ती है।

[illegible] —[illegible]रिया फास और फेरम फास [illegible] और इसी से क्रम से दूसरे-दूसरे [illegible] शरीर में रक्त के कण (Red Blood Cells) [illegible] रूप से कल्केरिया फास [illegible] शरीर में हीमोग्लोबिन (जिससे रक्त का रंग [illegible]) [illegible] वजह फेरम फास [illegible] के अनुसार उपर्युक्त लवण का प्रयोग [illegible] रक्त स्वाभाविक अवस्था में आ [illegible] है।

कल्केरिया फास ३x—नये रक्त कोष के बनने में यह सहायता करता है। सफेद या हरित पाण्डु रोग, पोषण की कमी के कारण रक्ताल्पता, रक्त के उपादानों में इसके भाग की आवश्यकता हो जाने पर, कोई याद करने वाली बीमारी या कमजोरी लाने वाले रोग के बाद यह लवण बहुत ज्यादा काम करता है। सांघातिक (Pernicious) रक्ताल्पता में, बैठे रहने के बाद उठने की चेष्टा करने पर ही सिर में चक्कर आ जाता है, आँखों के आगे धुंधलापन छा जाता है, चेहरे पर पसीना ज्यादा होता है, शरीर ठण्डे पसीने से तर रहता है, स्वाद बिगड़ा और मुँह में बदबू रहती है। पेशाब में रुण्ड की तरह तली जमती है। उदरामय, दिन या रात के समय पाखाना होने के बाद कुंथन का वेग रहता है। जरायु से रक्तस्राव, हृत्-कम्प, सुस्ती। अधिक अवस्था के रोगियों में ३०x या २००x दें।

फेरम फास १२x—ऊपर लिखे लवण का प्रयोग करने के बाद विशेष लाभदायक कल्केरिया फास के द्वारा रक्त कोष तैयार हो जाने के बाद

फेरम फास रक्त की उस कमी को पूरा कर देता है, जो रक्त मे हीमोग्लोविन की कमी के कारण पैदा हो जाती है। खासकर इस फेरम फास लवण के द्वारा ही फेफडा और तन्तुओं से कार्वोनिक एसिड के निकलने और आक्सीजन को भरने का काम हुआ करता है।

नेट्रम म्यूर ३x—हरित पाण्डु की अवस्था, पानी की तरह रक्त पतला हो जाता है, जमता नहीं है। युवतियों की जवानी आने के समय रक्तहीनता (क्लोरोसिस-हरित पाण्डु रोग), ऋतु दर्शन में विलम्ब या पुष्पवती होने के वाद अनियमित मासिक ऋतु, त्वचा का रग मैला, मुर्दे की तरह का रग, जीभ साफ अथवा चिकनी लसदार लेप चढी, अगले भाग मे छोटे-छोटे छाले, कब्जियत और मन की सुस्ती वनी रहना, निद्रालुता, प्यास, नमक की इच्छा।

कैलि फास ३x—वहुत दिनों तक मानसिक परिश्रम करने के वाद मन की सुस्ती आ जाना और खून की कमी, कड़ी कमजोरी लाने के वाद ही कशेरुकाओं (Spinal) में उत्पन्न खून की कमी। मस्तिष्क की रक्ताल्पता में भी यह फायदा करता है।

कैलि म्यूर ३x—रक्ताल्पता के साथ एक्जिमा, खुजली, खसरा प्रभृति चर्म रोग मे कल्केरिया फास के साथ पर्याय-क्रम से इसका व्यवहार करना चाहिए।

नेट्रम सल्फ ३x—कफ धातु वाला रोगी, प्रमेह दोष, शोथ हो जाने का लक्षण, तर जगह में रहना, जलीय भूमि के पास रहने की वजह से वीमारी का पैदा होना या वढना।

नेट्रम फास ६x—रक्ताल्पता के साथ अजीर्ण दोप, अम्ल की वाढ़ मे सहायता मिलती है। पर्याय-क्रम से कल्केरिया फास का व्यवहार करना आवश्यक है। केचुओं की शका हो।

साइलिसिया ३x—बच्चों की पोषण की कमी के कारण रक्ताल्पता, दुबले, कमजोर और सर्व आकृति वाले रोगी। इस लवण के साथ पर्याय-क्रम से लक्षण के अनुसार अन्यान्य लवणों का प्रयोग करना उचित है।

ब्रांकाइटिस या वायुनली भुजप्रदाह
(Bronchitis)

वायुनली की श्लैष्मिक झिल्ली के नये प्रदाह को ब्रांकाइटिस (Bronchitis) कहते हैं।

ब्रांकाइटिस दो प्रकार का होता है—(१) तीव्र (Acute) और (२) पुराना (Chronic)। इन्फ्लुएञ्जा, टायफायड, चेचक, कुकुरखाँसी प्रभृति नये उपसर्ग के रूप में जो ब्रांकाइटिस होता है वह नये ब्रांकाइटिस के अन्तर्गत है।

नये ब्रांकाइटिस की और भी दो श्रेणियाँ हैं—

(१) नरम प्रकार (Mild form) और (२) कड़े प्रकार की (Serious form)। नरम प्रकार में ज्वर १००° से १०१° तक रहता है। दूसरे प्रकार का ब्रांकाइटिस यदि बच्चों या बुड्ढों को हो तो खतरा समझना चाहिए।

एक प्रकार का और भी ब्रांकाइटिस है जिसे कैपिलरी ब्रांकाइटिस (Capillary Bronchitis) कहते हैं। विशेषकर बच्चों को ही यह बीमारी अधिक होती है। इसमें ठण्ढक और कम्प होकर ज्वर आता है। बुखार १००° से १०४° तक होता है।

चिकित्सा

फेरम फास ६x—रोग हुआ है इस बात का पता लगते ही इसका प्रयोग करने से बहुत फायदा होता है। ज्वर के साथ कण्ठनली और श्वासनली में रक्त का बढ़ जाना और दर्द होना, खाँसी आती है, थोड़ी

देर पर बार-बार आती है, छाती मे दर्द रहता है, बलगम नहीं निकलता, श्वास-प्रश्वास छोटा और उसमें तकलीफ रहती है। अगर बलगम ढीला हो जाता है, तो बलगम की प्रकृति के अनुसार उपयुक्त औषधि के साथ **फेरम फास** पर्याय क्रम से दिया जाता है। जब तक प्रदाह पूरी तरह आरोग्य नहीं हो जाता, तब तक **फेरम फास** का प्रयोग करते रहना उचित है। बच्चे और बालक-बालिकाओं का कैशिक श्वासनली प्रदाह, तेज, बारम्बार और आक्षेप-युक्त खाँसी। खाँसने में दर्द भी होता है।

कैलि म्यूर ६x—यह रोग की द्वितीय अवस्था में प्रयोग किया जाता है। बलगम अगर निकलता हो तो उसके साथ पर्याय-क्रम से फेरम फास का प्रयोग करना चाहिये। बलगम सफेद, गाढा और लसदार, जीभ सफेद या धुमैले बलगम से ढंकी, क्रूप्स ब्राकाइटिस के रोगियों के लिए यह बहुत ही लाभदायक है। इस लवण का जलीय द्रव के सहारे कण्ठ में प्रयोग करने पर या ऑटोमाइजर (Automiser) द्वारा इस द्रव को साँस के साथ भीतर करने पर फायदा होता है।

कैलि सल्फ ३x—रोग की तीसरी अवस्था में तेजी घट कर पतला पीली आभा लिये बहुत ज्यादा बलगम निकलता है, इस समय बलगम का रंग विशेषकर पीली आभा लिये या चमकीलो पीली आभा लिये होता है। तीसरे पहर और सन्ध्या के समय बढना। ज्वर वर्तमान रहने पर इसके साथ पर्याय-क्रम से फेरम फास का प्रयोग करना चाहिए।

साइलिशिया ६x—निकला हुआ श्लेष्मा पीब की तरह गाढ़ा, पीले रंग का, भारी, ऐसा कि पानी में डालने पर नीचे बैठ जाता है। विकृत रोग वाले बालक-बालिकाओं के ब्राकाइटिस रोग मे यह ज्यादा फायदा करता है। ठण्डी चीजें सेवन करने पर घटना और गर्म चीजें सेवन करने पर बढ़ना। रात के समय पसीना। सवेरे ठण्ड में सुरसुरी, खाँसी का बढ़ना।

नेट्रम म्यूर ३x—श्वास नली का नया प्रदाह: पतला श्लेष्मा साफ फेन भरा पानी की तरह; बलगम की वजह से घर-घर की आवाज, कभी कभी श्लेष्मा निकलने में तकलीफ होती है। कभी बहुत श्लेष्मा से मुँह भर जाता है और बार-बार थूककर निकालना पड़ता है, पुराना ब्राकाइटिस, शीत-ऋतु में बढ़ना, ऊपर लिखी प्रकृति का श्लेष्मा साफ और मिलाते हुए, अण्डलाल की तरह लसदार रहता है, गले की आवाज क्षीण रहती है और कलेजा काँपा करता है। रोगी समुद्र के किनारे का रहना सहन नहीं कर सकता, नमकीन वातावरण में उसकी तबीयत खराब हो जाती है।

कल्केरिया फास ६x—दुबले, क्षीण और खून की कमी रहने वाले रोगी का ब्राकाइटिस, अण्डलाल की तरह बलगम निकलता है। रोग के बाद की कमजोरी दूर करने के लिए यह बहुत ही उत्तम दवा है।

नेट्रम सल्फ ६x—बरसात में और ठण्डे तर दिनों में रोग की उत्पत्ति या वृद्धि होती है। दमा में साँस में खिंचाव सवेरे बढ़ना, खाँसने के समय रोगी हाथ से कलेजा दबा रखता है; श्लेष्मा निकलने की वजह से चर्म की खाल उधड़ जाती है और जख्म पैदा हो जाता है।

कल्केरिया फास ३x—ब्राकाइटिस की आखिरी अवस्था, बलगम का रंग पीला या पीली आभा के लिये हरा बलगम निकलता है अथवा खून मिली पीब की तरह और खूब भारी बलगम रहता है। रोग की अन्तिम अवस्था में श्लेष्मा के बदले पीब निकलना।

पथ्य और परिचर्या

इस विषय में खूब सावधान रहना चाहिए कि रोगी को किसी तरह से सर्दी न लग जाय, हमेशा गरम कपड़ा पहनना चाहिए। रोगी के कमरे में साफ हवा का आवागमन बनाये रखने के लिए रोगी के पास से कुछ दूर के सब खिड़की दरवाजे खोल रखने चाहिए।

पथ्य पतला और हल्का होना चाहिए। पथ्य को गरम कर खिलाना चाहिए। अगर आध्मान न हो और पतले दस्त न आते हों तो दूध दिया जा सकता है, नहीं तो सागू, वार्ली, रोटी, सिंघाड़ा आदि देना चाहिए। रोज नमक के साथ एक बूँद सरसों का तेल मिलाकर उससे दाँत माँजना चाहिए और गर्म पानी से मुँह धो डालना चाहिए। कलेजे में पुराना घी मालिश कर भूसी की पोटली वनाकर गर्म सेक करनी चाहिए।

विसर्प
(Erysipelas)

"It is a very contagious spreading inflammation of the skin, due to the entrance of some poison through a wound or scratch into the system".

इसे सैंट 'एन्थोनी फायर' (St. Anthony's Fire) भी कहते हैं। इसमें चमड़ी के नीचे के कीटाणुओं के किसी एक असीमावद्ध स्थान में प्रदाह होकर वह शीघ्र ही अन्य स्थानों में फैल जाता है। जिस स्थान पर इसका आक्रमण होता है वह फूलकर लाल सुर्ख हो जाता है। चोट लगने की वजह से जव खून खराव हो जाता है तव यह वीमारी होती है। रोगाक्रान्त जगह को अंगुली से दवाने पर वहाँ कुछ सफेदी आ जाती है और अँगुली उठा लेने पर वह स्थान फिर सुर्ख हो जाता है। क्रमशः यह रोग एक जगह से दूसरी जगह फैलता है।

चिकित्सा

फेरम फास ६x—रोग के आरम्भ या प्रदाहित अवस्था की प्रधान दवा है। चमडे का लाल हो जाना और गर्मी, ज्वर और दर्द 'रोज इरिसिपेलस' (Rose Erysipelas) नामक खास तरह का विसर्प होता है। फेरम फास लवण का भीतरी और वाहरी प्रयोग किया

जाता है। अगर पित्त घटित लक्षण रहे तो इसके साथ पर्याय-क्रम से नेट्रम सल्फ का प्रयोग करना चाहिए।

नेट्रम सल्फ ६x—विसर्प रोग की यह सबसे श्रेष्ठ दवा है। पित्त की कै होने के साथ बिना वमन का ही आक्रमण होता है, चिकना लाल रङ्ग का चमकीला चमड़ा, दर्द भरी सूजन के साथ टपक।

कैली म्यूर ३x—जल भरी फुन्सियाँ या छाले पैदा हो जाने पर यह लवण बहुत अधिक फायदा करता है। फेरम फास लवण का एकान्तर-क्रम से प्रयोग किया जाता है।

कैलि फास ३x—विसर्प रोग के छालों की जब खाल उधड़ने लगे उस समय इस लवण से बहुत अधिक सहायता मिलती है। इसका भीतरी और बाहरी दोनों प्रयोग प्रचलित हैं।

नेट्रम फास ६x—शरीर मे अम्ल की अधिकता, वात लक्षण के बहुत से उपसर्ग, चिकना, लाल रङ्ग का, चमकीला, फूला और दर्द भरा चमड़ा, कीड़ा काटने की तरह अनुभव होना।

सान्निपातिक ज्वर
(Typhoid Fever)

आयुर्वेद मतानुसार वात, पित्त और कफ तीनों के दूषित हो जाने पर सान्निपातिक अवस्था होना कहते है। इसका दूसरा नाम 'आन्त्रिक ज्वर' है क्योंकि खासकर इसमें आँतों पर बीमारी का हमला होता है। बैसिलस इबर्नी (Bacillus of Ebarni) नामक एक तरह का जीवाणु इस ज्वर के पैदा होने का कारण है। यह लरछुत रोग है।

किसी डाक्टर ने ठीक लिखा है कि—

'Typhoid fever is caused by the inflammation of the glands of the intestines.'

इस विष या जीवाणु के शरीर में घुस जाने के बाद कई दिनों तक शरीर में किसी तरह की गड़बड़ी नहीं दिखाई देती। इसके बाद धीरे-धीरे बुखार बढने लगता है। जितना बुखार सुबह रहता है, उससे दो डिग्री शाम को या तीसरे पहर बढ जाता है, इसी तरह धीरे-धीरे बढकर १०५°-१०६° और कभी-कभी १०७ डिग्री तक हो जाता है। इसकी मीयाद लगभग ४ हफ्तों की होती है। कभी-कभी चालीस या साठ दिनों तक बुखार बना रहता है। पहले सप्ताह के आखीर से लेकर प्रायः २८ दिनों के भीतर शरीर पर एक तरह के छोटे-छोटे लाल दाने दिखाई देते हैं। इन्हें मोतीझरा कहते हैं। इस ज्वर का यह एक खास लक्षण है। आँतों के पेयर पैच और सालिटरी ग्लैण्डों में एक तरह का जख्म पैदा हो जाता है। कभी-कभी इससे रक्तस्राव भी होता है। पतले दस्त या अतिसार इस ज्वर का दूसरा प्रधान लक्षण है।

———

चिकित्सा

फेरम फास ६x—आक्रमण की आरम्भवाली अवस्था मे यह विशेष उपयोगी है। जाड़ा मालूम होना, ज्वर, सिरदर्द प्रभृति प्राथमिक लक्षणावलियाँ वर्तमान रहती हैं। पतनावस्था में और रक्त क्षीण होने पर दूसरी-दूसरी निर्देशित औषधियों के साथ पर्याय-क्रम से प्रयोग करना चाहिए। फेरम फास लवण का रक्त लाल चमकीले रग का होता है। अगर प्रदाह और उपदाह मौजूद रहे तो यह सबसे ज्यादा फायदा करता है।

कैलि म्यूर ६x—यह सान्निपातिक ज्वर की श्रेष्ठ दवा है। फेरम फास लवण के पर्याय-क्रम से इसका प्रयोग किया जाता है। धुमैली या सफेद रङ्ग की मैल चढी जीभ, पेट फूला और उसमें स्पर्श का सहन न होना, ज्वर के साथ पतले दस्त आना, पीली आभा लिये गेरुआ रग का या मटमैला मल, पतला दानेदार मल, काला जमा हुआ रक्त निकलना।

कैलि सल्फ ३x—टायफायड ज्वराधिकार में सन्ध्या समय रोग का बढ़ना, ज्वर का उत्ताप, नाडी की गति इत्यादि अन्यान्य उपसर्ग भी सन्ध्या के बाद बढ़ जाते हैं, आधी रात तक बढ कर फिर घटने लगते हैं। पेट फूलना, पेट का चमडा मानो तना रहता है, पीली आभा लिये चिकनी मैल चढी जीभ, कभी-कभी किनारों पर सफेद मैल चढ़ी रहती है, अधिकाश समय नाडी की गति अत्यन्त लघु रहती है, मानो बडी तकलीफ से नाड़ी चल रही है। रोगी ठण्डी हवा चाहता है और सब खिडकियों के दरवाजे खुले रखना चाहता है, प्यास नहीं रहती।

कैलि फास ३x—सान्निपातिक ज्वर की साघातिक अवस्था, मस्तिष्क सम्बन्धी लक्षणों की प्रबलता, विकार, बकवादीपन, प्यास ज्यादा रहती है और जीभ बड़ी सूखी रहती है तथा कमजोरी की वजह से जडता दिखाई देती है, कमजोरी और सुस्ती, दस्त बदबूदार। साँस मे बदबू रहती है, हृदय की कमजोरी, नाड़ी अनियमित; पर्याय-क्रमिक स्वाभाविक स्पन्दन की मात्रा की कमी रहती है, दाँत पर मैल जम जाती है, नींद नहीं आती है और मस्तिष्क में विह्वलता रहती है। रोगी प्रलाप बकता है और आच्छन्न भाव की तरह पड़ा रहता है।

कल्केरिया फास ६x—तन्तुओं का सस्कार करने और ताकत लाने के लिए इस दवा की बहुत सुख्याति है। रोग दबता हुआ मालूम होने पर इस दवा के प्रयोग से बहुत फायदा होता है। इसमें स्वास्थ्य को फिर से ठीक कर देने की अद्भुत शक्ति है।

नेट्रम म्यूर ३x—टायफायड ज्वर, साघातिक लक्षणों के साथ पानी की तरह वमन, आच्छन्न भाव, सूखी जीभ, पेशियों का फड़कना और अकड़ना प्रभृति लक्षणों में इसका प्रयोग होता है।

नेट्रम सल्फ ३x—पित्त से उत्पन्न लक्षणों की प्रधानता, पित्त की कै होने के साथ ज्वर। पेट फूलना, उदरामय और पतले दस्त आना।

———

स्वल्परजः

(Scanty Menstruation)

धातुदोष या जरायुदोष या बहुत दिनों तक कोई कड़ी बीमारी भोगने के कारण शरीर में खून कम हो जाने के कारण ऋतुस्राव स्वाभाविक की अपेक्षा परिमाण में कम हो जा सकता है। इसमें ऋतु मात्रा से बहुत कम हो जाता है और कभी-कभी तो ऐसा भी होता है कि पीला दाग भर पड़कर रह जाता है तथा शरीर में ऋतुरोध के कितने ही लक्षण दिखाई पड़ते हैं।

फेरम फास्फोरिकम ३x, ६x—स्वल्परजः के साथ चेहरा लाल, मस्तिष्क में रक्त सचय और पेट में दर्द।

कल्केरिया फास्फोरिका ६x—यह स्वल्परजः की सबसे प्रधान दवा है। भरपूर भोजन न मिलने के कारण अथवा खायी हुई चीज अच्छी तरह न पचने की वजह से जो रोगिणियाँ धीरे-धीरे रक्त-शून्य हो जाती हैं, उनके स्वल्परजः रोग में विशेष उपयोगी होता है।

मैग्नेशिया फास्फोरिकम ३x ६x—तलपेट मे वेग, आक्षेपिक दर्द होने पर गरम पानी के साथ बार-बार प्रयोग करने से ज्यादा फायदा हो सकता है।

नेट्रम म्यूरियेटिकम १२x, ३०x—उत्साह-शून्य तरुणी युवतियों के लिए लाभदायक है। स्राव पानी की तरह अथवा मास के धोवन की तरह होता है, कब्जियत की धातु रहती है।

कैलि फास्फोरिकम ६x, १२x—कमजोर दुबली-पतली, वायु प्रधान स्त्रियों के लिए लाभदायक है। मानसिक और शारीरिक सुस्ती, उसके साथ ही छाती में दर्द।

———

स्वप्नदोष
(Night Polution)

किसी डाक्टर ने लिखा है—

"This is the emission of semen during sleep; it is hence called 'wet dreams'. The act of emission is called forth by erotic dreams; but if a man becomes a chronic sufferer not only are dreams necessary to call forth emissions but simply sleeping on the back or indigestion are quite enough to cause the discharge with or without the erection of penis".

रात मे सोते समय रतिक्रिया-विषयक स्वप्न देखना और स्वप्न मे ही वीर्यपात होना स्वप्नदोष कहलाता है। वास्तव मे यह धातु-दौर्बल्य का एक लक्षण मात्र है। अधिक स्त्री-प्रसग या हस्तमैथुन आदि के कारण यह रोग होता है। कभी-कभी मानसिक व्यभिचार या निरन्तर काम-चिन्तन करने के कारण भी यह रोग होता है। कभी-कभी बिना स्वप्न देखे ही या इन्द्रिय में उत्तेजना आये बिना ही स्वप्नदोष हो जाता है।

चिकित्सा

नेट्रम फास ६x—पाकाशय मे अम्ल बढ़ जाने के साथ ही साथ इच्छा न रहने पर भी वीर्य निकल जाना, वीर्य या धातु पतला, पानी की तरह, निकले हुए वीर्य मे धुएँ की गन्ध, वीर्य-स्खलन के बाद बहुत कमजोरी, शरीर का वजन घट जाता है और रोगी काँपने लगता है।

कैलि फास ६x—बहुत तेज रति की इच्छा से पैदा हुई सामयिक लक्षणों की अथवा जननेन्द्रिय सम्बन्धी सब तरह की बीमारियों की यह श्रेष्ठ दवा है। दूसरी-दूसरी निर्देशित दवाएँ सेवन करने के समय बीच-बीच मे कैलि फास के प्रयोग द्वारा रोगी की शक्ति बनी रहती है।

कल्केरिया फास ६x—शुक्र-क्षय के कारण शरीर में फैली हुई दुर्बलता के संशोधन की यह श्रेष्ठ दवा है। क्षीण जननेन्द्रिय की स्वाभाविक शक्ति इस लवण से लौट आती देखी जाती है। हस्तमैथुन की इच्छा का इससे संशोधन होता है।

स्वरभंग

(Hoarseness)

स्वरयन्त्र के पास की पेशी में पक्षाघात होने से स्वरभङ्ग होता है। कण्ठ-नली की और स्वरभङ्ग की श्लैष्मिक झिल्ली के नये या पुराने प्रदाह से भी इस तरह का पक्षाघात पैदा हो जाता है। यह प्रदाह सर्दी के साथ मिला रहता है। गले में खुजलाहट, गला कुटकुटाना, स्वरभङ्ग के कारण आवाज रुखड़ी सूखी, खुसखुसी खाँसी आदि इसके प्रधान लक्षण हैं। बहुत चिल्लाना, गाना या लेक्चर देने आदि कारण से यह रोग होता है।

चिकित्सा

कल्केरिया सल्फ ३x—निम्नलिखित औषधियों से आवाज का पड़ना अच्छा न हो तो इसे देना चाहिये।

कैलि फास ३x—आवाज पर अधिक बल देने से स्नायविक अथवा हृदय को कष्ट हो जाय और काला पड़ जाय।

कैलि म्यूर ३x—शीत के कारण आवाज भंग हो जाय।

कैलि सल्फ ३x—शीत, गले में अधिक जोर पड़ने से काला पड़ जाय।

फेरम फास ६x—कण्ठ में गाने तथा अधिक वार्तालाप करने से जोर पड़े अथवा शीतल तरल वायु लगने से काला पड़ जाय, सायंकाल को काला पड़े।

नेट्रम सल्फ ६x—बोलने से रोग का बढ़ना; ठण्ढक, पित्त के लक्षण, खुली हवा से घृणा।

साइलिशिया ६x—अधिक कष्ट हो, खाँसी से गला फट जाय।

स्वरलोप

(Aphonia Aphasia)

गायक, वक्ता, कत्थकों को यह बीमारी अक्सर हुआ करती है। ऊँची आवाज मे चिल्लाने पर, परिश्रम करने के बाद शरीर गर्म रहते-रहते वर्फ का पानी सेवन करने पर एकाएक सर्दी लगकर भी यह उपसर्ग पैदा हो सकता है।

चिकित्सा

फेरम फास ६x—बहुत देर तक संगीत या वक्तव्य देने के बाद स्वरलोप, गले मे दर्द, अन्धड़ पानी मे भीगने के कारण सर्दी लग कर या पानी में भींगने पर स्वरलोप, बार-बार खँखारने की जरूरत पडती है।

कैलि म्यूर ६ x—सर्दी लगकर स्वरभग, स्वरलोप, गला भारी, यदि इस दवा से आराम होने में देर हो तो इसके साथ पर्याय क्रम से कैलि सल्फ का प्रयोग करना चाहिए।

सन्धिवात (गठिया वात)

(Gout)

किसी के शरीर की छोटी-छोटी सन्धियाँ जैसे पैर के अँगूठे की सन्धि-आक्रान्त होने पर हम लोग, उसे गठिया वात हुआ है ऐसा कहते है। यदि बाप-माँ को यह रोग हुआ है तो पुश्त-दर-पुश्त चला करता है। सन्धि में यूरेट आफ सोडा इकट्ठा होता है और खून मे यूरिक एसिड मौजूद पाया जाता है। बीमारी अक्सर अधिक उम्र वालों को ही होती है। गरिष्ठ भोजन और अजीर्ण इसके प्रमुख कारण हैं। गठिया बढ़ी हुई और वृद्धावस्था की बीमारी है।

फेरम फास ६x—रोग का आरम्भ होते ही इसका प्रयोग करना चाहिये। ज्वर, सन्धियों में इतना दर्द कि जरा भी हिला नहीं जा सकता, चमड़ा लाल, स्थिर भाव से रहने पर तकलीफ घट जाती है। हिलने की चेष्टा करने पर तकलीफ पैदा हो जाती है, बल्कि तकलीफ बढ जाती है। रोग के आरम्भ में थोड़ी-थोड़ी देर के अन्तर से बार-बार प्रयोग करने पर जल्दी ही आरोग्य हो जाता है। बाद वाली अवस्था में दूसरी-दूसरी उपयोगी दवाओं के साथ इस दवा का पर्याय-क्रम से प्रयोग किया जाता है। मर-मर शब्द वाला सन्धि-बन्धन का प्रदाह।

कैलि फास ६x—नया सन्धिवात, रोग वाली जगह फूली, जीभ सफेद मैल से ढँकी, हिलने-डुलने पर तकलीफ का बढ़ना, फेरम फास के साथ या बाद में यह ज्यादा फायदा करता है।

कैलि सल्फ ३x—दर्द एक जगह से दूसरी जगह पर चला जाया करता है। 'चलने-फिरने वाला वात।' गर्म प्रयोग से दर्द का बढ़ना। सफेद अर्बुद सूजन, प्रदाह का न रहना।

मैग्नेशिया फास ३x—तकलीफ की तेजी न रहने पर दूसरी-दूसरी दवाओं के साथ बीच-बीच मे गरम पानी के साथ प्रयोग करने पर आराम मिलता है। अकड़न भरी, बहुत अधिक तकलीफ।

नेट्रम म्यूर ३x—पुराना वात रोग, सन्धियों के हिलाने पर मर-मर शब्द होता है। जाँघ की सन्धि का प्रदाह, ऊरु देश के पीछे अधिक दर्द, नेट्रम म्यूर निर्देशक जीभ देखकर इसका प्रयोग करना चाहिये।

नेट्रम फास ३x—पुराना अष्टावक्र-वात, खट्टी गन्ध लिये बहुत ज्यादा पसीना, पेशाब का रग घोर लाल, हृदय यन्त्र पर एकाएक वात का आक्रमण हो जाता है। पैर की अँगुली की सन्धियों पर रोग का आक्रमण हो जाता है। नये आक्रमण में **फेरम फास** के साथ पर्यायक्रम से प्रयोग करना चाहिए।

नेट्रम फास ६x—पैर का नया और पुराना वात, नये वात मे इस लवण के साथ फेरम फास का प्रयोग करना उचित है, पर पुराने वात में केवल इसी लवण के प्रयोग से अच्छा फायदा होता है। पेशाब लाल, हाथ की अँगुलियों की सन्धियों पर रोगो का आक्रमण, हृद्-यन्त्र मे एकाएक दर्द पैदा हो जाता है।

कल्केरिया फ्लोरिका ३x—हाथ की अँगुली की सन्धियाँ सब फूली और कडी।

कल्केरिया फास ३x—बदली, पानी और रात के समय रोग का बढ़ना। जाँघ की सन्धि की फलकास्थि में रस भरे अर्बुद। जाँघ की सन्धि मे अर्बुद।

साइलिसिया ३x—वात रोग वाली सन्धियों मे पीब पैदा हो जाने पर। कल्केरिया सल्फ ३x—सन्धि से बहुत दिनों का पीब का स्राव।

पथ्यापथ्य विषयक नियम

हल्का और सहज मे पचने वाला भोजन ही इस रोग में रोगी को देना चाहिए। गुरुपाक चीजे खाने पर किसी भी दवा से कोई फायदा न होगा। बहुत ज्यादा परिमाण में तरल पदार्थ और पानी पीना बहुत फायदा करता है। सवेरे और तीसरे पहर गर्म पानी चम्मच मे लेकर थोड़ा-थोड़ा कर पीने से बहुत फायदा होता है। रोग की तेजी घटने पर रोज किसी न किसी तरह का व्यायाम करना चाहिए। कम से कम १-२ कोस पैदल घूम आने की जरूरत है। इससे रोग का जल्दी-जल्दी प्रबल भाव से आक्रमण न हो सकेगा।

स्नान—कुछ गरम पानी से नहाकर सूखी तौलिया से शरीर अच्छी तरह रगडकर पोंछना चाहिए। ठण्डा पानी सहन हो जाने पर गर्म पानी का व्यवहार करने की कोई जरूरत नहीं है।

तीन विषयों में सतर्क रहना आवश्यक है—

(१) पसीने का स्राव ।

(२) वहुत ज्यादा पेशाव ।

(३) दोनों वक्त दस्त साफ आना । इन तीनों मे कोई गड़बड़ी न होने पावे ।

सर्दी से इन वीमारियों मे वहुत हानि पहुँचती है । गरम वस्त्र व्यवहार करना चाहिए और जव किसी काम में थकावट मालूम हो तो तुरन्त उसे छोड़ देना चाहिए । दुश्चिन्ता और उद्वेग को त्याग देना चाहिए । रात के पहले पहर में सो जाना और तड़के उठने का अभ्यास रखना चाहिए । सवेरे का टहलना खूव फायदा करता है । मास, मछली, केकड़ा, हसनी और मुर्गी का अण्डा, शराव, चाय, काफी, कोका, चूने का पानी, अरहर की दाल, उड़द की दाल, कच्चा आम, सिंघाड़ा, करैला, तरोई और मिठाई वगैरह त्याग देना चाहिए—जव से वात पैदा होता है । जाँत का पीसा आटा, भात, चूड़ा, मूँग की दाल, मसूर की दाल, प्याज, आलू, सेम, परवल, चिचिड़ा, कुम्हड़ा, नारियल, खजूर, कच्चा केला, इमली, घी, दूध, प्रभृति वात रोग के पथ्य हैं । गेहूँ वातनाशक है । ज्वर तथा दर्द की तेजी घट जाने पर रोगी को मुर्गी का अण्डा, ताजे फल, अगूर, वेदाना आदि सेवन करना चाहिए ।

जुकाम सर्दी

(Coryza)

ऋतु-परिवर्तन, पानी मे भीगना, ठण्डी हवा का लगना, पसीने का एकाएक रुक जाना, वहुत ठण्ढे या गरम स्थान मे रहना, गरम से एकाएक ठण्ढ में जाना इत्यादि कारणों से यह रोग होता है । यह दो प्रकार का होता है—(१) नया और (२) पुराना । नाक की श्लैष्मिक झिल्ली मे पुराने प्रदाह को पुरानी सर्दी कहते हैं ।

चिकित्सा

फेरम फास ३x—सर्दी की पहली अवस्था। नाक से जलस्राव, नाक के भीतर की झिल्ली का लाल हो जाना, माथा भारी, ज्वर मालूम होना, छींक, साँस के साथ नाक मे जलन। १x का प्रयोग शुरू मे उत्तम है।

कैलि म्यूर ३x—सर्दी की दूसरी अवस्था। अण्डलाल की तरह स्राव, नाक बन्द हो जाना, सर्दी सूखकर माथे मे दर्द। नाक मे पपडी जम जाना।

नेट्रम म्यूर ३x—पतला, साफ, पनीला, छीलने वाला वलगम, दुवले-पतले रोगियों को सर्दी, पतला फेन भरा स्राव, छीक, इन सब लक्षणों वाली पुरानी सर्दी मे भी यह लवण लाभदायक है। घ्राण-शक्ति का गायव हो जाना, किसी चीज की भी गन्ध नहीं मिलती, सर्दी मे वाहर निकलने या परिश्रम करने पर वढ जाता है। नाक में जलन।

कल्केरिया फास ३x—कण्ठमाला धातु-विशिष्ट वच्चा और वालक-वालिकाओं को वार-वार सर्दी, अण्डलाल की तरह स्राव, छीक और नाक के भीतर जख्म, नाक की छोर वरफ की तरह ठण्ढी, नाक फूली और जख्म भरी, कमजोर आदमियों की पुरानी सर्दी।

कैलि सल्फ ३x—पकी सर्दी, गाढी, पीली आभा लिये श्लेष्मा का स्राव, सन्ध्या को और वन्द कमरे मे वढ़ना; खुली हवा में घटना, चर्म की क्रिया वन्द, फेरम फास का सेवन करने पर भी पसीना न होना। माथे में तकलीफ और भार मालूम होना। नेट्रम म्यूर के साथ देना अच्छा है।

कल्केरिया सल्फ ३x, ६x—बहुत पकी सर्दी; गाढ़ा, गॅदला, पीब की तरह वलगम निकलना, खून मिला वलगम।

नेट्रम फास ६x, १२x—पाकाशय मे अम्ल की अधिकता के साथ पुरानी सर्दी, वालक और वालिकाओं के कृमि उपसर्ग के साथ सर्दी, श्लेष्मा पीली आभा लिये, जीभ पीली मैल से ढँकी, रोगी को अपनी नाक से बराबर बदबू आया करती है।

मैग्नेशिया फास ६x, १२x—बहुत ज्यादा सर्दी का स्राव होना, कभी सूख जाता है, कभी नाक से पानी गिरने लगता है। नाक सट जाने वाली अवस्था में बच्चे और बालक रोया करते हैं; उन्हें सहज में ही शान्त नहीं किया जा सकता। किसी चीज की गन्ध नहीं मिलती।

लू लगना
(Sun-Stroke)

इसे लू लग जाना कहते हैं। सूर्य की तेज गर्मी, भापवाले यन्त्र, अँगीठी इत्यादि की गर्मी लग जाने से यह बीमारी होती है। इसका हमला होने के समय सिर में दर्द, चक्कर, मिचली, बार-बार पेशाब करने की इच्छा, बेचैनी, प्रभृति लक्षण कई घण्टे या कई दिन पहले से प्रकट होने लगते हैं। सिर में चक्कर आना, आँख के आगे अँधेरा दिखाई देना, गुल्म वायु या हिस्टीरिया की तरह पर्याय-क्रम से हँसना-रोना, हाथ-पैर में ठण्ढक, तन्द्रा प्रभृति लक्षण पहले प्रकट होते हैं।

चिकित्सा

नेट्रम म्यूर ६x—इसकी थोड़ी-थोड़ी मात्रायें शीघ्र-शीघ्र देना चाहिए। चिकित्सा के बीच-बीच मे दो-एक मात्रा कैलि फास ६x भी अवश्य देना चाहिए।

पथ्य—कच्चे आमों का भर्ता करके रस निकालकर नमक डालकर अथवा दूध की लस्सी बनाकर पिलाना चाहिए। छुटकारा पाने पर दूध, मूँग की दाल; रोटियाँ, कद्दू, खुर्फा देना चाहिए।

स्नायविक पीड़ा
(Neuralgia)

यह विचित्र प्रकार का दर्द है। इसमें जलन और सूजन दोनों मे से कोई दशा नहीं होती है, केवल एक लहर उठने के कारण शरीर का कोई

स्थान थर्रा जाता है। किसी समय ऐसा प्रतीत होता है कि किसी ने तेजी से छूरी या नस्तर लगा दिया है अथवा किसी गर्म वस्तु से जला दिया है जिसके कारण रोगी एकाएक चीख उठता है। जब यह रोग उन्नति पा जाता है तो इसके दौरे शीघ्र-शीघ्र होने लगता हैं। यह रोग कभी कभी आधे मुखमण्डल और चक्षु-भौहों पर दौरा करता है, सन्धि के दर्द को दबाने से अधिकतर छुटकारा, आराम होता है। उपदंश का रोग, स्त्रियों के जननेन्द्रिय के रोग भी इसी के कारण होते हैं।

चिकित्सा

कल्केरिया सल्फ ६x—हड्डी के अन्दर स्नायविक पीड़ा—इस प्रकार की पीडा हो जैसे बिजली लगने से चमक होती है, रात्रि को और वरी ऋतु मे पीड़ा अधिक हो, मलत्याग के पश्चात् गुदा मे पीड़ा हो जो कुछ देर तक रहे।

कैलि फास ६x—पंजरी की पीड़ा, आकृति की पीड़ा, दाहिनी ओर की स्नायविक पीड़ा, जिसपर शोतल वस्तु लगने से शान्ति मिले, ऊपर के दाँत से लेकर कान तक चुभन हो, अंग मे स्नायविक पीडा हो, उसके साथ हृदय बैठ जाता हो, उठने का मन न चाहता हो, धीरे-धीरे हिलने से शान्ति मिलती हो, उठने मे कष्ट हो।

फेरम फास ३x—सिर को दाहिनी ओर कनपटी में आँख के ऊपर अथवा जबडे की हड्डी में ऐसी पीडा हो कि बावला हो जाये, ज्वर, सिर की दाहिनी ओर प्रातःकाल में अधिकतर, किसी स्थान पर सूजन हो जाने के कारण ऐसी अत्यधिक पीडा मालूम हो जैसे कील ठुकी है।

नेट्रम म्यूर ६x—पीड़ा, मुँह से लार, आँख से आँसू निकलते हों, आकृति मे पीडा, कोष्ठबद्धता, प्रातःकाल लिखने-पढ़ने तथा वार्तालाप करने से पीडा मे अधिकता हो।

मैग्नेशिया फास ६x—यह औषधि हर प्रकार की स्नायविक पीड़ा मे दी जाती है। केवल ऐसी दशा में नहीं दी जा सकती जब पीड़ा मे शीत से

शान्ति मिलती हो, क्योंकि इस औषधि की विशेषता यह है कि सेकने अथवा उष्णता से लाभ होता है, पसलियों के मध्य मे पीड़ा, सिर मे अत्यन्त अधिक पीड़ा, हिलने-डुलने से अधिक हो, शीत लगने से पीडा वढ़ती हो, रात्रि में पीड़ा वढ जाती हो, दिन को कम हो जाती हो।

साइलिशिया ३x—ऐसी स्नायविक पीड़ा जो अधिक परिश्रम, वन्द स्थान में रहने अथवा मदिरा पीने के कारण हो, कमर तथा उदर की पीड़ा जो सेंकने अथवा मदिरा पीने के कारण हो, कमर तथा उदर की पीडा जिसमें सेंकने अथवा वस्त्र लपेटने से शान्ति मिले, दाँत की स्नायविक पीडा। वादी की प्रवल अवस्था में।

सिर दर्द
(Headache)

सिर का दर्द अधिकाशतः दूसरे-दूसरे रोगों का लक्षण मात्र है। स्नायविक सिर दर्द में टपक-सी होती है, माथे में तेज दर्द, भूख न लगना, मुँह मे स्वाद न रहना, कै, मिचली, ओकाई आना इत्यादि उपसर्ग दिखाई पडते हैं। ज्यादा चाय पीने, शराव पीने, धूप में घूमने, नींद न आने, पाकाशय की गडवडी से यह रोग होता है।

यह वड़ा कष्टदायक रोग होता है। आधे सिर मे जो दर्द होता है उसे अधकपारी कहते हैं।

चिकित्सा

कल्केरिया फास ६x—सिर पीडा के साथ सिर मे शीत प्रतीत हो, पाठशाला मे पढने वाले लडके-लडकियों की सिर पीडा, पाचन विकार अथवा वायु के कारण सिर पीडा, चलने अथवा हिलने मे चक्कर आये, चिड़चिड़े क्रोधी लड़के जिनके सिर की हड्डी के जोड़ खुले हों, मस्तिष्कीय कार्य करने मे कष्ट, दुष्ट स्वभाव, स्मरण न रहे।

कल्केरिया सल्फ ३x—सिर पीड़ा, चक्कर, सारे सिर मे पीड़ा हो, मुख्यत. मस्तक पर।

कैलि फास ३x—जब विद्यार्थियों की निर्बलता अथवा थकान के कारण सिर पीड़ा हो न कि पाचन विकार से, भोजन करने से सिर पीड़ा मे न्यूनता, स्नायविक सिर-पीडा, हिस्टीरिया के कारण सिर पीड़ा, पित्त-वमन के साथ सिर-पीड़ा, मासिकधर्म के कष्टों के साथ सिर-पीड़ा।

कैलि सल्फ ३x—ऐसी सिर पीड़ा जो गरम कमरे में तथा सायकाल को अधिक हो, शीतल तथा विमल वायु में न्यूनता हो।

नेट्रम फास ३x—इस प्रकार की असह्य वेदना हो कि जान पडे खोपड़ी में कुछ भरा है। मस्तक अथवा गुद्दी में पीड़ा, वमनेच्छा, ऐसी अत्यधिक पीड़ा हो कि जान पडे चाँद उड़ जायगी, मदिरा अथवा दूध पीने के पश्चात् सिर-पीड़ा।

नेट्रम म्यूर ६x—सिर पीडा, कोष्ठवद्धता, शुष्कता, प्यास, मुँह, आँख, नाक से स्राव हो, जीर्ण सिर पीड़ा लिये मासिकधर्म के पहले तथा पश्चात् सिर पीड़ा, सूर्योदय के साथ पीडा आरम्भ हो, सूर्यास्त के साथ पीड़ा समाप्त हो, आधे सिर मे पीडा, मूर्च्छा, मीठी-मीठी सिर पीड़ा, सोने से कम न हो, उपदंश वाले रोगियों की सिर पीड़ा के लिए लाभदायक है।

नेट्रम सल्फ ६x—सिर पीड़ा, चक्कर, जिह्वा पर हरी मैल, मासिक काल मे सिर पीड़ा, सदा वसन्त ऋतु में सिर पीड़ा हो, पित्तयुक्त सिर पीड़ा, पित्त-वमन, मुँह का स्वाद तिक्त, पित्त के कारण अतिसार, चाँद पर दाह, गुद्दी में ऐसी पीड़ा हो कि मानो सिर को किसी ने बाक में रख कर दबा दिया, कलख सहन न हो; अंधेरे कमरे में अच्छा जान पडे, वमनेच्छा तथा वमन, जीर्ण सिर पीड़ा, प्रातःकाल सोकर उठने से सिर पीड़ा आरम्भ हो, दोपहर तक रहे, सायंकाल को कम हो जाये।

फेरम फास ६x—शीत अथवा लू लग जाने के कारण सिर पीड़ा, सिर में दाह, झुकने अथवा हिलने से सिर पीड़ा अधिक हो, मुखमण्डल लाल, ज्वर, रुधिर प्रवाह सिर की ओर, दाँत में शीतल पवन लगने से पीड़ा अधिक हो,

कलख, धक्का लगना अथवा बालों का छूना सहन न हो सके, शीतल वस्तु सिर में लगने से शान्ति मिले।

मैग्नेशिया फास ३x—प्राण हरने वाली, ऐंठन वाली पीड़ा के साथ नेत्र अथवा दृष्टि विकार के कारण सिर पीड़ा, स्नायविक पीड़ा जिसमें नेत्र के सामने धब्बे दृष्टिगोचर हों, मुट्ठी मे पीड़ा हो, मस्तिष्क के परिश्रम अथवा पाठशाला में सिर पीड़ा सदैव हुआ करे।

साइलिसिया ३x—उदर विकार, स्नायविक, वातज, अधिक मस्तिष्क-परिश्रम से, अधिक गर्मी, स्नायविक निर्वलता, रक्त जम जाने के कारण पीड़ा, कठमाला विष, हड्डियों की उचित ढग से वृद्धि न हुई हो, निर्वल मनुष्य, पीली आकृति, अग थुलथुले, ऐसे रोगी जिनके शरीर में ओज व्याप्त न होता हो उनकी सिर पीड़ा के लिए लाभकारी है

चक्कर आना
(Vertigo)

सिर मे रक्त की कमी या अधिकता, पाकाशय का गोलमाल, हस्तमैथुन या अधिक इन्द्रिय सेवन, शराव आदि उत्तेजक पदार्थों का सेवन, चोट लगना, फोड़ों का वैठ जाना, वृद्धावस्था आदि कारणों से यह रोग होता है।

रोगी को ऐसा मालूम पड़ता है मानो समूचा शरीर हिलता है और उसके चारों ओर की चीजें चक्कर खा रही हैं। उठने-वैठने पर रोगी की आँखों के आगे अँधेरा छा जाता है। कभी-कभी वह चक्कर खाकर गिर पड़ता है।

चिकित्सा

कैलि फास ६x—रक्त की न्यूनता के कारण सिर घूमना, स्नायविक निर्वलता के कारण न कि पाचन विकार के कारण चक्कर हो, सिर गरम हो, ऊपर दृष्टि उठाने से चक्कर आये।

कैलि सल्फ ६x—चक्कर जो कि मुख्यतः सिर उठाने तथा ऊपर देखने से हो।

नेट्रम फास ३x—आमाशय मे अम्ल, पाचन विकार, क्षुधा कम, जिह्वा पर सफेद मैल, पाचन-विकार के कारण चक्कर।

नेट्रम म्यूर ६x—सिर घुमने मे ऐसा प्रतोत हो कि दाहिनी ओर गिर पड़ेगा, पाचन-विकार, गर्मी के कारण तथा पित्त की अधिकता के कारण चक्कर, जिह्वा पर पित्त के कारण पीली मैल, तिक्त स्वाद, चक्कर।

नेट्रम सल्फ ६x—मुख्य करके ऊपर देखने तथा खड़ा होने से चक्कर आये।

फेरम फास ३x—रुधिर प्रवाह सिर की ओर हो, आकृति लाल, कनपटी की रगों में तपन की पीड़ा, सिर घूमना, चक्कर।

मैग्नेशिया फास ६x—असह्य वेदना, दृष्टि-विकार के कारण चक्कर आये।

सुखंडी
(Marasmus)

इसको सूखा रोग भी कहते हैं। चूँकि इस रोग मे बच्चा सूखता जाता है इसलिए इसे सुखण्डी (Marasmus) कहते हैं।

कण्ठमाला दोष, दाँत निकलना, हानिकारक आहार, गन्दे और तग स्थानों में रहना, दूषित वायु के सेवन आदि इसके प्रमुख कारण हैं।

बच्चा खूब खाता है, उसे राक्षसी भूख रहती है। खाने के लिए बार-बार रें-रे करता है, किन्तु पाचन-क्रिया की गड़बड़ी के कारण दिन-प्रतिदिन सूखता ही जाता है। शरीर मे हड्डी और चमड़े के सिवाय कुछ नहीं रह जाता। बच्चे को कभी कै और कभी उदारमय की शिकायत रहती है। कभी धीमा बुखार और कभी सामान्य ताप का ही ह्रास हो जाता है।

चिकित्सा

कल्केरिया फास ३x—नकली रीति से पेटेण्ट खाद्य-पदार्थ बोतल मे भर कर जिन बच्चों को खिलाया जाता है उनकी सुखण्डी की बीमारी में यह लवण बहुत ज्यादा लाभदायक है। ऊँचा तलपेट, बढा हुआ यकृत, खाने के बाद ही पेट मे दर्द, बच्चे के मल में अजीर्ण अवस्था मे खायी हुई चीजें निकलना इत्यादि लक्षणों मे इसका प्रयोग होता है।

नेट्रम सल्फ ३x—जन्मार्जित प्रमेह, धातु-दोप, आध्मान के कारण तल-पेट का फूलना, पेट बहुत गड़गड़ाना (आन्त्र सूजन), पीले रग का पतला मल बड़े वेग से निकलता है, सवेरे अतिसार बढ़ जाता है।

साइलिसिया ३x—बच्चे का माथा बहुत बड़ा रहता है, पर उसका शरीर दुवला और शीर्ण होता जाता है। सहज मे ही बहुत ज्यादा पसीना होता है, स्नायविक और घबड़ाहट-भरा स्वभाव, चेहरा पतला, बुड्ढों की तरह सिकुड़ा चेहरा, माता के स्तन का दूध पीने की इच्छा न करना। स्तन का दूध पीने पर वमन हो जाता है, पानी की तरह पतले दस्त आते हैं, उसमें भयानक बदबू रहती है; आवहवा मे परिवर्तन होने से ही कमजोरी उत्पन्न हो जाती है। कंठमाला धातुग्रस्त बच्चों के लिए और टीका लेने के बाद का दुष्परिणाम दूर करने के लिए यह लवण विशेप उपयोगी है।

कैलि फास ३x—पेशी सम्बन्धी या दूसरी तरह के कास-रोग में जब रोगी के मल में भयानक बदबू रहती है, उस समय इस लवण के साथ दूसरी-दूसरी निर्देशित औपधियों के प्रयोग से विशेप उपकार होता है। पतनावस्था, सुस्ती और स्नायविक दुर्वलता-सम्बन्धी नाना प्रकार के उपसर्गों की यह श्रेष्ठ दवा है। मल-मूत्र आदि सभी स्रावों में सड़े मास की बदबू रहती है।

नेट्रम फास ३x—अम्ल की अधिकता मौजूद रहने पर अन्यान्य निर्देशित लवणों के साथ इसका पर्याय-क्रम से व्यवहार होता है।

नेट्रम म्यूर ३x—गर्दन पेशी का शीर्ण पड़ जाना और कमजोरी की वजह से बच्चे का माथा सामने की ओर हिला करता है। मिट्टी की तरह मैला रंग, कब्जियत, बच्चा देर से बोलना सीखता है; पुष्ट भोजन मिलने पर भी दुबला ही होता जाता है।

सूतिका-ज्वर
(Puerperal Fever)

सूतिका-ज्वर बड़ी ही भयानक बीमारी है। इस रोग के पैदा होने का कारण एक तरह का जीवाणु या जहर है। प्रसव के बाद कई कारणों से जरायु का दूषित हो जाना, प्रसव के बाद फूल का अंश जरायु में रहकर उसका सड जाना, इस बीमारी के पूर्ववर्ती कारण हैं। प्रसव से ३-४ दिन बाद ही सौरी का बुखार होता है। प्रथम जाड़ा, गर्मी या कँपकँपी देकर हल्का ज्वर शुरू होता है। तत्पश्चात् ज्वर १०६° तक होता है। एकाएक प्रसव के बाद वाला स्राव, पसीना और अक्सर स्तनो से दूध निकलना बन्द होकर रोगिणी की मृत्यु हो जाती है। जरायु से पीब की तरह स्राव निकलना अशुभ लक्षण है।

चिकित्सा

फेरम फास ६x—सर्दी मालूम होती हो, बाद को ज्वर हो जाता है। पसीना अधिक आता हो, मूत्र व पाखाना साफ न होता हो, प्यास न हो, दूध कम उतरता हो अथवा न उतरता हो, गन्ध, मल व रुधिर निकलना बन्द हो गया हो, पेडू पर सूजन हो।

कैलि म्यूर ६x—जिह्वा पर सफेद मैल की तह जमी हो। खाँसी हो या शरीर के किसी भाग पर शोथ (सूजन) हो। यदि ज्वर हो तो **फेरम फास** के साथ पर्याय-क्रम से देना चाहिए।

कैलि फास ६x—जब रोगिणी व्यर्थ विलाप करती हो, व्याकुलता हो, ज्वर हो, शरीर के किसी भाग से दुर्गन्ध आती हो।

नेट्रम म्यूर ३x—जब रोगिणी मूर्च्छित होकर वडवडाती हो, प्यास अधिक हो, जिह्वा शुष्क हो जाती हो। ऐसी अवस्था में **फेरम फास** के साथ पर्याय-क्रम से देना चाहिए।

मुख्यानुभव—यदि ज्वर सुवह के ग्यारह वजे तक चढा हो तो ज्वर उतर जाने पर **नेट्रम म्यूर ३०x** और **नेट्रम सल्फ ३०x** दोनों औषधियों को अदल-बदल कर तीन-तीन घण्टे वाद देना चाहिए और यदि ज्वर दोपहर के वाद चढ़ा हो तो **नेट्रम सल्फ ३०x** और **फेरम फास ३०x**। हर औषधि ज्वर उतर जाने के दो-दो घण्टे पश्चात् देनी चाहिए। चिकित्सा के वीच दुर्वलता दूर करने के लिए **कल्केरिया फास ३०x** की एक मात्रा प्रातःकाल देनी चाहिए। नहाने के दिन सर्दी के कष्ट से वचने के लिए नहाने के पूर्व **फेरम फास ३x** या **कैलि म्यूर ३x** हर औषधि ५ ग्रेन मिलाकर गर्म पानी के साथ देना चाहिए।

उदर-शूल
(Colic Pain)

आँतों के भीतर स्नायविक ढग का समय-समय पर एक तरह का तीव्र दर्द होता है। उसे कालिक पेन कहते हैं।

आँतों के भीतर अजीर्ण खाद्य इकट्ठा होने या सडने से, लोभ के वश वढिया खाद्य-पदार्थ अधिक परिमाण में खाने से, कडा जुलाव लेने, पेट में या पैर में सर्दी लगने, घातक पदार्थ जैसे सीसा आदि खाने से यह रोग होता है।

इसमें ऐंठन; खोंचा मारने या मरोड़ जैसा दर्द होता है। कब्जियत रहती है। मिचली, डकार, श्वासकष्ट, पेशाव की इच्छा आदि रहती है।

चिकित्सा

मैग्नेशिया फास ३x—इस वीमारी की श्रेष्ठ दवा है। गरम पानी में घोलकर प्रयोग करने से तुरन्त फायदा करता है। रह-रह कर होनेवाला

दर्द, बहुत अधिक पेट फूलना और रगड़ने या सेकने पर घटने का लक्षण अगर हो, नये पैदा हुए बच्चे का बिना विशेष कारण के ही पेट फूलता हो और रोता हो तो **मैग्नेशिया फास** आश्चर्यजनक रूप से फायदा करता है।

नेट्रम सल्फ ६x—पित्त प्रकोप की वजह से शूल का बहुत दर्द, तीता स्वाद; पित्त वमन, भूरी आभा लिये हरे रग की लेप चढ़ी जीभ, यकृत के क्रिया-विकार के कारण पैर फूलना और शूल का दर्द।

शिशु के शूल की नेट्रम सल्फ श्रेष्ठ दवा है। थोड़ी-थोड़ी देर के अन्तर से बार-बार प्रयोग करना पड़ता है। प्रसव के बाद कब्जियत और पेट फूलना या उदराध्मान।

कल्केरिया फास ३x—पाचन शक्ति के बिगड़ जाने की वजह से खाया हुआ पदार्थ पच न सकना, मल निकलने के समय उदर-शूल और हरे रग के पतले मल के साथ अजीर्ण, खायी हुई चीज दिखाई देती है। ऐसे स्थान पर **नेट्रम सल्फ** के साथ इसका पर्याय-क्रम से प्रयोग किया जाता है। जो उदर-शूल केवल **मैग्नेशिया फास** के प्रयोग से आरोग्य नहीं होते वहाँ **कल्केरिया फास** के साथ पर्याय-क्रम से प्रयोग करने पर फायदा होता है।

नेट्रम फास ३x—बच्चे और बालक-बालिकाओं के उदर-शूल की यह श्रेष्ठ दवा है। अम्ल की अधिकता, पेट में दूध फटकर वमन हो जाता है और हरे रग की खट्टी गन्ध मिला मल। जवान रोगियों के अम्ल की अधिकता के कारण उदर-शूल हो जाय तो **मैग्नेशिया फास** के साथ पर्याय-क्रम से प्रयोग करना चाहिए।

कैलि सल्फ ६x—शूल के दर्द की तरह तेज दर्द, पेट छूने पर ठण्ढा मालूम होता है। तेज गर्मी या एकाएक सर्दी लगकर मानसिक उत्तेजना की वजह से पेट मे दर्द। दर्द उठने के कुछ देर बाद गन्धक की डकार आती है। **मैग्नेशिया फास** से फायदा न होने पर इस दवा का प्रयोग कर देखना उचित है।

कैलि फास ३x—आन्त्र-शूल, वार-वार पाखाना लगना, पर न होना, सामने की ओर टेढे होने पर आराम होना या वायु की अधिकता के कारण पेट फूलना।

नेट्रम म्यूर ३x—डकार के साथ पित्त-शूल, दर्द एक जगह से उठकर वहुत दूर तक फैल जाता है। यकृत की गड़वड़ी की वजह से आध्मान और शूल के दर्द की यह अच्छी दवा है।

शोथ
(Oedema or Dropsy)

समूचे शरीर या खास-खास जोड़ों की जल भरी सूजन को शोथ कहते हैं। हाथ, पैर, माथा इत्यादि खास-खास अंगों के शोथ को उस स्थान का शोथ कहते हैं और शरीर के सभी स्थानों में शोथ हो जाता है तो उसे सर्वांगीण शोथ कहते हैं। स्थान के अनुसार ही इसका नाम होता है जैसे माथे के शोथ को मस्तकोदक, उदर के शोथ को उदरी, वक्ष या छाती के शोथ को वक्षोदक कहते हैं।

शोथ कोई अलग वीमारी नहीं है, वल्कि किसी दूसरी वीमारी का परिणाम यह लक्षण होता है। रक्त का पानी वाला हिस्सा खून वहाने वाली शिराओं के भीतर से जाकर त्वचा के नीचे वनावट वाले उपादान और माथा, छाती, उदर इत्यादि कितनी ही जगहों में जमकर सूजन पैदा कर देता है। शोथ के स्थान को उँगली से दवाने पर गड्ढा पड जाता है और उँगली हटा लेने के वाद धीरे-धीरे वह जगह भर जाती है।

चिकित्सा

कैलि म्यूर ६x—पित्त-विकार और प्रकृति की गड़वड़ी से उत्पन्न शोथ, सफेद या सफेद आभा लिए धुमैली लेप चढ़ी जीभ, हृद्-यन्त्र और वृक्क-यन्त्र में गुर्दा के दोष की वजह से शोथ। हृद्‌पिण्ड की कमजोरी और

काँपना—कैलि फास लवण के साथ एक के वाद दूसरा इस क्रम से प्रयोग करना चाहिए।

नेट्रम सल्फ ३x—शोथ और उदरी रोग की यह एक वहुत वढ़िया दवा है। पुरुषों के अण्डकोष और स्त्रियों के भगोष्ठ तक रोग फैल जाने पर भी इस नमक के प्रयोग से आरोग्य होते देखा जाता है। लक्षण के अनुसार अन्यान्य लवणों के साथ एकान्तर क्रम से प्रयोग किया जाता है।

नेट्रम म्यूर ३x—प्रायः सव तरह के शोथ रोग मे लाभदायक है। इसके साथ एकान्तर क्रम से नेट्रम सल्फ का प्रयोग होने पर ज्यादा फायदा होता है। अण्डकोप मे जल-सचय वाली अवस्था मे भी लाभ करता है। खसरा या छोटी माता के वाद शोथ, चेहरा उतरा हुआ, सफेद लार वहने के साथ ही सफेद वमन। पर्याय-क्रम से कब्जियत और अतिसार; वहुत अधिक कमजोरी; थकावट मालूम होना।

फेरम फास ३x—खून की कमी की वजह से क्षीण हो जाने के वाद शोथ रोग मे, खायी हुई चीजो की साङ्गीकरण शक्ति की कमी की वजह से क्षीण उपसर्ग के रूप मे उत्पन्न शोथ। इस लवण के साथ एकान्तर क्रम से **कल्केरिया फास** का प्रयोग करने पर वहुत अधिक फायदा होता है। अङ्ग-प्रत्यग का सुन्न हो जाना, ठढक और चीटी रेगने की तरह अनुभव होना; जीर्ण और क्षयकर तथा प्लेयो रोग के वाद का शोथ, तिमिर-दृष्टि और कनीनिका मे फैलने वाला गँदलापन।

कल्केरिया फ्लोरिका ६x—जल संचय की वजह से हृत्पिण्ड, फेफड़ा और प्लुरा का फैलना, वात रोग के साथ का शोथ, हृत्पिण्ड की वीमारी से उत्पन्न उदरी रोग। अण्डकोप और भगोष्ठ का फूलना तथा हृत्पिण्ड का काँपना, पेशाव का परिमाण थोड़ा, रङ्ग गहरा और उसमे तेज गन्ध रहती है। कनीनिका का प्रदाह, उदरी के साथ जरायु का अपने स्थान से हट जाना।

कैलि सल्फ ६x—छोटी माता के वाद का शोथ। सर्दी मालूम होना, क्लान्ति और कलेजा का काँपना, किसी चर्म रोग के रुक जाने के वाद शोथ, पाकाशय में जलन, प्यास, मिचली और वमन, स्वाद विगड़ा हुआ, जीभ पीली आभा लिये चिकना मैल चढी रहती है। पीले रंग का लसदार और पतला वदवूदार मल, हाथ-पैर मे ऐंठन की तरह दर्द, इधर-उधर हटने वाला दर्द, चर्म निष्क्रिय, उसमें पसीने का अभाव रहता है। तीसरे पहर से आधी रात तक सव लक्षण वढ जाते हैं। वन्द कमरे में वेचैनी और उत्कठा वढ जाती है। खुली जगह में घटना।

कैलि फास ६x—सुस्ती और स्नायविक दुर्वलता की अधिकता होने पर दूसरे-दूसरे उपयोगी लवणों के साथ पर्याय-क्रम से सेवन करना चाहिए। पैशिक और स्नायविक पतनावस्था से पक्षाघात तक सभी अवस्थाओं में लाभदायक है। कैलि फास लवण को वायोकेमिक प्रणाली मे मृत सञ्जीवनी कहा जाय तो भी अत्युक्ति नहीं है। स्नायविक अवसाद और दुर्वलता की अधिकता के कारण सिर में चक्कर आना, माथे के पीछे वाले भाग मे दर्द और भार मालूम होना; चित्त का उद्विग्न रहना, नींद न आना, दृष्टि शक्ति का विगड जाना, छोटी आँत और मलद्वार प्रक्षेपन, शीत की कमी की वजह से कब्जियत अथवा विना किसी तरह के दर्द के पानी की तरह दस्त और पेशाव केसर की तरह के उपसर्ग सर्दी मे वढ जाते हों।

साइलिसिया २००x—दूषित पदार्थ के पचाने अथवा वाहर करने में लाभदायक है।

पथ्य और परिचर्या

पथ्य पर ख्याल न रहने की वजह से सभी रोग वढ जाते हैं और रोगी भी नष्ट हो जाता है। शोथ रोग में जव तेज वुखार इत्यादि उपसर्ग नहीं रहते कितने ही रोगी और उनके अभिभावक, पथ्य और परिचर्या के सम्वन्ध मे पहले सतर्क नही रहते, इसलिए अन्त मे वहुत कुछ परिश्रम और चेष्टा करने पर भी रोगी की रक्षा करना असम्भव हो जाता है।

स्मरण रखना चाहिए कि शोथ और जलोदर रोग मे पसीना लाने के उद्देश्य से गरम पानी से वदन पोंछना या नहाना मना है। इससे वहुत हानि होती है। रोगी कमजोर हो जाता है यहाँ तक कि एकाएक मृत्यु तक हो सकती है। थोडे गरम पानी मे शरीर धोना या नहाना उचित है, पर चर्म का अच्छी तरह रगडना आवश्यक है। इसीलिए कोमल गमछे के वदले मोटा कपडा या तौलिया काम मे लाना उचित है। नहाने के वाद एक सूखे तौलिया से अच्छी तरह वदन पोंछ कर तदुपरान्त फ्लानेल या कोई दूसरा नरम और गरम वस्त्र पहन लेना चाहिए। शरीर के ठीक ऊपर ही फ्लानेल का कपडा पहनना उचित है। शोथ रोग के लिए ठण्ढी हवा लगना एकदम मना है।

रोग के आरम्भ से ही नमक छोड़ देना उचित है। यदि बिना नमक का भोजन विलकुल ही अच्छा न लगे तो वहुत थोड़ी मात्रा में सेंधा नमक को थोडा भूनकर व्यवहार किया जा सकता है।

शोथ होने पर पानी वन्द करना उचित है। पानी पिये विना अगर वहुत तकलीफ हो तो पानी खौलाकर ठंढा होने पर पिलाना चाहिए। सूखे नारियल का पानी भी पिलाया जा सकता है। पर एकदम असमर्थ अवस्था में सेवन करना चाहिए। छेना का पानी वहुत उत्तम है, जरूरत होने पर इसके साथ मधु मिला लिया जाता है, यह शोथ रोगी के लिए सुपथ्य है।

दूध (गाय का दूध) शोथ रोग का वहुत श्रेष्ठ पथ्य है। अगर किसी वजह से दूध पीने के कारण उदर मे वायु हो अथवा पतले दस्त आने लगें तो नेट्रम फास के प्रयोग से यह उपसर्ग छूट जाता है। पीपल के साथ भी दूध उवाल लेने का नियम है। पर वायोकेमिक औषधि सेवन के साथ पीपल प्रभृति औषधि के सेवन से और औषधि गुण संपन्न पदार्थ किसी तरह व्यवहार करने के कारण वायोकेमिक दवा का गुण नष्ट हो जाता है।

रोग प्रवल न होने पर दोनों वक्त दूध के साथ भात मिलाकर मिश्री की बुकनी के साथ खिलाया जा सकता है। पर ४–५ वर्ष का पुराना चावल

का भात न मिले तो ढेकी का छाँटा पुराना अरवा चावल खाना उचित है। भात का माँड़ निकाल कर न फेंकना चाहिए, उसी मे सुखा लेना अच्छा होता है। व्यर्थ ही चावल मे ज्यादा पानी न देकर जरूरत के अनुसार थोडे ही पानी मे चावल डालकर सावधानी स सिझा लेने पर सुन्दर भात होगा, पर शोथ रोग मे भात छोड़ देना ही अच्छा है। दोपहर के पहले लाल गेहूँ के आटा की रोटी और दूध, सन्ध्या के समय मान मण्डल या धान का लावा और दूध खाना चाहिए। जलपान के लिए छेना, सन्देश, ब्राउन ब्रेड (लाल गेहूँ की रोटी) सेंककर और उसमे मधु मिलाकर खाया जा सकता है। अरुई का हलवा, अरुई का वड़ा और रोगी की रुचि के अनुसार भात मे अरुई खायी जा सकती है।

शोथ रोग मे दही मना है, पर यह उत्तम पथ्य है। घर मे गाय के दूध का दही जमा कर जरूरत के मुताबिक इस दही मे चौथाई पानी मिलाकर मट्ठा बनाना चाहिए। इसके बाद भूने हुए जीरे की बुकनी, थोड़ा-सा भूना हुआ सेंधा नमक और थोडा सा मधु मिला लेने पर उपयोगी पान-सामग्री तैयार होती है। इस वक्त लाल गेहूँ का आटा या जौ के आटे की रोटी और दूध, सन्ध्या के समय दूध साबूदाना, ब्राउन ब्रेड और दूध प्रशस्त खाद्य होता है।

तरकारियों मे सहजने की फली, अरुई, ओल (सूत), गाजर, कच्चा केला, गूलर, फूल, करैला, प्याज और अदरख खाना चाहिए।

दाल—किसी तरह की दाल न खाना ही उचित है। सिर्फ मूँग का जूस खाया जा सकता है। मछली एकदम मना है।

मांस—शोथ रोग मे मांस सुपथ्य है। पर बकरे का मांस, भेड़ का माँस न खाना चाहिए। मुर्गी, तीतर, मोर और खरगोश का मांस सुपथ्य है। बकरे या भेड़ का रस खिलाने पर नुकसान नहीं करता, यह सहज मे पच जाता है और ताकत भी बढ़ा देता है। अगर पतले दस्त आते हों तो दूध के साथ अरारोट सिझाकर मिला लेना चाहिए।

निषिद्ध—ज्यादा परिश्रम, व्यायाम, पेट भर कर खाना, नया चावल, खटाई, शराब, दिन में सोना, भारी और विरुद्ध भोजन तथा मैथुन।

हृत्शूल

(Angina Pectoris)

हृद्‌यन्त्र की महाधमनी के गाज से उत्पन्न कोरोनरी आर्टरीज (Coronary Arteries) नामक दोनों धमनियों की बीमारी की वजह से कभी-कभी गहरी यन्त्रणा के साथ शूल का दर्द दिखाई देता है। प्रायः ४० वर्ष की उमर के बाद इस बीमारी का आक्रमण होता है। इसके पहले होने पर उपदंश की खोज करना आवश्यक है।

इसका आक्रमण तीन श्रेणी का दिखाई देता है। जैसे—

(क) हलका आक्रमण—मृदुभाव, वक्षोस्थि (Sternum) के नीचे बेचैनी की तरह मालूम होना, दबाव मालूम होना, तकलीफ, उद्विग्नता, चेहरा कुछ हलका पीलापन लिये या मूर्च्छा का भाव। इस अवस्था में ठीक शूल का दर्द नहीं होता, वक्षोस्थि के नीचे एक खिंचाव की तरह मालूम होता है, रोगी अपनी तकलीफ की जगह ठीक-ठीक नहीं बता सकता और इसमें दर्द का ठीक-ठीक स्थान और उसका फैलना समझ में नहीं आता। बहुत ज्यादा शारीरिक या मानसिक परिश्रम की वजह से शरीर का क्षय होना आरम्भ हो गया है—इस बात की यह आरम्भिक सूचना है।

(ख) लघुशूल (Angina Minor) बहुत ज्यादा जर्दा और तम्बाकू खाने वाले या बहुत ज्यादा धूम्रपान करने वालों को यह बीमारी होती है। स्नायु प्रधान मनुष्यों पर ही इसका आक्रमण होता है और ज्यादातर स्त्रियों को होता है। एकाएक कलेजे में दर्द उठता है और बायें बाहु में फैल जाता है। यह लघुशूल, मारात्मक नहीं होता।

(ग) कशेरु शूल (Angina Major)—इसमें दो कारण आशंका के रहते हैं—(१) हृत्-पिण्ड और धमनियों की यान्त्रिक बीमारी; (२) एका-

एक मृत्यु की सम्भावना। इसका उत्तेजक कारण सहज में ही पकड में नहीं आता। ज्यादा परिश्रम, उद्वेग, उदर में वायु की अधिकता इत्यादि।

आक्रमण के लक्षण—

वक्षस्थल मे भयानक यन्त्रणादायक दर्द, ऐसा मालूम होता है मानो कोई हृन्-पिण्ड को चिमटे से दवा रहा है।

गर्दन और वायें वाहु में दर्द फैल जाता है। चेहरा पीला और वहुत ज्यादा पसीना होता है। उद्वेग और वेचैनी; तुरन्त मृत्यु हो जाने का भय, नाड़ी का तनाव वहुत थोड़ा वढता है। कई क्षण ही यह भाव रहता है; इसके वाद डकार, वार-वार पेशाव और सुस्ती पैदा हो जाती है।

चिकित्सा

एकदम विश्राम करना चाहिए। वक्ष में, गर्दन मे और पैर की पसली मे सरसों की पट्टी (Mustard Plaster) का प्रयोग किया जाता है। रोगी का वोलना वन्द कर देना चाहिए, इशारे से अपनी वातें रोगी को वतानी चाहिए। रोगी के कमरे में सेवा करने वाले और चिकित्सक के सिवा और किसी को न जाना चाहिए। शूल का दर्द दव जाने के वाद भी रोगी के लिए सीढ़ी चढना, ऊँचे स्वर में वोलना, गाना, वाजा वजाना; टाइपराइटर यन्त्र पर काम करना, साइकिल पर चढ़ना, वैलगाड़ी पर चढ़ना या घुड़सवारी करना, पहाड़ी जगहों में भ्रमण; दौडना, भारी चीजें उठाना, वहुत तेजी से कोई काम करना, तेजी से चलना आदि त्याग देना चाहिए। रोगी को कभी भारी चीजें न खानी चाहिए। शराव आदि उत्तेजक पदार्थ सेवन न करना चाहिए। धूम्रपान यथासम्भव घटा देना चाहिए, तम्बाकू या जर्दा खाना छोड़ देना चाहिए। मास, अण्डा, पकी मछली, मिर्चा, गरम मसाला, चाय, काफी इत्यादि से वहुत हानि होती है। हल्की और सहज में पचने वाली चीजें देनी चाहिए, खुली हवा में वैठना चाहिए, जी लगाने के लिए ऐसी पुस्तकें पढनी चाहिए जिनमे मस्तिष्क में ज्यादा भार

न पड़े, पर नाटक या उपन्यास न पढ़ना चाहिए। जितना सहन हो उतना स्नान करना चाहिए।

मैग्नेशिया फास ६x—स्नायविक आक्षेप, तेज दर्द। वक्ष में संकोचन की तरह दर्द, यह लवण गर्म पानी में मिला कर दस मिनट के अन्तर से प्रयोग करना चाहिए।

कैली फास ६x—ज्यादा कमजोरी, हृत्पिण्ड की क्रिया क्षीण और हृत्-स्पन्दन न होना; वेहोशी आ जाने का लक्षण। मैग्नेशिया फास के साथ पर्याय-क्रम से प्रयोग करना चाहिये।

फेरम फास ६x—शूल के दर्द के साथ चेहरा लाल, माथे में दर्द की अधिकता; ज्वालामय उत्ताप। मैग्नेशिया फास के साथ पर्याय-क्रम से प्रयोग करना चाहिये।



हैजा
(Cholera)

कोम्मा वैसिलस (Comma Bacillus) नामक जीवाणु जब आँतों मे प्रवेश कर जाता है तो हैजा हो जाता है। शरीर में घुसकर यह करोड़ों जीवाणुओं की सृष्टि कर देता है।

हैजा कहने से ही कै और दस्त समझ में आता है। कच्चे फल, मूल, खट्टी या सड़ी चीजें (खासकर सड़ा माँस-मछली) खाना, दूषित वायु का सेवन, बासी दूध या गन्दा पानी पीना, बहुत ज्यादा खान-पीना, रात्रि में जागना, नशा करना आदि इसके गौण कारण हैं।

सड़े कोहडे या पानी में डुबाकर रखे हुए बासी भात के नीचे के पानी अथवा चावल के धोवन या माँड़ की तरह दस्त और पानी की तरह गन्धहीन दस्त का होना, हैजा का प्रधान लक्षण है। इसके बाद सुस्ती, आँख-मुँह धँस जाना, प्यास, पेशाब बन्द हो जाना, अकडन

ऐंठन, सारा शरीर नीला और ठण्डा पड़ जाना, तन्द्रा आदि लक्षण दिखलाई पड़ते हैं।

प्रकार भेद

(१) अतिसारिक हैजा (Diarrhoeic Variety)—इसमे प्रवल दस्त, परिमाण में अधिक और जल्दी-जल्दी होता है।

(२) पाकाशयिक हैजा (Gastrica Variety)—इसमे पाकस्थली में उत्तेजना, मिचली और लगातार कै-दस्त होता है।

(३) पाकाशयिक आन्त्राशयिक प्रकार (Gastro Enterica Variety)—इसमें दस्त और कै दोनों ही समान कष्टकर भाव से होते हैं।

(४) शुष्क हैजा (Dry Variety)—पतले-पतले दस्त, एकाएक रोग का घातक होना। यह वहुत ही भयकर होता है। वहुधा रोगी की मृत्यु हो जाती है।

(५) एकिया वेराइटी (Acaie Variety)—जिसमें रोगी पहले से ही ऐसा सोचता है कि उसे ज्ञान नहा है। शरीर नीला हो जाता है।

(६) रक्तस्राव प्रकार का (Haemorrhagic Variety) इसमें दस्त में रक्त दिखाई पड़ता है। गँजेड़ियों तथा शराबियों को अधिक होता है।

(७) प्रादाहिक हैजा (Inflammatory Variety)—नाड़ी पूर्ण और चञ्चल रहती है। शरीर लाल हो जाता है। साधारणतया हैजा दो भागों में बाँटा गया है— १) विशूचिका (Chlorine) और (२) असली हैजा (Asiatic Cholera)।

विशूचिका में नाभी के चारो ओर खोचा मारने की तरह दर्द होता है। पित्त मिला हरे रग का दस्त होता है, पेट में ऐंठन होती है, शरीर की गर्मी धीरे-धीरे घटती है, पेशाब वन्द नहीं होता, चेहरा वदरग नहीं होता आदि। किन्तु प्रकृत हैजा में पेट दर्द नहीं होता। इसमें पहले से ही पित्त नहीं रहता, पहले अँगुलियों में ऐंठन होती है फिर हाथ और पैरों

मे, शरीर की गर्मी एकाएक घट जाती है, पहले से ही पेशाब बन्द हो जाता है, नाक की जड़ पीली पड जाती है आदि।

अवस्थाएँ

(१) आक्रमणावस्था (Stage of invasion)
(२) पूर्णविकासावस्था (Stage of full development)
(३) पतनावस्था (Stage of collapse)
(४) प्रतिक्रियावस्था (Stage of reaction)
(५) बाद के उपसर्ग (Stage of sequela)

चिकित्सा

फेरम फास ६x—रोग के आरम्भ में ही प्रयोग करने पर रोग की गति रुक जाती है। इसके साथ ही पर्याय क्रम से **कैलि फास** का प्रयोग किया जाता है। गर्मी के दिनों में धूप की गर्मी में रहने के बाद अगर हैजा हो जाये तो इससे बहुत फायदा होता है।

कैलि फास ३x—मल चावल धोये पानी की तरह या बासी भात रखे हुए पानी की तरह होता है। मल मे बहुत बदबू, पतनावस्था, नाडी प्रायः लुप्त, चेहरा उतरा हुआ अथवा नीली आभा लिये।

नेट्रम सल्फ ३x—पानी की तरह पतला मल बड़े वेग के साथ निकलता है। जीभ हरी आभा लिये, कभी भूरी आभा लिये धुमैली लेप चढ़ी, जीभ के पीछे की ओर चिकना मैल। मुँह का स्वाद तीता, पेट में दर्द, पित्त मिश्रित वमन। इसे अन्यान्य उपयोगी औषधियों के साथ पर्याय-क्रम से प्रयोग करना चाहिये। यह हैजा का उत्तम प्रतिषेधक है।

मैग्नेशिया फास ३x—दस्त, कै, दर्द, ऐंठन में **कैलि फास** और **फेरम फास** के साथ पर्याय-क्रम से इसका प्रयोग किया जाता है। पाकाशय प्रदेश को छूने पर दर्द होता है। पेट में दर्द, पेट फूलना, बार-बार डकार पर डकार आने पर भी आराम न मिलना। वमन और लगातार ओकाई, बिना

किसी रंग के दस्त, मल बड़े वेग से निकलता है, आमाशयिक रोगी की तरह पेट में मरोड़ का दर्द। पेशाव करने के समय तकलीफ या पेशाव रुक जाना, श्वासकष्ट, वक्ष में दवाव मालूम होना, हिचकी आना आदि।

नेट्रम म्यूर ३x—पानी की तरह विना किसी रंग की कै, वुल-वुले भरी, साफ चिकनी मैल से ढँकी जीभ, पेट मे दर्द; मुँह का स्वाद नमकीन, वहुत पतला, विना किसी रंग का या पीली आभा लिये दस्त, पाखाना हो जाने के वाद मलद्वार में जलन, कुछ खून मिले पतले दस्त; जुलाव या दूसरी तेज एलोपैथिक दवाओं के सेवन के वाद के उपसर्ग के रूप मे वीमारी। गर्म पानी के साथ तैयार किया हुआ इस लवण का द्रव मलद्वार की राह से प्रयोग करने पर तुरन्त फायदा होता है। इसके साथ भी पर्याय-क्रम से कैलि फास का प्रयोग करना चाहिये।

ऊपर लिखी दवाओं को एक साथ मिलाकर मिक्श्चर वना कर देना उत्तम रीति है।

पथ्य

पथ्य के सम्बन्ध में विशेष सतर्क रहने की जरूरत है, जव तक कै होना वन्द न हो जाय और मल में रंग न आ जाये, तव तक पानी खौलाकर और ठण्ढा कर ही पिलाना चाहिए।

जव मल में रंग आ जाये, तो आरारोट सिझाकर खूव पतला, नमक मिलाकर खाने को देना चाहिए। उसमें दो-चार बूँद कागजी नीबू का रस मिला देने पर सुगन्ध आ जाती है। और रोगी स्वाद से खाता भी है। चित्त की स्वाभाविक क्रिया फिर से जारी होने के वाद अगर रोगी को अच्छी तरह भूख मालूम हो और मल गाढ़ा अथवा पीले रंग का हो या हिचकी प्रभृति किसी तरह का उपसर्ग न रहे तो गन्द भादुलिया के साथ कच्चा केला और गूलर सिझाकर इसका शोरवा वनाकर देना चाहिए।

———

क्षत

(Ulcer)

किसी प्रकार के जख्म को क्षत कहते हैं।

चिकित्सा

फेरम फास ६x—सब तरह के जख्मों का ज्वरीय उत्ताप, प्रदाह-दर्द, स्थानिक अर्थात् किसी खास जगह पर गरमी मालूम होना प्रभृति उपद्रव दमन करने की यह सर्वश्रेष्ठ दवा है। निर्देशित दूसरे-दूसरे लवणों के साथ पर्याय-क्रम से व्यवहृत होता है। कटने के बाद ही खून बन्द करने के लिए १x पानी की गद्दी पर रख कर लगाइये।

कैली म्यूर ६x—गाढा, सफेद सौवियस रस का निकालने वाला जख्म, जरायु ग्रीवा का जख्म, क्षारयुक्त और खाल उधेड़ने वाला रस बहना, सफेद या धुमैली आभा लिये जीभ कैली फास लवण का खास निर्देशक सकेत है। आग से जल जाने के कारण सब तरह के छाले, जख्म आदि उपसर्ग की वजह से कैली म्यूर का भीतरी और बाहरी दोनों प्रकार का ही प्रयोग किया जाता है।

साइलिसिया ३x—हाथ-पैर का गहरा जख्म अस्थिवेष्ट की झिल्ली तक फैल जाता है, सहज मे और सामान्य कारण से ही जख्म उत्पन्न हो जाता है और आराम होने में विलम्ब होता है। पतली बदबूदार पीले रंग की पीब बहने वाला जख्म, नासूर का घाव, नाना स्थानों की ग्रन्थियाँ फूल जाती हैं और कडी हो जाती हैं। सूजन, पीब के बिना ही कड़ा फोड़ा, ग्रन्थियों का बढना और कण्ठमाला से उत्पन्न नाना प्रकार के उपसर्ग, गाढ़ा पीले रंग का पीब स्राव, इस लवण के भीतरी और बाहरी प्रयोग से बहुत फायदा होता है।

कल्केरिया सल्फ ६x—बिना खून या खून भरा पीब का स्राव, जल जाने या झुलस जाने के बाद पीब पैदा होने पर यह लवण बहुत ही फायदा करता है। कटी जगह पर, जख्म में खरोंच इत्यादि मे जब सहज में ही पीब हो

जाती है और जल्दी सूखना नहीं चाहती; पीली पपड़ी जमने वाला चर्म रोग, दूधिया पपड़ी जमना, ग्रन्थियों मे जख्म पैदा होकर पीले रग का या लाल आभा लिये पीव निकलना, बहुत ज्यादा या देर तक स्थायी पीव स्राव इससे अवरुद्ध हो जाता है।

कल्केरिया फ्लोरिका ६—हड्डी का क्षय रोग, जख्म, गाढ़ी पीले रग की पीव और हड्डियों के टुकड़े निकलना।

नेट्रम फास ६x—उदर या आँतों का जख्म, खट्टी कै या पीले रग का काफी के चूर की तरह पर्याप्त वमन होता है। उपदंश का जख्म, एक्जिमा प्रभृति चर्म की बीमारियाँ, गाढा मधु की तरह के रग का रस बहना, सहज में खाल उधड़ जाती है। जख्म या चर्म रोग में भी इस लवण को लगाने वाली जीभ की विशेषता की तरफ नजर रखना उचित है। जीभ तर और उसके पिछले भाग पर पीला गाढा लेप चढा रहता है।

कल्केरिया फास ६—जख्म या स्राव अथवा हड्डी के जख्म की विशेषता के अनुसार वायोकेमिक लवण का प्रयोग करने के समय, बीच-बीच में यदि इस लवण का प्रयोग किया जाता है तो रोगी की जीवन-शक्ति सुरक्षित रहती है। यह हड्डी के जख्म में बहुत ही उपयोगी है। इसके रोगी का फोड़ा धीरे-धीरे जख्म के आकार में परिणत हो जाता है। रक्त में सफेद कणों की अधिकता रहती है।

प्लीहा (तिल्ली)

(Enlarged Spleen)

प्रत्येक स्वस्थ मनुष्य के शरीर में प्लीहा रहती है। मलेरिया ज्वर की बीमारी में यह बढ जाती है और तिल्ली बढ जाने पर चिकित्सा की आवश्यकता होती है। प्लीहा बढ़ने पर शरीर पीला पड़ जाता है, रक्त की अत्यधिक कमी पड़ जाती है जिससे शरीर पीला मालूम होने लगता है। भूख

नहीं लगती, कोष्ठबद्धता आदि हो जाती है। तिल्ली क्रमशः बढ़ते-बढते बायीं ओर तक पहुँच जाती है और पेट में पत्थर के टुकड़े जैसी कड़ाहट मालूम होने लगती है। पीड़ा भी अधिक होती है, मसूढे फूल जाते हैं और उनसे रक्त गिरने लगता है। अन्त में उदरी और शोथ होने से प्लीहा के फटने पर रोगी की मृत्यु भी हो जाती है।

चिकित्सा

कैली म्यूर—प्लीहा बढ़ जाने पर यह मुख्य दवा है जब कि जीभ सफेद और मैली हो तथा कोष्ठबद्धता हो।

नेट्रम म्यूर—पुरानी बीमारी में जब कि कुनैन के व्यवहार से यह बीमारी मालूम हो। रक्त फीका पड़ जाता है, भूख नहीं लगती, सूखा मल।

कल्केरिया फ्लोर—जब प्लीहा पत्थर की तरह कड़ी और बहुत बढ़ गयी हो।

फेरम फास—जब कि ज्वर भी बना रहे और प्रदाह भी हो।

कल्केरिया फास—दुर्बल हो जाने पर देना चाहिए। पुराने चावल का भात, धान के लावे का माँड, दूध, रोटी और फल इत्यादि देना चाहिए। रोगी को खुली हवा में टहलना और वायु सेवन तथा कुछ थोड़ा-सा व्यायाम भी लाभकारी है। ठढे जल से स्नान करना भी अच्छा है। यह ध्यान रखना चाहिए कि रोगी की शक्ति बढती रहे और दस्त साफ होता रहे। ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए।



खुजली

(Scabies or Itching of Skin)

यह छुतही बीमारी है। इसके हो जाने पर इससे जल्दी छुटकारा नहीं मिलता। यह साधारणतया सभी को होती है, परन्तु बच्चों को अधिक होती है। हर मौसम में हुआ करती है, परन्तु बरसात और जाडा मे प्रायः अधिक

होती है। यह पाचन की गड़बड़ी और मीठा के अधिक सेवन से होती है। शरीर के तमाम हिस्सों में यह हो सकती है, किन्तु कभी-कभी कुछ ही हिस्सों में होती देखी गयी है। यह मुख्यतः दो प्रकार की होती है—एक सूखी होती है जिसके दाने सूखे रहते हैं। दूसरी के दानों में मवाद या पस रहती है।

चिकित्सा

नेट्रम सल्फ—अधिक परिमाण में और शरीर के अधिक स्थानों में होने पर।

नेट्रम म्यूर—सूखी खुजली में जब कि ज्वाला भी हो।

नेट्रम फास—खून गाढा और मवाद हो तो साइलिसिया के साथ देना अच्छा है।

कैलि फास—इसकी खास दवा है।

कैली म्यूर—यह भी इसकी अच्छी दवा है।

खुजली के रोगी को प्रतिदिन शरीर से मवाद मल कर साफ कर देना चाहिए और बदन को खूब अच्छी तरह पोंछकर तब दवा लगानी चाहिए। साग, सब्जी, मीठा और मछली नहीं खाना चाहिए। छुतही बीमारी होने से दूसरों से बचकर रहना चाहिए।



सातवाँ अध्याय

बायोकेमिक औषधियों का बाह्य प्रयोग

(External use of Biochemic Medicines)

अर्श या बवासीर

बवासीर की अवस्था में जब कि पीड़ा हो, तो गुह्यद्वार पर भींगे कपड़े को फेरम फास लगाकर बाँध देना चाहिए और फेरम फास ठण्ढे पानी में मिलाकर गुह्यद्वार के भीतर पिचकारी से कई बार प्रवेश कराना चाहिए। मस्सों की सिकुड़न के लिए कल्केरिया फ्लोर भी मिला दीजिए।

कमर वात

जब कमर में प्रबल पीड़ा हो, टनटनाहट हो; उठने-बैठने मे कष्ट मालूम पड़ता हो तो फेरम फास या नेट्रम फास की मालिश बहुत गुणकारी है।

कर्णमूल ग्रन्थि-प्रदाह

छोटे-छोटे बच्चों को मच्छर के काटने से छोटी-छोटी फुन्सियाँ हो जाती हैं। ऐसी अवस्था में फेरम फास या कैली म्यूर का ३x चूर्ण शहद में मिलाकर लगाना चाहिए और फूली हुई गाँठों पर फलानेल को गरम पानी मे भिगोकर बाँधना चाहिए। गरम पुल्टिस पकने पर बाँधनी चाहिए।

खुजली

खुजली यदि पानी से बढे तो नेट्रम सल्फ ३x चूर्ण को वैसलीन में मलहम बनाकर लगाना चाहिए। अधिक मवाद या पस निकलने पर कैली सल्फ

३x चूर्ण को वैसलीन में मलहम वनाकर लगाना चाहिए। अधिक जलन होने पर नेट्रम म्यूर का मलहम भी लाभदायक है।

प्लोहा (तिल्ली)

कभी-कभी तिल्ली के रोग मे कल्केरिया फ्लोरिका या कैलि-म्यूरियेटिकम ३x, ३० ग्रेन १ औंस वैसलीन के साथ मिलाकर लगाने से वडा फायदा होता है।

दन्तशूल

स्नायु के कारण दन्त शूल में मैग्नेशिया फास्फोरिकम ३x चूर्ण गरम पानी से लेप करने से अच्छा लाभ होता है।

गुह्यद्वार निर्गमन

काँच निकलने पर वैसलीन या घी लगाकर अगुली से भीतर कर देना चाहिए। कल्केरिका फ्लोरिका ३x चूर्ण, ३० ग्रेन १ औंस वैसलीन के साथ गुदा पर लागाने से लाभ होता है। फेरम फास्फोरिकम का मलहम भी लाभ करता है।

गर्भस्राव

गर्भपात होने पर फेरम फास्फोरिकम का ३x चूर्ण १ ड्राम १ पौंड गरम जल के साथ जननेन्द्रिय के भीतर और वाहर धोकर साफ कर देना चाहिए।

क्रूप खाँसी

अधिक सर्दी लग जाने से प्रायः बच्चों को यह खाँसी हो जाती है। गरम पुल्टिस बाँधना तथा कैली म्यूर का मलहम छाती पर मलना चाहिए। गरम कपडे या रुई से सेंकना भी लाभदायक है।

टॉन्सिल या गले की ग्रन्थियों का प्रदाह

इस प्रदाह मे फेरम फास्फोरिकम का ३x चूर्ण ३० ग्रेन १ औंस ग्लिसरीन के साथ मिलाकर प्रदाहित स्थान पर ३–४ बार लगाना चाहिए।

ब्रांकाइटिस

श्लैष्मिक झिल्लियों के प्रदाह में कैली म्यूरियेटिकम ३x चूर्ण ३० ग्रेन २ औंस वैसलीन में मिलाकर मालिश करने से लाभ होता है।

श्वेत प्रदर

बालिकाओ के प्रदर मे कैली म्यूर ३x चूर्ण १५ ग्रेन थोड़ा गरम जल से मिलाकर स्थान को धोना चाहिए तथा घाव हो जाने पर नारियल का तेल या वैसलीन लगाना लाभदायक है।

फोड़ा

फोडा की पहली अवस्था में अलसी की पुल्टिस बाँधनी चाहिए और **फेरम फास** व कैली म्यूर का मलहम लगाना चाहिए। जब पक जावे तो **साइलिसिया** ३x, १५ ग्रेन १ तोला पानी के साथ मिलाकर कपडा भिगोकर फोडे पर रखकर २–३ घण्टे पुल्टिस बाँधने से मवाद शीघ्र ही निकल जाती है।

चोट

ऊपर से गिर कर तथा किसी वस्तु से चोट लग जाने पर **फेरम फास्फोरिकम** १x चूर्ण २० ग्रेन को ५ तोले गरम पानी में मिलाकर लोशन तैयार करके उसमें साफ कपड़ा भिगोकर चोट पर रखने से शान्ति मालूम होती है और लाभ भी होता है। बर्फ का प्रयोग भी लाभदायक होता है।

विसर्प या इरिसिपेलस

फेरम फास्फोरिकम का ३x चूर्ण जल के साथ मिलाकर फफोले पर लगा देना लाभदायक है।

अँगुलियों का फोड़ा

फेरम फास्फोरिकम का ३x चूर्ण २० ग्रेन ४ औंस गरम जल में लोशन तैयार कर साफ कपड़ा भिगोकर फोड़े पर रख कर पट्टी बाँध दें। ध्यान रहे कि उसी जल से बराबर तर करते रहें। पकाने के लिए पुल्टिस भी गरम-गरम बाँधनी चाहिए।

कार्बङ्कल

पीठ या गर्दन पर इस व्रण के होने पर फेरम फास्फोरिकम ३x २० ग्रेन चूर्ण १ छटाँक गरम पानी में लोशन बना लें, उसी की पट्टी बाँधने से लाभ होता है। पकने पर गरम पुल्टिस भी बाँधना चाहिए।

स्तन रोग (थनैला)

इस रोग मे **फेरम फास्फोरिकम** का ३x चूर्ण और कल्केरिया फ्लोर ३x ३० ग्रेन ४ औंस गरम पानी में मिलाकर लोशन बनाकर उसी की पट्टी बाँधें। पकने पर गरम पुल्टिस साइलिसिया ३x बाँधना चाहिए।

जलना

जल जाने पर नारियल के तेल मे **फेरम फास्फोरिकम** का ३X चूर्ण मिलाकर लेप करने से लाभ होता है। अगर घाव हो जाय तो **कल्केरिया सल्फोरिकम** का ६X चूर्ण का मलहम बनाकर लगाना चाहिए। अधिक जल जाने पर **कैलि म्यूर** ३X २० ग्रेन १ औंस नारियल के तेल मे मिलाकर लिण्ट या मोटा कपड़ा भिगोकर जले हुए स्थान को उसी से ढँक देना चाहिए और उसे बराबर उसी से भिगाते रहना चाहिए। छाला पड़ जाने पर **नेट्रम म्यूर** ३X ४ औंस जल मे मिलाकर धो देना चाहिए। यही दवा खाने को भी देने से अधिक लाभ होता है।

पक्षाघात

शरीर के किसी अग मे पक्षाघात होने पर **कैलि फास्फोरिकम** का ६X चूर्ण वेसलीन के साथ मिलाकर लेप करने से लाभ होता है।

मसूढ़ों का फोड़ा

दाँत के मसूढे जब फूल जाये तो **फेरम फास्फोरिकम** और **कैली म्यूर** का ३X चूर्ण लगाना चाहिए।

गलक्षत और गले का घाव

गले में घाव हो जाने पर **कैलि म्यूर** या **फेरम फास** का ३X चूर्ण २० ग्रेन १ औंस ग्लिसरीन के साथ मिलाकर रुई की बत्ती के द्वारा गले के भीतर प्रतिदिन ३-४ बार लगाना चाहिए। गरम बफारा भी लाभदायक होता है। फलानेल को पट्टी से चारों तरफ ढँके रहना चाहिए।

गर्दन की चटक

जब गर्दन में चटक पड़ जाय और उसे इधर-उधर घुमाने में दर्द मालूम पड़े तो फेरम फास्फोरिकम का ३x चूर्ण ३० ग्रेन १ औंस वेसलीन में मिलाकर मालिश करें तथा गरम सेंक भी करावें। फ्लानेल से लपेटे रहने से भी लाभ होता है।

आक्षेप, दाँत निकलना

दाँत निकलते समय बहुत दर्द होता है। ऐसे समय में मसूढ़ों को चीर देना चाहिए। आक्षेप के समय औषधि को जीभ पर लगाना अच्छा है। कृमि और उत्तेजना से पैदा हुआ रोग में अथवा रक्ताधिक्य के आक्षेप में सिर पर वर्फ रखना लाभदायक है। फेरम फास का लोशन भी अच्छा लाभकारी है।

घट्ठे पड़ना

कड़ा जूता पहनने से जब पैर में घट्ठा पड़ जाय अथवा कोई कड़ा काम करने से हाथ में घट्ठा पड़ जाय तब कल्केरिया फ्लोरिका ३x चूर्ण २० ग्रेन १ औंस गरम पानी में मिलाकर पट्टी बाँधना चाहिए। घट्ठे पर चिकनी चीजें घी, तेल, मक्खन, वेसलीन भी लगाना लाभकर है। घी, तेल में कल्केरिया फ्लोरिका का मलहम बनाकर लगाने से भी अच्छा लाभ करता है।

गञ्ज (सिर का बाल गिरना)

सिर के बाल गिरने में सरसों के तेल, नारियल के तेल और वेसलीन आदि की मालिश करना लाभदायक है। कैलि सल्फ का मलहम भी

लाभदायक है। अगर दाद का असर हो तो **नेट्रम सल्फ** लगाना श्रेयस्कर है।

आँख के रोग (आँख उठना)

आँख उठने पर **फेरम फास्फोरिकम** का १२x चूर्ण आँख के भीतर प्रतिदिन ३–४ बार लगना चाहिए। अगर आँख में कीचड़ आता हो तो **कैलि म्यूरियेटिकम** का १२x चूर्ण ३–४ बार आँख में लगाना लाभदायक है। धूप इत्यादि से बचने के लिए साफ कपड़ा हल्दी से रंग कर पट्टी बाँधनी चाहिए। आँख धोने के लिए **फेरम फास** ३x, ३० ग्रेन की मात्रा में एक औंस गरम जल में मिलाकर लोशन बना लें।

जरायु-च्युति

जरायु-च्युति होने पर जरायु को यथास्थान बैठा देना चाहिए। उसके बाद **कल्केरिया फ्लोरिका** का ३x चूर्ण ३० ग्रेन, १ औंस वैसलीन में मिलाकर लगाना चाहिए। रिंगप्रेसरी नामक यन्त्र का भी कभी-कभी व्यवहार करना पड़ता है।

मुँहासा

वायोव्रण में **कैलि फास** का १x चूर्ण ६ ग्रेन एक औंस ठण्ढे पानी के साथ मिलाकर लगाना चाहिए अथवा ठण्ढे जल से स्नान करना भी बहुत लाभदायक है। यदि पक जाये तो **कल्केरिया सल्फ** ३x ३० ग्रेन १ औंस पानी में मिलाकर धो देना चाहिए।

वात वेदना

इस रोग में कैलिम्यूर ३x—१ ड्राम १ औंस वैसलीन में मिला कर मालिश कर उष्ण स्वेद करना चाहिए।

विषाक्त कीट पतंगादि दंशन

बिच्छू, शहद की मक्खी, हाड़ वगैरह विषैले जानवरों के काटने में नेट्रम म्यूरियेटिकम ३x चूर्ण पानी में घोलकर काटे हुए स्थान पर लगाना चाहिए।

मुँह का घाव

मुँह में घाव हो जाने पर नेट्रम म्यूरियेटिकम शहद के साथ जीभ के भीतर और मुँह में अच्छी तरह लगाने से बहुत लाभ होता है।

मूर्च्छा या बेहोशी

मूर्च्छा की हालत में कैलि फास्फोरिकम का ६x चूर्ण जीभ पर लगाने से लाभ करता है। फेरम फास भी लाभदायक है।

रक्तस्राव

खून का स्राव होने पर फेरम फास्फोरिकम का ३x चूर्ण लगाना चाहिए। ऊपर से कसकर पट्टी बाँध देनी चाहिए। अगर नाक से खून निकलता हो तो फेरम फास सुँघाना चाहिए।

यकृत प्रदाह

इस रोग में फेरम फास्फोरिकम का लोशन और उष्ण स्वेदन से लाभ होता है। कैली म्यूरियेटिकम का लोशन लाभदायक है।



मोच आना

अगर चोट लगने से मोच आ जाय तो फेरम फास्फोरिकम के ३X चूर्ण को २० ग्रेन ४ औंस गरम पानी में मिलाकर चोट लगे स्थान पर बाँधना चाहिए।



आठवाँ अध्याय

वर्णमाला-क्रम से रोगौषधि-कोश

अंग (Limbs)—

कम्पन हो—कल्केरिया फास, साइलिसिया, मैग फास।

चींटी रेंगती हुई जान पड़े—कैलि फास।

जकड़ जाय—कल्केरिया फास, मैग फास।

ठण्ढे हों—कल्केरिया फास, साइलिसिया।

थके मालूम हों—साइलिसिया।

धँसा जान पड़े—कैली फास।

फड़कते हों—नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास।

पक्षाघात—कैलि फास।

स्नायविक पीड़ा—कैलि सल्फ, मैग्नेशिया फास, कैलि फास।

सिकुड़न से पक्षाघात—कैलि फास।

स्पर्श-शक्ति का अभाव—मैग्नेशिया फास।

अंड (Testicles)—

अण्डकोष कड़े हो जायँ—कल्केरिया फ्लोर।

अण्डकोष की सूजन, पीड़ा, ज्वर—फेरम फास, नेट्रम म्यूर।

अण्डकोष की शिराओं में खिंचाव—नेट्रम फास, कल्केरिया फ्लोर।

अण्डकोष में खुजली—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, नेट्रम फास, कल्केरिया फास।

अण्डकोष में पानी उतर आवे—साइलिसिया, कल्केरिया फास, कल्केरिया फ्लोर।

अण्डकोष में खुजली—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया; नेट्रम फास, कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ।

अण्डकोष में पीड़ा और सूजन—फेरम फास, कल्केरिया फास।

अण्डकोष की रगें केंचुए की तरह फूल जायँ—फेरम फास।

अण्डकोष पर पसीना—साइलिसिया।

अण्डकोष में दर्द हो—नेट्रम म्यूर।

अण्डकोष में क्षय हो—कल्केरिया फ्लोर।

अण्ड-प्रदाह (Orchitis)—

विशेष प्रदाह—फेरम फास।

प्रमेह के रुकने से हो—कैलि म्यूर, कैलि सल्फ, नेट्रम म्यूर।

अन्धापन (Blindness)—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

अकड़न (Rigidity)—

हाथ-पैर के जोड़ों का—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

अकड़न (Opisthotonus)—

पीछे की ओर शरीर की—मैग्नेशिया फास, कैलि फास।

अनिद्रा (Sleeplessness)—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, कैलि फास।

अर्ध रात्रि के पूर्व या पश्चात्— नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

शयन करने पर नींद न आवे—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

उत्तेजना से निद्राभाव—कैली फास।

थकावट से नींद न आना—मैग्नेशिया फास, फेरम फास २००x।

खुजली के कारण—नेट्रम फास।

चिड़चिड़े स्वभाव से—नेट्रम म्यूर।

चिन्ता के कारण—कैलि फास; नेट्रम म्यर।

रक्ताधिक्य से—फेरम फास ३०x।

अपस्मार या मिरगी (Epilepsy)—कैलि म्यूर, साइलिसिया, नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास, कैलि म्यूर, मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फास।

रात में आने से—साइलिसिया।

फुन्सियों के रुक जाने से—कैलि म्यूर, कल्केरिया फास।

भय के कारण—कैलि फास।

दुर्व्यसन के कारण—मैग्नेशिया फास, कैलि फास, नेट्रम फास।

सिर में अधिक रक्त हो जाने से—फेरम फास।

अफीम सेवन की आदत (Morphine habit)—नेट्रम फास।

अविश्वास (Mistrust)—कल्केरिया फास, साइलिसिया।

अस्थिरता (Unsteadiness)—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

आँखें (Eyes)—

आँख की पलकें चिपक जायँ—साइलिसिया, नेट्रम फास।

आँख में सूजन, दर्द—फेरम फास, कैलि म्यूर।

आँख मे कड़वे आँसू—नेट्रम म्यूर।

आँख मे घाव—फेरम फास, साइलिसिया, कैलि म्यूर, कल्केरिया फास, कैली सल्फ।

आँख के पपोटों मे ऐंठन—कल्केरिया फास, मैग्नेशिया फास।

प्रातःकाल पपोटों का चिपकना—नेट्रम फास।

रात्रि मे पपोटों का चिपकना—साइलिसिया।

आँख के दर्द में पीब—साइलिसिया, कैलि म्यूर, कल्केरिया सल्फ।

आँख के सामने काले धब्बे दिखाई पड़े—कैलि फास।

पुतली पर छाले—नेट्रम म्यूर।

पपोटों पर फुन्सियाँ—साइलिसिया।

आँख में माड़ा-जाला—कल्केरिया फ्लोर, नेट्रम म्यूर, कैलि सल्फ।

आँख पर जोर डालने से दृष्टि धुँधली हो जाय—कल्केरिया फ्लोर।

आँख के सामने रंग दिखाई दे—मैग्नेशिया फास, नेट्रम फास, (चक्र)।
आँख की पुरानी पीड़ में अश्रुपात – नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ।
आँख का उठना—फेरम फास, कैलि सल्फ, कल्केरिया, फ्लोर, नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास।
पुतली पर गुत्थी—कल्केरिया सल्फ।
पपोटों पर पथरी—साइलिसिया।
भिनगा (अहवल)—कैलि फास।
एक वस्तु दो दिखाई दे—कैलि फास।
निर्वल दृष्टि—नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास, मैग्नेशिया फास।
पपोटे झुक रहे – कैलि फास, मैग्नेशिया फास।
पुतली रक्त के समान लाल रहे—नेट्रम फास।
पुतली मे जलन—कैलि फास।
आँख मे रेतभरी मालूम हो—कैलि म्यूर, कैलि फास, फेरम फास।
प्रकाश के सामने दृष्टि न हो सके—मैग्नेशिया फास।
आँख में फड़कन हो—कैलि फास।
आँख की स्नायु की दुर्वलता के कारण दृष्टि निर्वल हो—कैलि फास।
पपोटे में रोहे—फेरम फास, कैलि फास।
शीतला में आँख की सूजन—फेरम फास।
आँख में सूजन कण्ठमाला के साथ—कल्केरिया फास।
आँख मे सूजन जब पीब निकले—कल्केरिया सल्फ।
आँख मे सूजन जब पीला स्राव निकले—नेट्रम सल्फ।
आँख मे सूजन, पीला गाढा स्राव—नेट्रम सल्फ।
आँख में नासूर—साइलिसिया।
निर्वलता के कारण अश्रुपात—नेट्रम म्यूर।
निर्मल वायु में जाने से आँसू—नेट्रम म्यूर।
पपोटे गर्म जान पड़ें—कल्केरिया फास

रुग्णावस्था में पुतली फैल जाय—कैली फास ।

पपोटों में फड़कन—मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फास ।

आँख पर बिलनी—(गुहौरी)—साइलिसिया, कैली म्यूर ।

भीतरी दुखती हो—नेट्रम म्यूर, कैल्के फ्लोर, कैल्के फास ।

आँख दवाने और बन्द करने से आराम मालूम हो—कैल्के फ्लोर ।

आँख में मानो कुछ पड़ गया हो—कल्केरिया सल्फ, फेरम फास, कल्केरिया फास ।

मानो तिनका पड गया हो—कल्केरिया फास, नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर ।

मानो आँखों के सामने परदा पड़ा हो—नेट्रम फास, कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ ।

अचानक दृष्टि बन्द हो जाय—कल्केरिया फास ।

काले दाग-सा दिखाई देना—कल्केरिया फास, कैलि फास ।

मोतियाबिन्द (Cataract) मुख्य दवा—कल्केरिया फ्लोर, साइलिसिया, कल्केरिया फास, कैलि सल्फ, कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर ।

पैरों का पसीना रुकने से हो—साइलिसिया ।

आँख का शीशा धुंधला हो—कैलि सल्फ, नेट्रम म्यूर ।

सामने की झिल्ली पीली पड़ गई हो—नेट्र सल्फ ।

शोथ हो—कल्केरिया फ्लोरिका, कल्केरिया फास, फेरम फास, कैलि म्यूर ।

शोथ पुराना—कल्केरिया सल्फ, साइलिसिया, कैलि सल्फ, कैलि म्यूर ।

आँख में जाला हो—नेट्रम म्यूर, कैलि म्यूर ।

दाने हों—नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर, (जलस्राव) ।

आँसू आते हों—नेट्रम म्यूर, कैली म्यर ।

आँखें बहें—नेट्रम सल्फ ।

पीली मलाई-सी—नेट्रम फास ।

दृष्टि मे रंग आते हों—मैग्नेशिया फास ।

गैस की रोशनी मे आँखे काम न करती हों—कल्केरिया फास, मैग्नेशिया फास, नेट्रम फास ।

आँख का परदा (Cornea)—

फोड़ा हो—कल्केरिया सल्फ, साइलिसिया, कैली सल्फ, कैलि म्यूर ।

छाले हो—नेट्रम म्यूर, कैलि म्यूर ।

सफेदी आ गई हो—कल्केरिया फास; साइलिसिया ।

धब्बे हों—कल्केरिया फ्लोर, नेट्रम सल्फ, कल्केरिया सल्फ, कैलि म्यूर, कल्केरिया फास ।

काले दाग हों—मैग्नेशिया फास ।

शोथ के साथ गाढ़ी पीली मवाद हो—कल्केरिया सल्फ ।

गहरा व्रण हो—कल्केरिया सल्फ, कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया ।

कण्ठमाला विष हो—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर ।

आँख के आगे काले दाग हों—मैग्नेशिया फास, नेट्रम म्यूर ।

आँख के आगे बिजली की चमक जान पड़े—नेट्रम म्यूर ।

दृष्टि मन्द हो—नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास, मैग्नेशिया फास ।

आँखों के आगे एक चीज दो दिखाई पड़े—मैग्नेशिया फास, कैलि फास, नेट्रम सल्फ ।

गाढ़ी पीली मवाद—कल्केरिया सल्फ, नेट्रम फास, साइलिसिया ।

साफ आँव हो—नेट्रम म्यूर ।

गाढ़ा साफ आँव—कैलि म्यूर ।

हरी पीब—नेट्रम सल्फ ।

हरा रक्त जल—कैली सल्फ, कैली म्यूर ।

सुनहली पीली मलाई-सी मवाद—नेट्रम फास।
पतला म्यूकस—नेट्रम म्यूर।
पीला—कल्केरिया सल्फ, कैलि सल्फ।
पीली हरी मवाद—कैलि सल्फ, नेट्रम सल्फ, कैलि म्यूर।
पीलापन लिये पतला मवाद—कल्केरिया सल्फ, कैलि सल्फ।
धुन्ध—मैग्नेशिया फास, नेट्रम फास।
खुश्क शोथ—फेरम फास, कल्केरिया फास।
चिनगारियाँ देखना—मैग्नेशिया फास, नेट्रम फास।
हिलती हुई नजर—कल्केरिया फ्लोर।
रोशनी न सही जाय, चकाचौंध—फेरम फास, कल्केरिया फास, कल्केरिया सल्फ, कैलि म्यूर, मैग्नेशिया फास, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ।
आँखों के आगे पर्दा-सा—नेट्रम म्यूर।
सवलवाय (Glaucoma)—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, नेट्रम सल्फ।
आधी चीज देखना—कल्केरिया सल्फ, नेट्रम म्यूर।
पुतली के परदे का शोथ—कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर।
खुजली बढ़ना—नेट्रम म्यूर, मैग्नेशिया फास।
दृष्टि में धोखा होना—मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फास।
केरैटाइटिस (Keratitis) स्वच्छ पटल शोथ)—कल्केरिया फास, कैलि म्यूर, कैलि सल्फ, साइलिसिया।
पीब पड़ने वाली—कल्केरिया सल्फ, साइलिसिया।
आँसू बहना—मैग्नेशिया फास, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ।
लगने वाले—नेट्रम म्यूर।
जलन करने वाले - नेट्रम सल्फ, नेट्रम फास।

छोटी फुन्सी होना—नेट्रम म्यूर ।

दर्द होना—नेट्रम म्यूर ।

नाइट्रेट आफ सिरम लगाने, खुली हवा में फिरने, आँखों मे ठण्ढ लगने से—नेट्रम म्यूर ।

शीशे का धुँधला होना—कैली सल्फ नेट्रम म्यूर ।

पढ़ते समय अक्षरों का मिल जाना—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया ।

आँख हिलाने से दर्द बढना—फेरम फास ।

मस्के वोलिटेंटिस (Muscae Volitantes)—(चमक रेखाओं के-से आखों के समक्ष, काले दाग तैरते हुए मालूम पड़ना) साइलिसिया ।

ज्ञान तन्तु सम्बन्धी पीड़ा—नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास, मैग्नेशिया फास ।

" " दाहिनी आँख के ऊपर—साइलिसिया ।

" " समय-समय पर—नेट्रम म्यूर ।

" " दाहिनी तरफ विशेष—मैग्नेशिया फास ।

" "

आफ्थैल्मिया (Ophthalmia) (नेत्र-प्रदाह)—

मलाई-सी मवाद—नेट्रम फास ।

गाढ़ी पीली—कल्केरिया सल्फ ।

हाल के बच्चों में—कैलि सल्फ ।

कठमाला के रोगियों मे—नेट्रम सल्फ ।

फोटोप्सिया (Photopsia प्रकाशाभास)—मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फ्लोर ।

गुलाबी आँखे—फेरम फास ।

पलक न उठना—कैली फास, मैग्नेशिया फास ।

पुतली सिकुड़ी हुई—मैग्नेशिया फास ।

लकड़ी लगने-सा दर्द—कल्केरिया सल्फ, फेरम फास ।

पहचान न सकना—कैलि फास ।

लाल—फेरम फास, कैलि म्यूर ।

दृष्टिपटल-शोथ (Retinitis)—

आरम्भ में हो—फेरम फास।

पश्चात्—कैलि म्यूर, कैलि सल्फ, कल्केरिया सल्फ।

फड़कना—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

तिरछा होना—कैलि फास, मैग्नेशिया फास, नेट्रम फास, कल्केरिया फास।

कीड़ों के कारण—नेट्रम फास।

छूतदार रोगों से—कैलि फास।

डिफ्थीरिया रोग के पीछे—कैलि फास।

दुखने आना—कैलि फास।

चिनगारी देखना—मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फ्लोर, नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर।

दाग धब्बे होना—कैलि म्यूर।

गड़ जाना—कैलि फास।

त्यौरी चढ़ जाना—कैलि फास, कैलि म्यूर।

रोशनी न सहना—मैग्नेशिया फास, कैलि फास।

नजर कमजोर होना—कैली फास।

लपक मारना—साइलिसिया।

ट्रैकोमा (Trachoma)—रोहे)

आँख के ऊपरी पर्दे पर फुन्सियाँ होना—कैलि म्यूर।

मिचकना—मैग्नेशिया फास, कल्केरिया सल्फ, कैलि म्यूर।

आँख का ज्ञानतन्तु (Optic nerve) फालिज हो जाय-नेट्रम म्यूर, कैलि फास, साइलिसिया।

आँख के सामने चिनगारियाँ (Sparks Before the Eyes)—मैग्नेशिया फास, नेट्रम फास, कैलि फास, कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ।

आँख के ढेले (Eye ball) दर्द करना—कल्केरिया फ्लोर, कल्केरिया फास।

भीतर दर्द, आँखें हिलाने से विशेष हो—फेरम फास।

उभरा होना—कल्केरिया सल्फ, कैलि म्यूर।

दुखना—कैलि फास।

पीला होना—नेट्रम सल्फ, कैलि सल्फ, नेट्रम फास।

आँत (अँतड़ियाँ)—काम न करती हों—नेट्रम म्यूर।

झिल्ली का निकल आना—कैलि फास।

ढीली पड़ जाना बूढ़ों मे—नेट्रम सल्फ, कल्केरिया फ्लोर।

दर्द होना—नेट्रम फास, मैग्नेशिया फास।

आँतों से निकली हुई वायु मे गन्धक की बू—कैलि सल्फ।

निचली आँतों में हरारत—नेट्रम सल्फ।

आँतों मे घाव हो—कल्केरिया सल्फ।

आँत उतरना (Hernia)—

पेट में—कल्केरिया फास।

पोते मे—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

आँत फँस जाना, क्षय होना—फेरम फास।

आँतों का काम ठीक न हो—कल्केरिया फास।

आँतो में घाव—कल्केरिया फास।

आँसू बहना—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ, साइलिसिया।

आकृति (मुखमण्डल)—

अल्प रक्तवाले रोगी—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर।

आकृति पर मुँहासे—कैलि सल्फ, कैलि म्यूर, साइलिसिया, कल्केरिया सल्फ, कल्के फास।

दाढ़ी के ऊपर मुँहासे—कैलि सल्फ, कैलि म्यूर।

रात को आकृति का कष्ट बढ़े—कल्केरिया फास, मैग फास।

जबड़े की हड्डी सड़े—साइलिसिया, कल्केरिया फ्लोर।
आकृति का कैन्सर—कैलि सल्फ।
गाल फूले हुए, पीड़ा करे—कैलि म्यूर, फेरम फास।
मुँह के किनारे चिटके—कल्केरिया फास।
मुँह का जहरवाद—फेरम फास।
जहरवाद में त्वचा सूखी—नेट्रम सल्फ।
लाल चमकदार—नेट्रम सल्फ।
आकृति में नीलापन—नेट्रम फास।
आकृति भरभराई हुई ज्वर रहित – फेरम फास।
आकृति तमतमायी हुई—नेट्रम फास, फेरम फास।
आकृति पीली, मुरझायी – कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर।
गाल फूले हुए कड़े—कल्केरिया फ्लोर, कैलि म्यूर।
गाल गर्म और दर्द—फेरम फास।
आकृति में पीड़ा, कोष्ठवद्धता—नेट्रम म्यूर।
आकृति में पीड़ा और वाई की पीड़ा—मैग्नेशिया फास, साइलिसिया, कैलि फास।
आकृति में पीड़ा और गाल फूले—कैलि म्यूर।
आकृति में पीड़ा, मसूढे फूले—कैलि म्यूर।
ज्वराकृति—फेरम फास।
आकृति में गरमी— कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ।
आकृति में गर्मी, सूजन और स्नायविक पीड़ा—फेरम फास।
कँवल के कारण पीली आकृति—नेट्रम सल्फ, कैलि सल्फ।
आकृति मे सूजन—कल्केरिया फास, कैलि म्यूर, नेट्रम फास।
आकृति में पीड़ा शाम को—कैलि सल्फ।
आकृति में पीड़ा—स्नायविक निर्वलता के कारण—कैलि फास।
आकृति की पीड़ा—गरम वस्तु लगाने से कम हो—मैग्नेशिया फास।
आकृति की पीड़ा—शीतल वायु से कम हो—कैलि सल्फ।

आकृति की पीड़ा रात को हो—कल्केरिया फास ।
आकृति मे टीसन की पीडा—कल्केरिया फास, मैग्नेशिया फास ।
आकृति पर छाले—नेट्रम सल्फ, नेट्रम म्यूर ।
आकृति की त्वचा फटे—साइलिसिया ।
आकृति पर खुजली—कैलि फास, नेट्रम सल्फ ।
आकृति पीली—साइलिसिया, फेरम फास, नेट्रम सल्फ, नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास, कैलि फास ।
आकृति की पीड़ा दाहिनी ओर—मैग्नेशिया फास ।
„ „ „ शाम को—कैलि सल्फ ।
„ „ „ बिछौने पर जाने के पश्चात् हो—मैग्नेशिया फास ।
आकृति पर शीतल स्वेद—कल्केरिया फास ।
आकृति पर भोजन करते समय पसीना—कैलि सल्फ, नेट्रम म्यूर ।
आकृति की ऐंठन वाली पीड़ा—कल्केरिया फास, मैग फास ।
गाल फटे हुए—नेट्रम म्यूर ।
ऊपर का होठ सूजा हुआ—कैलि फास ।
दाढ़ी के बाल गिरें—नेट्रम म्यूर ।

इच्छा करना (Desire for)—
चाय पीने की—कल्केरिया सल्फ ।
तम्बाकू पीने की—कल्केरिया सल्फ ।
सिरका पीने की—कैलि फास ।
मदिरा की—फेरम फास ।
कड़वे पदार्थ की—नेट्रम म्यूर ।
फल की इच्छा—कल्केरिया सल्फ ।
शाक तथा खट्टी तरकारी की—कल्केरिया सल्फ ।
गरिष्ठ वस्तु की—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर ।
नमकीन वस्तु की इच्छा—नेट्रम म्यूर ।

पौष्टिक पदार्थ की इच्छा—फेरम फास ।
शक्कर की इच्छा—मैग्नेशिया फास ।
अंडे की इच्छा—नेट्रम म्यूर ।
न पचने वाली चीजों की—कल्केरिया फास ।
दूध पीने की—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया ।
अचार की—कल्केरिया फास ।
मिठाई की—साइलिसिया, कैलि फास ।

इन्फ्लुएंजा (Influenza)—

इन्फ्लूएन्जा—नेट्रम म्यूर, फेरम फास, कैलि म्यूर, कैलि फास ।

उँगलियाँ (Fingers)—

उँगलियों के जोड़ों में गठिया का दर्द—नेट्रम फास, कल्के फ्लोर ।
उँगलियों के जोड़ों मे दर्द—नेट्रम म्यूर, फेरम फास ।
उँगलियों में दर्द—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया ।
सूजन के साथ सुर्ख हों—नेट्रम फास, फेरम फास ।
सिरों पर दर्द—साइलिसिया ।
छाले हों—नेट्रम म्यूर ।

जख्मी जगह जलन करे—साइलिसिया, फेरम फास ।
खुजलाहट, अकड़न, दर्द, फटना—साइलिसिया ।
नाखून के नीचे छेदन-सरीखा दर्द—नेट्रम फास ।
उँगली के जोड़ों में गठिया-सा दर्द—नेट्रम फास ।
कढ़ी हुई—कल्केरिया सल्फ, नेट्रम सल्फ ।
पंजे और उँगलियों के जोड़ों में—नेट्रम फास ।
व्रण का चुनचुनाहट का-सा दर्द—उँगलियों के सिरों पर—नेट्रम सल्फ ।

उँगली पर ठेठ पड़ना (Bunions)—कैलि म्यूर ।

उँगलियों का ठेठ—साइलिसिया ।

उत्तेजना हो (Excitement)—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

उत्साह (Energy)—मन्दता—कैलि फास।

उदासी (Sadness)—कल्केरिया फ्लोर, कल्केरिया फास।

उबकाई आना (Retching)—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

उल्टी करने की इच्छा—नेट्रम म्यूर, साईलिसिया।

उस्तरा फरना (Barbar's Itch)—मैग्नेशिया फास, कैलि फास, कैलिम्यूर।

उदर (Stomach)—

उदर फूला हुआ प्रतीत हो—कल्केरिया फास, साइलिसिया, मैग फास, नेट्रम सल्फ।

पाकाशय में दाह—फेरम फास, कैलि फास, कल्केरिया फास।

उदर विकार, प्यास अधिक—नेट्रम सल्फ।

अजीर्ण के साथ उदर मे ऐंठन की पीड़ा—मैग्नेशिया फास, कल्के फास।

पेट खाली प्रतीत हो—कैलि फास, नेट्रम फास।

भूख बहुत अधिक—साइलिसिया, कल्केरिया फास, कैलि फास, नेट्रम म्यूर।

पेट फूला हुआ, कब्ज—मैग्नेशिया फास, कैलि म्यूर।

पेट में वायु की अधिकता—कल्केरिया सल्फ, कैलि फास।

उदर से रक्त आना—फेरम फास, कैलि म्यूर।

पाचन का जीर्ण दोष—कल्केरिया सल्फ।

उदर से रक्त आना—मैग्नेशिया फास।

पेट मे ऐंठने वाली पीड़ा—मैग्नेशिया फास, कल्के फास।

कोष्ठबद्धता हो—कैलि म्यूर।

पेट फूला हुआ—नेट्रम सल्फ, साइलिसिया।

पेट भरा हुआ बोझ-सा प्रतीत हो—कैलि सल्फ।

पेट भारी—नेट्रम सल्फ।

पेट सूजा हुआ—नेट्रम फास।
पेट दुखे—नेट्रम फास, फेरम फास।
पेट में पीड़ा—कैलि फास, नेट्रम फास।
पेट में वायु अधिक हो—कल्केरिया फास, कैलि फास।
पेट मे जलन—नेट्रम फास।

मुँह में लुआब भरा हो—नेट्रम फास।
पेट में पीड़ा थोड़े भोजन से भी अधिक हो—कल्केरिया फास।
मिचली के साथ खट्टा पानी मुँह में आ जाय—नेट्रम सल्फ।
पेट छूने से दुखे—कैलि म्यूर।
पेट थुलथुला—कल्केरिया फास।
पेट में अफरा—मैग्नेशिया फास।
पेट कड़ा—मैग्नेशिया फास।
बच्चों का पेट बड़ा हो—साइलिशिया।
पेट में पीड़ा के कारण बच्चा टाँगें समेटे—मैग्नेशिया फास।
पेट में पीडा उसके साथ डकारें—मैग्नेशिया फास।
पेट की पीड़ा दुहराने से कम हो—कैलि फास, मैग्नेशिया फास।
भोजन करते ही पेट में पीडा हो—कल्केरिया फास, फेरम फास, नेट्रम सल्फ।
डकार आने से उदर-पीड़ा कम हो—मैग्नेशिया फास।
पेट की पीड़ा कृमि के कारण—साइलिसिया, नेट्रम फास।
पेट में पीडा के साथ कोष्ठवद्धता—साइलिसिया।
कोष्ठवद्धता साथ ही राजयक्ष्मा—कल्केरिया फास।
पेट पीडा के साथ वायु घूमे—कैलि सल्फ, नेट्रम सल्फ, नेट्रम फास, मैग्नेशिया फास।
कभी कोष्ठवद्ध और कभी अतिसार—नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर।
बच्चों के पेट की पीड़ा जो नाभी से उठकर पेट मे फैले—मैग्नेशिया फास।

आँतों की शुष्कता के कारण कोष्ठबद्धता—नेट्रम म्यूर।

आँतों के कार्य न करने के कारण कोष्ठवद्धता—नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ।

जीर्ण कोष्ठावद्धता—कैलि फास।

बवासीर के कारण कोष्ठवद्धता नेट्रम म्यूर।

शौच न होने के कारण कोष्ठवद्धता—साइलिसिया, कल्केरिया फास।

कोष्ठवद्धता बच्चों की—मैग्नेशिया फास।

वृद्ध लोगों का कड़ा मल—कल्केरिया फास।

कोष्ठवद्धता के कारण जीर्ण स्वर—कल्केरिया सल्फ।

जीर्ण कोष्ठावद्धता जो कभी दूर न हो,

कोष्ठवद्धता के कारण गुर्दा में पीड़ा—नेट्रम म्यूर।

अँतड़ियों की निर्बलता के कारण छिलन—नेट्रम म्यूर।

पतला मल चर्बीले पदार्थ खाने के कारण—कैलि म्यूर।

विशूचिका के कारण ऐंठन—मैग्नेशिया फास।

बालकों में विशूचिका—फेरम फास, कल्केरिया फास।

विशूचिका—फेरम फास, कैलि सल्फ, कैलि फास।

पित्त रोग की मैल—नेट्रम सल्फ।

पतला मल वृद्धों का—नेट्रम सल्फ।

मल में गन्धक की-सी गन्ध निकले—कैलि सल्फ।

पाचन विकार से कँवल—कैलि सल्फ।

जलती हुई अस्वादिष्ट डकार—मैग्नेशिया फास।

खट्टी डकार—साइलिसिया,-नेट्रम सल्फ, कैलि फास, नेट्रम फास।

कडवी डकार—कैलि फास।

भोजन के वाद भी भूख रहे—कैलि फास।

हिचकियाँ आयें—मैग्नेशिया फास।

पाचन-विकार के कारण पेट मे वायु—नेट्रम फास।

पाचन-विकार के कारण पेट मे वायु-चक्कर—नेट्रम फास।

पाचन-विकार के कारण पेट में वायु—ज्वर—नेट्रम फास

उदर-विकार से सिर पीड़ा—नेट्रम फास ।

भोजन से लगातार कै हो—फेरम फास ।

भोजन से कष्ट हो—कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ ।

भोजन से कष्ट अधिक हो—कल्केरिया फास ।

भोजन करने से पीडा हो—नेट्रम म्यूर ।

वायु के कारण यकृत काम न करे—कैलि म्यूर ।

वायु के कारण हृदय में कष्ट—कैलि फास ।

गरिष्ठ भोजन अनुकूल न पड़े—कैलि म्यूर ।

हरी पित्त की कै—नेट्रम सल्फ ।

डकार, लेटने से कष्ट अधिक हो—साइलिसिया ।

यकृत चढ़ा हुआ बायीं ओर—नेट्रम म्यूर ।

भोजन के पश्चात् पीड़ा—नेट्रम फास ।

उष्ण वस्तु पीने से भय—कैलि सल्फ, कैलि फास ।

वक्षस्थल में दाह—नेट्रम फास ।

पाचन-विकार के कारण खट्टा पानी अथवा डकार—नेट्रम फास ।

खट्टे पदार्थ खाने या पीने से अधिकता हो—मैग्नेशिया फास ।

क्षुधा अधिक—साइलिसिया, कैलि फास, नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास, कल्केरिया सल्फ ।

क्षुधा बन्द—फेरम फास, कैलि सल्फ, कैलि म्यूर, नेट्रम सल्फ, नेट्रम म्यूर ।

डकार में खायी हुई वस्तु का स्वाद—फेरम फास ।

पित्त के कारण शूल—नेट्रम सल्फ ।

पित्त अत्यन्त अधिक तथा वमनेच्छा—नेट्रम सल्फ ।

मुँह का स्वाद कड़वा—नेट्रम सल्फ ।

पाकाशय में दाह—फेरम फास, कैलि फास, कल्केरिया फास ।

पेट में मानो भीतर पत्थर का ठण्ढा टुकड़ा या सीसा रुका है—साइलिशिया।

पेट मे मानों भीतर छुरी चल रही हो—साइलिशिया।

मानो पेट मे सुराख पडे—नेट्रम सल्फ।

मानो पेट रस्सी से जकडा जा रहा हो—मैग्नेशिया फास।

तडप होना—फेरम फास, नेट्रम सल्फ।

छेद करने का-सा दर्द—नेट्रम सल्फ।

जलन करनेवाला दर्द—कल्केरिया फास, कल्केरिया सल्फ, साइलिसिया, कैली म्यूर, फेरम फास।

आमाशय के ऊपर जलन—कल्केरिया फास, साइलिसिया।

ठण्ढा जान पड़ना—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

शूल का दर्द—कैलि सल्फ, मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फास।

पेट में ऐंठन—कैलि म्यूर, कल्केरिया फास, मैग फास।

पीडा होना—फेरम फास।

फूल जाना—नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ।

फूल जाना और कब्ज होना—मैग्नेशिया फास, कैलि म्यूर।

खाली-सा जान पड़ना—कैलि म्यूर, साइलिसिया।

मूर्च्छा, ऐसा जान पड़ना कि पेट है ही नहीं—नेट्रम-म्यूर, कैलि फास, नेट्रम फास।

फूलना—कल्केरिया फास।

फूलने के साथ ही दिल के पास भरा-सा जान पडे—कैलि फास, कल्केरिया फास।

नाभी के पास भरा-सा जान पडे—कैलि सल्फ।

खाया हुआ खाना गोला-सा जान पड़ना—कल्केरिया फास।

बड़ी कमजोरी होना—नेट्रम म्यूर।

फूलना, जिगर का काम न होना—कैलि म्यूर, नेट्रम सल्फ।

भारीपन जान पड़ना—नेट्रम सल्फ, कल्केरिया फास ।
हरारत होना—कैलि सल्फ ।
ज्ञान-तन्तु सम्बन्धी पीड़ा—मैग्नेशिया फास ।
दवाव जान पड़ना—नेट्रम म्यूर ।
शोथ होना—फेरम फास, कैलि म्यूर ।
पुराना रोग—कैलि सल्फ ।
टीस लगना—मैग्नेशिया फास, नेट्रम फास, फेरम फास ।
खाना खाने के वाद एक जगह में—नेट्रम फास ।
दर्द होना, खाने के वाद—नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास, फेरम फास, नेट्रम सल्फ ।
दवाव—मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फास, कैलि म्यूर, कैलि सल्फ ।
कसने, मरोड़ने आदि जैसा दर्द—साइलिशिया ।
भोजन करने के वाद फिर मुँह में लौट आना—मैग्नेशिया फास ।
नाभी के पास तरल धब्वे—नेट्रम म्यूर ।
मुँह में खट्टा पानी आना—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर ।
सूजन—फेरम फास ।
ऐंठन, शूल होना—मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फास, कैलि सल्फ ।
सुई-सा चुभना—नेट्रम म्यूर ।
नाभी के पास फड़कना—साइलिसिया ।
चुस्त होना—साइलिसिया ।
बड़ा दर्द—फेरम फास ।
कमजोरी होना—कल्केरिया सल्फ ।
अम्लता की दशा—नेट्रम फास, नेट्रम सल्फ ।
खट्टी चीजों से दर्द वढे—मैग्नेशिया फास ।
ठढी चीजों के पीने से दर्द वढे—कल्केरिया फास, मैग्नेशिया फास ।
खाना खाने से रोग वढ़ना—कल्केरिया फास ।

तैल पदार्थ से रोग बढ़े—कैलि म्यूर।

दबाव से रोग बढे—फेरम फास।

भूख न बुझना—कैलि फास, कल्केरिया सल्फ, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

खड़िया मिट्टी आदि बुरी चीजें खाने की इच्छा करना—कल्केरिया फास, कैलि फास, मैग्नेशिया फास।

डकार से खाने का बुरा स्वाद—फेरम फास।

डकार से हवा आना—मैग्नेशिया फास।

गुड़गुड़ाना—कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ।

नमक या नमकीन चीज खाने की इच्छा करना—नेट्रम म्यूर।

गरम चीजों से घबड़ाना—कैलि सल्फ।

डकार, खट्टी—नेट्रम फास, नेट्रम सल्फ, साइलिसिया, कैलि फास।

कड़वा स्वाद—कैलि फास।

हवादार—कैलि फास।

चिकनाहट—फेरम फास।

पेट में बहुत हवा भरना—कल्केरिया फास, कैलि फास।

बहुत भूख लगना—कैलि फास, साइलिसिया, कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर।

पाचन विकार से पेट फूलना—नेट्रम फास।

" " चक्कर आना—नेट्रम फास।

हृदय जलना—साइलिसिया, फेरम फास, मैग्नेशिया फास, नेट्रम फास, कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ।

रुधिर आना—कैलि म्यूर, फेरम फास।

हिचकी आना—मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फ्लोर, नेट्रम म्यूर।

खाने के बाद भूख रहना—कैलि फास।

४ बजे शाम को भूख लगना—कल्केरिया फास।

बच्चा सर्वदा दूध पीने को रोवे—कल्केरिया फास।

वदहजमी शूल—मैग्नेशिया फास, कैलि सल्फ, कैलि फास, नेट्रम म्यूर, कैल्के फास।

वदहजमी और सिर दर्द – कल्केरिया फास।

पाइलोरस (जठर निर्गम) सिर का कठोर हो जाना—साइलिसिया।

नशा न सहा जाना – साइलिसिया।

जी मिचलाना, सवेरे नाश्ता के वाद – कल्केरिया फास।

जी मिचलाना, चिकनी चीजों से—कैलि म्यूर।

काफी या हुक्का पीने से—कल्केरिया फास।

चिकनी चीजें अच्छी न लगें – कैलि म्यूर।

दुर्वलता, कमजोरी—कैलि फास।

पेट में दर्द और कब्ज—कैलि म्यूर।

थकावट—कैलि फास।

पेट में दर्द और पतले दस्त—फेरम फास।

पेट मे दर्द, ज्वर के वाद—कैलि फास।

अम्लता की दशा से—नेट्रम फास।

सर्दी से—फेरम फास।

कीड़ों से—नेट्रम फास।

भय और उत्तेजना से—कैलि फास।

पेट में आराम आये खान से—कैलि फास।

,, ठढी चीजें पीने से—फेरम फास।

,, डकार या वायु निकलने से—कल्केरिया फास।

छूने से दुखे—कल्केरिया फास।

छुआ न जाय—फेरम फास।

घाव हो—नेट्रम फास, नेट्रम सल्फ।

कमर में कसा हुआ कपड़ा अच्छा न लगे—नेट्रम सल्फ, फेरम फास।
उदर को आराम मिले, स्नान करने से—कैलि म्यूर।
नाक के दुहरा मुड़ने से—फेरम फास, कल्केरिया फ्लोर।
रोग कम होना ठढ से—फेरम फास, कल्केरिया फ्लोर।

,, खुली हवा से—कैलि सल्फ।
,, मित्रों के साथ से—कैलि फास।
,, ठण्ढी चीजे पीने से—फेरम फास, कैलि म्यूर।
,, गर्म चीजे पीने से—मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फ्लोर।
,, पी लेने के बाद—साइलिसिया।
,, ॲधेरे से—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
,, डकार से—साइलिसिया।
,, खुशी के उत्साह से—कैलि फास,
,, शारीरिक परिश्रम से—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
,, शाम को—नेट्रम म्यूर।
,, उपवास से—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
,, पेट फूलकर हवा निकलने से—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
,, सेकने से—कल्केरिया फ्लोर।
,, मलने से—मैग्नेशिया फास।
,, गर्मी से—साइलिसिया, मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फ्लोर, कल्केरिया फास।
,, बिस्तर पर लेटने से—पीठ या करवट से—कल्केरिया फ्लोर, कल्केरिया फास।
,, सख्त चीज पर लेटने से—नेट्रम म्यूर।
,, दूध से—नेट्रम फास।
,, तर-खुश्की से—साइलिसिया।

रोग कम होना साधारण हरकत से—कल्केरिया फ्लोर, कैलि सल्फ, कैलि फास।

,, हरकत करते रहने से—साइलिसिया।

,, हरकत धीमी करने से—कैलि सल्फ।

,, खुली हवा से—कल्केरिया सल्फ।

,, दवाव से—कल्केरिया फ्लोर, मैग्नेशिया फास।

,, दूसरों के पास रहने से—कैलि फास।

आराम मिले मल त्यागने के पीछे—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर।

खुश्क गर्म मौसम से—नेट्रम सल्फ, कल्केरिया फास, कल्केरिया सल्फ।

साधारण गर्मी से—साइलिसिया, मैग्नेशिया फास।

सिर ढँक लेने से—साइलिसिया।

डकार आने से—कल्केरिया फास।

पित्त के कारण शूल—नेट्रम सल्फ, मैग फास।

पित्त अधिक तथा वमनेच्छा—नेट्रम सल्फ।

मुँह का स्वाद कड़वा—नेट्रम सल्फ।

वमन में काला रुधिर या रुधिर का टुकड़ा निकले—कैलि म्यूर।

कड़वा की-सी कै—नेट्रम फास।

वमन में लाल रक्त निकले—फेरम फास।

पाकाशय में दाह, शीतल वस्तु से शान्ति—फेरम फास।

खट्टी वस्तु से घृणा—फेरम फास।

मदिरा से घृणा—साइलिसिया।

रोटी से घृणा—नेट्रम म्यूर।

तरल भोजन से घृणा—कैलि म्यूर, नेट्रम फास।

गर्म पीनेवाली वस्तु से घृणा—कैलि सल्फ।

दूध से घृणा—फेरम फास।

मिठाई से घृणा—कैलि फास।

गर्भ भोजन से घृणा—फेरम फास, साइलिसिया।

मांस से घृणा—फेरम फास, साइलिसिया।

भोजन से कष्ट हो—कल्केरिया फास।

भोजन से लगातार कै हो—फेरम फास।

वक्षस्थल में दाह—साइलिसिया, नेट्रम फास, कल्केरिया फास।

गर्म वस्तु लगने से शान्ति—कल्केरिया फास, फेरम फास, साइलिसिया।

पानी पीने से आराम—मैग्नेशिया फास।

वमनेच्छा तथा वमन—कैलि सल्फ, नेट्रम फास, नेट्रम सल्फ, मैग्नेशिया फास।

पित्त का वमन—नेट्रम सल्फ।

खट्टा वमन—नेट्रम म्यूर।

वमन, मलाई की बर्फ खाने के पश्चात्—कल्केरिया फास।

वमन शीतल जल पीने के पश्चात्—कल्केरिया फास।

वमन लाल रक्त का—नेट्रम फास।

वमन, जमे हुए रक्त का—कैलि म्यूर।

वमन, फटे दूध का—नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास।

वमन, काले रक्त का—कैलि म्यूर।

वमन, हरे पानी का—कैलि फास, नेट्रम फास।

वमन, बच्चों का—कल्केरिया फास।

वमन, डोरे के समान—नेट्रम म्यूर।

वमन, अनपचे भोजन का—फेरम फास, कल्केरिया फ्लोर, कल्केरिया फास।

यकृत के निकट पीड़ा—नेट्रम सल्फ।

ठहर-ठहर कर उदर मे पीड़ा हो—मैग्नेशिया फास।

मुँह में लुआब भरा हो—नेट्रम फास।

पतला मल, चर्बीले पदार्थ खाने के कारण—कैलि म्यूर।

पतला मल हरे पदार्थ खाने के कारण—कल्केरिया फास।
पतला मल, तरल ऋतु के कारण—कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ।
पतला मल, शीतला का टीका लगने के कारण—कैलि म्यूर, साइलिसिया।
पतला मल बच्चों के दाँत निकलते समय—कल्केरिया फास।
पतला मल पानी के समान—नेट्रम म्यूर, मैग्नेशिया फास।
पतला मल दुर्गन्धित वायु के साथ—कल्केरिया फास, कैलि फास।
अतिसार फेनदार—नेट्रम म्यूर।
अतिसार स्वय हो जाय—नेट्रम म्यूर।
अतिसार पीडा रहित—कैलि फास।
अतिसार चावल के धोवन के समान—कैलि फास।
अतिसार के साथ पिंडुलियों में ऐंठन—मैग्नेशिया फास।
अतिसार के पश्चात् निर्बलता—कल्केरिया फास, कैलि फास।
अतिसार, श्वेत मल—कैलि म्यूर, नेट्रम फास।
अतिसार, आँव का मल—कैलि म्यूर।
आमातिसार—अत्यन्त पीडा के साथ मल—मैग्नेशिया फास।
आमातिसार—पतले मल के साथ—कैलि म्यूर।
आमातिसार में मूत्र रुक जाना—मैग्नेशिया फास।
आँव रुधिर मिश्रित—कल्केरिया सल्फ, कैलि म्यूर, फेरम फास।
दुर्गन्धित वायु आवाज के साथ निकले—कल्केरिया फास, कैलि सल्फ।
भोजन करते ही सिर में पीड़ा—फेरम फास।
नीचे की अँतड़ियों में गर्मी प्रतीत हो—फेरम फास।
पेट की पीड़ा दबाने से कम हो—मैग्नेशिया फास।
पेट की पीड़ा मलने से कम हो—मैग्नेशिया फास।
पेट की पीड़ा सेंकने से कम हो—मैग्नेशिया फास।
ग्रीष्म ऋतु में पेट का कष्ट—कल्केरिया फास।

ऋतु परिवर्तन के पश्चात् पेट का विकार अधिक हो—साइलिसिया, कल्केरिया फास।

प्लीहा में पीड़ा— कैलि फास, नेट्रम फास।

प्लीहा के कारण कष्ट—कैलि फास, नेट्रम म्यूर।

पेट मे अफरा—कैलि फास।

मल स्वय हो जाय—नेट्रम म्यूर।

मल मिट्टी के रङ्ग का—कैलि म्यूर।

मल टुकड़े-टुकड़े होकर होवे—नेट्रम म्यूर। (विखर जाये)

मल शुष्क—नेट्रम म्यूर।

मल रोकने से न रुके—नेट्रम फास।

नरम मल भी कठिनता से निकले—नेट्रम सल्फ।

मल दुर्गन्धयुक्त—कैलि फास, साइलिसिया।

मल वार-बार होवे—नेट्रम फास (जूसी की तरह टपक पडे)।

मल फेनदार—नेट्रम म्यूर।

मल हरा—नेट्रम म्यूर, कल्केरिया सल्फ, नेट्रम सल्फ।

मल गर्म और फट-फट कर हो—कल्केरिया फास।

मल में सुद्दे—नेट्रम सल्फ।

मल ढीला प्रातःकाल—नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ।

मल आवाज के साथ—कल्केरिया फास।

मल अधिक परिमाण में—कल्केरिया फास।

मल बहुत थोड़ा—नेट्रम फास।

मल में रक्त की लकीर हो—कल्केरिया सल्फ, नेट्रम सल्फ।

छोटे बच्चो का हैजा, ऐसी वस्तु माँगे जो भोजन करने के योग्य न हो—कल्केरिया फास।

हैजा-चावल के माड़ के समान मल—कैलि फास।

आमातिसार में चिकना आँव रक्तमिश्रित मल, पेट में ऐंठन की पीड़ा, वरावर शौच की आवश्यकता पडे यहाँ तक कि खीचने की नौवत हो—कैलि म्यूर, मैग फास।

पेट में अत्यन्त अधिक पीड़ा, पानी जैसा मल जो कि जोर से निकले—नेट्रम म्यूर।

एपेण्डिसाइटिस (Appendicitis)—

आँत के एक स्थान की सूजन—कैलि म्यूर, मैग्नेशिया फास, साइलिसिया।

,, जव पेट का मास सख्त हो—मैग्नेशिया फास।

,, सदा कब्ज रहता हो—नेट्रम सल्फ।

,, दर्द हो, पेट फूला रहता हो—मैग्नेशिया फास।

,, पेट में नरम गाँठ पड़ती हो—कैलि म्यूर।

एक्जिमा (Eczema)—

टीका लगाने के वाद—कैलि म्यूर।

कान के पीछे भौंहों पर जोड के मोड पर, वहुत नमक खाने से—नेट्रम म्यूर।

शाम को खुजली हो—कैलि सल्फ।

स्नान से ज्यादा हो—नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ।

पपड़ी पतली हो—नेट्रम म्यूर।

तेजावी लक्षण हो—नेट्रम फास।

सफेद-सी फुन्सियाँ हों—कैलि म्यूर।

सफेद पानी भरे—नेट्रम सल्फ, कैलि म्यूर।

पीला, हरा सा पानी निकले—कैलि सल्फ।

पानी भरी फुन्सियाँ—नेट्रम सल्फ।

सफेद खुरण्ड—कल्केरिया फास।

गर्भाशय विकार से—कैलि म्यूर।

चिड़चिड़ेपन के स्वभाव से—कैलि फास।

पीली पपड़ी—कल्केरिया फास।

ऐंठन (Cramps)—नेट्रम म्यूर, मैग्नेशिया फास, साइलिसिया।

" चमड़ा सूखा हो—कैलि सल्फ।

" लेखकों और बाजे वालों के हाथों में ऐंठन—मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फास, नेट्रम फास।

" पिंडलियों में—कल्केरिया फास, मैग्नेशिया फास।

" हैजे में—नेट्रम सल्फ।

" गले में—मैग्नेशिया फास।

ऐंठन के खून वाले रोगियों मे—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, कैलि सल्फ।

" आमाशय और पेट मे—मैग्नेशिया फास, नेट्रम फास।

ऐंठन बाहर हाथ, उँगली, अँगूठे, टाँग और तलुवे मे—साइलिसिया।

" पिंडली मे—नेट्रम म्यूर, कैलि सल्फ।

" हैजे मे—नेट्रम सल्फ।

" गले में—मैग्नेशिया फास।

" रात को हाथ-पैरों मे—कल्केरिया फास, मैग्नेशिया फास।

" पिंडलियों मे दर्द सहित—कैलि फास, मैग्नेशिया फास, साइलिशिया।

ऐंठन का दर्द (Cramping pain)—

पेट के निचले हिस्से मे—नेट्रम म्यूर।

ऐंठन सरीखा खिंचाव (Cramps like drawing)—कैलि म्यूर।

" का दर्द (Cramps like pains) टखने—कल्केरिया फास।

पैर के अँगूठे, पैर, भुजा, गरदन और पेट मे ऐंठन का-सा दर्द—कल्केरिया फास।

ऐंठन का-सा दर्द (Cramps like pains) हाथ और बाहों में—
नेट्रम फास, साइलिशिया ।

ऐंठन-सा मालूम होना (Cramps)—

उड़ने वाला, उछलने वाला, दर्द चेहरे में या ववासीर में या स्त्रियों के उदर में दायीं तरफ—मैग्नेशिया फास ।

ओष्ठ (Lips)—

शोथ—फेरम फास, कैलि म्यूर ।
भूरे घाव—(ज्वर, निर्बलता)—कैलि फास ।
फटना ठढक से—कैलि म्यूर ।
दरार पड़ना—कल्केरिया फ्लोर ।
व्रण होना—कैलि म्यूर ।
छिलके उतरना—कैलि सल्फ, नेट्रम सल्फ ।
जख्म होना—नेट्रम फास, साइलिसिया ।

कण्ठमाला (Scrofula)—नेट्रम फास, मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फास, साइलिसिया ।

गिल्टियों और चर्मरोगों के लिए—कल्केरिया फ्लोर, साइलिसिया, मैग्नेशिया फास, नेट्रम फास ।
कण्ठ में सूजन—पीव निकले—कल्केरिया सल्फ ।
कण्ठ का कफ, ग्रन्थियों मे घाव—कल्केरिया सल्फ, साइलिसिया ।
,, में जलन—कल्केरिया फास, फेरम फास ।
,, मे कुछ अँटका-सा जान पड़े—मैग्नेशिया फास ।
,, में शुष्कता—नेट्रम म्यूर ।
,, ठहर-ठहर कर वन्द हो जाता हो—मैग्नेशिया फास ।
,, में कफ न जाने के कारण—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर ।
,, में रुकावट निगलने के समय—मैग्नेशिया फास ।
,, की गिल्टियों की सूजन के कारण वहरापन—कल्केरिया फास ।

कण्ठ की झिल्ली का शोथ—फेरम फास, कैलि म्यूर ।

,, की वायुनली में विषैलापन पहुँच जाना—कल्केरिया फास, कल्केरिया फ्लोर ।

,, की वायुनली में विषैलापन तथा भारीपन—नेट्रम म्यूर ।

,, की वायुनली में विषैलापन, हरी कै—नेट्रम सल्फ ।

,, की ,, ,, ,, पहुँच जाय और पानी सरीखा मल—नेट्रम म्यूर ।

,, की गिल्टियों की पुरानी सूजन—कल्केरिया सल्फ ।

कण्ठमाला सूजा हुआ तथा शुष्क—फेरम फास ।

कण्ठ के रोगों के आरम्भ में पीडा, लाली तथा गर्मी हो—फेरम फास ।

,, की गिल्टयों मे पीडा—कल्केरिया फास ।

कण्ठ-रोग घेघा—कल्केरिया फास, नेट्रम फास, साइलिसिया ।

कण्ठ की गिल्टियों की सूजन—फेरम फास ।

खखारने में जलन, कष्ट—कल्केरिया फास ।

स्वर बिल्कुल बैठ जाय—कैलि म्यूर ।

कर्णमूल—नेट्रम म्यूर ।

कर्णमूल में और अण्डकोष मे सूजन—कैलि म्यूर ।

रक्ताल्पता से कण्ठ पतला—नेट्रम म्यूर ।

कण्ठ में जलन—कल्केरिया फास ।

,, में सूजन, लाली—फेरम फास ।

,, मे खराश—कल्केरिया फास ।

द्रव पदार्थ निकलने मे रुकावट—मैग्नेशिया फास ।

निगलने में पीडा—फेरम फास, कैलि म्यूर, कल्केरिया फास ।

बोलते समय एकाएक सीटी-सा शब्द हो—कैलि फास, मैग्नेशिया फास ।

कण्ठ में गोली अटकी-सी जान पड़े—नेट्रम म्यूर ।

,, गायकों और व्याख्यान देने वालों को—फेरम फास ।

कण्ठ में जब गिल्टियाँ पक जायँ—कल्केरिया फास ।
,, स्वर धीरे-धीरे निकले पक्षाघात के कारण—कैलि फास ।
,, पका हुआ—कैलि फास ।
,, अथवा जीम सूखी—कल्केरिया फास ।
,, की गिल्टियों में पीव पड़ जाना—साइलिसिया
स्वर निकालने वाली स्नायु का पक्षाघात—कैलि फास ।
बोली नाक से निकले—कैलि फास।
कण्ठ में दम घुटता प्रतीत हो—मैग्नेशिया फास ।
,, में पीड़ा उपदंश के कारण—कैलि म्यूर ।
,, लाल हो—फेरम फास ।
,, जकड़ जाय, दुखे—मैग्नेशिया फास ।
,, में चिलक हो—नेट्रम म्यूर ।
,, में टपकन—फेरम फास ।
,, में लसदार कफ—कैलि सल्फ ।
,, पक जाय—कैलि सल्फ ।
,, की गिल्टियाँ बढ जायँ—साइलिसिया, कैलि फास, नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास ।

कंधे मे दर्द—फेरम फास, नेट्रम सल्फ, साइलिसिया ।
कनपटी में दर्द—नेट्रम फास, साइलिसिया ।
मम्पस् (Mumps)—नेट्रम म्यूर ।
कपड़े न सहे जाते हों—नेट्रम म्यूर ।
कब्ज (Constipation)—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया ।
कब्ज, जब मुँह में पानी आता हो—नेट्रम म्यूर ।
कब्ज में सिर दर्द—कल्केरिया फास ।
हल्के रग का दस्त—कैलि म्यूर ।
निचली आँतों में भारीपन—फेरम फास

क्भी-कभी दस्त—नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास।
मलाशय काम न करता हो—साइलिसिया।
बवासीर के कारण कब्ज—नेट्रम म्यूर।
मुलायम दस्त भी कष्ट से हो—कल्केरिया फास।

कमजोरी (Weakness)—कल्केरिया फास, कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, नेट्रम फास, फेरम फास।

कमजोरी जोड़ों की—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
,, ज्ञान-तन्तु की - नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
,, घुटनों में, पिंडलियों में, पेट में—नेट्रम म्यूर।
,, बाँह, पीठ, छाती, धड़, पैर, टाँग, हाथ में—साइलिसिया।
,, और थकावट (Weakness and Fatigue) दिन भर, विशेषकर सवेरे—कल्केरिया फ्लोर।

कमर (Lumber region)—

कमर में दर्द—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
कमर का दर्द (Lumbago)—कल्केरिया फास, फेरम फास।
,, मोच से—कल्केरिया फ्लोर।

कर्ण शूल (Earache)—

ठंढक से अधिक—मैग्नेशिया फास।
वर्षा से अधिक—नेट्रम सल्फ।
गर्मी से कम—मैग्नेशिया फास।
कान और गर्दन की गिल्टियाँ सूजी हुई हों—कैलि म्यूर, कल्केरिया सल्फ।

सर्दी के कारण शोथ—फेरम फास।
चोट, लपक, सुई चुभने का-सा दर्द—फेरम फास।
मवाद अन्डे की सफेदी-सी—कल्केरिगा फास।
पीली मवाद—कैली सल्फ।

कलाई (Wrist)—

गठिया का जोर हो—फेरम फास ।

जोड़ में खिंचाव फाड़ने का-सा—कैलि म्यूर

चुभने का-सा—नेट्रम म्यूर ।

कसावट (Constriction)—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया ।

कांच निकलना—फेरम फास ।

काँपना (Shuddering)—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया ।

काँपना (Trembling) शरीर का—नेट्रम फास, नेट्रम सल्फ, कल्केरिया फास, कैलि फास ।

काँपना लेखकों का हाथ—मैग्नेशिया फास ।

काईदार बदगोश्त (Fungous growths)—कल्केरिया सल्फ ।

काटना विषाक्त कीड़ों का—कैलि फास, नेट्रम म्यूर ।

काटना पशुओं का—फेरम फास, कैलि म्यूर, साइलिसिया ।

काटने वाला दर्द (Cutting Pains)—लगाने के लिए—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया ।

खिलाने के लिए—कल्केरिया फास, कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया ।

कान के रोग—

कान में सूजन नीली या पीली रहे; मैल की पीव निकले—कैलि सल्फ ।

कान में धम्-धम् शब्द—साइलिसिया ।

कान में चारो ओर फुन्सियाँ —साइलिसिया ।

कान के निकट की हड्डी मे पीड़ा—कल्केरिया फास ।

कान का कष्ट, दुर्बल मनुष्य का—फेरम फास ।

कान में खुजली—कैलि फास ।

कान के भीतर की नाली में सूजन—साइलिसिया, कैलि फास ।

नाक साफ करने में कान के भीतर कड़कड़ हो—कैलि म्यूर ।

कान में जलन—नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास ।

कान में भनभनाहट—कैलि फास, मैग्नेशिया फास ।

कान के बीच के परदे का पुराना नजला—कैलि म्यूर, कैलि सल्फ, नेट्रम म्यूर ।

कान में वात की पीड़ा—कल्केरिया फास ।

मुँह चलाने में कान मे कड़कड़ हो—कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर ।

शोत से कान में पीड़ा बढ़े—कैलि सल्फ ।

बहरेपन के साथ पीली पीब—कैलि सल्फ ।

कान का परदा मोटा हो जाय—कैलि म्यूर ।

कान से पीला, गाढा, रक्तमिश्रित स्राव हो—कैलि फास ।

कान से दुर्गन्धयुक्त पीब निकले —कैलि फास ।

कान के स्नायु-विकार के कारण कम सुनाई दे—मैग्नेशिया फास ।

कण्ठ अथवा कान के बीच के परदे के विकार से कम सुनाई दे—कैलि म्यूर ।

कान में सूजन, नजला—कैलि म्यूर ।

कान में ध्वनि हो—कैलि फास ।

कान में सूजन, जलन, खुजली—कल्केरिया फास ।

कान के रोग में कान की हड्डी बेकार हो जाय—कल्केरिया फ्लोर ।

कान में पीड़ा और अण्डे के समान स्राव हो—कल्केरिया फास ।

कान में टपकन—फेरम फास ।

कान में छिलन पैदा करने वाली पीड़ा—कल्केरिया फास ।

सूजन के कारण कम सुनाई दे—फेरम फास ।

कण्ठ की सूजन के कारण कम सुनाई दे—साइलिसिया, नेट्रम म्यूर ।

कान के भीतर पीब—फेरम फास, साइलिसिया; कैलि फास, कैलि म्यूर, कल्केरिया सल्फ ।

कान का कष्ट गरम कमरे में बढ़े—कैलि सल्फ ।

कान से मैली दुर्गन्धयुक्त पीव निकले—कैलि फास।

कान से रक्त-पीव मिश्रित स्राव हो—कैलि सल्फ, कल्केरिया फास, कल्केरिया सल्फ, नेट्रम म्यूर।

कान का स्राव गाढ़ी पीव के समान निकले—कल्केरिया फास।

कान का स्राव पानी जैसा—कैलि सल्फ।

कान का स्राव होने से पीड़ा कम हो—फेरम फास।

कान में पीड़ा के साथ जलन—फेरम फास।

कान में चिलक हो—फेरम फास।

कान की पीड़ा तर ऋतु में बढे—नेट्रम सल्फ।

जान पडे कि कान से कुछ निकल पडा—नेट्रम सल्फ।

पानी वहने-सा शब्द सुनाई दे—फेरम फास।

कान में सूजन, ज्वर—फेरम फास।

कान में पीड़ा, हड्डी सड़ती हो—साइलिसिया।

कान से बाहर दुखन और पपड़ीदार मलाई जैसी स्राव—नेट्रम सल्फ।

गुत्थी के कारण कान बन्द हो—कैलि सल्फ, कल्केरिया फ्लोर।

ऐसा बोध हो मानो कान में कोई हथौड़ा मार रहा हो—कैलि फास।

कान में कुछ रुका मालूम हो—फेरम फास, नेट्रम सल्फ, नेट्रम म्यूर।

कान मे चिलक हो—फेरम फास, नेट्रम म्यूर।

कान में घड़घड़ाहट हो—नेट्रम म्यूर।

कान में घण्टी का-सा शब्द आवे—नेट्रम सल्फ।

कान में खुजली—नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर।

कान मे शीत प्रतीत हो—कल्केरिया फास।

कान में गर्मी मालूम हो—फेरम फास।

मुँह चलाने से कान के भीतर कड़कड़ हो—कैलि म्यूर, नैट्रम म्यूर।

कण्ठमाला वाले बच्चों के कान का कष्ट—कल्के फास।

पाण्डु रोगियों के कान का कष्ट—फेरम फास।

बाई के कारण कान में कष्ट—कल्केरिया फास।
कान में रुक-रुक कर पीड़ा हो—फेरम फास।
कान मे जलन हो—फेरम फास।
कान के परदे में घाव—कैलि म्यूर।
कान के निकट गुल्थियाँ—कैलि म्यूर।
कान के अन्दर तनाव—फेरम फास।
कान के म्यूकस पर—फेरम फास।
कान से पीबदार स्राव—कल्केरिया फास, कैलि सल्फ, फेरम फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
पंछादार—कैलि फास।
गाढ़ा, सफेद और तर—कैलि म्यूर।
कान के बाहर हड्डी मे गाँठ—कल्केरिया फ्लोर, साइलिसिया।
मवाद की सख्ती से कम सुनाई दे—कल्केरिया फ्लोर, कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
झिल्ली के गढे में सूजन से कम सुनाई दे—साइलिसिया।
सिर मे आवाज हो, कम सुनाई पड़े—कैलि फास।
सर्दी के कारण कम सुनाई दे—साइलिसिया, कल्केरिया फास।
स्नान करने के बाद कान में शोथ—साइलिसिया।
कान में खुजली हो—नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास।
सोते समय आवाज हो—कैलि फास।
पानी बहने की-सी आवाज—फेरम फास।
शब्द न सहा जाय—साइलिसिया, फेरम फास, कैलि फास, नेट्रम म्यूर।
एक कान लाल 'गरम' खुजली—नेट्रम फास।
कान के भीतर दर्द—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ, साइलिसिया।
कान में गूँजने का शब्द—कैलि फास, साइलिसिया।

बजने का शब्द—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, नेट्रम सल्फ, कैलि फास ।

दहाड़ने का शब्द—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, फेरम फास, कैलि फास ।

बिजली-सा चुभने का दर्द—नेट्रम सल्फ ।

बायें कान में दर्द—साइलिसिया ।

छूने से दुखे—नेट्रम फास ।

झटका-सा लगे—कैलि म्यूर ।

कान कड़ा जान पडे—कैलि म्यूर ।

थोड़ी-सी आवाज से चौंक पडे—कैलि फास, साइलिसिया ।

तनाव भीतर जान पड़े—फेरम फास ।

भीतर घाव हो—कैलि फास ।

कीड़े (Worms)—नेट्रम फास ।

केंचुए—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया ।

चिपटे फीते की तरह केंचुए—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया ।

सूती कीड़े—साइलिसिया, नेट्रम फास, कैलि म्यूर, फेरम फास ।

आँतों में—नेट्रम फास, कल्केरिया फास, फेरम फास ।

लम्बे कीड़े—नेट्रम सल्फ ।

कुकुर खाँसी (Whooping Cough)—

शोथ का दर्जा—फेरम फास ।

ज्ञान-तन्तु के कारण—मैग्नेशिया फास, कैलि फास ।

खाना कै हो जाय—फेरम फास ।

कूल्हा (Hip)—

कूल्हे के स्थान पर दर्द—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, कैलि फास ।

कूल्हे की हड्डी में दर्द—कल्केरिया फास ।

कूल्हे के जोड में दर्द प्रारम्भ में—कैलि म्यूर ।

ज्वर के कारण—फेरम फास ।

खिंचाव का दर्द—नेट्रम फास ।

नश्तर चुभने-सा दर्द—मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फास ।
दर्द बायीं तरफ—कल्केरिया फास ।
चलने में पहले दर्द—कैलि फास ।
रात को दर्द अधिक हो—कल्केरिया फास ।
दर्द होना, चला जाना—मैग्नेशिया फास, कैलि फास ।
चीर-फाड़ के बाद दर्द—फेरम फास, कैलि म्यूर ।
बायीं ओर चुभने का दर्द—नेट्रम सल्फ ।

कैन्सर (Cancer) विष फोड़ा—
पिलाने के लिए—मैग्नेशिया फास ।
एपीथिलियल कैन्सर—कैलि सल्फ ।
पत्थर-सा सख्त—कल्केरिया फ्लोर ।
मुर्दार हो—कैलि फास ।
बदबूदार पीब निकले—कैलि फास ।
जल-सी साफ मवाद हो—नेट्रम म्यूर ।
बरछी मारने का-सा दर्द—मैग्नेशिया फास ।
किनारे सख्त हों—कल्केरिया फ्लोर ।
चेहरे पर हो—कैलि सल्फ ।

कै होना (Vomiting)—
तेजाबी, खट्टी—नेट्रम म्यूर, फेरम फास, कैलि फास, नेट्रम सल्फ, नेट्रम फास ।
पित्त के कारण—नेट्रम म्यूर; साइलिसिया ।
पिसी हुई कॉफी के समान—नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर,
रुधिर मिली—साइलिसिया, फेरम फास, कैलि म्यूर ।
सुर्ख रुधिर—फेरम फास ।
खून काला लिये हुए सुर्ख, जमनेवाला—कैलि फास ।

खून काला, रंग चिकना—कैलि म्यूर, फेरम फास।
खून झागदार—नेट्रम म्यूर।
खून जमा हुआ काला—कैलि म्यूर, फेरम फास।
पानी की चीजें निकलें—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
खाने की चीजें निकलें—कल्केरिया फास, फेरम फास।
कड़वी चीजों की कै—कैलि फास।
बिना पची चीजें निकलें—कल्केरिया फास, फेरम फास, कल्केरिया फ्लोर।
खाना और खट्टा पानी निकले—नेट्रम म्यूर, फेरम फास।
गाढ़ा सफेद बलगम—कैलि म्यूर।
खट्टे झाग हों—नेट्रम फास।
कीड़े गिरें—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
नमकीन हरा-सा रंग—नेट्रम सल्फ, कैलि फास।
चिपकने वाली पतली मवाद—साइलिसिया, नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर।
साफ मवाद—नेट्रम म्यूर।
शीतल जल पीने, बर्फ की मलाई या ठण्डी चीजें पीने से—कल्केरिया फास।
कलेवा करने से पहले—फेरम फास, साइलिसिया।
दाँत निकलने के दिनों में—कल्केरिया फ्लोर।
दूध पिलाते ही बच्चे को कै—साइलिसिया, कल्केरिया फास, फेरम फास।
बच्चे फटा हुआ दूध कै करें—कल्केरिया फास, नेट्रम फास।
शराबियों की कै—नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ।
गर्भिणी स्त्रियों की गर्भावस्था में अनुसार—कैलि फास।
वायुगोला के कारण—कैलि फास।
समुद्र-यात्रा के कारण—कैलि फास, नेट्रम फास।

कोढ़ (Leprosy)—

तांबे के रङ्ग के धब्बे, नाक में घाव, गाँठे हों, पीने और लगाने के लिए—साइलिसिया।

कौआ (Uvula)—

बढ़ जाना—कल्केरिया फ्लोर, नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर।

ढीला पड़ जाना—नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फ्लोर।

खाँसी आती हो—कल्केरिया फ्लोर, नेट्रम म्यूर।

क्रूप (Croup)—कल्केरिया फ्लोर।

क्रूप रोग असली—कल्केरिया फास।

झाग मलद्वार मे हो—कल्केरिया फ्लोर।

क्लोद की गिल्टी (Lymphatic Glands)—

पुरानी सूजन या शोथ—नेट्रम म्यूर।

क्षय रोग (Tuberculosis)—नेट्रम फास, मैग्नेशिया फास; साइलिसिया।

क्षय रोग साधारण रूप से—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

पीबदार बलगम हो—कल्केरिया सल्फ।

बड़ी कमजोरी हो—साइलिसिया।

पेट सम्बन्धी—नेट्रम सल्फ, कैलि म्यूर।

शोषक गिल्टियों की सूजन—नेट्रम फास, कैलि म्यूर।

खंजवात—

चलने की शक्ति में खराबी—मैग्नेशिया फास, कैलि म्यूर, कैलि फास, नेट्रम सल्फ, साइलिसिया।

खसरा (Measles)—फेरम फास, कैलि म्यूर।

जब छिलका उतरने लगे—कैलि सल्फ, कल्केरिया फास, साइलिसिया।

जब दाने बैठ गये हों—कैलि सल्फ।

खाँसी (Cough)—

खाँसी, साधारण—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, फेरम फास।

,, तेज—कैलि म्यूर, फेरम फास।

,, शाम को वढ़ती हो—कैलि सल्फ।

,, गरम कमरे में वढे—कैलि सल्फ।

,, सवेरे वढ़े—नेट्रम सल्फ, नेट्रम म्यूर।

,, लेटने से आराम—कैलि फास।

,, ठण्ढी हवा से आराम—कैलि सल्फ।

,, वहुत आवाज हो—कैलि म्यूर।

,, सिर दर्द हो जाता हो—नेट्रम म्यूर।

खाँसी में गालों तक आँसू आ जाय—नेट्रम म्यूर।

,, पुरानी, क्षय रोग ग्रस्त की—कल्केरिया फास, साइलिसिया, नेट्रम म्यूर।

,, क्रूप—कैलि म्यूर।

,, सूखी—कैलि म्यूर।

,, ठंढी चीजें पीने से उठे—साइलिसिया।

,, कौआ वढ़ जाने और सूख जाने से उठे और लेटने में अधिकता हो—नेट्रम म्यूर।

,, छाती की वीच वाली हड्डी के पीछे सुरसुराहट—नेट्रम म्यूर, कैलि म्यूर।

,, सुरसुराहट गले में—कल्केरिया फ्लोर।

,, श्वास नली में—फेरम फास।

,, काटने वाली—कल्केरिया फ्लोर।

,, खाने के वाद—कल्केरिया फ्लोर।

,, वच्चों के दाँत निकलते समय की—कल्केरिया फास।

खाँसी पुरानी—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर।

रक्त का कफ यक्ष्मा से—कल्केरिया सल्फ।

जीर्ण खाँसी—कल्केरिया सल्फ।

खाँसी की अधिकता—फेरम फास।

खाँसी, ऐंठन वाली—कैलि म्यूर, कैलि फास, नेट्रम म्यूर, मैग्नेशिया फास, फेरम फास।

,, प्रातःकाल अधिक—नेट्रम सल्फ, नेट्रम म्यूर।

,, सायंकाल अधिक—कैलि सल्फ।

,, लेटने से कम हो—कल्केरिया फास।

,, लेटने से अधिक—साइलिसिया, कल्केरिया फ्लोर, मैग्नेशिया फास।

,, सिर दर्द के साथ—नेट्रम म्यूर।

,, भौंकने वाली—कैलि म्यूर।

,, जीर्ण क्षय वालों की—साइलिसिया, कल्केरिया फास।

,, सूखी—मैग्नेशिया फास, फेरम फास, नेट्रम म्यूर।

,, शीतल द्रव पीने से—साइलिसिया।

,, कड़कड़ाती हुई—साइलिसिया।

,, गले में गुदगुदी—कल्केरिया फ्लोर, कैलि फास, नेट्रम म्यूर।

,, वायुनली में गुदगुदी—साइलिसिया, फेरम फास, कैलि फास।

,, कण्ठ में गुदगुदी—कल्केरिया फ्लोर, कैलि सास।

,, हकहक करने वाली—कल्केरिया फ्लोर।

,, में गला बैठा हुआ—कैलि सल्फ।

,, जोर की आवाज के साथ—कैलि म्यूर।

,, पीड़ा के साथ—फेरम फास।

,, खास समय के बाद—नेट्रम म्यूर।

,, के छोटे-छोटे ठसके—फेरम फास, कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर।

खाँसी सख्त फेरम फास, कैलि सल्फ।
,, जोर की कैलि म्यूर।
खाँसते समय रोगी छाती पकड़े—नेट्रम सल्फ।
खाँसी किरकिराहट करने वाली—साइलिसिया, फेरम फास।
,, ढीले वलगम की आवाज वाली—कैलि सल्फ, साइलिसिया, नेट्रम म्यूर।
,, सख्त जोर का शब्द करने वाली दूध-सा वलगम—कैली म्यूर;
,, ज्ञान-तन्तु सम्बन्धी मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फ्लोर, साइलिसिया।
,, क्लेशकारक—फेरम फास।
,, वारी से उठने वाली - मैग्नेशिया फास।
,, समय-समय पर उठने वाली—नेट्रम म्यूर।
,, वाहर गये विना आराम न मिले-कैलि सल्फ।
,, वलगम गाढा पीव-सा—साइलिसिया।
,, थोड़ी देर रहे—फेरम फास, कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर।
,, ऐंठन की—मैग्नेशिया फास, कैलि म्यूर, कैलि फास, नेट्रम म्यूर, फेरम फास।
कुकुर-खाँसी—फेरम फास, मैग्नेशिया फास, कैलि सल्फ, कैलि फास, कल्केरिया फास।
खाँसी, सिर फटता जाय - नेट्रम फास।
,, रात को पसीना आवे—साइलिसिया।
खाँसते समय पेशाव हो जाय—फेरम फास, नेट्रम म्यूर।
खाँसी, वाईं ओर छाती में दर्द—नेट्रम सल्फ।
,, छाती में दर्द—नेट्रम म्यूर, फेरम फास।
,, एकाएक ज्वर हो—कल्केरिया सल्फ।

खाँसी, आँसू बहते हों—नेट्रम म्यूर।
,, बलगम मवादवाली—कल्केरिया सल्फ।
,, गुदगुदी के साथ—फेरम फास, कल्केरिया फ्लोर, नेट्रम म्यूर।
,, बच्चों की दम घुटने वाली जो लेटने से कम हो—कल्केरिया फास।
,, के साथ रात को पसीना—साइलिसिया।
,, के साथ सूत्र हो जावे—फेरम फास, नेट्रम म्यूर।
,, खाँसी मे जान पडे कि वक्षस्थल खाली हो गया—नेट्रम सल्फ।
,, शीतल विमल वायु में हो—कल्केरिया सल्फ।
,, में आँसू निकले—नेट्रम म्यूर।
,, गर्म कमरे में कम हो—कैलि सल्फ।
,, पसली की आरम्भिक अवस्था में—फेरम फास।
,, जब रतूबत पैदा हो—कैलि म्यूर।
अन्तिम अवस्था में—कैलि फास, कल्केरिया फास।
,, गला बैठ जाय—कैलि म्यूर, कैलि सल्फ, फेरम फास, मैग्नेशिया फास।
,, कफ न हो—फेरम फास, मैग्नेशिया फास।
,, कफ स्वच्छ हो—नेट्रम म्यूर।
,, कफ अधिक हो—साइलिसिया, कैलि सल्फ।
,, कफ खखारने में कठिनाई—कैलि म्यूर, कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ।
,, कफ निकले—नेट्रम म्यूर, कैलि सल्फ, कैलि म्यूर, साइलिसिया।
,, कफ मलाई जैसा नेट्रम फास।
,, कफ दुर्गन्धयुक्त—कैलि फास, कल्केरिया फ्लोर।
,, कफ फेनदार—नेट्रम म्यूर, कैलि फास।
,, कफ दानेदार—साइलिसिया।
,, कफ हरी मैल की—कैलि सल्फ, नेट्रम, म्यूर।

खाँसी, कफ पीला सुनहला—नेट्रम फास ।
,, कफ तर साइलिसिया, कैलि सल्फ, नेट्रम म्यूर ।
,, जब छाती खाली जान पड़े—नेट्रम सल्फ ।
,, बच्चों का दम घुटे, लेटने से आराम मिले—कल्केरिया फास ।
,, में कफ दूधिया—कैलि म्यूर ।
,, कफ गन्दा—साइलिसिया ।
,, कफ पीव का—कल्केरिया सल्फ, साइलिसिया, नेट्रम सल्फ ।
,, कफ घड़घड़ाता—साइलिसिया, नेट्रम म्यूर ।
,, कफ डोरे के समान—फेरम फास ।
,, कफ नमकीन—कैलि फास, नेट्रम म्यूर ।
,, कफ रक्त मिश्रित—कल्केरिया सल्फ, फेरम फास ।
,, कफ चिकना—कैलि सल्फ ।
,, कफ लसदार—कैलि सल्फ ।
,, कफ गाढ़ा—साइलिसिया, कैलि म्यूर, कैलि फास, नेट्रम सल्फ ।
,, कफ पानी जैसा—कैलि सल्फ, नेट्रम म्यूर ।
,, कफ सफेद—कल्केरिया फास, कैलि म्यूर ।
,, कफ लसदार—कल्केरिया फास ।
,, कफ पीलापन लिये हुए—साइलिसिया, कैलि फास, कैलि सल्फ, कल्केरिया फास, कल्केरिया सल्फ ।

खुजली (Itching) और चर्म रोग—

खुजली त्वचा में—साइलिसिया, कैलि सल्फ, कैलि फास, कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ ।
,, तलवों में—कल्केरिया फास, कैलि फास ।
,, हाथ-पैर में—कैलि फास ।
,, बुढ़ापे में—कल्केरिया फास ।
,, कपड़ा उतारने पर—नेट्रम सल्फ ।
,, अत्यन्त अधिक—नेट्रम म्यूर ।

खुजली, त्वचा का रङ्ग पीला—कैलि म्यूर।
,, कोढ़ की—साइलिसिया।
,, त्वचा दूषित—नेट्रम म्यूर।
,, त्वचा चिकनी—कैली सल्फ।
,, त्वचा सूखी—कैलि फास, नेट्रम म्यूर।
,, त्वचा खुरखुरी—कैलि सल्फ।
,, त्वचा सूजी हुई—फेरम फास।
,, त्वचा देर मे भरे—साइलिसिया।
,, त्वचा उभड़े—कैलि सल्फ।
,, त्वचा पर पपड़ियाँ—कल्केरिया फास, कैलि फास।
,, त्वचा पर भूसी—कैली म्यूर, कैलि सल्फ, नेट्रम सल्फ, नेट्रम म्यूर।
,, त्वचा दुखे—नेट्रम म्यूर, फेरम फास।
,, त्वचा पर छाले—कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ।
,, त्वचा पर पानी भरे छाले—नेट्रम म्यूर।
,, त्वचा पर झुर्रियाँ—कल्केरिया फास, कैलि फास।
,, त्वचा दुखे, साइकोसिस का विष हो—कैलि फास, नेट्रम म्यूर।
,, बिना दाने की—कल्केरिया फास।
,, ल्यूपस—कल्केरिया फास, कैलि म्यूर।
,, विष के छाले—कैलि फास।
,, चमड़े पर पपडियाँ—नेट्रम सल्फ।

बिसहरी अथवा कोई अन्य चर्मरोग, दुर्गन्धित स्राव—कैलि फास।

चर्मरोग दुर्गन्धित स्राव—कैलि फास।

सर्वाङ्ग शरीर पर फुन्सियाँ जिस प्रकार कोई मक्खी काटती है—नेट्रम फास।

सर्वाङ्ग शरीर पर फुन्सियाँ—कल्केरिया फास।

झुलसी हुई त्वचा पक जाय—कल्केरिया फास।

त्वचा में दरारें—कल्केरिया फ्लोर।

अँगुलियों के बीच दरार-नेट्रम म्यूर।

खुजली, जोर का काम करने के बाद- नेट्रम म्यूर।

,, कान के पीछे-नेट्रम म्यूर।

,, कीड़ों के काटने की-सी-नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर।

,, अङ्गुलियों के बीच-नेट्रम म्यूर।

,, चमड़े में-कल्केरिया फास, कैलि सल्फ, कैलि फास, साइलिसिया।

,, तलवों में-कल्केरिया सल्फ, कैलि फास, मैग्नेशिया फास।

,, हाथ-पैरों में-कैलि फास।

,, नाक की दीवारों में-नेट्रम सल्फ।

,, स्तनों में-साइलिसिया, कैलि फास।

,, चेहरे में-नेट्रम सल्फ।

,, टाँगों में-कैली म्यूर, कैलि फास।

,, सूजे हुए स्तन में-साइलिसिया।

,, पैर की अँगुलियों में- नेट्रम सल्फ।

,, सब शरीर में-कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

,, पलकों में-नेट्रम फास।

,, आँखों में-नेट्रम म्यूर, मैग फास।

,, नाक में-नेट्रम फास।

फोड़े में पीड़ा व गर्मी-फेरम फास।

मुँहासे-कल्केरिया फास।

मुँहासे में गाढ़ी पीब-कैलि म्यूर।

गुदा में पिटकापन-कल्केरिया फ्लोर।

फोड़े में सूजन; प्रथमावस्था में पीड़ा व टपकन—फेरम फास।
फोड़े पकाने के लिए—साइलिसिया।
जला हुआ पक जाना—कल्केरिया सल्फ।

सरतानी सूजन पीब पड़ने के पहले—कैलि म्यूर।
,, घाव से पीब निकले—साइलिसिया।
,, पीड़ा टपकन कम करने के लिए—फेरम फास।

बच्चों की त्वचा फटे—नेट्रम सल्फ नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास।
हाथ की हथेलियाँ चिटखें—कल्केरिया फ्लोर।

सिर पर सफेद भूसी—कैलि सल्फ, कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर।
त्वचा सूखी—कल्केरिया फास, कैलि सल्फ।
उकौता टीका लगाने के पश्चात्—कैलि म्यूर।

उकौता अधिक नमक खाने से—नेट्रम म्यूर।
उकौता जोड़ों में जहाँ पर त्वचा मुड़ती हो—नेट्रम म्यूर।
उकौता जो कि दब जाय—कैलि सल्फ।
उकौता भौंहों पर—नेट्रम म्यूर।
उकौता पर भूसी जैसी जमे—नेट्रम म्यूर।

उकौता पर छाले पड़ें—कैलि म्यूर।
उकौता के छालों से पानी निकले—नेट्रम सल्फ।
उकौता पर पपड़ियाँ जमें—कल्केरिया फास।
उकौता जहरबाद उसके साथ ज्वर प्रथमावस्था में—फेरम फास।

जहरबाद लाल चमकती हुई त्वचा सूजी हुई—नेट्रम सल्फ।
स्राव अन्डे की सफेदी के समान—कल्केरिया फास।
स्राव पीला पानी जैसा—कैलि फास।
स्राव सुनहरा—फेरम फास।
,, हरापन लिये हुए नीला—कैलि सल्फ।
,, साफ पतला पानी के समान—नेट्रम म्यूर।

स्राव रुधिर मिश्रित—कल्केरिया सल्फ ।
,, गाढ़ी पीब के समान—साइलिसिया ।
,, दुर्गन्धयुक्त—कैलि फास ।
,, लग जाने से दुखन छीलन—नेट्रम म्यूर, कैलि म्यूर ।
,, शहद जैसा—नेट्रम फास ।
शीतला ज्वर गर्मी—फेरम फास ।
शीतला दानों के समान पीब निकले—कल्केरिया सल्फ ।
,, की हालत गन्दी हो जाय—कैलि फास ।
,, के दाने जब दब जायँ—कैलि सल्फ ।
,, में अचेतना तन्द्रा—नेट्रम म्यूर ।
,, में जल बहे—नेट्रम म्यूर ।
घाव नासूर वाले—कल्केरिया फ्लोर, साइलिसिया ।
घाव जो न भरे—कल्केरिया फ्लोर ।
घाव मे सूजन हो—फेरम फास ।
घाव मे बदगोश्त—साइलिसिया, कैलि म्यूर ।
घाव में पीब हो—साइलिसिया, कल्केरिया सल्फ ।
घाव कण्ठमाला के विष का—कल्केरिया फास ।
पिजी उछलना—नेट्रम सल्फ, नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर ।
चर्मरोग काटने का—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, कल्केरिया फास ।
फफोले पड़ना—नेट्रम सल्फ, कैलि फास, नेट्रम म्यूर ।
खुजलाने से रक्त निकलना—कल्केरिया सल्फ ।
छाले होना—कैलि फास, नेट्रम म्यूर, कैलि म्यूर ।
छालों में पानी होना—नेट्रम म्यूर ।
पछादार पानी होना—कैलि फास ।

जलन—साइलिसिया, कल्केरिया सल्फ, नेट्रम म्यूर।
जब जलने से छाले पड़ गये हों—नेट्रम म्यूर।
छाले फूट कर सफ़ेद पानी बहता हो—कैलि म्यूर।
घाव लाल हो, दर्द हो—फेरम फास।
चमड़ा नीला पड़ गया हो—नेट्रम फास, साइलिसिया।
चमड़ा छिल कर लाल हो गया हो—कल्केरिया फास, नेट्रम फास, नेट्रम सल्फ, कैलि सल्फ, कैलि फास, नेट्रम म्यूर।

फटना—कल्केरिया फ्लोर।
ठण्ढ से हाथ फट जाना—फेरम फास, कल्केरिया फ्लोर।
ठण्ढा रहना—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
सिकुड़ जाना—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
पीले सफेद छिलके उतरना—कल्केरिया फास।
दरारें पड़ना—कल्केरिया फ्लोर, नेट्रम म्यूर।
मैला होना—नेट्रम म्यूर।
सूखा—कैलि सल्फ, कल्केरिया फास।
जलने और खुजलाने वाले दाने—कैलि सल्फ, कैलि फास।
चमड़े पर भूसी उड़ना—कैलि सल्फ, नेट्रम सल्फ।
फुन्सियाँ उठना—कैलि म्यूर।
खुश्की और गर्मी—कैलि सल्फ।
चमड़ा बहुत शुष्क हो—नेट्रम म्यूर।
ढीला और सुस्त—नेट्रम म्यूर।
सुनहरे पीले चिकने—नेट्रम फास।
चिकना—नेट्रम म्यूर, कैलि फास।
खुरदरा—कैलि सल्फ, कल्केरिया फ्लोर।

ज्ञान-तन्तु के सिरे से दाद-सी सूजन और फुन्सियाँ—नेट्रम म्यूर।
घाव मुश्किल से भरे—साइलिसिया।
फुन्सी निकलना—कल्केरिया सल्फ।
पानी भरी फुन्सियाँ—नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास, नेट्रम सल्फ।
छोटी लाल फुन्सियाँ दर्द न करनेवाली—कैलि म्यूर।
खुजली करनेवाली—कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर।
शोथ—फेरम फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
खाज - कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ, कैलि फास, साइलिसिया, नेट्रम म्यूर।
खाज दब जाय—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
खाज तर हो—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
कपड़ा उतारने पर खुजली चले—नेट्रम सल्फ।
कुछ रेंगता जान पड़े—कैलि फास।
खुजली चले, पर फुन्सी न हो—कल्केरिया फास।
शहतूत के-से दाने—नेट्रम म्यूर।
पित्ती के समान जलन और खुजली—कल्केरिया फास।
पित्ती उछलना—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, कैलि सल्फ।
गुठले पड़ना—साइलिसिया।
दुष्ट घाव—कैलि फास, साइलिसिया।
बच्चों का चमड़ा छिल जाना—नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर।
ठोढ़ी पर फुन्सियाँ—नेट्रम म्यूर।
मुँहासे होना—फेरम फास, कैलि म्यूर, कल्केरिया सल्फ, नेट्रम सल्फ, कल्केरिया फास।
रंग लाल पड़ना—फेरम फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
फीका होना—नेट्रम सल्फ।

खुरण्ड होना—कल्केरिया फास, कल्केरिया सल्फ।

पीले खुरण्ड—कल्केरिया सल्फ, कल्केरिया फास।

छिलके होना—कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ, कैलि म्यूर, कैलि सल्फ।

,,पीले—नेट्रम सल्फ।

,,सफेद—नेट्रम म्यूर।

,,पीली मवाद निकले—कैलि सल्फ।

छूने से लगे—साइलिशिया, नेट्रम म्यूर।

कण्ठमाला रोग के दाने—साइलिशिया, कल्केरिया फास।

चुनचुनाहट—नेट्रम म्यूर, साइलिशिया।

सूजन—साइलिशिया, नेट्रम सल्फ।

अचानक गायब हो जाने वाले—कैलि सल्फ।

व्रण होना—नेट्रम म्यूर, साइलिशिया।

मोती से दाने—कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ।

अण्डे की सफेदी के समान पीला सफेद छिलका—कल्केरिया फास।

पीबदार—नेट्रम फास, साइलिशिया।

रुधिर मिले खुजली वाले दाने—कैलि फास।

पानी के समान रङ्ग हो—नेट्रम म्यूर।

उठी हुई लकीरें—नेट्रम सल्फ, नेट्रम म्यूर।

सूखना, झुर्री पड़ना—कैलि फास, कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर।

पीला होना—नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ, साइलिसिया।

चोट का दर्द—नेट्रम म्यूर।

झपकी, ऊँघ (Drowsiness)—नेट्रम म्यूर, मैग्नेशिया फास, कैलि फास, नेट्रम सल्फ, नेट्रम फास।

तीसरे पहर—फेरम फास।

बड़ों मे—कल्केरिया फास।

खुरण्ड (Crusts)—

सख्त हो—कल्केरिया फ्लोर ।

पीलापन लिये सफेद—कल्केरिया फास ।

पीव सहित—साइलिसिया ।

शहद-सा—नेट्रम फास ।

वदबूदार चिकना—कैलि फास ।

खुरण्ड सिर पर—कल्केरिया सल्फ, नेट्रम सल्फ, कैलि म्यूर, साइलिशिया ।

खुश्की (Dryness)—

खुश्की हलक में—कैलि म्यूर ।

,, उँगलियों के सिरों पर—साइलिशिया ।

,, श्वास द्वार पर—कल्केरिया फ्लोर, नेट्रम म्यूर ।

,, मुँह में—साइलिसिया ।

,, रात को गले में—कल्केरिया फास ।

,, आँखों में—नेट्रम सल्फ ।

,, मसूढ़ों में—नेट्रम सल्फ ।

,, नाक के भीतर—साइलिसिया ।

,, वाईं आँख का ढेला—नेट्रम फास ।

,, होंठ पर—साइलिसिया ।

,, मुँह में—कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर ।

,, नाक में—नेट्रम म्यूर ।

,, चर्म में—नेट्रम म्यूर ।

,, गले में, सीने में—कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ, साइलिसिया ।

जीभ में—कैलि फास, नेट्रम म्यूर ।

खून बहना—(Haemorrhages)—

काला रुधिर—कैलि म्यूर ।

खून लाल—फेरम फास।

जमा हुआ—कैलि म्यूर, फेरम फास।

काला—कैलि म्यूर।

शरीर के भीतरी अङ्गों में—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

न जमने वाला—कैलि फास।

जहरीला पतला—कैलि फास।

खोदने का सा भाव होना—(Digging sensation)—
नेट्रम म्यूर, साइलिशिया।

खोपड़ी (Skull)—

पिछला भाग दर्द करे—नेट्रम म्यूर, साइलिशिया।

खोपड़ी पर—

,, फोड़े, गाँठ या छूने से दर्द—साइलिसिया, नेट्रम म्यूर।

,, सूजन—फेरम फास।

,, पीव पड़ना—कल्केरिया सल्फ, साइलिसिया।

खोपड़ी पर व्रण होना—कल्केरिया सल्फ।

खोपड़ी पर सफेद छिल्के और खुरण्ड उतरना—नेट्रम म्यूर, कैलि म्यूर, कैलि सल्फ।

खोपड़ी पर मवाद भरी फुन्सियाँ—कैलि सल्फ।

कोरिया (Chorea)—

हाथ-पैर काबू में न रहना-मैग्नेशिया फास, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ।

पेट में कीड़े हों-साइलिसिया, नेट्रम फास।

गठिया (Rheumatism)—

तीव्र—कैलि फास, कल्केरिया सल्फ, कैलि म्यूर।
मैग्नेशिया फास।

क्लेश बढ़ना, ऋतु-परिवर्तन से-कल्केरिया फास।

गठिया का क्लेश बढ़ना, काम की थकावट से-कैलि फास।

गठिया का क्लेश बढ़ना, सर्दी से—कल्केरिया फास।
" " हिलने-डोलने से—फेरम फास।
" " रात्रि में—कल्केरिया फास।
" क्लेश विस्तर की गरमी से—कैलि म्यूर।
गठिया का क्लेश प्रातःकाल—कैलि फास।
" " सर्दी हो जाने से - फेरम फास।
" " वैठने के वाद उठने से—कल्केरिया फास।
" " आराम मालूम हो धीमी हरकत में—कैलि फास।
" " गर्मी से—फेरम फास।
" जोड़ की गाँठों मे—नेट्रम फास।
" जोड़ों पर – फेरम फास, कैलि म्यूर, कल्केरिया फास, नेट्रम फास।
" पुराना—कल्केरिया फास, कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ, नेट्रम फास, कैलि सल्फ, कल्केरिया सल्फ।
गठिया का दर्द हरकत करने में—फेरम फास, कैलि म्यूर।
गठिया, कभी किसी अङ्ग में, कभी किसी अङ्ग मे—कल्केरिया फास, कैलि सल्फ।
" वातरक्त-सदृश—नेट्रम म्यूर।
" पैर से चूतड़ तक जाने वाली ज्ञान-तन्तु का—मैग्नेशिया फास।
गठिया के दौरे रात को वढे—कल्केरिया फास।
" गोश्त में—फेरम फास, कैलि म्यूर।
गठिया के दौरे—कैलि सल्फ, कल्केरिया फास।
" कुछ धीमी—फेरम फास।
" दौड़ने-फिरने वाला—कैलि सल्फ।
" साथ में सूजन हो—कैलि म्यूर।
" गठिया की पीड़ा—कल्केरिया फास, कैलि म्यूर।

गठिया तेजावी लक्षण हो—नेट्रम फास ।

,, शोथ और ज्वर हो—फेरम फास ।

,, गठिया जीर्ण—नेट्रम सल्फ; नेट्रम फास ।

,, पेशाब गहरा लाल हो—फेरम फास ।

,, गठिया प्रबल—फेरम फास, नेट्रम सल्फ, नेट्रम फास ।

गठिया का दर्द (Rheumatic Pain)—

,, सिर में—मैग्नेशिया फास ।

,, अँगुलियों की गाँठों और कन्धे मे—नेट्रम फास ।

दर्द दाँतों में—मैग्नेशिया फास ।

दर्द कन्धे के पास बाजू में—कल्केरिया फास ।

जबड़े और दाँतों में कनपटी तक—साइलिसिया ।

हाथ-पैरों में—नेट्रम सल्फ, साइलिसिया ।

गर्दन के निचले भागों में—साइलिसिया ।

तीव्र गठिया अगुलियों मे—फेरम फास ।

,, घुटने, कन्धे, कलाई या दाहिने कन्धे के जोड़ मे—फेरम फास ।

दायें कन्धे के मास मे—फेरम फास ।

जोड़ों में—कैलि म्यूर, मैग्नेशिया फास; नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास ।

कन्धों के बीच में—कल्केरिया फास ।

ठण्ढ के कारण—फेरम फास ।

गड़गड़ाहट (Gurgling)—

पेट मे—साइलिसिया ।

गर्दन (Neck)—

गर्दन के पीछे, बीच में, पीठ में—साइलिसिया ।

ऐंठन का दर्द—कल्केरिया फास ।

दोनों ओर अकड़ाहट—नेट्रम फास ।

गला सूख जाना खास कर बच्चों मे—नेट्रम म्यूर ।
अकड़ जाना और दर्द करना—नेट्रम म्यूर ।
सर्दी के कारण—फेरम फास, कल्केरिया फास, नेट्रम फास ।
पिछले मध्य भाग में दर्द—साइलिसिया, मैग्नेशिया फास ।
" " तेज—मैग्नेशिया फास ।
सुई-छेदने का-सा दर्द—नेट्रम सल्फ ।
पतला पड़ जाना, रुधिर फीका हो—नेट्रम म्यूर ।
" बच्चों में—कल्केरिया फास ।
पिछले मध्य भाग और सिर में दर्द—नेट्रम सल्फ ।
गर्दन के बीच में—
दर्द—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया मैग्नेशिया फास, कैलि सल्फ ।
खिंचाव का दर्द—नेट्रम सल्फ ।

गर्भ और प्रसव—

जन्म के बाद का दर्द—कैलि फास, मैनेशिया फास, फेरम फास ।
दर्द कमजोरी, गर्भाशय के सिकुड़ने से—कल्केरिया फ्लोर, फेरम फास ।
स्तनों में जलन—कल्केरिया फास ।
प्रसूति-गृह का ज्वर—कैलि फास, नेट्रम म्यूर, कैलि म्यूर ।
बच्चा का ऐंठ जाना, टाँगों मे अकड़ाहट—मैग्नेशिया फास ।
कमजोरी बहुत दिन दूध पिलाने से—कल्केरिया फास ।
" गर्भ के कारण—कल्केरिया फास ।
बच्चा जनने में जोर बहुत पड़ना—मैग्नेशिया फास ।
पैर दुखना और चला न जाना—साइलिसिया ।
स्तनों मे सख्त गाँठ—कल्केरिया फ्लोर, कैलि म्यूर, साइलिसिया ।
रुधिर-प्रवाह—कल्केरिया फ्लोर ।
स्तन बढा जान पड़ना—कल्केरिया फास ।
स्तन मे नासूर वाला घाव—साइलिसिया ।

स्तन में सख्त गिल्टियाँ—कल्केरिया फ्लोर, साइलिसिया।

स्तनों में सूजन—साईलिसिया, कल्केरिया सल्फ, कैलि म्यूर, फेरम फास, कल्केरिया फ्लोर।

स्तनों में मवाद भूरी और दुर्गन्धयुक्त—कैलि फास।

पनीला मवाद—नेट्रम म्यूर, कैलि फास।

नमकीन और नीले रंग का—कल्केरिया फ्लोर, कल्केरिया फास

सवेरे कै होना—फेरम फास, नेट्रम म्यूर, कैलि म्यूर।

झागदार पतला बलगम—नेट्रम म्यूर, कैलि म्यूर।

खट्टा माद्दा—नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास, फेरम फास।

पित्त कड़ुवा—नेट्रम सल्फ।

लसदार पीला—कैलि सल्फ।

दूध खट्टा फटा—कल्केरिया फास।

सफेद बलगम—कैलि म्यूर।

पेशाब की गर्मी से जम जाना—कैलि म्यूर।

गर्भावस्था मे पैरों का दुखना—साइलिसिया।

प्रसव-वेदना—झूठा दर्द, व्यर्थ चेष्टा—कैलि फास।

लगातार हल्का दर्द—कैलि फास।

ऐंठन के साथ दर्द—मैग्नेशिया फास।

स्तन का सूख जाना—साइलिसिया।

गर्भपात का भय—कैलि फास, मैग्नेशिया फास।

गर्भकाल में हाथ-पैरों का थक जाना—कल्केरिया फास।

पित्त बढ़ जाना, मुँह कड़वा—नेट्रम सल्फ।

साथ ही थूक आना—नेट्रम म्यूर।

दाँत का दुखना—मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फास, कल्केरिया फ्लोर।

कमजोरी—कल्केरिया फास।

उदासी—नेट्रम म्यूर।

दस्त लगना—मैग्नेशिया फास, नेट्रम फास, नेट्रम सल्फ।

पेशाव रुकना—मैग्नेशिया फास, नेट्रम सल्फ।

अनिच्छा से मूत्र-त्याग—फेरम फास, कैलि फास।

पैर सूजना—नेट्रम सल्फ।

साथ ही पैर की नसें फूलना—कल्केरिया फ्लोर।

(कल्केरिया फ्लोर के व्यवहार से प्रसव आसानी से होता है)।

गर्भपात—

मुख्य दवा—कैलि फास।

लाल रुधिर गिरे—फेरम फास।

काला ,, ,,—कैलि म्यूर।

तेजावी कै हो—नेट्रम फास।

पनीली ,, ,,—नेट्रम म्यूर।

पित्त की कै—नेट्रम सल्फ।

ऐंठन हो—मैग्नेशिया फास।

रोकने के लिए—कल्केरिया फास।

गर्भाशय (Uterus)—

गर्भाशय और जननेन्द्रिय में दर्द और पीड़ा—कल्केरिया फास।

गर्भाशय में दर्द—कल्केरिया फास, फेरम फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

गर्भाशय में दर्द-कँपकँपी आवे—कल्केरिया फास।

पत्थर के समान सख्ती—कल्केरिया फास।

ढीला और नरम पड़ गया हो—कल्केरिया फ्लोर।

गर्भाशय के दर्द के साथ पीठ में दर्द—कल्केरिया फास।

टल गया हो, आगे-पीछे खिसक गया हो—कल्केरिया फ्लोर, कल्केरिया फास, कैलि फास।

गठिया के दर्द के साथ टल गया हो—कल्केरिया फास, नेट्रम फास।

गिर पड़ा हो—कल्केरिया फ्लोर।

शोथ हो तो—फेरम फास ।

दर्द नीचे की तरफ जाता हो—कल्केरिया फ्लोर ।

जलन हो—नेट्रम म्यूर ।

पुराना रुधिराधिक्य हो—कैलि म्यूर, कल्केरिया फास ।

फटन जान पड़ती हो—नेट्रम म्यूर ।

गर्भाशय के स्थान तथा आसपास खिंचावट हो—कल्केरिया फ्लोर ।

गर्भाशय बाहर निकल पड़ना—कल्केरिया फ्लोर, कल्केरिया फास। कैलि फास, नेट्रम म्यूर ।

बैठने से गर्भाशय ठीक हो जाता हो—नेट्रम म्यूर ।

बाहर गर्भाशय निकलना—कल्केरिया फास ।

तबीयत खराब हो जाना—नेट्रम फास।

गर्भाशय के आस-पास निर्बलता—कल्केरिया फास, नेट्रम फास ।

गर्भाशय से रुधिर प्रवाह (Uterine Haemorrhage)—नेट्रम म्यूर, साइलिशिया, कैलि फास, कल्केरिया फ्लोर ।

गर्मी या उपदंश (Syphilis)—कल्केरिया फ्लोर, कैलि म्यूर, कैलि सल्फ, नेट्रम म्यूर ।

सन्ध्या को वृद्धि—कैलि सल्फ ।

कड़े किनारे का घाव—कल्केरिया फ्लोर ।

नरम किनारे का घाव—कैलि म्यूर ।

घाव से जल-सरीखा निकलना—नेट्रम म्यूर ।

सफेद मवाद निकलना—कैलि म्यूर ।

गर्मी के कारण गले में व्रण—कैलि म्यूर ।

हड्डी में गाँठें—साइलिसिया ।

पीलापन लिये मवाद—कल्केरिया सल्फ ।

पुराना रोग—साइलिसिया, नेट्रम म्यूर, कैलि म्यूर, कल्केरिया सल्फ ।

गला बैठ जाना (Hoarseness)—

ठढक से—कैलि म्यूर।

साधारणत:—कल्केरिया फास, कैलि सल्फ।

बहुत काम से—कैलि फास, फेरम फास, कैलि म्यूर।

हलक दुखता हो—कल्केरिया फ्लोर।

आवाज न निकले—कैलि म्यूर।

गाँठ (Cyst) पोली—कल्केरिया फास, कल्केरिया सल्फ।

गिल्टियाँ (Glands)—

सख्त हों—कल्केरिया फ्लोर, साइलिसिया, कैलि म्यूर, कल्केरिया सल्फ।

शोथ हो—फेरम फास, कैलि म्यूर, साइलिसिया।

कण्ठमाला रोग से दूषित हो—कैलि म्यूर।

कण्ठमाला दोष से बढ रही हों—साइलिसिया, कैलि म्यूर, कल्केरिया फास।

पसीने की गिल्टियों में पीव हो—साइलिसिया।

पत्थर-सी सख्त हों—कल्केरिया फ्लोर।

पीव पड़ गयी हो—कल्केरिया सल्फ।

सूजन हो—कैलि म्यूर, नेट्रम फास, साइलिसिया, कल्केरिया फास।

घाव हो—फेरम फास, कल्केरिया सल्फ।

पेट और गाँठ के जोड़ मे गिल्टी का बढ़ना—साइलिसिया।

गुदा (Rectum)—

गुदा में खराश, छिलन—साइलिसिया, नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास, कल्केरिया फ्लोर।

गुदा में खुजली—नेट्रम फास, नेट्रम सल्फ, कल्केरिया फास, कल्केरिया फ्लोर।

गुदा बाहर निकल आये—कल्केरिया सल्फ, कैलि फास, नेट्रम म्यूर।

गुदा में दुखन—नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर।

गुदा मे छिलन—नेट्रम फास।

गुदा में चारों ओर दाने—नेट्रम फास।

गुदा मे नासूर (भगन्दर)—कल्केरिया फास, कल्केरिया सल्फ, साइलिसिया।

गुदा मे खराश—कैलि म्यूर।

गुदा मे जलन के साथ पीड़ा—नेट्रम म्यूर।

दर्द, जलन, खुजली—साइलिसिया, नेट्रम म्यूर, फेरम फास, मैग्नेशिया फास।

काँच निकलना—कैलि फास, नेट्रम म्यूर।

गुर्दे (Kidneys)—

शोथ का पहला दर्जा—फेरम फास।

सूजन—कैलि म्यूर।

तीसरा दर्जा—नेट्रम फास।

मूत्र में एल्ब्यूमिन मिलना—कल्केरिया फास, कैलि सल्फ, कैलि म्यूर।

शोथ का नतीजा—कैलि म्यूर।

दर्द होना—फेरम फास, कैलि म्यूर।

पीब पड़ना—साइलिशिया।

पेशाब में लाल रेत या खून आना—नेट्रम म्यूर।

स्कारलेट बुखार के पश्चात् गुर्दे मे रोग—कैलि सल्फ, कल्केरिया सल्फ।

चर्म रोग के बाद हुआ हो—कैलि सल्फ।

मूत्र-मार्ग मे पथरी हो—मैग्नेशिया फास, साइलिसिया, नेट्रम सल्फ।

मूत्र में रेत—नेट्रम फास।

मैला पीला कीचड़ पेशाब में बैठता हो—कैली म्यूर।

ऊपर दर्द हो—फेरम फास।

गुर्दा—मसाना ढीला हो जाय—नेट्रम फास।

मूत्र में अल्ब्यूमिन, अण्डे के समान स्राव निकले—कैलि फास, कैलि म्यूर, कैलि सल्फ।

मूत्र में शक्कर आये (डायबिटीज)—नेट्रम फास, कल्केरिया सल्फ, फेरम फास, कैलि फास, कैलि म्यूर, कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ।

मूत्र बहुतायत से किन्तु शक्कर न हो—नेट्रम म्यूर।

मूत्र में शक्कर, उसके साथ ज्वर—फेरम फास।

मसाने की जीर्ण सूजन—फेरम फास, कैलि म्यूर, कल्केरिया सल्फ।

मूत्र-मार्ग से रक्त निकले—कैलि फास।

मूत्र मे ईंट के रङ्ग की रेत निकले—नेट्रम सल्फ।

मूत्र रोग के साथ ज्वर—फेरम फास।

,, के पश्चात् पीड़ा, जलन—नेट्रम म्यूर,

,, के बीच में पीड़ा, जलन—नेट्रम सल्फ।

,, में फास्फेट की पथरी—कल्केरिया फास।

मसाने का नजला—कल्केरिया सल्फ, नेट्रम म्यूर, कैलि म्यूर।

मसाने की गर्दन में काटने वाली पीडा—नेट्रम फास, कैलि फास, कल्केरिया फास।

मसाने का पक्षाघात—कैलि फास, नेट्रम सल्फ।

मसाने की पथरी—कल्केरिया फास।

मसाने में ऐंठन—मैग्नेशिया फास।

मूत्र की बराबर प्रवृत्ति—फेरम फास।

मसाने की जीर्ण सूजन, प्रथमावस्था—नेट्रम फास।

,, ,, ,,मध्यावस्था, गाढा सफेद मूत्र—कैली म्यूर।

,, की सूजन, तृतीयावस्था—कैलि सल्फ।

वात रोग में लाल कालापन लिए मूत्र—नेट्रम सल्फ, नेट्रम फास।

मूत्र की प्रवृत्ति किन्तु थोड़ा निकले—साइलिशिया

मूत्र रात को बहुत अधिक हो या बिलकुल न हो—नेट्रम म्यूर।
मूत्र लगते ही मूत्र रुक न सके—नेट्रम फास।
पित्त की पथरी—नेट्रम सल्फ।
मूत्र बहुत अधिक, उसके साथ प्यास हो—नेट्रम म्यूर।
निर्बलता के कारण मूत्र न रुके—कैली फास।
मूत्र-मार्ग के पक्षाघात के कारण मूत्र न रुक सके—कैली फास।
मसाने की अत्यन्त अधिक सूजन—फेरम फास, कैली म्यूर।
मसाने की पुरानी सूजन मे रक्त अथवा रक्त मिश्रित स्राव—कल्केरिया फ्लोर।
दिन मे मूत्र अधिक हो—साइलिसिया, फेरम फास, कल्केरिया फास।
रात्रि मे मूत्र अधिक हो—कल्केरिया फास।
मूत्र मे चुन्ने के कारण मूत्र अधिक हो—नेट्रम फास।
मूत्र रुक न सके—फेरम फास, कल्केरिया फास, कैली फास।
मूत्र खाँसने में हो जावे—फेरम फास, नेट्रम म्यूर।
मूत्र बहुत अधिक हो—फेरम फास, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ, कल्केरिया फास।
मूत्र रुक-रुक कर होवे—नैट्रम फास।
गुर्दे मे सूजन—कैली म्यूर, कैली सल्फ, नेट्रम सल्फ, कल्केरिया सल्फ।
पथरी के कारण लघुशका करने मे पीड़ा—मैग्नेशिया फास।
मूत्र मे फास्फेट निकले।
पथरी बनने को रोकने के लिए—कल्केरिया फास।
मूत्र मे यूरिक एसिड या यूरेट्स हो—साइलिशिया, कल्केरिया, सल्फ, कैलि म्यूर।
मूत्र बन्द हो—फेरम फास।
मूत्र मे पथरी के कण हों—नेट्रम सल्फ, मैग्नेशिया फास, साइलिशिया, कल्केरिया फास।

मूत्र में लैक्टिक एसिड—नेट्रम सल्फ।

मूत्र में पीला कफ—नेट्रम सल्फ।

गुर्दे के रोग—(Bright's-disease)—कल्केरिया फास, कैली फास।

ज्वर की अधिकता के साथ—फेरम फास।

गृध्रसी (Sciatica)—

टाँग की सायटिका नस का दर्द—कैलि फास, मैग्नेशिया फास, नेट्रम सल्फ, कल्केरिया सल्फ, नैट्रम म्यूर, फेरम फास।

ग्रहणी—

ग्रहणी के रोग—कल्केरिया फास।

घट्ठा (Corns)—नेट्रम म्यूर, साइलिशिया।

घबड़ाहट (Nervousness)—

रात को फेरम फास।

गृह-वियोग से शोक (Home sickness)—कैली फास।

घाव, जख्म (Wounds)—

घाव ताजा—फेरम फास।

,, मवाद पड़ गयी हो—साइलिशिया, कल्केरिया फास।

,, मुर्दार हो—कैली फास।

सूजन के साथ—कैली म्यूर, नेट्रम म्यूर।

गाढी पीली मवाद—साइलिशिया।

घाव नासूर वाले—कल्केरिया फ्लोर, साइलिशिया।

घाव जो न भरे—कल्केरिया फ्लोर।

घाव में सूजन हो—फेरम फास।

घाव में वदगोश्त—साइलिशिया, कैली म्यूर।

घाव में पीव हो—साइलिशिया, कल्केरिया सल्फ।

घाव में कण्ठमाला के विष का—कल्केरिया फास।

घाव न भरे—कल्केरिया सल्फ।

घुटने (Knees)—

दोनों में बड़ा दर्द—फेरम फास।

छुरी मारने, फाड़ने या सुई चुभने का-सा दर्द—साइलीशिया।

भीतर सुई चुभने का-सा दर्द—कल्केरिया सल्फ।

बाएँ घुटने में सुई चुभने का-सा दर्द—नेट्रम म्यूर।

घुटने से पैर तक दर्द का जाना—कल्केरिया फास।

घुटने से दर्द टाँगों की ओर दौड़े—फेरम फास।

घुटने मे शोथ – कल्केरिया फ्लोर।

भीतर पानी भर गया हो बहुत दिनों से—साइलीशिया, कल्केरिया फ्लोर, कल्केरिया फास।

घुटने मे पानी भरना—कल्केरिया फ्लोर।

चक्कर (Vertigo)—

टपकने वाला दर्द—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

चेहरा सुर्ख-फेरम फास।

दाहिनी ओर गिरने को होना—नेट्रम सल्फ।

बाँयी ओर—साइलिशिया।

भूख न लगना, जीभ सुनहली मैल से लदी हो—नेट्रम फास।

गाड़ी में सवार होकर चलने से—कल्केरिया फास, कैलि सल्फ।

उठने और ऊपर की ओर देखने से—कैलि फास, कैलि सल्फ।

बहते हुए पानी को देखने या पार करने से—फेरम फास, मैग्नेशिया फास।

मस्तिष्क और ज्ञान-तन्तु सम्बन्धी कारण अथवा दुर्बलता से—कैलि फास।

उदर अथवा पित्त विकार से—नेट्रम फास, नेट्रम सल्फ।

दृष्टि विकार से—मैग्नेशिया फास।

मदिरा पीने से—नेट्रम म्यूर।

मानसिक चिन्ताओं से—कैलि फास, नेट्रम म्यूर।

मुड़ने या झुकने से—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, कैलि फास ।
थकावट से—कैलि सल्फ, फेरम फास ।
फीके रुधिर वाले रोग—कल्केरिया फास ।
बूढ़ों में—साईलिसिया, कल्केरिया फास ।
वेहोशी हो जाना—कल्केरिया फास, साइलिसिया ।
चक्कर आना—फेरम फास, कल्केरिया फास, कैलि फास, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ ।
गिरने पड़ने का भय—कल्केरिया फास, साइलिसिया, कैलि सल्फ ।
पीछे को पैर पड़ना—साइलिसिया ।
नशा की-सी हालत—फेरम फास, नेट्रम सल्फ, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया ।
हाथ-पैर काबू में न रहे—कल्केरिया फास, फेरम फास, कैलि फास, नेट्रम म्यूर ।
वहुत दिनों से आती हो—कैलि सल्फ, नेट्रम म्यूर ।
सवेरे—नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ, साइलिसिया ।
दिन में—फेरम फास ।
सोते में उठने और खड़े होने से—नेट्रम म्यूर ।
लेटने से—फेरम फास ।
चलने से—कल्केरिया फास, फेरम फास, नेट्रम म्यूर, साईलिसिया, कल्केरिया फास ।
सिर की ओर रुधिर जाने से—फेरम फास ।
हरकत करने से—फेरम फास ।
खाने के वाद—कैलि सल्फ ।
खुली हवा मे आराम—कैलि सल्फ, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ ।
गर्म कमरे मे विशेपता—कैलि सल्फ, नेट्रम म्यूर ।
पाचन-विकार के साथ—नेट्रम फास ।

खाना खाने के बाद याद्दाश्त घट जाय—कल्केरिया फास।

मूर्च्छा हो—नेट्रम म्यूर, कैलि फास, कैलि सल्फ।

सख्त मतली के साथ हो—कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ।

वेसुधी—नेट्रम म्यूर।

घेघा (Goitre)—कल्केरिया फ्लोर, कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, नेट्रम फास, मैग्नेशिया फास।

चकाचौंध (Photophobic)—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिशिया।

चलना (Walk)—

कठिनता से सीखे—कल्केरिया फास।

चल न सकना रोगी अंग का—नेट्रम म्यूर, साइलिशिया।

चलना-हिलना (Motion) न हो—नेट्रम म्यूर।

चिन्ता (Anxiety)—कल्केरिया फास, साइलिशिया, कैलि फास।

चिड़चिड़ापन—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिशिया।

चीर फाड़ (Surgical Operation)—

करने के बाद मुख्य औषधि—फेरम फास।

निर्बलता और भय—कैलि फास, नेट्रम म्यूर।

मुर्दारी के लिए—कैलि फास।

चुटकी (Pinching sensation)—

काटने का दर्द—नेट्रम म्यूर, साइलिशिया।

चूतड़—

पिछले भाग में दर्द—(कमर के नीचे) कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, कल्केरिया फ्लोर, नेट्रम सल्फ।

चूतड़ की हड्डा—

हड्डी में दर्द—साइलिसिया, कल्केरिया फास।

चेचक (Smallpox)—कैलि म्यूर।

हरारत और ज्वर—फेरम फास।

जब दाने नजर आवें—नेट्रम फास।

मन्द स्थिति—कैलि फास।
दाने एक दूसरे से मिले हों—कैलि फास।
जब दाने फूटें—कल्केरिया सल्फ।
सड़े हों—कैलि फास।
दाने बैठ गये हों—कैलि फास।
खुमारी हो, लार बहे—नेट्रम म्यूर।

चेहरा (Face)—

फीका-हरा-सफेद—कल्केरिया फास।
दुखे—कल्केरिया सल्फ, कैली म्यूर, साइलिसिया, कैलि सल्फ।
रुधिर फीका पड़ना—कल्केरिया फास।
धब्बे, धब्बे होना—नेट्रम फास।
जलन—कैलि फास।
काले दाग पड़ना—नेट्रम म्यूर।
फूलना—नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ, कैलि म्यूर।
ज्वर बिना फूल जाय या लाल हो जाय—नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास।
नीला पड़ जाना—कैलि म्यूर, नेट्रम फास।
कैंसर होना—कैलि सल्फ।
छिल जाना—कल्केरिया फ्लोर।
गाल सूजना—कल्केरिया सल्फ, कैली म्यूर, नेट्रम म्यूर।
गाल सख्त, सूजन—कल्केरिया फ्लोर।
गाल गर्म और दर्द करे—फेरम फास।
ठोड़ी पर दाने—नेट्रम म्यूर।
स्त्रियों में रक्तहीनता—कल्केरिया फास, फेरम फास।
तिरछी होना—कैलि फास।
चमड़ा चटखना—साइलिसिया।
मैला मटियाला रङ्ग—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

फुन्सियाँ और सूजन, गालों पर मुँह के आसपास—कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

ठोढ़ी, भौंह, माथे, होंठ या नाक मे—नेट्रम सल्फ, साइलिसिया।

दाढ़ी के स्थान पर खुजली होना—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

भरा होना—फेरम फास।

ठण्ढा और सुन्न लगना—कल्केरिया फास।

साफ पानी भरे दाने होना—नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ।

चेहरा टेढा होना—कैलि सल्फ, कैलि फास।

फूला और सुर्ख होना—नेट्रम फास, फेरम फास।

चींटी-सी लगना—कल्केरिया फास।

दाग पडना—कल्केरिया फास, साइलिसिया।

छिदने का-सा दर्द—मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फास।

तेल-सा निकलना—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर।

हरा-सा सफेद—कल्केरिया फास।

गर्मी लगना—कल्केरिया फास।

शोथ और दर्द—फेरम फास।

खुजली—कैलि फास।

बहुत खुजली विशेषकर नाक पर—नेट्रम फास।

पीला पड़ना—नेट्रम सल्फ, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

जबड़ा—

जबडे पर नासूर होना—साइलिसिया।

सख्त सूजन—कल्केरिया फ्लोर।

सड जाना—साइलिसिया।

सुर्ख दाना पडना—कल्केरिया फ्लोर, साइलिसिया, कल्केरिया फास।

पीका—कैलि फास।

पीला—कैलि फास, साइलिसिया, नेट्रम सल्फ, नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास, कल्केरिया फास, कैली सल्फ, फेरम फास ।

सुर्ख—नेट्रम फास, कैलि फास, फेरम फास, कैलि सल्फ ।

काटने वाला दर्द—मैग्नेशिया फास ।

होंठ चटखना—कल्केरिया फ्लोर ।

अच्छे न होने वाले घाव—कल्केरिया फ्लोर, नेट्रम फास ।

सूखे—कैलि सल्फ ।

फुन्सी और छाले—कैलि फास, नेट्रम फास, मैग्नेशिया फास ।

चमड़ा गिरना—कैलि फास, कैलि सल्फ, कैलि म्यूर ।

नीचे सूजन—कैलि सल्फ ।

ओंठ सफेद—कैलि सल्फ ।

ऊपर का होंठ सूजा हुआ और दर्द करने वाला—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर ।

चेहरे की मासपेशियों का काम न करना—कैलि फास ।

टीस मारना और आँसू वहना—नेट्रम म्यूर ।

दर्द का एक जगह से दूसरी जगह हट जाना—मैग्नेशिया फास, कैली सल्फ ।

गर्म कमरे तथा सन्ध्याकाल में रोग का वढ जाना—कैलि सल्फ ।

सर्दी या छूने से वढ जाना—मैग्नेशिया फास ।

जबडे और गाल की हड्डियों पर गाँठ उठना—कल्केरिया फ्लोर ।

दर्द ठण्डी हवा से कम होना—कैलि सल्फ ।

सेंकने से कम होना—मैग्नेशिया फास ।

पीला, वीमार-सा फीका चेहरा—कैलि फास, कल्केरिया फास, कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया ।

मुर्झाया हुआ-सा पीला चेहरा—फेरम फास ।

झटके वाला दर्द—मैग्नेशिया फास ।

दबाने वाला दर्द—फेरम फास।
दर्द फड़कता हुआ—फेरम फास।
दर्द सेंकने से आराम—मैग्नेशिया फास।
दर्द ठण्ढ से आराम—कैलि फास।
मैला, चिकना, फुन्सीदार चेहरा—कैलि सल्फ।
पीब वाली फुन्सियाँ—कल्केरिया सल्फ, कल्केरिया फास, साइलिसिया, नेट्रम सल्फ, कैलि सल्फ।

जवानी में—कल्केरिया सल्फ, कल्केरिया फास।

मवाद भरी फुड़िया—साइलिसिया, कैलि म्यूर, कल्केरिया सल्फ, कैली फास।

माथे पर—नेट्रम म्यूर।
चेहरा वैठा हुआ—कैलि फास।
सूजन चेहरे के ऊपर हो—कल्केरिया सल्फ।
चेहरे की सूजन—कैलि म्यूर।
कान के नीचे की गिल्टियाँ सूजी हों—कल्केरिया फास।
दाढ़ी की फुन्सियाँ—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
मोम-सा सफेद—कल्केरिया फास।
मूँछें गिरती हों—नेट्रम म्यूर।
पीलापन लिये हों—कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ, कैलि फास।
चेहरे का दर्द दाहिनी ओर का—मैग्नेशिया फास।
सोने के बाद हो—मैग्नेशिया फास।
गर्म कमरे मे—कैलि सल्फ।
शाम को—कैलि सल्फ।
चलने मे—फेरम फास।
आराम ठण्ढी हवा से—कैलि सल्फ।

आराम ठण्ढ पहुँचाने से—कैलि फास, फेरम फास ।

आराम गर्मी से—मैग्नेशिया फास, साइलिसिया ।

नीचे जवडे मे दाहिनी ओर—नेट्रम फास ।

ज्ञान-तन्तु सम्बन्धी—कैलि म्यूर, कैलि फास, नेट्रम फास ।

वदहजमी भी हो—नेट्रम म्यूर ।

गर्दन के वीच ठण्ढा रहता हो—फेरम फास ।

वड़ी थकावट हो—कैलि फास ।

रुधिराधिक्य हो—फेरम फास ।

गाँठें हों—

माथे का दर्द भौंह के ऊपर—फेरम फास ।

चोट—फेरम फास, कल्केरिया सल्फ ।

चोट हड्डियों पर—कल्केरिया फ्लोर ।

चोट का दर्द (Bruised pain)—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया ।

चोट का ख्याल (Bruised feeling) सव शरीर में—कैलि फास ।

चोट लगना (Injuries)—

किसी पदार्थ से कुचल जाना, चाकू-छुरी का घाव—फेरम फास ।

साथ में सूजन भी हो—कैलि म्यूर ।

लापरवाही की गयी हो—साइलिसिया, कल्केरिया सल्फ ।

पीव या मुर्दारी—कैलि फास ।

पीव शुरू हुई हो—नेट्रम फास ।

हड्डी टूट गयी हो—नेट्रम फास ।

हड्डियों में वड़ा दर्द हो—कल्केरिया फ्लोर ।

कोमल अङ्ग की सूजन—फेरम फास ।

पीठ की और चूतड़ की हड्डी का अड़कना—कल्केरिया फ्लोर ।

मनुष्य वेसमझ हो जाय—कैलि फास ।

चोटी का स्थान (Vertex)—

चोटी के स्थान में दर्द—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

चौक पड़ना—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

छाती (Chest)—

मानो चारों तरफ पट्टी कस दिया हो—साइलिसिया।

मानो भारी बोझ रखा हो-नेट्रम सल्फ।

चोट लगने का-सा जान पड़ना—नेट्रम म्यूर।

जलन, छिदन, कसन, फड़कन, फैलन, दुखन, फटन तथा अत्यन्त दर्द; सख्ती और कमजोरी—साइलिसिया।

जलन और दर्द—फेरम फास।

गहरी जलन—नेट्रम फास।

दुखना और पैरों में शीतलता—कल्केरिया सल्फ।

संकुचित सवेदना—कल्केरिया फास।

संवेदन—कटना, संवेदन—नेट्रम म्यूर।

धीमा-धीमा दर्द होना—कल्केरिया फास।

गहरा होना—साइलिसिया।

दौड़नेवाला दर्द—मैग्नेशिया फास, नेट्रम सल्फ, कैलि फास।

छाती भरी-सी जान पड़ना—नेट्रम सल्फ, साइलिसिया।

छाती के ऊपरी भाग में जलन, दर्द—कल्केरिया फास।

निचली छाती मे हरारत हो—कल्केरिया फास।

गर्मी जान पड़ना—फेरम फास।

काटने की-सी पीड़ा छाती में बायीं ओर से पीछे की हड्डी तक—नेट्रम म्यूर।

दबाव जान पड़ना—कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर।

तनाव का-सा दर्द—नेट्रम म्यूर।

गहरी साँस से दर्द—नेट्रम फास, फेरम फास।

दवाव से दर्द वढना—नेट्रम फास, साइलिसिया।

छाती के वीच में दर्द, कंधे की पिछली वार्यीं ओर की हड्डी तक जाय—नेट्रम सल्फ।

छेदने का-सा दर्द छाती में वार्यीं तरफ—नेट्रम सल्फ।

दवाव जान पडना भीतर—कैली म्यूर, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ।

छाती के दाहिनी ओर दर्द तेज--नेट्रम सल्फ।

डक मारने और फाडने-सरीखा दर्द—नेट्रम म्यूर।

वलगम की आवाज आना—कैलि सल्फ, नेट्रम सल्फ, नेट्रम म्यूर, कैलि फास, फेरम फास।

छूने से दर्द—कल्केरिया फास, कैलि फास, साइलिसिया।

दर्द में दवाने से आराम—नेट्रम सल्फ, मैग फास।

दम घुटना—कल्केरिया फास, कैलि फास।

कमजोरी होना—साइलिसिया।

वोलने में थकावट जान पड़ना—कैलि सल्फ।

पेट से छाती तक वार्यीं ओर दर्द होना—नेट्रम सल्फ।

वार्यीं ओर दर्द होना—कल्केरिया फास।

छाती के वीच की हड्डी मे या आस-पास दर्द होना—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

दुखना और ऊपर दर्द होना—कल्केरिया फास।

छाले—कैलि फास, नेट्रम म्यूर।

छींकने की इच्छा हो किन्तु छींक न आवे—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

छींकने की क्रिया—कल्केरिया फ्लोर, कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

छूना (Touch) छूने का वहम हो—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

छेद करने का अनुभव होना—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

छोटी माता (Chicken pox)—

मुख्य दवा—फेरम फास।

अन्य दवा—कैलि म्यूर।

छिलके उतरने के लिए—कैलि सल्फ।

इलाज न हुआ हो तो—साइलिसिया।

जगना तकलीफ के कारण—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

विशेषकर रात को—नेट्रम म्यूर,साइलिसिया।

जबड़ा न खुलना (Lock-Jaw)—मैग्नेशिया फास।

जमुहाई लेना—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, कैलि फास।

वायु गोला से—कैलि फास।

असाधारण—कल्केरिया फास।

जल जाना (Burns)—जल जाने के लिए—फेरम फास, कैलि म्यूर, कैलि सल्फ, कल्केरिया सल्फ। (खिलाना,लगाना)।

पीब पड़ने के बाद—कल्केरिया सल्फ, साइलिसिया।

जलनदार दर्द—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

जाँघ मे दर्द—कल्केरिया फास, नेट्रम फास, साइलिसिया।

जिगर (Liver)—

रुधिर का जमाव हो—नेट्रम सल्फ, फेरम फास।

सख्त पड़ गया हो—साइलिसिया, कल्केरिया फ्लोर।

जलन हो—नेट्रम सल्फ।

जिगर के स्थान पर काटने का-सा दर्द होना, जिगर बढ़ गया हो, बायीं करवट लेटने से दुःख हो—नेट्रम सल्फ।

दिमागी मेहनत से किरकिराहट बढ़े—नेट्रम सल्फ, कैलि फास।

फोड़ा हो पीब निकले—कल्केरिया सल्फ।

दाहिनी ओर के ऊपर दर्द—कैलि म्यूर।

ऊपर दवा-सा जान पड़े—नेट्रम म्यूर।
काम न करे—कैलि म्यूर।
दुखे और छूने से दर्द हो—नेट्रम सल्फ।
तेज दर्द हो—कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ।
सुई-सी चुभे—नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास।
जिगर का स्थान पीड़ा करे—कैलि सल्फ, फेरम फास।
सख्ती से कसावट जान पड़े—कैलि म्यूर।
सुन्न होना—कैलि म्यूर।
दर्द दूर हो जाय, दवा या गैस मलने से, गर्मी से—मैग्नेशिया फास।
जिगर और तिल्ली में दर्द—नेट्रम म्यूर, कैलि फास।

जिगर-शोथ (Hepatitis)

मुख्य दवा—नेट्रम सल्फ।
अन्य दवा—कैली म्यूर, साइलिसिया, कैलि सल्फ, नेट्रम म्यूर।

जीभ (Tongue)—

जीभ पर छाले—कल्केरिया फास।
जीभ पर पुरानी सूजन—कल्केरिया फ्लोर।
जीभ सूखी हुई—कैलि फास।
जीभ सूखी या पकी हुई—कल्केरिया सल्फ।
तेजाबी स्वाद—नेट्रम फास।
तेज स्वाद—कल्केरिया फास।
दर्द हो—कल्केरिया सल्फ, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
ऐसा लगे मानो जीभ तालू से चिपक जायगी—कैलि फास, नेट्रम म्यूर।
मानो जीभ जल गई है—मैग्नेशिया फास।
जलन, छालों से दुःख—कैलि म्यूर।
नाक में जलन—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर।

खुजली चलना—कैलि म्यूर ।
शोथ और खुश्की—कैलि फास ।
नाक मे घाव—कल्केरिया फास ।
घायल हो—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, कल्केरिया फास ।
बोलना कठिन—नेट्रम सल्फ ।
डक मारने का दर्द—नेट्रम म्यूर ।
नोक पर छाले—नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ, नेट्रम फास ।
कड़ुवा स्वाद—नेट्रम सल्फ, कैलि म्यूर, कल्केरिया फास, कैलि सल्फ ।
सवेरे बुरा स्वाद—कल्केरिया फास, नेट्रम फास ।
फीका स्वाद—कैलि सल्फ, कल्केरिया सल्फ ।
ताँबे का-सा स्वाद—नेट्रम फास ।
भूरा रङ्ग—कैलि सल्फ, नेट्रम सल्फ ।
साफ और सूखी—मैग्नेशिया फास ।
साफ और तर—नेट्रम म्यूर, (झागदार)
साफ और लाल—फेरम फास ।
तड़की हुई दरारें—कल्केरिया फ्लोर ।
मटियाला रङ्ग—कल्केरिया सल्फ, कल्केरिया फ्लोर ।
मैली—नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ, साइलिसिया, कल्केरिया फास ।
साफ मैल लसदार पतली मलाई-सी लगी हुई—नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर ।
बहुत दिनों की सूजन—कल्केरिया फ्लोर ।
मैली, लाल और शोथ—फेरम फास ।
मैल से भरी हुई—नेट्रम सल्फ, कैलि फास, कैलि सल्फ ।
खुश्क—कैलि म्यूर, कैलि फास, नेट्रम म्यूर, कैलि सल्फ ।
मैली भूरी-सी हरी, कड़वा स्वाद—नेट्रम सल्फ ।
किनारे लाल और दुखने वाले—कैलि फास ।
,, सफेद—कैलि सल्फ ।

किनारे झागदार–नेट्रम म्यूर ।
फैली हुई–कल्केरिया सल्फ, फेरम फास ।
भूरी-सी सफेद चिपकती हुई–कैलि म्यूर ।
हरी-सी भूरी खाकी रंग की पिछले हिस्से में–नेट्रम सल्फ ।

शोथ के बाद सख्त–कल्केरिया फ्लोर, साइलिसिया ।
बासी धुली राई के समान साँस से दुर्गन्ध–कैलि फास ।
नक्शा-सा बना हुआ–नेट्रम म्यूर, कैलि म्यूर ।

तर पिछले हिस्से पर चमकीली–नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर ।
सुन्न और कड़ी–कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर ।
सुन्न आधा भाग–नेट्रम म्यूर ।

नोक पर फुन्सियाँ–कल्केरिया फास ।
लाल–फेरम फास, मैग्नेशिया फास, नेट्रम सल्फ ।
खूब लाल चमकीला–फेरम फास ।

चमकीली–कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ, कैलि फास, कैलि सल्फ ।

सूजी हुई–कैलि म्यूर, कल्केरिया फास ।
ऊपर छाले–नेट्रम म्यूर ।
जख्म–साइलिसिया ।
जबान के ऊपर गिल्टी–नेट्रम म्यूर ।
सफेद—कैलि म्यूर, कैलि फास ।

सफेद-सफेद लकीर हो–कल्केरिया फास, कैलि म्यूर ।

सफेद किनारों पर–कैलि सल्फ ।
सफेद झागदार पानी–नेट्रम म्यूर ।
बात करना सीखने में देरी–नेट्रम म्यूर ।
थूक के बुलबुले–नेट्रम म्यूर ।
पीली–कैलि सल्फ, नेट्रम फास ।
पीली जड़ में–कल्केरिया सल्फ ।

पीली और चमकीली—कैली सल्फ ।

पतला पित्त-सा स्वाद—नेट्रम सल्फ ।

थूक गाढा लसदार—नेट्रम सल्फ ।

सुनहरी, मलाई-सा तेज स्वाद नैट्रम फास ।

जी मिचलाना (Nausea)—कल्केरिया फास, कैली म्यूर, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ, साइलिसिया ।

जुएँ सिर के (Tinea capitis)—कैली सल्फ ।

जुकाम (नाक से) Catarrh (nose)—

सूखा हो—कैली म्यूर ।

साथ में कण्ठमाला रोग हो—नेट्रम फास ।

नाक और उसके किनारे घायल हो गये हों—नेट्रम म्यूर ।

ऊपर बन्द हुआ जान पड़े, परन्तु बहता हो—कल्केरिया फ्लोर ।

बहती हुई साफ पनीली मवाद—नेट्रम म्यूर ।

पीली चिपकने वाली मवाद—कैली सल्फ ।

गाढ़ा पीवदार—नेट्रम फास, साइलिसिया ।

नाक मे पीनस हो—मैग्नेशिया फास, साइलिसिया ।

हरी पीली पनीली मवाद—नेट्रम सल्फ, (सूखने पर हरा हो जाये) ।

जुड़ी लगना (Chill)–

जब साथ में हरारत हो—नेट्रम म्यूर, साइलिशिया ।

कभी हरारत कभी पसीना—नेट्रम म्यूर ।

जोड़ों की पीड़ा (Joints pain)–

जब जान पड़े कि जोड पर चोट लगी है अथवा उखड गया है—फेरम फास, कल्केरिया फास ।

ऊपर पानी-सा टपके—नेट्रम म्यूर ।

चरचराहट जान पडे—कल्केरिया फ्लोर, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ, नेट्रम फास ।

शोथ हो—फेरम फास, कैली सल्फ, मैग्नेशिया फास, नेट्रम फास, कैली म्यूर।
शीतल जान पड़े—नेट्रम म्यूर।
छेदने का तथा उछलता हुआ दर्द—कैली सल्फ।
एक से दूसरे जोड़ में कठिन दर्द—मैग्नेशिया फास।
पागल बना देने वाला दर्द—मैग्नेशिया फास।
मानो हाथ-पैर, उंगलियाँ उखड़ गयी हों—साइलिसिया।
गठिया का दर्द—कैली म्यूर, नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास, फेरम फास।
घाव की-सी दुखन—नेट्रम फास।
केहुनी की सूजन—कल्केरिया फ्लोर, फेरम फास।
पीव पड़ना—साइलिसिया, कल्केरिया सल्फ।
अकड़ जाना—नेट्रम म्यूर।
आस-पास में सूजन—कैली म्यूर।
भारी तेज दर्द—साइलिसिया।
गठिया का दर्द कभी कहीं, कभी कहीं—कल्केरिया सल्फ।

जोड़ों का शोथ (Arthritis)—

नया दर्द हो—नेट्रम फास।
पुराना हो—साइलिसिया।
अन्य औषधियों के साथ दर्द के लिए—मैग्नेशिया फास।

ज्ञान-तन्तु सम्बन्धी दर्द (Neuralgia)—

नाड़ी शूल—रुधिर का जमाव—फेरम फास।
तीव्र वेदना—मैग्नेशिया फास।
शोथ से—फेरम फास।
पसलियों के बीच में—मैग्नेशिया फास।
दन्त पीड़ा—मैग्नेशिया फास।
नश्तर लगाने का-सा दर्द—मैग्नेशिया फास।

विजली के-से धक्के—कल्केरिया फास, मैग्नेशिया फास।

सब दाँतों में दर्द—साइलिसिया (ठंढक से वढे), फेरम फास।
(ठंढक से कम)।

चूतड से पैर की ओर जानेवाली ज्ञान-तन्तु की पीडा या गठिया का प्रभाव—कैली फास।

रात्रि मे पीडा—साइलिसिया, कल्केरिया फास, मैग्नेशिया फास।

गुदा मे पीडा—कल्केरिया फास।

चेहरे पर दर्द—फेरम फास, कैली फास, मैग्नेशिया फास।

गर्भाशय से दाहिनी ओर—मैग्नेशिया फास।

आमाशय मे—मैग्नेशिया फास।

आँतों मे—मैग्नेशिया फास।

समय समय पर—मैग्नेशिया फास, नेट्रम म्यूर।

दर्द के साथ शरीर में शीतलता और थूकना—कल्केरिया फास।

थकावट और दिल की धडकन—कल्केरिया सल्फ।

अनिद्रा—कैली फास।

पीठ मे दर्द—कैली सल्फ, नेट्रम फास।

आँखों मे—नेट्रम म्यूर।

सिर मे—मैग्नेशिया फास।

हाथ-पैरों में—मैग्नेशिया फास, नेट्रम फास, कैली सल्फ।

मानो हड्डियाँ दुखती हों—कल्केरिया फास।

वारम्वार आनेवाली—नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास।

कभी कही, कभी कहीं—कैली फास, मैग्नेशिया फास, कैली सल्फ।

विशेषतया, ऋतु परिवर्तन से—कल्केरिया फास।

„ जोडों में सवेरे—नेट्रम म्यूर।

„ सन्ध्या को गर्म घर में-कैली सल्फ।

रात को नियत समय पर—नेट्रम म्यूर, मैग्नेशिया फास।

विशेषता अकेले में—कैलि सल्फ, कैली फास ।

ज्वर (Fever)—

जोड़ों का—नेट्रम फास ।

पित्त-सम्बन्धी—नेट्रम सल्फ, नेट्रम फास, मैग्नेशिया फास ।

दिमागी—कैली फास ।

आँत और आमाशय सम्बन्धी—कैली सल्फ, कैली म्यूर, फेरम फास, नेट्रम म्यूर ।

मवाद आती हो—फेरम फास, कैली म्यूर ।

रुधिर में विष पड़ गया हो—कैली म्यूर, कैली फास ।

सूखी घाव की बू-सी—नेट्रम म्यूर, कैली फास, साइलिशिया ।

वारी से आना—मैग्नेशिया फास, कैली म्यूर, नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास, फेरम फास, कैली फास, नेट्रम सल्फ, कल्केरिया फास, कैली सल्फ, कल्केरिया सल्फ ।

वहुत पुराना ज्वर—कल्केरिया फास ।

टाँगों में ऐंठन—मैग्नेशिया फास ।

साधातिक और पीवयुक्त—कैली फास ।

वच्चा जन्म लेने के वाद—कैली म्यूर, कैली फास, मैग्नेशिया फास, नेट्रम सल्फ ।

न्यूनाधिक होनेवाला—नेट्रम सल्फ ।

गठिया हो—कैली म्यूर, नेट्रम म्यूर, फेरम फास ।

स्कार्लेट—कैली सल्फ, कैली म्यूर, नेट्रम म्यूर, फेरम फास, कैलि फास ।

टायफायड, टायफस—कैली सल्फ, कैली म्यूर, नेट्रम म्यूर, फेरम फास, कैली फास, साइलिशिया ।

टायफायड का पहला दर्जा—फेरम फास ।

,, कब्ज के लिए—कैली म्यूर ।

पीला ज्वर—नेट्रम सल्फ ।

हरारत और रुधिराधिक्य—फेरम फास ।
पानी निकलता हो—कैलि म्यूर ।
जूड़ी तर मौसम के कारण से बढ़ने वाली हो, समुद्र किनारे की हो—नेट्रम सल्फ।
पुराना रोग तिल्ली बढी हो—नेट्रम म्यूर ।
जिगर और तिल्ली के बढने से—नेट्रम म्यूर ।
कुनैन से रुक गया हो, दाहिनी करवट लेट न सकता हो, पसलियों के दर्द के कारण—नेट्रम म्यूर ।
कभी ज्वर, कभी जाड़ा दिन मे कई बार और पसीना न आता हो—नेट्रम म्यूर ।
चींटी चलना, ज्वर होना—नेट्रम सल्फ ।
ज्वर के समय तिल्ली मे दर्द, जिगर पर दबाव हो—नेट्रम म्यूर ।
हरारत, जिगर और तिल्ली मे दर्द, बड़ी सुस्ती, क्षीणता, चेहरा फीका, मटियाला, पेशाब जिसमे लाल रेत हो, भूख मर गयी हो, मुँह कड़ुवा हो, हाथ-पैर खिंचते हों जिस समय ज्वर की अधिकता होती हो—नेट्रम म्यूर ।
सात दिन या अधिक रहने वाला जिसके साथ प्यास, खुश्की, भूरी जीभ, अनिद्रा, बेचैनी, हड्डियों पर गाँठें हो—कल्केरिया फ्लोर ।
होठो पर ज्वर के छाले हों—नेट्रम म्यूर ।
सारे शरीर मे ठढक लगना, माथा गरम होना, प्यास लगना—नेट्रम म्यूर ।
निचला धड़ ठण्ढा, चेहरे गर्म—कल्केरिया फास ।
सर्दी ८–१० बजे सबेरे घण्टे भर रहे, फिर तीन-चार घण्टे बुखार, सिर मे तेज दर्द, पसीना होकर बुखार उतरना—नेट्रम म्यूर ।
ज्वर से पहले तेज खुजली—नेट्रम म्यूर ।
दोपहर को एक बजे रोज ज्वर—फेरम फास ।
भीतरी बुखार हाथ-पैर ठण्ढे—नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास ।

रात को जागते रहना, दुखी रहना, प्यास लगना—नेट्रम सल्फ।

ज्वर के साथ बर्फ की-सी ठण्ढ और चमड़े का फूलना—नेट्रम सल्फ, साइलिसिया।

ज्वर के साथ हाथ-पैर बर्फ के समान ठण्ढे विशेषकर शाम को—नेट्रम म्यूर।

ज्वर के साथ प्यास, बार-बार बहुत-सा पानी पीना, सुस्ती, जमुहाई, तेज सिर दर्द, बेहोशी चेहरा नीला—नेट्रम म्यूर।

ज्वर के साथ जुकाम और खाँसी—कल्केरिया फास।

ज्वर पैर या पीठ से चढना—नेट्रम म्यूर।

ज्वर के साथ ज्ञान-तन्तु सम्बन्धी लक्षण, दाँत बजना—मैग्नेशिया फास, केलि फास।

रीढ के ऊपर और नीचे ज्वर—मैग्नेशिया फास।

ज्वर, प्यास, उदासी, सिर दर्द पहले हो—नेट्रम म्यूर।

ज्वर जाड़ा लगकर, सफेद मवाद की कै होने लगे—कल्केरिया फास।

ज्वर, कमर में सर्दी—नेट्रम म्यूर।

हमेशा भीतर सर्दी—साइलिसिया।

हमेशा सर्दी, हाथ-पैर अकडे रहे—केलि म्यूर।

शाम को सोते समय सर्दी—साइलिसिया।

बहुत जमुहाई के साथ सर्दी लगे—नेट्रम म्यूर।

सर्दी लगे माथा और हाथ गर्म—नेट्रम सल्फ।

तीसरे पहर और खुली हवा से सर्दी हो—नेट्रम म्यूर।

सर्दी और शाम को ज्वर बढे—नेट्रम म्यूर।

सर्दी बिस्तर में और कँपकँपी बढे, प्यास बढे, नाड़ी तेज—नेट्रम सल्फ।

सर्दी शाम को सोते समय लगे—नेट्रम सल्फ, साइलिसिया।

शरीर पर चिपकने वाला पसीना—कल्केरिया फास।

चेहरे पर ठण्ढा पसीना—कल्केरिया फास।

कब्ज हो, लाल पेशाब हो ज्वर के साथ—कल्केरिया सल्फ।

बकवाद करे—कैलि फास।

नींद आये—नेट्रम म्यूर।

शाम को हरारत—कैलि सल्फ।

ज्वर की दशा, नाड़ी और हृदय का वेग बढ़े—कैलि म्यूर।

सामने माथे मे दर्द, गर्मी और लहर—नेट्रम फास।

रात को जलन—नेट्रम फास, साइलिशिया।

जाड़ा लगते समय हाथ-पैर-ठण्ढे रहें—नेट्रम म्यूर।

माथा गरम, शेष शरीर ठण्ढा—नेट्रम सल्फ।

हाथ बिस्तर से बाहर न निकल सके—साइलिसिया।

सिर की चोटी पर गर्म लगे—नेट्रम सल्फ।

बहुत प्यास—नेट्रम म्यूर।

बारी का ज्वर, पिंडलियाँ दुखें—मैग्नेशिया फास।

बारी का ज्वर, कै हो, तेजाबी खट्टी मवाद—नेट्रम फास।

बारी का ज्वर, कै मे खाना गिरे—फेरम फास।

बारी का ज्वर, कुनैन का बुरा असर, तर जगह में रहना या नयी खुली जगह में—नेट्रम म्यूर।

जोड़ों मे पानी-सा टपकता जान पड़े खुली हवा मे—नेट्रम म्यूर।

शाम को टाँगें और पैर बर्फ से ठण्ढे जान पड़ें—साइलिशिया।

तिल्ली और जिगर बढ गये हों—नेट्रम म्यूर।

धीरे-धीरे बकना, ज्वर में—कैलि फास।

नाड़ी की फड़कन जान पड़ती हो, सख्या मे कम किन्तु फड़क के समय शीघ्रता – कल्केरिया फास।

शीघ्र चालवाली नाड़ी ज्वर में पसीना—साइलिशिया।

विशेषता—फेरम फास।

खुजली लुप्त हो जाने से ज्वर—नेट्रम म्यूर।

कम और ज्यादा होनेवाला पित्त-ज्वर जिसमे हरे, पीले, भूरे या काले रग की कै होती है—नेट्रम सल्फ।

हरारत और शरीर की गर्मी वढ रही हो—नेट्रम सल्फ।

पेशाव का रुक जाना, ज्वर होना—कल्केरिया फास।

गठिया वाई का दर्द जिसमे दर्द एक स्थान से दूसरे स्थान मे चला जाता है—कैलि सल्फ।

पीठ और गर्द मे कँपकँपी चढना, पैर गर्म रहना—कैलि म्यूर।

ज्वर के प्रारम्भ में कँपकँपी लगना—कल्केरिया फास।

थूक आना अर्थात् लार गिरना, साफ और पतला—नेट्रम म्यूर।

वेहोशी—नेट्रम म्यूर, साइलिशिया।

पसीना हाथ में वहुत—नेट्रम म्यूर, साइलिशिया।
,, वड़ी दुर्गन्ध वाला—साइलिशिया।
,, चेहरे पर—नेट्रम सल्फ।
,, सिर पर—साइलिसिया।
,, कमर में—साइलिसिया।
,, अधिक या ज्वर कम न हो—नेट्रम सल्फ।

पसीना तलुओं—नेट्रम म्यूर, साइलिशिया।
,, सिर्फ हाथ और चेहरे पर—साइलिशिया।
,, कहीं-कहीं रोगी का रात को जाग पड़ना—कल्केरिया फास।

पसीना वहुत हैरान करने वाला, दुर्गन्धयुक्त समय-समय पर—कैलि फास।

पसीना वहुत कमजोर करने वाला, तेज गध—कैलि फास, साइलिसिया।

रात को वहुत पसीना—कल्केरिया फास, साइलिशिया, नेट्रम म्यूर।

पसीना रात को, गठिया के दर्द को हटाने वाला, विस्तर से रोगी को हटा देने वाला—फेरम फास।

रात को कहीं एक जगह पसीना—कल्केरिया फास।

रात्रि को पसीना—साइलिसिया।
रात्रि को पसीना, खट्टा बुरा लगने वाला—साइलिसिया।
पैरों मे दुर्गन्धित पसीना—कल्केरिया फास, साइलिसिया।
खट्टा दुबला करने वाला—नेट्रम म्यूर।
पसीना से तकिया भींगना—साइलिसिया।
कपड़ा खोलने पर—नेट्रम म्यूर।
कपड़ा न खोलना—नेट्रम म्यूर।
प्यास न लगना—नेट्रम सल्फ।
वारी के ज्वर के कारण जीभ का पिछला हिस्सा सूखी मिट्टी के समान मैलदार होना—कल्केरिया सल्फ।
वारी के ज्वर से जीभ भूरी—कैलि म्यूर।
जीभ पीली, चिपकन—कैलि सल्फ।
जीभ सफेद या खाकी, साथ ही हलके पीले दस्त, पेट दुखना और सूजा हुआ—कैलि म्यूर।
टायफायड ज्वर में कब्ज—कैलि म्यूर।
ज्वर के साथ कै होना, पेट फूलना—फेरम फास।
जूड़ी मे खाने की कै—फेरम फास।
खट्टा पानी, भूरी या काली मवाद कै मे—नेट्रम सल्फ।
कै मे पानी—नेट्रम म्यूर।
रात्रि को ज्वर विशेष—साइलिसिया।
ठण्ढक और ऐंठन—मैग्नेशिया फास, फेरम फास।
जूड़ी—नेट्रम म्यूर।
ज्वर पित्त वाला—मैग्नेशिया फास, नेट्रम फास, नेट्रम सल्फ।
ज्वर के कारण होठों में छाले—नेट्रम म्यूर।
ज्वर मानसिक दोष का—कैलि फास।
ज्वर दौरे पर रहने से—कैलि फास।

ज्वर नजले का—फेरम फास।

ज्वर अंतड़ियों का (टायफायड)—फेरम फास, कैलि सल्फ, कैलि म्यूर।

ज्वर विषैले रुधिर के कारण—कैलि म्यूर।

ज्वर पाचन-विकार के कारण—फेरम फास, कैलि सल्फ, कैलि फास, कैलि म्यूर।

ज्वर हर समय रहे—साइलिसिया, कल्केरिया सल्फ।

ज्वर सूजन के कारण—फेरम फास।

ज्वर वारीवाला—कैलि म्यूर, मैग्नेशिया फास।

ज्वर वारीवाला—नेट्रम म्यूर, फेरम फास, कैलि सल्फ, कैलि फास, कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ, नेट्रम फास।

ज्वर गन्दगी और विपाक्त—कैलि फास।

ज्वर स्नायविक—कैलि फास।

ज्वर सूतिका प्रकार का—कैलि म्यूर।

ज्वर मियादी—फेरम फास, कैलि म्यूर।

ज्वर वाँह के जोड़ों की पुरानी सूजन—फेरम फास, कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर

ज्वर लाल—कैलि सल्फ, कैलि फास, फेरम फास, कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर।

ज्वर पीला—नेट्रम सल्फ।

ज्वर टायफायड—फेरम फास, कैलि सल्फ, कैलि म्यूर नेट्रम म्यूर।

जूड़ी बुखार कुनैन के बाद—नेट्रम म्यूर।

जूड़ी बुखार पुराना—कैल्केरिया फास।

जूड़ी बुखार में कै—नेट्रम फास।

जूड़ी बुखार में ऐंठन—मैग्नेशिया फास।

जूड़ी बुखार में निर्बल करने वाला और रात को पसीना अधिक—फेरम फास, साइलिसिया, कैलि फास, कल्केरिया फास, कल्केरिया सल्फ. नेट्रम म्यूर।

पसीना सिर पर--साइलिसिया ।

पसीना ठण्ढा—कैलि सल्फ ।

पसीना निर्बल करने वाला—को अधिक कैलि सल्फ ।

पसीना मे दुर्गन्ध—कैलि फास ।

पसीना अधिक—कैलि फास ।

पसीना भोजन के समय—कैलि फास ।

ज्वर सन्ध्या के समय—कैलि फास ।

ज्वर टायफायड प्रथमावस्था मे—फेरम फास ।

ज्वर टायफायड, मल में रुधिर—कल्केरिया फास ।

ज्वर टायफायड द्वितीयावस्था में—कैलि म्यूर ।

ज्वर टायफायड में सुस्ती, घबराहट और पानी की-सी कै हो—नेट्रम म्यूर ।

ज्वर, नाड़ी चाल मे कम हो—कैलि फास ।

ज्वर, क्षय वाली निर्बलता अधिक हो—साइलिसिया ।

ज्वर में प्यास अधिक—नेट्रम म्यूर ।

ज्वर छोटी शीतलावाला—फेरम फास ।

ज्वर शीतला के कारण—साइलिसिया ।

ज्वर में सिर पीड़ा—नेट्रम म्यूर ।

ज्वर रक्तातिसार—कल्केरिया सल्फ ।

ज्वर की गर्मी अजीर्ण के कारण—नेट्रम फास ।

ज्वर दस बजे प्रातःकाल से आरम्भ हो, प्यास अधिक, सिर-पीड़ा—नेट्रम म्यूर ।

ज्वर के पहले शीत—फेरम फास, नेट्रम म्यूर ।

झटका लगना (Jerking)—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया ।

झिल्ली की खुश्की (Mucous Membrane)—नेट्रम म्यूर ।

टखना (Ankles)—

दर्द हो—फेरम फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया ।

कमजोर हो—नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया ।

टाँगे (Legs) —

पैर और टाँग की पुरानी सूजन—कैलि म्यूर ।

पैरों से दुर्गन्धयुक्त पसीना—साइलिसिया ।

पैर के गड्ढे में पीड़ा—फेरम फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया ।

पैर के गड्ढे मे निर्बलता—नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया ।

पैर में दुखन —नेट्रम सल्फ ।

पैर मे वाई की पीड़ा – कैलि सल्फ ।

पैर के तलवे में जलन—कैलि फास, कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर ।

पैर की फीलियों से ऐंठनवाली पीड़ा—कल्केरिया सल्फ, मैग्नेशिया फास ।

पैर की हड्डियाँ सड़ें—साइलिसिया ।

पैर दिन में ठण्ढे, रात में गर्म—नेट्रम फास ।

पैर थके हुए—साइलिसिया ।

पैर सूजे हुए—कैलि म्यूर ।

तलुओं में खुजली—कल्केरिया सल्फ ।

पैर बराबर हरकत किया करें—कैलि फास ।

टखने के जोड़ की झिल्ली में पुरानी सूजन—साइलिसिया ।

टखने मे जोड़ के नीचे दाने—नेट्रम म्यूर ।

टखने का जोड़ सूजा हुआ—कल्केरिया फ्लोर ।

टखने का जोड़ पीड़ा करे—कल्केरिया फास, फेरम फास, नेट्रम फास ।

टाँगें चलने मे काम न दें—नेट्रम फास ।

पैर सूजे हुए—नेट्रम सल्फ, नेट्रम म्यूर।
हड्डी का ट्यूमर—कल्केरिया फ्लोर।
पीडा सायकाल को अधिक हो—कैली सल्फ।
पीडा ग्रीष्म-ऋतु मे अधिक हो—कैली सल्फ।
पीडा उठकर खडे होने से अधिक हो—कैली फास, नेट्रम म्यूर।
पीड़ा थोडी हरकत से कम हो—कैली फास।
पीडा टखने मे—कल्केरिया फास, नेट्रम फास।
पीड़ा पैर के तलवो मे—कैली फास, नेट्रम फास।
टाँगे अपने-आप हरकत करे—नेट्रम म्यूर।
कमानी-सी मुड जायँ—कल्केरिया फास।
पुरानी सूजन हो—कैली म्यूर।
खुजली चले—कैलि म्यूर, कैलि फास।
चलते-चलते थक जायँ—नेट्रम फास।
जाँघे थकी और निर्वल हो जायँ—नेट्रम सल्फ।
टाँगों की मोटी हड्डी—कल्केरिया फास, साइलिशिया।

टीका (Vaccination)—

लगवाने के वाद—कैली म्यूर, नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

ठण्ढा साँस (Sighing)—नेट्रम फास, कल्केरिया फास।

डकार आना—नेट्रम सल्फ।
तडपन के साथ दर्द—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
तनाव—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

तालू (Palate)—

जलन हो—नेट्रम सल्फ।
खुश्की हो—फेरम फास।
लाल पड़ जाय और दुखे—नेट्रम सल्फ।
दर्द जान पडे—फेरम फास।

दुखन हो—साइलिसिया।

पीली मैल जमी हो-नेट्रम फास।

तुतलाना—मैग्नेशिया फास।

थकावट (Exhaustion) कैलि फास, मैग्नेशिया फास।

थकावट (Weariness) (उदासीनता)—कल्केरिया फास, फेरम फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, नेट्रम सल्फ, कैली फास, नेट्रम फास, कल्केरिया सल्फ।

थूक (Saliva)—

कफ आना—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

बहुत आना—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, नेट्रम सल्फ, कल्केरिया फास।

थूकने में दर्द-नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

दम घुटना—नेट्रम म्यूर, कैलि सल्फ, कल्केरिया फास, कैलि फास।

वर्षाकाल-नेट्रम म्यूर।

दमा (Asthma)—

मुख्य दवा—कैलि फास, नेट्रम म्यूर २००।

अन्य दवा—मैग्नेशिया फास।

डकार आती हो, रोग के साथ हो—मैग्नेशिया फास।

दम घुटे, खाँसी हो-मैग्नेशिया फास।

बलगम मुश्किल से निकले—कल्केरिया फ्लोर।

सवेरे पतला दस्त आवे—नेट्रम सल्फ।

छाती में दर्द हो-मैग्नेशिया फास।

छाती में घाव-सा ज्ञात हो-फेरम फास।

थूक आता हो—नेट्रम सल्फ।

रुधिर फीका पड़ गया हो—कल्केरिया फास।

पतला झागदार बलगम हो—नेट्रम म्यूर ।
पीला-सा चिपकने वाला बलगम—कैलि सल्फ ।
गाढा, गुठलीदार, चमकदार बलगम—कल्केरिया फ्लोर, कैलि फास ।
गाढा भरा-सा सफेद बलगम हो—कैलि म्यूर ।
हरा सा पनीला बलगम—नेट्रम सल्फ ।
सुनहला, पीला, मलाई-सा बलगम—नेट्रम फास ।
पीबदार बलगम—साइलिसिया, कल्केरिया सल्फ ।
उदर विकार हो—कैलि म्यूर, नेट्रम सल्फ ।
एकाएक ज्वर हो—कल्केरिया सल्फ ।
ऐंठन के झटके हो—नेट्रम म्यूर, कैलि म्यूर, नेट्रम सल्फ ।
विशेषकर रात को—साइलिसिया, कल्केरिया सल्फ ।
दमा तर हो—नेट्रम सल्फ ।
सूखी घास की बू से होने वाला दमा—कैलि फास ।
रात को बारी आवे नींद खुल जाय—नेट्रम म्यूर ।
श्वास की नलियों का दमा—कैलि सल्फ, कैलि म्यूर ।
बच्चों को हो—नेट्रम सल्फ ।
बैठने से आराम आवे—मैग्नेशिया फास ।
ज्ञान-तन्तु स्नायु (सम्बन्धी)—मैग्नेशिया फास ।
पेट फूल जाय; दर्द करे—मैग्नेशिया फास ।
जरा-सा खाने से दमा उठे—कैलि फास, नेट्रम सल्फ ।
गर्मियों मे हो—कैलि सल्फ ।
वर्षा होने से अधिकता—नेट्रम सल्फ ।
सवेरे अधिकता हो—कैलि फास ।

दस्त लगना (Diarrhoea)—

चिकनाई खाने के बाद—कैलि म्यूर

कभी-कभी कब्ज रहना—नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास ।
वर्षा होने के बाद—नेट्रम सल्फ, कल्केरिया फास ।
टीका लगने के बाद—साइलिशिया, कैलि म्यूर ।
पित्त के दस्त—नेट्रम सल्फ ।
काले और भूरे—मैग्नेशिया फास ।
खून मिले (भूरी सफेद गाँठ)—कैलि म्यूर ।
रुधिर और पीव—साइलिसिया, नेट्रम फास ।
फटा दूध-सा—नेट्रम फास ।
पुराने दस्त—कल्केरिया सल्फ, नेट्रम सल्फ ।
रात के समय—कैलि सल्फ ।
भय के कारण—कैलि फास ।
बहुत खटाई से—नेट्रम फास ।
वर्षा ऋतु से—नेट्रम सल्फ, कल्केरिया फास, कल्केरिया फ्लोर ।
ऋतु परिवर्तन से—कैलि म्यूर, कल्केरिया फास ।
कच्चे आम खाने से—कल्केरिया फास ।
दिन में—नेट्रम म्यूर ।
बड़े सवेरे—नेट्रम सल्फ ।
तेज लगने वाले—नेट्रम म्यूर ।
झागदार और पित्त मिले—नेट्रम म्यूर ।
झागदार और फुलाव—नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ ।
हवा और बदबू—कल्केरिया फास, कैलि फास ।
छिछड़ेदार तेजाबी हरा रंग—नेट्रम फास ।
न रुकने वाला पनीला—कैलि फास ।
आँव मिला—नेट्रम म्यूर ।
सड़े हुए बदबूदार—कैलि फास, साइलिसिया ।
बिना दर्द—कैलि फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया ।

पीवदार—कल्केरिया सल्फ, कैली सल्फ।

दर्द होकर पतला दस्त—मैग्नेशिया फास, नेट्रम म्यूर।

पतला—नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ, कल्केरिया सल्फ, मैग्नेशिया फास, कैलि सल्फ, फेरम फास, कैलि फास।

पतला, दर्द के बिना—कैलि फास।

पतला सफेद—कल्केरिया फास।

सफेद—कल्केरिया फास, नेट्रम फास, कैलि म्यूर, मैग्नेशिया फास।

अनपचा खाना-फेरम फास, कल्केरिया फ्लोर।

तेज ज्वर भी हो - फेरम फास।

तवीयत सुस्त हो जाय—कैलि फास।

थकावट हो-कैलि फास, कल्केरिया फास।

दाँत (Teeth)—

दाँत निकलते समय वच्चों के ऐंठन वाले दौरे—मैग्नेशिया फास।

गर्म भोजन करने के वाद दाँत में पीड़ा—फेरम फास।

वच्चे सोते मे दाँत किटकिटायें—नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर।

दाँत निकलते ही सड़ने लगें—कल्केरिया फास।

मसूढ़ों से रक्त निकले—कैलि फास।

निर्वलता के कारण दाँत आपस मे बजे—कैलि फास।

वच्चो के दाँत निकलते समय के कष्ट—कल्केरिया फास।

वच्चों के दाँत निकलते समय के पाचन विकार—नेट्रम फास।

दाँत पीडा मे शीत से शान्ति—कैलि फास।

दाँत की पीडा में शीत से कष्ट हो—मैग्नेशिया फास।

दाँत हिले और पीडा करे—कल्केरिया फ्लोर।

दाँत की पीडा मे आँसू बहे या लार वहे—नेट्रम म्यूर।

दाँत की पीडा के साथ आकृति मे पीड़ा—मैग्नेशिया फास।

दाँत मे पीडा के साथ वाई की पीड़ा—मैग्नेशिया फास।

दाँत की पीडा में परिवर्तन होता रहे—मैग्नेशिया फास ।
दाँत में पीड़ा, तम्बाकू खाने से बढे—नेट्रम सल्फ ।
दाँत में पीडा गर्म कमरे मे जाने से वढे—कैलि सल्फ ।
दाँत मे पीडा सायकाल को वढे—कैलि सल्फ ।
दाँत में पीड़ा नींद न आने के कारण—कैलि फास ।
दाँत की जड मे घाव—कल्केरिया सल्फ ।
दाँत या मसूड़े का नासूर—साइलिसिया ।
दाँत कठिनाई से निकलें—साइलिसिया ।
दाँत हिलते हों—साइलिसिया, नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास ।
मसूढे का नासूर, पीडा हो—कल्केरिया सल्फ ।
मसूढे नर्म हों ऊपर खिंचते जायँ—कैलि फास ।
मसूढे में घाव—नेट्रम म्यूर ।
मसूढे मे सूजन—कल्केरिया फास ।
गर्भकाल में दाँत की पीडा—कल्केरिया फास ।
मसूढे से वहुत शीघ्र रक्त निकले—कैलि फास ।
गर्भावस्था के रोग—कल्केरिया फास ।
कीडा लगना—कल्केरिया फास, कल्केरिया फ्लोर ।
कीडा लगना, दर्द होना—कैलि फास ।
नासूर हो—साइलिसिया ।
धीरे-धीरे वढे—कल्केरिया फास ।
दाँत पीसना—मैग्नेशिया फास ।
वच्चे रात को सोते समय दाँत पीसे—कैलि फास, नेट्रम फास ।
पीला हो जाना—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, कल्केरिया फास ।
दाँत हिलना—साइलिसिया, कल्केरिया फ्लोर, नेट्रम म्यूर ।
दाँत हिलना वच्चों का—कल्केरिया फास ।

दाँत निकलना (Teething)—

देरी हो—कल्केरिया फास ।
बहुत थूक टपकना—नेट्रम म्यूर ।
ज्वर आना—फेरम फास ।

दाँत मे दर्द—

जलन, तडपन, छेदन—नेट्रम म्यूर ।
छेदने का-सा दर्द—कल्केरिया फास ।
दाँत मे उछलने वाला दर्द—मैग्नेशिया फास ।
डक मारने का-सा दर्द—कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर, साइलिशिया ।
कभी माथे मे दर्द, कभी दाँत मे—कैलि फास ।
भीगने या वर्षा से—नेट्रम सल्फ ।
पैरों में सर्दी लगने के कारण—साइलिशिया ।
वृद्धि गर्म पानी पीने से—कैलि सल्फ नेट्रम सल्फ ।
,, ठढे पैर होने से—साइलिशिया ।
आराम मिले गर्मी और विश्राम से—मैग्नेशिया फास ।
,, सर्दी और हरकत से—फेरम फास, कैलि म्यूर ।
,, मुँह मे गर्म पानी भरने से—मैग्नेशिया फास ।
,, खुली जगह मे—कैलि सल्फ ।
ठढी हवा से—कैलि सल्फ ।
ठढा पानी पीने से—फेरम फास, कैली म्यूर ।
,, गर्म सेंक से—मैग्नेशिया फास ।
,, धीमी हरकत से—कैलि सल्फ ।
,, दबाव से—मैग्नेशिया फास ।
दर्द के साथ आँसू और लार—नेट्रम म्यूर ।
दाँत मे छेद—साइलिशिया, नेट्रम म्यूर ।

ज्वर--फेरम फास।

मसूढे का सड़ना—साइलिसिया।

मसूढे और गाल सूजे--फेरम फास, कैलि म्यूर, साइलिसिया, कल्केरिया सल्फ।

दाँत उखड़ना, रुधिर स्राव—फेरम फास।

दाँत का सड़ना व नासूर उपदश के कारण—साइलिसिया।

दाद (Ringworm)—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, नेट्रम सल्फ १०००x।

दुर्बलता (Debility)—नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास, कैलि फास।

ज्ञान-तन्तु विकार—कैलि फास, नेट्रम फास, मैग्नेशिया फास।

विषव्रण (Carbuncle)—

ज्वर और दर्द के लिए—फेरम फास, कैलि म्यूर।

पहले दर्जे मे सख्ती के लिए—कल्केरिया फ्लोर।

दूसरे दर्जे मे—कैलि फास।

जल्दी पीव डालने के लिए—साइलिसिया।

जब गाढ़ी पीव निकलती हो—साइलिसिया, कैलि सल्फ।

दृष्टि (Vision)—

चकाचौंध—साइलिसिया।

मन्द—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

दूर की चीजे दिखाई दें—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

दृष्टि न जमना—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

साफ-साफ न देखना—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

पढ़ते समय अक्षर मिल जाना—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

अँधेरा-सा छा जाना—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

निकट की चीजें— नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

दूध (Milk)—

दूध माँ का खराब हो—कल्केरिया फास।

कम हो गया हो—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फ्लोर ।
बहुत उतरता हो—नेट्रम सल्फ ।
नमकीन हो—नेट्रम म्यूर, कैलि फास ।
पतला हो—नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास ।
पतला नीला हो—नेट्रम म्यूर ।

धड़कन हृदय की (Palpitation of the Heart)—

रोगारम्भ मे—कैली फास ।
पश्चात्—फेरम फास, कैली म्यूर, कैली सल्फ ।
रुधिर फीका होना—फेरम फास, नेट्रम म्यूर ।
आमाशय-विकार से—फेरम फास, नेट्रम म्यूर ।
दुर्वलता से—कल्केरिया फास ।
रोगाधिक्य में—साइलिसिया, फेरम फास, नेट्रम म्यूर ।
शरीर के अनेक स्थानों मे नस धड़कती जान पड़े—नेट्रम फास ।
बहुत रुधिर निकल जाने के कारण—कैली म्यूर ।
मानसिक उत्तेजना और सीढी पर चढने से—कैलि फास, नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास ।
ज्ञान-तन्तु तथा अकड़ाहट मे—मैग्नेशिया फास ।
चिन्ता के कारण—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर ।
अनिद्रा के कारण—कैलि फास ।
धड़कन मस्तिष्क के विचारो से—कैलि फास ।
धड़कन चिन्ता करने से—नैट्रम म्यूर, कल्केरिया फास ।

धातुस्राव—नेट्रम म्यूर, साइलिशिया, कैली फास, नेट्रम फास, कल्केरिया फास, फेरम फास ।
शीत के साथ—नेट्रम म्यूर ।
विना स्वप्न—नेट्रम फास ।

धूप सताना (Sun-stroke)—नेट्रम म्यूर, कैलि फास ।

नथुना (Nostrils)—

खुजली हो—साइलिशिया ।

जख्मी हो—कल्केरिया फास, कल्केरिया सल्फ ।

नहाना (To take a bath)—

नहाने और पानी से डर—साइलिसिया, नेट्रम सल्फ।

नाक (Nose)—

नथुनों के किनारे फुन्सी—साइलिसिया ।
नाक में जलन—नेट्रम सल्फ ।
नाक में हड्डी का सड़ना—साइलिसिया ।
नाक में नजला, उसके साथ ज्वर—फेरम फास ।
नाक में तीव्र अथवा पुराना नजला, पीला हरा चमकता हुआ स्राव हो
—फेरम फास, कैलि फास ।
नाक में अण्डे का-सा गाढ़ा स्राव—कल्केरिया फास ।
सायंकाल या गर्म कमरे में नजला अधिक हो—कैली फास ।
नाक से सफेद खारा स्राव—नेट्रम म्यूर ।
आरम्भिक नजला—फेरम फास ।
जब नजला बहने लगे—कल्केरिया फास ।
जुकाम सूखा हुआ—कैली सल्फ ।
जुकाम में चिकना घाव—नेट्रम म्यूर ।
नाक में पपड़ी पड़े—कैलि म्यूर ।
पानी जैसा स्राव—नेट्रम म्यूर ।
दुर्गन्धयुक्त स्राव—कैलि फास ।
गाढ़ा सफेद स्राव—कैली म्यूर ।
निर्बल मनुष्य को बार-बार नजला—कल्केरिया फास ।

नाक से गले मे पानी जैसा स्राव गिरे—नेट्रम म्यूर ।

नाक में जलन—नेट्रम सल्फ ।

पुराना नजला, नाक मे सुगन्ध न जान पडे—नेट्रम म्यूर ।

नाक में गुदगुदी—फेरम फास ।

नजले का कष्ट प्रातःकाल अधिक हो—नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ ।

नजले का ज्वर—फेरम फास, नेट्रम सल्फ ।

नाक मे बार-बार नजला—फेरम फास ।

नाक की नोक शीतल हो—कल्केरिया फास ।

बन्द नजला—कैलि म्यूर , कल्केरिया फ्लोर, नेट्रम म्यूर ।

खाँसने से रक्तस्राव हो—नेट्रम म्यूर ।

नकसीर वहे—फेरम फास, कैलि फास, कैलि सल्फ, कैलि म्यूर, कल्केरिया सल्फ, नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास ।

झुकने से नकसीर बहे—नेट्रम म्यूर ।

बार-बार नाक से रक्त वहे—कैलि सल्फ ।

इन्फ्लुएंजा—नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ ।

छींक आने को हो, पर आवे नहीं—कल्केरिया फ्लोर ।

नथुने और नाक की नोक पर खुजली—साइलिसिया, नेट्रम फास, नेट्रम सल्फ ।

नाक से गाढा स्राव निकले—कैलि म्यूर ।

नाक बन्द—कैलि सल्फ, नेट्रम सल्फ ।

नाक से दुर्गन्धयुक्त स्राव—साइलिसिया, नेट्रम सल्फ ।

नाक में उँगली डाले—नेट्रम फास ।

पीनस का रोग—साइलिसिया, कैलि सल्फ, कैलि फास, कल्केरिया फ्लोर, कल्केरिया फास ।

उपदंश के कारण पीनस—नेट्रम सल्फ ।

नाक लाल—नेट्रम म्यूर ।

बहने वाला जुकाम—नेट्रम म्यूर ।

नाक में चुरचुराहट—मैग्नेशिया फास ।

नाक में स्राव के कारण छाले - नेट्रम म्यूर ।

नाक की खुजली—नेट्रम सल्फ ।

नाक के अन्दर छोटे-छोटे दाने—नेट्रम म्यूर ।

नाक की मवाद तेजाबी—साइलिसिया ।

अण्डे की सफेदी-सा—कल्केरिया फास ।

रुधिर मिला—साइलिसिया, नेट्रम म्यूर ।

साफ—नेट्रम म्यूर

बहुत - कल्केरिया फ्लोर ।

दुर्गन्धित - कैलि फास, नेट्रम सल्फ ।

पीव समेत—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, कल्केरिया सल्फ ।

गाढा सफेदी लिये—कैलि म्यूर ।

मैला—कैलि म्यूर ।

बू करने वाला—कल्केरिया फ्लोर, कैलि फास, साइलिसिया ।

पीला—कल्केरिया फ्लोर, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ, कैलि सल्फ, कैलि फास ।

जलन हो—नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ ।

बहुत मवाद—कल्केरिया फ्लोर ।

भीतर की झिल्ली खुश्क—नेट्रम सल्फ, साइलिसिया ।

नाक बहती हो—फेरम फास, कैलि म्यूर, कल्केरिया फास, साइलिसिया ।

सूँघने की शक्ति न रहे—नेट्रम म्यूर, मैग्नेशिया फास, साइलिसिया ।

छींकें आती हों—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, कल्केरिया फास, कैलि म्यूर, कैलि फास ।

नाक से बात करे—नेट्रम म्यूर ।

नाक से खून बहना—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, कल्केरिया फ्लोर, कैलि फास, फेरम फास, कल्केरिया सल्फ।

नाखून—

नाखून के रोगों की मुख्य दवा—साइलिसिया, नेट्रम म्यूर।
चतुर्दिक घाव—साइलिसिया।
नाखून टेढे और टूटने वाले—फेरम फास, कैलि म्यूर।
नाखून की जड़ में पीडा—कल्केरिया फास।

नाभी—

दुखना चतुर्दिक—कल्केरिया फास।
काटने का सा दर्द—साइलिसिया।
खाली जान पड़ना—कल्केरिया फास।
नोंचने का-सा दर्द—नेट्रम सल्फ, साइलिसिया।
चारों ओर ऐसा दर्द हो जिससे रोगी रो पडे—मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फास।

नपुंसकता (Impotency)—नेट्रम म्यूर, कैलि फास, नेट्रम फास।

नासूर (Fistula)—

मलद्वार में—साइलिसिया, कल्केरिया फास।
खाकी रंग का पानी निकले—कैलि म्यूर, साइलिसिया, नेट्रम म्यूर, कैलि फास, कल्केरिया फ्लोर।
पीली गाढी मवाद—नेट्रम फास, साइलिसिया।

निद्रा (Sleep)—

चीख कर जाग जाना—कैलि फास; कल्केरिया सल्फ।
बच्चों का सोते समय रोना—कल्केरिया फास।
बराबर अकड़ना और जमुहाई लेना—कल्केरिया फास, कैलि फास।

प्रातःकाल विशेष सोने की इच्छा—नेट्रम म्यूर।
वहुत स्वप्न देखना—नेट्रम सल्फ, कल्केरिया फ्लोर।
वहुत नींद—नेट्रम म्यूर।
वैठे-वैठे नींद आ जाना—नेट्रम फास, फेरम फास।
सवेरे जगने के वाद थकावट—नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फ्लोर।
सोते समय दाँत पीसना—नेट्रम फास।
सोने की बड़ी इच्छा—नेट्रम म्यूर।
सवेरे जागना कठिन—कल्केरिया फास।
स्वप्न में गिरना, आग लगना, भूत और डाकू देखना-कैलि फास।
सोते समय हाथ-पैर फड़कना—साइलिसिया, नेट्रम म्यूर, मैग्नेशिया फास, नेट्रम सल्फ।

अनिद्रा (Insomnia)—फेरम फास २००x, साइलिसिया, कैलि फास ३x।

निराशा (Despair)—नेट्रम म्यूर।

न्यूमोनिया (Pneumonia)—

फेफड़े की सूजन—कल्केरिया फास, कैलि म्यूर।
दूसरा दर्जा—कैलि म्यूर।
आखिरी दर्जा—कल्केरिया सल्फ।
जब श्वासकष्ट हो, कमजोरी वढ़ जाय—नेट्रम म्यूर, कैलि फास।

पित्त-पथरी—

गुर्दे की व मसाने की—मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फास, कल्केरिया सल्फ, साइलिसिया।
पथरी पित्त की—कल्केरिया फास।
पथरी रोकने को—नेट्रम फास, कल्केरिया फा ।
दर्द के लिए—मैग्नेशिया फास।
पुराना रोग, इलाज न हुआ हो—कल्केरिया सल्फ, साइलिसिया।

पक्षाघात सारे शरीर का—कैलि फास।
पक्षाघात चेहरे का—कैलि फास।
पक्षाघात बच्चो का—कैलि फास।
पक्षाघात थोडे अंगों का—कैलि फास।
पक्षाघात के साथ बाई की पीड़ा—कल्केरिया फास।

पलक (Eyelids)—

सवेरे चिपक जाना—नेट्रम फास, साइलिसिया, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ।
चारों ओर फुन्सियाँ—साइलिसिया।
जलन—नेट्रम म्यूर, कैलि फास।
फड़कन हो—मैग्नेशिया फास।

पीठ (Back)—

दर्द करे—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
पीठ मे दर्द हो—कल्केरिया फ्लोर, कल्केरिया फास, फेरम फास, कैलि फास, मैग्नेशिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
अत्यन्त दर्द हो—नेट्रम म्यूर।
चूतड़ों के वीच मे दर्द—साइलिसिया।
कमर अकड़ जाय—साइलिसिया।
कमर में थकावट का दर्द—नेट्रम म्यूर।
रीढ़ छूने से दुखे—साइलिसिया।
पीठ का दर्द शाम को बढे—कैलि सल्फ।
पीठ में ठण्ढक—नेट्रम म्यूर।
पीठ पर फोड़ा पक जाय—कल्केरिया सल्फ।
पीठ पर फोड़ा आदि शीघ्र पकाना हो—साइलिसिया।
रीढ की हड्डी टेढ़ी हो जाय—कल्केरिया फास।
पीठ मे अत्यन्त पीड़ा—मैग्नेशिया फास।
पीठ मे फोड़ा—साइलिसिया, कल्केरिया सल्फ।

पीठ ठण्डी—साइलिसिया, कल्केरिया फास।

पीठ में चिपक जाने का भाव—फेरम फास, कल्केरिया सल्फ।

पीठ में स्नायविक पीड़ा—कैलि सल्फ, मैग्नेशिया फास।

पीठ की पीड़ा हिलने से—साइलिसिया।

पीठ की पीड़ा के कारण हिला न जाय—नेट्रम म्यूर।

पीड़ा—

पीड़ा ग्रीष्म ऋतु में अधिक हो—कैलि सल्फ।

पीड़ा उठकर खड़े होने से अधिक हो—कैलि फास, नेट्रम म्यूर।

पीड़ा थोड़ी हरकत करने से कम हो—कैलि फास।

पीड़ा कलाई में—नेट्रम फास।

पीड़ा बैठक की हड्डी में—कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ।

पीड़ा बिजली के समान – कैलि म्यूर, मैग्नेशिया फास।

पीड़ा स्नायविक—कैलि सल्फ, मैग्नेशिया फास।

पीड़ा बारी-बारी से हो—कैलि सल्फ।

" बाईं की हो— "

" परिवर्तनशील – कैलि फास, मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फास।

" कन्धे में हो – साइलिसिया, फेरम फास।

" ऐंठनवाली—मैग्नेशिया फास।

" अचानक हृदय की ओर जाय – नेट्रम फास।

" स्नायविक रात को अधिक—कैलि फास।

" " ठंढी ऋतु में अधिक हो – नेट्रम म्यूर।

" " प्रातःकाल अधिक हो – "

" " पसलियों के अन्दर –मैग्नेशिया फास।

" " गुदा में—कल्केरिया फास।

" " शीत लगने के पश्चात्—फेरम फास।

पीडा स्नायविक बल की न्यूनता के कारण—कैली फास।
,, ,, आँसू आये—नेट्रम म्यूर।

प्यास (Thirst)—नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ, साइलिसिया।
प्यास न लगना—कल्केरिया सल्फ, नेट्रम म्यूर।

प्रमेह (Gonorrhoea)—कैलि म्यूर, कल्केरिया सल्फ।
पुराना—नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ, कैलि फास, कल्केरिया फास, साइलिशिया।
रुधिर निकलता हो—कैली फास, फेरम फास।
पीली हरी मवाद—कैली सल्फ, नेट्रम सल्फ।

पुरुषेन्द्रिय के रोग—
नपुंसकता—कैली फास, नेट्रम म्यूर।
हस्त-मैथुन की आदत—कल्केरिया फास।
मसाने (मूत्र-थैली) की गिल्टी बढ़े—नेट्रम सल्फ।
सुपारी के ऊपर की खाल फूली हुई—नेट्रम सल्फ, नेट्रम म्यूर।
पुराना सूजाक—कल्केरिया सल्फ, कैली सल्फ, नेट्रम म्यूर।
कॉस्टिक की पिचकारी लेने के बाद सूजाक का कष्ट—नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर, कल्केरिया सल्फ, नेट्रम सल्फ।
सूजाक में हरापन लिये स्राव निकले—साइलीशिया, कैली फास, कैली सल्फ, नेट्रम सल्फ।
सूजाक में हरी पीव या रक्तमिश्रित पीव—कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ।
सूजाक में रक्त निकले—फेरम फास, कैली फास।
पुराने सूजाक में गाढ़ी पीव निकले—साइलीशिया।
पुराने सूजाक में पीली पीव निकले—नेट्रम म्यूर।
मसाने की गिल्टियों की सूजन—फेरम फास, नेट्रम सल्फ।
सूजाक दब जाने के कारण अण्डकोष की सूजन—कैली म्यूर।

वीर्य निकले—नेट्रम म्यूर।

रात को स्वप्नदोष हो—साइलीशिया, कैली फास, नेट्रम फास।

रात को विना स्वप्न देखे वीर्यपात हो—नेट्रम फास।

शौच के समय धातु निकले—नेट्रम म्यूर।

पुरुषेन्द्रिय में खुजली—नेट्रम सल्फ।

जीर्ण उपदश—साइलीशिया, कैली म्यूर, कल्केरिया फ्लोर।

उपदश के दोष में सायकाल को अधिकता—कैली सल्फ।

उपदश विष की गिल्टी, ज्वर, पीडा—फेरम फास, कैली म्यूर, साइलीशिया, कल्केरिया सल्फ।

उपदश व सूजाक के विष की गिल्टी पकी हुई—कल्केरिया सल्फ।

उपदश के कारण सनातनी सूजन—नेट्रम सल्फ।

उपदश के कारण हड्डी सडे—साइलीशिया।

उत्तेजना अधिक हो—मैग्नेशिया फास, नेट्रम फास।

विषय भोग की इच्छा न हो—नेट्रम फास।

बढना रोग का (Aggravations)—

अकेला रहने से—कैली सल्फ, कैली फास।

पानी में काम करने से और धोने से—कल्केरिया सल्फ, नेट्रम सल्फ।

दिन को—नेट्रम म्यूर।

शाम को—कल्केरिया फास, साइलीशिया, कैली सल्फ, नेट्रम फास।

दोपहर से पहले—नेट्रम म्यूर, साइलीशिया।

रात को—कल्केरिया फास, साइलीशिया।

सवेरे—कल्केरिया फास, फेरम फास, नेट्रम म्यूर, कैली फास।

निश्चित समय पर—नेट्रम म्यूर, साइलीशिया, नेट्रम सल्फ।

ऋतु परिवर्तन से—कल्केरिया सल्फ, साइलीशिया, कल्केरिया फास।

ठण्ढी हवा से—मैग्नेशिया फास, कैलि सल्फ, कैलि फास, साइलिसिया।
हवा लगने से—मैग्नेशिया फास।
गाड़ी में सफर करने से—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
खाते समय—नेट्रम सल्फ, साइलिसिया।
खाने के बाद—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ।
खाने के बाद—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ, साइलिसिया।
प्रकाश मे—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

बवासीर (Piles)—

बवासीर के मस्सो मे खुजली—कल्केरिया फास, कल्केरिया फ्लोर, फेरम फास।
बवासीर तथा कोष्ठबद्धता—नेट्रम म्यूर।
बवासीर, काला गाढ़ा रक्त निकले—कैलि म्यूर।
बवासीर, लाल चमकदार रक्त—फेरम फास।
बवासीर, न्यून रक्त वालों की—कल्केरिया फास।
बवासीर के साथ लवाबदार पीब—कल्केरिया फास।
खून न चले—कैलि सल्फ, कल्केरिया फ्लोर।
पुराना रोग—कल्केरिया फास।
बाहर मस्से हो—कैलि सल्फ, मैग्नेशिया फास।
केवल दर्द हो—मैग्नेशिया फास।
जलन हो—नेट्रम म्यूर।
बाई अत्यधिक जोड़ो को—मेग्नेशिया फास।
बाई ऐसी जो अग को बरबाद कर दे—कैलि फास।
बाई कलाई के बीच मे—कल्केरिया फास।
बाई शीत लगने के कारण—फेरम फास।
बाई गठिया वाली—नेट्रम सल्फ।
बाई की पीड़ा सूजन के साथ—कैलि म्यूर।

भगन्दर (Fistula)—

भगन्दर के साथ हृदय को कष्ट—कैलि फास।

भगन्दर के साथ पेट-पीड़ा—नेट्रम सल्फ।

भगन्दर के साथ पेट सूजा—कैलि म्यूर।

भगन्दर पीड़ा रहित—कल्केरिया फास।

भगन्दर के मस्से वाहर निकले हुए—कल्केरिया फास, कल्केरिया फ्लोर, फेरम फास।

भूख (Appetite)—

भूख न लगती हो—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, नेट्रम फास, कल्केरिया फास, कैलि म्यूर, नेट्रम सल्फ, कैलि सल्फ।

भूख न मिटती हो—कैलि फास।

भूख वहुत लगती हो—कैलि फास, कल्केरिया फास।

मदात्यय (Alcoholism)—मैग्नेशिया फास।

शराव के विष से वकता-झगता हो—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर।

उल्टी होती हो—नेट्रम फास।

मधुमेही (Diabetes)—

मुख्य दवा नेट्रम फास, नेट्रम सल्फ।

अन्य दवा—कैलि म्यूर, कल्केरिया फास, कल्केरिया सल्फ।

वहुमूत्र—नेट्रम म्यूर।

वहुत शक्कर—कल्केरिया फास, फेरम फास, कैली म्यूर, नेट्रम फास, नेट्रम सल्फ, कैली फास।

ज्वर के साथ—फेरम फास।

मलद्वार (Anus)—

सिकुड़ा जान पड़े अथवा गाँठ-सी जान पड़े—साइलिसिया।

दरार पड़ गयी हो—कल्केरिया फ्लोर, कल्केरिया फास, साइलिसिया, नेट्रम म्यूर।

दर्द मलद्वार की ओर जाय—कल्केरिया फास ।

छेदने का-सा दर्द मलद्वार से मलाशय या अण्ड स्थान तक जाय—साइलिसिया ।

जलन हो—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ ।

फुन्सियाँ—नेट्रम म्यूर ।

काँच निकलती हो—कैलि म्यूर, कैलि फास, नेट्रम सल्फ ।

मलेरिया—

मुख्य दवा—नेट्रम सल्फ, नेट्रम म्यूर ।

पुराना रोग दवा न की गई हो—कल्केरिया फास, कल्केरिया सल्फ ।

मस्तिष्क (Brain)—

भय के कारण कष्ट—कैलि फास ।

परेशानी के कारण कष्ट—कल्केरिया फास ।

शोक तथा नैराश्य के कारण कष्ट—कल्केरिया फास; कैलि सल्फ ।

सन्निपात—फेरम फास, कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर ।

सन्निपात—जागते में अधिक बातें करे—फेरम फास, नेट्रम म्यूर ।

तबीयत गिरी हुई—नेट्रम म्यूर, कैलि फास, कल्केरिया सल्फ, कल्केरिया फास ।

परिवर्तनशील स्वभाव—कल्केरिया सल्फ, कैलि फास ।

बच्चे अधिक चिड़चिड़े—कैलि फास ।

अधिक परिश्रम के कारण मस्तिष्क खाली जान पड़े—साइलिसिया, कैलि-फास, नेट्रम म्यूर ।

क्रोधी स्वभाव—नेट्रम म्यूर ।

सोने के पश्चात् कष्ट कम हो जाय—फेरम फास ।

बालक रात्रि में सोने मे चीखे—नेट्रम फास ।

सन्निपात ज्वर के समय में—फेरम फास, कैलि फास, नेट्रम म्यूर ।

एकान्त में रहने की इच्छा—कल्केरिया फास ।

कम पुरुषार्थी—नेट्रम सल्फ।
स्नायु विकार वालों को मूर्च्छा के दौरे—कैलि फास।
अधैर्य, स्वभाव में शीघ्रता—कैलि फास।
उन्मत्तता—कैलि फास।
पित्त के कारण कष्ट—नेट्रम सल्फ।
जीवन से निराशा—साइलिसिया।
प्रत्येक वस्तु का दोष दिखाई दे—कैलि फास।
स्मरण शक्ति निर्बल—मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फास।
स्वभाव में पागलपन—फेरम फास।
स्वभाव में परेशानी—कैलि फास।
सौरिग्रह में पागलपन—कैलि फास।
असावधानी—कैली फास, नेट्रम म्यूर।
मस्तिष्क से अधिक परिश्रम करने से थकावट—कैलि फास।
आत्महत्या करने की इच्छा—नेट्रम सल्फ।
सिड़ीपन और चिड़चिड़ेपन के साथ आत्महत्या करने की इच्छा—नेट्रम सल्फ।
चित्त एकाग्र न हो सके—कल्केरिया फास, साइलिसिया।
थोड़ी-सी बात में रो दे—नेट्रम फास।
मेलङ्कोलिया पागलपन (Melancholia)—कैलि फास, फेरम फास।
गाने बजाने से कष्ट अधिक हो—नेट्रम सल्फ।
बनावटी पदार्थों को पकड़ने का यत्न करे—कैलि फास।
लड़कों का स्वभाव खराब हो—कल्केरिया फास, कैलि फास।
लिखने पढने में अशुद्ध शब्दों का प्रयोग करें—कैलि फास।
कायरता—कैलि फास।
लड़के रात को भय खायें—
बच्चे गोद में घूमना चाहे—कैलि फास।

छोटी-छोटी बातें पहाड़ ज न पड़े—फेरम फास, नेट्रम फास ।

स्वभाव मे सन्देह—कैलि फास ।

नींद मे चले—कैलि फास ।

ठण्डी श्वास ले–मैग्नेशिया फास ।

अधिक लजीलापन—कैलि फास ।

दुःख के साथ हृदय धड़के—नेट्रम म्यूर ।

लिखने मे शब्द छूट जायँ—कैलि फास ।

हृदय मे एकबारगी जोश हो—नेट्रम म्यूर ।

चक्कर आवे रुधिर का जोर—फेरम फास ।

मस्तिष्क ढीला-ढीला जान पड़े—नेट्रम सल्फ ।

मस्तिष्क की कमजोरी—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, कैलि फास, साइलिशिया ।

मस्तिष्क मे रक्त जमा होना—मुख्य दवा फेरम फास ।

मस्तिष्क की झिल्ली मे शोथ—फेरम फास, कैलि म्यूर ।

मानसिक दशा और रोग—

रोज रो पड़ना—कैलि फास ।

बुरे विचार रहना ,,

मन गिरा रहना–नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ ।

धीरे-धीरे बड़बड़ाना–कैलि फास ।

कभी कुछ, कभी कुछ–नेट्रम म्यूर ।

बहुत बाते करना–नेट्रम म्यूर ।

जागते रहना–फेरम फास ।

टायफायड ज्वर मे धीरे-धीरे बकना–नेट्रम म्यूर ।

मन गिरा हुआ रहना–कल्केरिया फ्लोर, कल्केरिया सल्फ, कैलि फास, नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास ।

नैराश्य रोग मे–नेट्रम सल्फ ।

हिम्मत हारना—नेट्रम सल्फ।
उत्साहहीनता—कैलि फास।
घर की वस्तु आदमी का रूप जान पड़े—नेट्रम फास।
रोगी अपने को एक ही समय में दो जगह समझे—साइलिसिया।
नाचने और गाने को मन करना—नेट्रम म्यूर।
चिड़चिड़ापन—कैलि फास।
ध्यान न लगना—कैलि फास।
शोक में रहना—मैग्नेशिया फास।
हँसना—कैलि फास, नेट्रम म्यूर।
जरा-सा काम भारी समझे—कैलि फास।
सब कामों का बुरा नतीजा सोचना—कैलि फास, कल्केरिया सल्फ, नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास।
स्मरण शक्ति कमजोर—कल्केरिया फास, कैलि फास।
गाने-बजाने से रोग बढ़े—नेट्रम सल्फ।
लिखते समय शब्द या आकार भूल जाना—कैलि फास।
एकान्त में रहने की इच्छा—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर।
चौंक पड़ना—कैलि म्यूर।
,, जरा-सा शब्द सुनने से—कैलि फास, साइलिसिया।
जीवन से तंग—कैलि म्यूर।
बोलने-लिखने में अशुद्धियाँ करना—कैलि फास।
मुँह आना—कैलि म्यूर।
मुँह आने में लार बहे—नेट्रम म्यूर।
मुँह का स्वाद खराब हो—कैलि फास, कल्केरिया फास, नेट्रम फास।
मुँह का स्वाद खट्टा—नेट्रम फास।
मुँह का स्वाद कड़ुवा—कैलि म्यूर, नेट्रम सल्फ।

मुँह के किनारे चिटखे हुए--नेट्रम म्यूर।
मुँह के किनारे घाव--नेट्रस म्यूर, साइलिसिया।
मुँह से दुर्गन्ध आवे--कैलि फास।
जवडे की हड्डी कड़ी सूजी हुई--कल्केरिया फ्लोर।
मुँह के अन्दर दाह--कैलि सल्फ।
मुँह मे श्वेत घाव--कैलि म्यूर।
मुँह के अन्दर ऐंठन--नेट्रम फास।
धीरे-धीरे बोले--मैग्नेशिया फास।
जख्मी मुँह--साइलिसिया।
सर्वथा थूकते रहना--नेट्रम म्यूर।
जबड़ों पर सख्त सूजन--कल्केरिया फ्लोर।
लार टपकना--नेट्रम म्यूर।

मुहाँसा—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, कल्केरिया सल्फ, नेट्रम फास, कैलि म्यूर, फेरम फास, कल्केरिया फास (मुख्य)।

मूत्र (Urine)—

जलन करने वाला—नेट्रम सल्फ, नेट्रम म्यूर (बाद मे)।
शक्कर निकले--नेट्रम सल्फ, (मुख्य), कल्केरिया फास, फेरम फास, कैलि म्यूर, नेट्रम फास, कैलि फास।
निकलने मे दर्द हो—नेट्रम सल्फ, मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फास, कैलि फास।
रुधिर मिला हुआ--फेरम फास, नेट्रम म्यूर, कैलि फास।
पीला—नेट्रम म्यूर।
सफेद चूर्ण मिले हुए हों—कल्केरिया फास।
पीब मिली हो—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
थोड़ा उतरता हो--कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ, साइलिसिया, कल्केरिया फ्लोर।
चेष्टा करने पर भी न हो--नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

ठहर-ठहर कर हो—नेट्रम फास।

पेशाब स्वतः निकल जाना--साइलिसिया, फेरम फास, नेट्रम म्यूर।

मूत्र-मार्ग में खुजली—कैलि फास।

खाँसते समय निकल जाय—फेरम फास, नेट्रम म्यूर।

मूत्र-मार्ग को गिल्टी (Prostate Gland)--

गिल्टी की सूजन--नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

,, का बढना--नेट्रम सल्फ।

मोच--

बोझ उठाने से—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

यकृत—

यकृत में घाव, पीव निकले—कल्केरिया सल्फ, साइलिसिया।

यकृत में घाव, पीव कठिनाई से निकले--साइलिसिया।

यकृत के निकट पीड़ा--कैलि म्यूर।

यकृत अच्छा काम न करे--कैलि म्यूर।

यक्ष्मा--

यक्ष्मा रोग में रक्त का कफ—कल्केरिया सल्फ।

यक्ष्मा रोग में जीर्ण खाँसी—नेट्रम म्यूर।

यक्ष्मा रोग में गले में शुष्कता—कल्केरिया फास।

यक्ष्मा रोग में मुँह के अन्दर खराश—नेट्रम फास।

यक्ष्मा रोग में होठों की दुखन—नेट्रम फास।

यक्ष्मा रोग में अत्यधिक खाँसी—कैली म्यूर।

यक्ष्मा रोग में आरम्भिक अवस्था—कल्केरिया फास।

यक्ष्मा रोग में पीव का कफ—कल्केरिया सल्फ।

यक्ष्मा रोग में गले में दुखन—कल्केरिया सल्फ।

योनि (Vagina)—

पीड़ा—कल्केरिया फास।

जलनशीलता, खुश्की–नेट्रम म्यूर।

दबाव जान पड़ना–कल्केरिया फास, साइलीशिया।

रुधिर निकलना (Bleeding)—

गुर्दे से–कैली फास।

खूब लाल–फेरम फास।

गाढा-फेरम फास।

लंगड़ापन (Lameness)–नेट्रम फास।

लाल ज्वर (Scarlatina)—

प्रारभ मे ज्वर के लिए—फेरम फास।

आराम के लिए–कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास।

वेहोशी के लिए—नेट्रम म्यूर, कैली फास।

वंध्यत्व (Sterility)—साइलीशिया, नेट्रम फास।

व्रण (Ulcer)—

सब प्रकार के - कल्केरिया फास, कैली म्यूर, नेट्रम फास, साइलीशिया।

हड्डियों पर—कल्केरिया फास, साइलीशिया।

वात रक्त (Gout)—

तीव्र—नेट्रम सल्फ, फेरम फास, नेट्रम फास।

श्वास-यन्त्र—

फुफ्फुसों मे घाव–साइलीशिया २००, १०००।

वक्षस्थल मे पीड़ा–कल्केरिया फास।

वायु की नली मे अत्यधिक सूजन–नेट्रम म्यूर।

फुफ्फुसों मे शोथ ऐंठन वाला—कैली फास।

फुफ्फुसों मे शोथ अत्यधिक कष्टदायक खाँसी–फेरम फास।

वक्षस्थल के तमाम कष्ट तरल ऋतु अथवा वर्षा ऋतु मे अधिक हों—
नेट्रम सल्फ।

श्वास के दौरे के कारण रात को जागता रहे—नेट्रम फास, मैग फास।
कैली फास।

श्वास गर्मी से अधिक हो - कैली सल्फ ।
श्वास तीव्र—नेट्रम सल्फ ।
श्वास वच्चों का—नेट्रम सल्फ ।
श्वास पाचन-विकार के साथ—कैली म्यूर, नेट्रम सल्फ ।
श्वास के साथ वायु का कष्ट—मैग्नेशिया फास ।
श्वास भोजन के दोषों से—कैलि फास ।
श्वास में पीले कफ के टुकड़े—कल्केरिया फास ।
श्वास के साथ हर समय ज्वर रहे—कल्केरिया सल्फ ।
श्वास के साथ हर समय ऐंठन वाले झटके—नेट्रम म्यूर ।
श्वास मे पतला पानी का-सा कफ—नेट्रम म्यूर ।
श्वास शीघ्र फूले तथा कष्ट हो—फेरम फास, कल्केरिया फास ।
श्वास अच्छी तरह अन्दर न आ सके—फेरम फास, कैलो फास, नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास ।
जोर्ण खाँसी (ब्राकाइटिस)—फेरम फास, नेट्रम म्यूर, साइलीशिया, नेट्रम सल्फ, नेट्रम म्यूर, कल्केरिया सल्फ ।
जीर्ण खाँसी मे पीला कफ—कैली सल्फ ।
वक्षस्थल में दुखन और जलन—फेरम फास ।
श्वास रुक कर आवे—फेरम फास ।
शीत का प्रभाव सरलता से हो—फेरम फास ।
वक्षस्थल मे सकीर्णता—मैग्नेशिया फास ।
वक्षस्थल सिकुड़ा जान पडे—मैग्नेशिया फास ।
गहरी श्वास लेने से पीडा हो—नेट्रम सल्फ ।
वक्षस्थल में दवाने से पीड़ा—नेट्रम सल्फ ।
वक्षस्थल में दवाने से दुखन—नेट्रम सल्फ ।
वक्षस्थल मे छूने से दुखन—कैलि फास, कल्केरिया फास ।
वक्षस्थल मे निर्वलता प्रतीत हो—साइलीशिया ।

वक्षस्थल मे घबराहट—कैली सल्फ, नेट्रम सल्फ, कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर।
वक्षस्थल के कष्ट के साथ पैर ठण्ढे कल्केरिया सल्फ।
फुफ्फुसों मे जकड़न—फेरम फास।
वक्षस्थल के अन्दर रुधिर की अधिक नाड़ियाँ फैल जायँ—फेरम फास।
वक्षस्थल के कष्ट के साथ गुहा का नासूर—साइलिशिया, मैग्नेशिया फास।
चोट या गिरने के पश्चात् मुँह से रक्त आवे—फेरम फास।
वक्षस्थल मे गर्मी—फेरम फास।
ठंढक के कारण गाल फट जावे—फेरम फास, कैलि म्यूर, कैलि सल्फ।
वक्षस्थल को दबाते और खाँसते समय—नेट्रम सल्फ।
स्वरभंग गाने या बोलने के पश्चात्—फेरम फास।
वक्षस्थल के अङ्ग पर पीड़ा—कल्केरिया सल्फ।
वक्षस्थल की पीड़ा श्वास लेने से अधिक—नेट्रम फास।
वक्षस्थल की पीड़ा दबाने से अधिक—नेट्रम फास।
वक्षस्थल का रोग क्षयवाला—फेरम फास, कैलि म्यूर, कल्केरिया फास, कल्केरिया सल्फ, साइलिशिया, नेट्रम फास।
वक्षस्थल मे कफ घड़घड़ाये—कैलि सल्फ, फेरम फास, कैलि म्यूर, नेट्रम सल्फ, नेट्रम म्यूर।
ठण्ढी साँस भरने को मन चाहे – कल्केरिया फास, नेट्रम फास।
बास करने से थकावट हो – कैलि सल्फ।
आवाज बिल्कुल बन्द हो जाय - फेरम फास, कैलि म्यूर, कैलि फास।
फुफ्फुस के अन्दर घाव – साइलिसिया, कल्केरिया सल्फ।
फुफ्फुसों मे वात पीड़ा—कल्केरिया फास।
सोते समय आहे भरे—कैलि फास।

सन्निपातिक ज्वर (Typhoid)—आन्त्रिक ज्वर—कैलि फास, नेट्रम म्यूर, कैलि म्यूर।

सर्दी से दर्द—

शुरू मे—नेट्रम सल्फ, कैलि फास, फिर साइलिसिया, कल्केरिया सल्फ, (खिलावें और लगावें) कैलि म्यूर भी व्यवहार करे।

सर्दी साधारण—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

सर्दी जुकाम (Cold)—

शीघ्र सतावे—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया, फेरम फास।

समुद्रयात्रा मे उल्टी होना (Sea-sickness)—

मुख्य दवा—कैलि फास।

अन्य दवा—फेरम फास।

सिर (Head)—

बाल न उगे बाल खोरा—कल्केरिया फास, कैलि सल्फ।

सिर पर बतौड़ी—कल्केरिया फ्लोर, नेट्रम म्यूर, (पानी वाला)।

मस्तिष्क में रुधिर की न्यूनता—कैलि फास।

गुद्दी मे पीड़ा—नेट्रम सल्फ।

सिर के अन्दर पानी—कल्केरिया फास।

शीत से सिर के कष्टों मे शान्ति हो—फेरम फास।

मस्तिष्क की निर्बलता—कल्केरिया फास, कैलि फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

सिर के ऊपर कुछ रेंगता हुआ और शीत प्रतीत हो—कल्केरिया फास।

सिर पर सफेद भूसी—नेट्रम म्यूर, कैलि सल्फ।

सिर की हड्डी में चोट—कल्केरिया फ्लोर।

चाँद पर जलन—नेट्रम सल्फ।

मस्तिष्क विकार से चक्कर—कैलि फास।

मस्तिष्क अपस्मार—साइलिसिया।

मस्तिष्क की हड्डियों मे चुभन की पीड़ा—नेट्रम म्यूर।

सिर पर ऐसे दाने जिनमे पानी हो—नेट्रम म्यूर ।

सिर पीडा मस्तिष्क मे रक्त एकत्रित होने से, सिर मे ऐसे दाने जिनमें से पीव निकले फेरम फास, नेट्रम फास, साइलिसिया, नेट्रम म्यूर, कैलि सल्फ ।

चाँद मे पीड़ा—नेट्रम फास, नेट्रम सल्फ ।

सिर की हड्डी के जोड देर मे बन्द हों या खुल जायें—कल्केरिया फास ।

पाचन-विकार के कारण चक्कर—नेट्रम फास ।

सिर के वाल गिरें—कैलि फास, साइलिसिया ।

कघी करने से सिर मे पीडा हो—फेरम फास ।

सिर में वात की पीडा—मैग्नेशिया फास ।

सिर मे छूने से दुखन फेरम फास ।

सिर ऊपर न उठा सके—कल्केरिया फास ।

सिर पर पसीना—साइलिसिया, कल्केरिया फास ।

सिर का हिलना—मैग्नेशिया फास, कैलि फास ।

सिर पर दाने कल्केरिया फास ।

टपकन वाली सिर पीडा—फेरम फास ।

कनपटी में पीड़ा—फेरम फास, नेट्रम फास ।

सिर पीड़ा के साथ पेट में पीड़ा—नेट्रम फास ।

सिर पीड़ा के साथ हिस्टीरिया—कैलि फास ।

सिर पीड़ा के साथ उलझन—कैलि फास ।

सिर पीड़ा के साथ रीढ़ मे शीत—मैग्नेशिया फास ।

सिर पीडा के साथ जीभ मे मैल—नेट्रम म्यूर ।

सिर पीड़ा के कारण एकाग्रचित्त न हो—कैलि फास ।

सिर पीड़ा ठहर-ठहर कर हो—मैग्नेशिया फास ।

सिर पीड़ा मे आँसू निकलें—नेट्रम म्यूर ।

सिर पीड़ा के साथ निराशा—कैलि फास ।

सिर पीड़ा के साथ नींद न आवे, तन्द्रा—नेट्रम फास ।

सिर पीडा मासिक धर्म के पहले या बाद—नेट्रम म्यूर ।
,, ,, चलने मे हो—नेट्रम म्यूर ।
,, ,, के साथ पित्तायुक्त अतिसार—नेट्रम सल्फ ।
,, ,, के साथ पेट मे शूल की पीडा—नेट्रम सल्फ ।
,, ,, के साथ रुदन करने का मन चाहे—कैलि फास ।
,, ,, के साथ फेनदार कफ निकले—नेट्रम म्यूर ।
,, ,, के साथ जमुहाई आवे—कैलि फास ।
,, ,, के साथ बेचैनी और घबड़ाहट—कल्केरिया फास ।
,, ,, के साथ पेट मे वायु जमा हो—कल्केरिया फास ।
,, ,, के साथ सफेद कफ निकले—कैलि म्यूर ।
,, ,, के साथ स्मरण शक्ति खराब हो—कल्केरिया फास ।
,, ,, के साथ मुँह से लार बहे—नेट्रम म्यूर ।
,, ,, के साथ दृष्टि में खराबी—मैग्नेशिया फास ।
,, ,, दूपित तथा गाढा दूध पीने के कारण—नेट्रम फास ।
,, ,, मस्तिष्क से काम करने के कारण—कल्केरिया फास, कैलि फास ।
,, ,, सायकाल को—कैलि सल्फ ।
,, ,, अकेले रहने के कारण—कैलि सल्फ ।
,, ,, गरम कमरे में—कैलि सल्फ ।
,, ,, नींद न आने के कारण—कैलि फास ।
,, ,, नवयुवतियों की—कल्केरिया फास ।
,, ,, के साथ कर्णनाद हो—फेरम फास, कैलि फास ।
,, ,, के साथ आकृति तथा नेत्र लाल हों—फेरम फास ।
,, ,, मे कलरव अच्छा न लगे—कैलि फास ।
,, ,, मे नेत्र के सामने चिनगारियाँ दिखाई दे—मैग्नेशिया फास ।
,, ,, के साथ चक्कर—साइलिसिया, नेट्रम फास ।

सिर पीड़ा के साथ वमन में अनपचा भोजन निकले—फेरम फास ।
" " प्रातःकाल जागने पर—नेट्रम फास ।
" " से सिर मे गर्मी हो—कैली सल्फ ।
" " के साथ वात कष्ट सायंकाल को अधिक हो—कैली सल्फ ।
" " यकृत विकार से—कैली म्यूर ।
" " के साथ मुँह का स्वाद कड़ुवा—नेट्रम फास ।
" " के साथ खट्टा पानी कै मे निकले—नेट्रम फास ।
" " अधिक हो सिर हिलाने से—फेरम फास, नेट्रम सल्फ ।
" " पढने से अधिक हो—नेट्रम सल्फ ।
" " अंग्रेजी टोपी लगाने से अधिक हो—कल्केरिया फास ।
" " सिर पीड़ा कलरव से अधिक हो—साइलीशिया ।
" " इधर-उधर अर्थात् किसी ओर सिर पीछे घुमाने से—नेट्रम फास ।
" " सिर घुमने से—कैली सल्फ ।
" " अधिक हो सिर हिलाने से—कैली सल्फ ।
" " अधिक हो पुकारने से—साइलिसिया ।
" " अधिक हो गर्मी से—कल्केरिया फास ।
" " कम हो चुप रहने से—नेट्रम सल्फ ।
" " कम हो सिर पर गरम वस्त्र रखने से—साइलिसिया ।
" " कम हो नकसीर फूटने से—फेरम फास ।
" " कम हो धीरे-धीरे हिलने से—कैली फास ।
" " कम हो बाह्य उष्णता से—साइलिसिया ।
" " भोजन करने से—कैली फास ।
" " विमल वायु से—कैली सल्फ ।
" " शीत से—फेरम फास ।
" " हर्ष समाचार से—कैली सल्फ ।

चाँद पर सूजन—फेरम फास ।
ऐसा मालूम हो कि किसी ने आँखों पर कीलें ठोंक दी है—फेरम फास ।
सिर पीड़ा, पीव पडे हुए दानों से पीली पीव निकले—साइलिसिया ।
जीर्ण सिर में पीड़ा—साइलिसिया, कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर ।
नजले से सिर में पीड़ा—नेट्रम म्यूर ।
सिर पीड़ा प्रातःकाल आरम्भ हो—नेट्रम सल्फ, नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर ।
सिर पीड़ा दाँत निकलते समय—कल्केरिया फास ।
सिर में पीडा सुवह से आरम्भ हो और तीसरे पहर तक ठहर-ठहर हो—मैग्नेशिया फास ।
आधे सिर की पीड़ा—साइलिसिया, नेट्रम म्यूर ।
सिर पीड़ा रीढ तक हो—मैग्नेशिया फास ।
कण्ठमाला वालों की सिर पीड़ा—साइलिसिया ।
खोपड़ी की हड्डी पतली और कोमल हो—कल्केरिया फास ।
सिर पीड़ा के साथ नींद न आवे—कैलि फास ।
लू लगने से सिर पीडा—नेट्रम म्यूर ।
आप ही आप सिर हिले—मैग्नेशिया फास ।
मस्तिष्क शोथ—फेरम फास, कैलि म्यूर ।
चाँद पर खुजली के दाने—साइलिसिया ।
चाँद पर तर दाने—कैलि सल्फ ।
चाँद छूने से दुखे—कल्केरिया फास ।
चाँद से सिर पीड़ा—फेरम फास ।
लड़कों के सिर पर पसीना—कल्केरिया सल्फ, साइलिसिया ।
सिर पीड़ा के साथ-साथ नींद न आवे—कैलि फास, नेट्रम म्यूर ।
वृद्धों के चक्कर—कल्केरिया फास ।
चक्कर के साथ प्रवल वमनेच्छा—कल्केरिया फास ।
चक्कर के साथ रुधिर प्रवाह सिर की ओर—फेरम फास ।

चक्कर के साथ बायीं ओर गिरने पर पीड़ा—साइलिसिया।
पित्त का वमन हो—नेट्रम सल्फ।
मूर्च्छा पर बोझ जान पड़े—कैलि फास।
छूने से सिर दुखे—फेरम फास।
पीब पड़ी हो—कल्केरिया सल्फ।
बच्चों के सिर पर पसीना—कल्केरिया फास, साइलिशिया।
काँपना बूढो का—मैग्नेशिया फास।
हड्डी के ऊपर घाव—कल्केरिया फ्लोर।
चँदिया पर घाव - कल्केरिया फास।
सिर का चमड़ा पतला और नर्म हो—कैलि फास।
जख्म गाढ़ी पीली पीब—साइलिसिया।

सिर दर्द (Headache)—

पुराना—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिशिया।
आँखों से ऊपर—साइलिशिया, फेरम फास।
शाम को खाना खाने के बाद सिर दर्द—कल्केरिया फास।
सिर के पीछे की ओर भारी जान पड़े—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
माथे पर या खोपड़ी मे—साइलिसिया, कल्केरिया सल्फ, नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास।
पिछली हड्डी में—साइलिसिया, कैलि फास, मैग्नेशिया फास, नेट्रम फास, नेट्रम सल्फ, कल्केरिया सल्फ।
आँखों के ऊपर दर्द—फेरम फास, कल्केरिया फास, साइलिसिया।
सूर्योदय से सूर्यास्त तक—नेट्रम म्यूर।
शाम को शुरू हो—कैली सल्फ।
ऋतुकाल से पहिले और पीछे—नेट्रम म्यूर।
ऋतुकाल के दिनों मे—कल्केरिया फास, नेट्रम फास।
खोपड़ी की पिछली हड्डी मे छुरी-सा छेदना—नेट्रम म्यूर।

मानो सिर में धक्का लगे—साइलिसिया।

,, सिर हथौड़ों से फटा जा रहा हो—नेट्रम म्यूर।

,, सिर खूब भरा हुआ है—नेट्रम फास।

,, मस्तिष्क खोपड़ी को दबाता है—कल्केरिया फास, फेरम फास।

ऐसा जान पड़े मानो सिर की चँदिया फट जायगी—नेट्रम सल्फ।

मानो सिर अलग गिर पड़ेगा—साइलिसिया।

यदि अचानक होना, रुक जाना—नेट्रम म्यूर।

सूर्योदय के साथ दर्द शुरू, अस्त के साथ गायब—नेट्रम म्यूर।

सिर दर्द साथ-साथ जलन—साइलिसिया।

सिर में आवाज—कल्केरिया फ्लोर।

सिर दर्द के साथ पेट मे दर्द-साइलिसिया, नेट्रम सल्फ।

विद्यार्थियों के—कैलि फास, मैग्नेशिया फास, साइलिसिया।

स्कूल की लड़कियों के—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, मैग्नेशिया फास।

जवान लड़कियों के-नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास।

गठियावालों के--कल्केरिया फास, कैलि सल्फ, साइलिसिया।

चोट लगने का—नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ।

दबाने के—कल्केरिया फास;फेरम फास, साइलिसिया।

कभी कहीं, कभी कहीं उछलने वाला—मैग्नेशिया फास, कैलि सल्फ।

सुई चुभने का-सा—नेट्रम म्यूर।

माइग्रेन अर्थात् ऐसा सिरदर्द जिसमे भिनभिनाहट और कै हो—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

सिर में काटने का-सा—नेट्रम म्यूर, मैग्नेशिया फास।

बहुत शराब पीने से—नेट्रम म्यूर।

लू लगने से—नेट्रम म्यूर।

बदहजमी से—नेट्रम सल्फ।

ठंढ से—कल्केरिया फास, मैग्नेशिया फास, साइलिशिया।

ठढे जल से शरीर धोने से—कल्केरिया फास ।
रात्रि को खाना खाने से—कैली सल्फ ।
शारीरिक परिश्रम से—साइलिसिया ।
सन्ध्या में—कैलि सल्फ, कैलि फास, कल्केरिया फ्लोर, साइलिसिया ।
गर्म कमरे में—कैली सल्फ ।
गर्मी से—कल्केरिया फास ।
रोशनी से—साइलिसिया ।
वीर्य क्षय से—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, कैलि फास, नेट्रम फास ।
निद्रा न आने से—कैली फास ।
मानसिक परिश्रम से—कल्केरिया फास, नेट्रम सल्फ, साइलिसिया ।
प्रातःकाल—नेट्रम म्यूर ।
चलने-फिरने से—नेट्रम सल्फ, फेरम फास, कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर, साइलिसिया ।
शोर से—साइलिसिया ।
पढने से—नेट्रम सल्फ, साइलिसिया, नेट्रम म्यूर ।
सूर्य की गरमी से—फेरम फास ।
१० बजे सवेरे से शाम के तीन बजे तक—नेट्रम म्यूर ।
सिर दर्द मे आराम · फेरम फास ।
,, ,, खुली ठढी हवा से—कैली सल्फ, कैली फास ।
,, खाने से—कैली फास ।
,, बाहरी गर्मी से—मैग्नेशिया फास, साइलिसिया ।
,, धीमी हरकत से—कैलि फास ।
,, अँधेरे में पड़े रहने से—साइलिसिया, नेट्रम सल्फ, कल्केरिया फास ।
,, दबाव से—नेट्रम सल्फ, नेट्रम फास ।
,, खामोशी से—नेट्रम सल्फ, कल्केरिया फास ।

सिर दर्द गर्मी से—मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फास।

स्त्रियो के रोग—

गुप्तेन्द्रिय के बाहर घाव—साइलिसिया।

बच्चेदानी मे पीड़ा—कल्केरिया फास।

छिलन पैदा करने वाला प्रदर जो मासिक अथवा स्त्री-प्रसग के पश्चात् अधिक हो—कल्केरिया फास।

गर्भपात—कैलि फास, कल्केरिया फ्लोर।

मासिक की न्यूनता—कैलि सल्फ, कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास।

मासिकधर्म की न्यूनता जलवायु के परिवर्तन के कारण—साइलिसिया, कैल्केरिया फास।

मासिकधर्म की कमी रक्त की न्यूनता के कारण—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर।

बच्चेदानी में लटकने का-सा बोझ व पीड़ा—फेरम फास, कल्केरिया फ्लोर, नेट्रम म्यूर।

कमर व बच्चेदानी मे पीड़ा—कल्केरिया फास।

छाती मे कड़ी गाँठें—कल्केरिया फ्लोर।

बच्चेदानी मे मूत्रत्याग के पश्चात् जलन—नेट्रम म्यूर।

रुधिर की न्यूनता—कल्केरिया फास, फेरम फास, नेट्रम म्यूर।

मासिक के पश्चात् बच्चा पैदा होने की-सी पीड़ा—कल्केरिया फास।

मासिक के पश्चात् नकसीर—नेट्रम सल्फ।

बच्चेदानी में रक्त का जम जाना—कल्केरिया फ्लोर, कैलि म्यूर।

बच्चेदानी का जगह से हट जाना—कैलि फास, कल्केरिया फास, कल्केरिया फ्लोर।

बच्चेदानी का उलट जाना—कल्केरिया फ्लोर।

बच्चा होने के पश्चात् पेडू के पुट्ठे ढीले हो जायँ—कल्केरिया फ्लोर।

गुप्तेन्द्रिय मे खुश्की—नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास।

हिस्टीरिया के दौरे—कैलि फास।
मासिकधर्म के समय पर पीड़ा—नेट्रम म्यूर, कैलि फास।
रक्त वहुतायत से निकले—कल्केरिया फ्लोर।
मासिक के आरम्भ में वर्फ जैसी ठण्ढक—साइलिसिया।
गुतेन्द्रिय मे खुजली—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।
प्रदर खारा हो - कैलि फास, नेट्रम सल्फ, साइलिसिया।
प्रदर छीलन पैदा करनेवाला—नेट्रम सल्फ।
प्रदर अण्डे की सफेदी के समान—कल्केरिया फास।
प्रदर हरी मैल का-सा—कैलि सल्फ।
प्रदर शहद के समान—नेट्रम फास।
प्रदर खुजली पैदा करनेवाला—साइलिसिया, नेट्रम म्यूर।
प्रदर दूध जैसा—कैलि म्यूर।
प्रदर पानी जैसा—कैलि सल्फ, नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर।
प्रदर वहुतायत से—साइलिसिया।
प्रदर खौलता हुआ—कैलि फास, नेट्रम म्यूर।
प्रदर लसदार—कैलि सल्फ।
प्रदर चिलक पैदा करनेवाला—नेट्रम म्यूर।
श्वेत प्रदर—कैलि म्यूर।
प्रदर हल्दी के समान—कैलि सल्फ।
प्रदर प्रातःकाल अधिक हो—कल्केरिया फास।
प्रदर मासिककाल में हो—नेट्रम म्यूर, कल्केरिया फास, मैग्नेशिया फास।
मासिक-स्राव लोथड़ों के समान जमा हुआ—कैलि म्यूर।
मासिक-स्राव लाल—फेरम फास, कल्केरिया सल्फ।
मासिक-स्राव कालापन लिये लाल—कैलि फास।
मासिक-स्राव खराश पैदा करने वाला—नेट्रम सल्फ।

मासिक-स्राव गहरा लाल—कैलि सल्फ, कैलि फास, कल्कोरिया सल्फ।
मासिक-स्राव देर में सिर पीड़ा के साथ—नेट्रम म्यूर।
मासिक-स्राव पन्द्रहवें दिन—कल्केरिया फास।
मासिक-स्राव तीन सप्ताह के पश्चात्—फेरम फास।
मासिक-स्राव के साथ अतिसार—नेट्रम सल्फ।
मासिक-स्राव के साथ कमर पीड़ा—कल्केरिया फास।
मासिक-स्राव के साथ तबीयत गिरी हुई—नेट्रम म्यूर।
मासिक-स्राव के साथ रोने को मन चाहे—नेट्रम म्यूर।
मासिक-स्राव के साथ चिड़चिड़ापन—कैलि फास।
मासिक-स्राव के साथ कोष्ठवद्धता—साइलिसिया, नेट्रम सल्फ।
मासिक-स्राव के साथ शूल की पीड़ा—कैलि फास, नेट्रम फास, मैग्नेशिया फास।
मासिक-स्राव के साथ हाथ-पैर ठंढे—फेरम फास, कल्केरिया फास।
मासिक-स्राव-काल में प्रसंग की इच्छा अधिक हो—कल्केरिया फास।
मासिक-स्राव के साथ सिर में पीड़ा—फेरम फास, कैलि फास, नेट्रम म्यूर।
मासिक स्राव के साथ पैरों से दुर्गन्धयुक्त पसीना निकले—साइलिशिया।
मासिक-स्राव देर से हो—मैग्नेशिया फास।
मासिक-स्राव अनियमित—कैलि फास।
मासिक-स्राव में बच्चा पैदा होने की-सी पीड़ा—कल्केरिया सल्फ।
मासिक-स्राव देर तक होता रहे—कैलि म्यूर, कल्कोरिया सल्फ।
मासिक-स्राव पीला—नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर।
मासिक-स्राव समय से पहले—कैलि फास, कल्केरिया फास।
मासिक-स्राव डोरे के समान—मैग्नेशिया फास, नेट्रम म्यूर।
मासिक-स्राव नीला—कैलि फास, नेट्रम म्यूर।
मासिक-स्राव बहुत शीघ्र—साइलिसिया, कैलि म्यूर, नेट्रम फास, कल्केरिया फास।

मासिक-स्राव देर मे—कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर, कैलि फास, कैलि सल्फ, कल्केरिया सल्फ।

मासिक-स्राव बहुत कम—साइलिसिया, कैलि सल्फ, कैलि फास, नेट्रम म्यूर।

मासिक-स्राव काल मे नींद न आवे—नेट्रम फास।

मासिक-स्राव काल मे ऐंठन—कल्केरिया सल्फ, नेट्रम म्यूर।

बच्चेदानी की सूजन—फेरम फास, कैलि म्यूर।

बच्चेदानी के डिम्बग्रन्थि में पीड़ा—मैग्नेशिया फास।

रक्त निकलने के कारण गर्भ स्थिर न हो—नेट्रम फास।

बच्चेदानी की गर्दन मे घाव—कैलि म्यूर।

बच्चेदानी ऐसी कड़ी हो जैसे पत्थर—कल्केरिया फ्लोर।

बच्चेदानी मे खुजली—कैलि फास, कल्केरिया फ्लोर, कल्केरिया फास।

गुप्तेन्द्रिय मे टपकन—कल्केरिया फास।

बच्चेदानी निर्बल—नेट्रम फास, कल्केरिया फास।

गर्भकाल में शरीर में पीड़ा—कल्केरिया फास।

बच्चा पैदा होने के पश्चात् की पीड़ा—कैलि फास, मैग्नेशिया फास, फेरम फास।

कुचों मे जलन—कल्केरिया फास।

प्रसव-काल मे ऐंठन—मैग्नेशिया फास।

टाँगों में ऐंठन—मैग्नेशिया फास।

सूतिका प्रकार का ज्वर—कैलि फास, कैलि म्यूर।

कुचों मे गिल्टियाँ—कल्केरिया फ्लोर।

स्तन चढ जाये—कल्केरिया फास।

स्तन में नासूर—साइलिसिया।

सूतिका ज्वर का पागलपन—कैलि फास।

स्तनों मे सूजन—साइलिसिया, फेरम फास, कैलि म्यूर, कल्केरिया फ्लोर, कल्केरिया फास।

स्तनों से दुर्गंधयुक्त पीव निकले—कैलि फास।

गर्भपात का भय हो—कैलि फास।

गर्भकाल में मतली—नेट्रम फास, नेट्रम म्यूर।

स्तनों की घुण्डी चिटखे—साइलिसिया।

बच्चा पैदा होने के पश्चात् निर्बल करने वाली पीड़ा—कैलि फास।

प्रसूता का दूध नमकीन हो—नेट्रम म्यूर।

दूध पानी जैसा—कल्केरिया फास, नेट्रम म्यूर।

बच्चा दूध न पीये—कल्केरिया फास।

प्रसव का दर्द—नेट्रम म्यूर, साइलिसिया।

प्रसूति ज्वर—कैलि फास, मैग्नेशिया फास।

पेट के फुलाव के साथ—मैग्नेशिया फास, नेट्रम सल्फ।

स्नायविक पीड़ा (Neuralgia)—

लेखकों के हाथ की ऐंठन—मैग्नेशिया फास।

स्नायविक शक्ति न रहना—कैलि फास, मैग्नेशिया फास।

चलने में पैर लड़खड़ाये, ऐसा बोध हो कि पक्षाघात हो गया है—नैट्रम फास।

हिस्टीरिया का दौरा मनन करने के कारण—कैलि फास।

स्नायविक पीड़ा पसलियों के अन्दर—मैग्नेशिया फास।

स्नायविक पीड़ा गुदा में—कल्केरिया फास।

पेट में गोला उठकर कौड़ी तक हिस्टीरिया का—कैलि फास।

मिरगी दाँतों के दब जाने के कारण—कैलि म्यूर।

सोते समय पैर फड़के—नेट्रम सल्फ।

पेट में कीड़ों के कारण दाँत कटकटाये—नेट्रम फास।

सिर आप ही आप हिले—मैग्नेशिया फास।

हृदय धड़के — नेट्रम फास।
आधे सिर की पीड़ा—कैलि फास।
हाथ आप ही आप हिले—मैग्नेशिया फास।
शरीर काँपे—कैलि फास, नेट्रम सल्फ, कल्केरिया फास, नेट्रम फास।
पेट मे कीड़ों के कारण चेहरे की स्नायु फड़के–नेट्रम सल्फ।

स्वप्न (Dream)--

स्वप्न अधिक देखे—नेट्रम सल्फ।
डरावने स्वप्न देखे—नेट्रम सल्फ।
तमोगुणी स्वप्न—नेट्रम फास।
स्वप्न में भयभीत हो – कल्केरिया फ्लोर, मैग्नेशिया फास।
स्वप्न देखे कि गिरते हैं—कैलि फास।
स्वप्न देखे आग का—कैलि फास।
,, चोर का, डाकू का—नेट्रम म्यूर।
,, भूत-प्रेतों का—कैलि फास।

हड्डियाँ (Bones)—

उछलने वाला दर्द होना– नेट्रम म्यूर।
हड्डी के टुकडे गलकर निकलना–साइलिसिया।
,, उखाड़ना—नेट्रम म्यूर।
,, नर्म—कल्केरिया फास।
,, के घाव—साइलिशिया, कल्केरिया सल्फ, कल्केरिया फास।
हड्डियाँ सड़े उनमे नासूर का छिद्र हो–साइलीशिया।
हड्डी के टुकड़े सड-सडकर निकलें—साइलिशिया, कल्केरिया फ्लोर।
हड्डियों में गहरे घाव—कैलि फास, कल्केरिया फास।
,, में उपद्रव का उभार हो—कल्केरिया फ्लोर।
हड्डी के ऊपर की तह में सूजन—कल्केरिया फ्लोर।
,, का सड़ना–साइलिसिया।

हड्डियाँ जल्द टूटा करें—कल्केरिया फास ।
,, निर्बल—कल्केरिया फास ।
,, कठिनाई से जुड़े—कल्केरिया फास ।
हड्डी में चोट की घौंस—कल्केरिया फ्लोर ।
हाथ-पैर की हड्डियाँ सड़े —साइलिसिया ।
हाथ-पैर सुन्न हो जायँ—कल्केरिया फास ।
हाथ की उँगलियों के जोड़ सूजे हुए—फेरम फास, नेट्रम फास ।
हाथ की उँगलियों के जोड़ जकड़े हुए—कल्केरिया सल्फ, नेट्रम सल्फ ।
हाथ सूज जायँ—कल्केरिया फास ।
हाथ ठढे हो जायँ—नेट्रम म्यूर ।
हाथ गर्म हो जायँ—फेरम फास ।
हाथ कड़े तथा दुखे—नेट्रम सल्फ ।
हाथ की त्वचा सूखी तथा फटी—नेट्रम सल्फ ।
हाथ सूखा हुआ पीड़ा करे—फेरम फास ।
हाथ में कँपकँपी—नेट्रम सल्फ ।
हाथ में ऐंठन—साइलिसिया ।
हथेला में मस्से—कैलि म्यूर, नेट्रम सल्फ, नेट्रम म्यूर ।

हृदय (Heart)—

हृदय के ऊपर का दर्द—मैग्नेशिया फास, फेरम फास ।
हृदय ठढा जान पड़ना—नेट्रम म्यूर ।
हृदय सिकुड़ जाना—नेट्रम म्यूर ।
हृदय में काटने का-सा दर्द—कल्केरिया फास ।
रुधिर-प्रवाह मे सुस्ती—कैलि फास ।
साँस लेने मे दर्द—कल्केरिया फास ।
उछलने का सा दर्द—कल्केरिया फास ।
धड़कना—कैलि फास, फेरम फास, कैलि म्यूर, कैलि सल्फ ।

बेचैनी हो—नेट्रम सल्फ।

हृदय जलना—फेरम फास, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ, साइलिसिया, मैग्नेशिया फास, कल्केरिया फास, नेट्रम फास।

हृदय के ऊपर की झिल्ली की सूजन—फेरम फास, कैलि म्यूर।

हृदय की धड़कन—नेट्रम म्यूर (सारा शरीर हिले)।

हृदय की गति अनियमित—कैलि फास, नेट्रम म्यूर।

हृदय की पीड़ा—फेरम फास, मैग्नेशिया फास।

हृदय का शोथ—फेरम फास।

हृदय मे तंगी, रुकावट—नेट्रम म्यूर।

हृदय का फैल जाना—फेरम फास, कल्केरिया फ्लोर।

हृदय मे फड़फड़ाहट—नेट्रम सल्फ, नेट्रम म्यूर।

हृदय में रुधिर अधिकता से एकत्रित हो—नेट्रम म्यूर।

हृदय के निकट श्वास लेने मे पीड़ा—कल्केरिया फास।

हृदय के पर्दे मे सूजन—फेरम फास, कैलि म्यूर, कल्केरिया सल्फ।

हृदय के निकट कँपकँपी प्रतीत हो—नेट्रम म्यूर।

हृदय में वेचैनी जान पड़े—नेट्रम सल्फ।

हृदय की गति अनियमित—कल्केरिया फास।

हृदय के रोग में सायकाल कष्ट बढे—कैलि सल्फ।

हैजा (Cholera)—कैलि फास, नेट्रम सल्फ, फेरम फास, कैलि सल्फ।

हैंजे की ऐंठन हाथ-पैर में—मैग्नेशिया फास।

होंठ—

होंठ फटे हुए—कल्केरिया फ्लोर।

होंठ सूखे हुए—कैलि सल्फ।

होंठों में कैंसर—कैलि सल्फ।

होंठों में फड़कन—मैग्नेशिया फास।

———

शब्द-कोश

A

Abdomen	उदर
Abnormal	अस्वाभाविक
Abortion	गर्भस्राव, गर्भपात
Abscess	फोड़ा
Absorption	शोषण, सूखना
Ache	वेदना, दर्द
Acid, Acidum	अम्ल, खट्टा पदार्थ
Acidity	अम्लता
Acne	वर्रे, मुँहासा
Acute	नया और तेज या तीव्र
Adenitis	ग्रथि-प्रदाह
Adenalgia	गिल्टी का दर्द
Adult	युवा, जवान
Adynamic	शक्तिहीन
Aetiology	रोग का कारण, सम्प्राप्ति
After-birth	प्रसवोत्तर
Agalactia	स्तन मे दूध नहीं आना
Aggravation	अधिकता, गभीरता
Agrypnia	नींद कम आना
Ague	कप ज्वर
Albumen	अडे की सफेदी, कणविशेष, 'शुक्ति'

Albuminuria	अण्डलालयुक्त मूत्र
Alcohol	सुरासार
Aloes	मुसब्बर
Alum	फिटकिरी
Amenorrhoea	रजोरोध
Amenia	रजोलोप
Anaemia	रक्ताल्पता, खून की कमी
Anaesthesia	सुनबहरी
Anatomy	शरीर-रचना
Antidote	प्रतिषेधक
Anti-psoric	सोरानाशक, खुजली को नष्ट करनेवाला
Antiseptic	सड़ने-गलने से रोकनेवाली दवा
Aphonia	स्वरलोप
Apnoea	अश्वसन, श्वास-रोध
Appendicitis	उपान्त्र-प्रदाह
Arsenic	सखिया, एक प्रकार का विष
Asthma	दमा

B

Bacillus	एक प्रकार का जीवाणु, दण्डाणु
Bacteria	रोग कीटाणु
Baldness	चाँदनी रोग, गंजापन
Beri Beri	एक प्रकार का शोथ रोग, इसमे हाथ-पैर तथा अन्यान्य अंग फूल जाते हैं, वातबलासक

Bile	पित्त
Biology	जीवविज्ञान
Bladder	मूत्राशय
Bleeding	रक्तस्राव
Blood	रक्त, रुधिर
Blood pressure	रक्त का दवाव
Boil	छोटा फोड़ा
Borax, Boric	सोहागा
Breast	स्तन, छाती
Bright's disease	ब्राइट साहव द्वारा आविष्कृत एक प्रकार का रोग या मसाने की वीमारी, मूत्र मे अण्डलाल निस्सरण
Bronchitis	वायुनलो का प्रदाह—एक प्रकार का रोग
Broncho	श्वासनली से संवंधित जख्म
Bruises	जो खुजलाने से हो गई हों, खुरच, रगड़, खराश
Bubo, Bhoon	वाघी

C

Calomel	पारा से वनी हुई क्लोराइड
Calcium	चूना
Camphor	कपूर
Cannabis	गाँजा
Capsicum	मिरचा
Carbuncle	अदृष्ट घाव, विषव्रण व्रण, प्रत्यक्ष (यह घाव दिखाई नहीं पड़ता)
Castor Oil	अंडी का तेल

Catamenia	रजःस्राव
Catarrh	सर्दी, प्रतिश्याय
Catheter	मूत्राशय से नली द्वारा खींचकर मूत्र निकालने का यन्त्र
Chest	छाती
Child bearing	गर्भधारण
Cholera	हैजा
Chorea	एक प्रकार का स्नायविक रोग, कम्पवात
Chronic	पुराना
Clot	जमा हुआ रक्त
Colic	शूल
Collapse	हिमागावस्था
Congenital	वंशपरम्परा से प्राप्त
Congestion	रक्ताधिक्य
Constipation	कब्जियत
Convalescence	रोग से मुक्त होकर धीरे-धीरे स्वास्थ्य लाभ करना
Convulsion	आक्षेप
Coryza	माथे की सर्दी, जुकाम
Cough	खाँसी
Cramps	पेशियों का सिकुड़ जाना
Kreosote	अलकतरा से एक प्रकार की दवा बनाई जाती है जिसे 'क्रियोजोट कहते हैं।
Cystitis	मूत्राशय प्रदाह

D

Deafness	वहरापन
Debility	कमजोरी
Delirium	प्रलाप
Delivery	प्रसव
Dengu	एक प्रकार का ज्वर
Dentist	दन्त चिकित्सक
Depression	मानसिक कमजोरी
Dermatology	त्वचा विज्ञान
Diabetes	वहुमूत्र
Diagnosis	रोग निर्णय
Diarrhoea	अतिसार, दस्त होना
Diet	पथ्य
Discharge	स्राव
Displacement of the Uterus	गर्भाशय का स्थान भ्रष्ट होना
Dissection	मुर्दे की चीड़-फाड़
Dose	दवा की मात्रा
Douche	प्रक्षालन यन्त्र, एनीमा
Dynamic	गतिशील
Dysentery	पेचिश, सग्रहणी
Dysmenorrhoea	रजःकृच्छ्र
Dyspepsia	अजीर्णता
Dysphonia	स्वरभग

E

Earache	कर्णशूल
Earth worm	बरसाती केंचुआ
Elephantiasis	फीलपाँव, श्लीपद
Emmission	वीर्यपात
Encephalitis	मस्तिष्क और उसकी झिल्लियों का प्रदाह
Epidemic	बहुव्यापी
Epilepsy	मिरगी रोग, अपस्मार
Epistaxis	नाक से खून गिरना
Erysipelas	विसर्प रोग
Eruptions	फुन्सियाँ निकलना

F

Falling sickness	मिरगी रोग
Fallopian tubes	गर्भाशय की नली, डिम्ब-नलिका
Fever	ज्वर
Flatulence	उदराध्मान
Fomentation	गरम सेंक
Forceps	एक प्रकार का चिमटा जो विज्ञान के काम में लाया जाता है।
Fracture	अस्थि-भग

G

Gall-stone	पित्तपथरी
Gangrene	सड़ा हुआ घाव
Gastric	पाकाशय सम्बन्धी
Gastralgia	पाकाशय शूल
Gastritis	पाकस्थली प्रदाह
Gastric Fever	पैत्तिक ज्वर
Genitals	जननेन्द्रियाँ
Globules	अणुवटिका
Glaucoma	आँख के गोले मे पानी का ज्यादा भर आना, एक तरह का मोतियाविन्द समलवाई, वायु
Glucose	ग्लूकोज या अगूर की चीनी
Gabble	वकवक करना
Gonorrhoea	सूजाक
Gout	वात
Gynaecology	स्त्री चिकित्सा-शास्त्र

H

Haemaglobin	एक प्रकार के लाल कण
Haemotemesis	रक्तवमन
Haematuria	रक्तमेह, पेशाव मे खून जाना
Haemorrhage	रक्तस्राव
Haemorrhoids	खूनी ववासीर
Hemeralopia	दिनौंधी, दिनान्धता
Hemicrania	अधकपारी, सिर दर्द, शूल

Hepatalgia	यकृतशूल
Hepatic	यकृत सम्बन्धी
Hepatitis	यकृत-प्रदाह
Hernia	अँतड़ी का बढना
Hiccough	हिचकी
Hoarseness	स्वरभंग
Hook-worm	अकुश कृमि
Hydrocele	अडकोषवृद्धि, पानी आ जाना
Hydrocephalus	मस्तिष्क मे अप्राकृतिक जलसंचय
Hydrophobia	जलातक, जलसत्रास

I

Impotence	ध्वजभग
Impregnation	गर्भाधान
Infantile	शिशुकालीन, शैशवीय
Influenza	सर्दी-जुकाम के साथ ज्वर
Inoculation	टीका लगना
Insanity	उन्माद
Insensibility	बेहोशी
Insomnia	अनिद्रा
Intermittent-Fever	सविराम ज्वर
Intoxication	नशा, मदहोशी

J

Jaundice	पाण्डु रोग

K

Kakosmia	दुर्गन्ध
Kidney	गुर्दा, वृक्क

L

Labia-majora	योनि का बड़ा और बालवाला हिस्सा
Labia-minora	योनि के अन्दर की झिल्ली
Labour	प्रसव वेदना
Lactation	स्तन पीना, स्तन्यकाल
Laryngitis	स्वरनली प्रदाह
Laxative	हल्की दस्तावर दवा
Lepra	कोढ़
Leucoma	आँख की गन्दगी, पीले रंग की कीचड़
Lint	फलानेल कपड़ा पानी सोखने वाला
Leucorrhoea	श्वेत प्रदर
Liver	यकृत
Lumbago	कटिशूल

M

Malignant	प्राणघातक
Mammary	स्तन सम्बन्धी
Mania	उन्माद
Marasmus	बालशोष, सुखण्डी
Masturbation	हस्तमैथुन
Measles	शीतला छोटी माता

Meningitis	मस्तिष्क की झिल्ली का प्रदाह
Menopause	रजोनिवृत्ति
Menostasis	रजोरोध
Menses	स्त्री-रजोदर्शन
Metritis	जरायु प्रदाह
Metroptosis	जरायु भ्रंश
Midwifery	धात्रीविद्या
Miscarriage	गर्भस्राव
Morphia	अफीम का सार
Mucous	श्लेष्मा
Mumps	कर्णमूल-प्रदाह
Myelitis	मेरुमज्जा-प्रदाह

N

Nausea	जी मिचलाना, कै करने की इच्छा
Nephritis	वृक्क का प्रदाह
Neuritis	नस की सूजन
Nocturnal	स्वप्नदोष
Nyctalopia	रतौंधी
Nymphomania	स्त्रियों का कामोन्माद

O

Odontalgia	दाँत का दर्द
Odontiasis	दन्तोदक, दाँत निकालना
Oedema	शोथ
Oesophagus	अन्ननली

Olive Oil	जैतून का तेल
Onanism or Masturbation	हस्तमैथुन
Ophthalmia	चक्षु प्रदाह
Organon	यान्त्रिक शरीर का सिलसिलेवार वैज्ञानिक अध्ययन कराने वाली पुस्तक, होमियोपैथी सम्बन्धी एक पुस्तक
Otalgia	कर्णशूल
Ovaritis	डिम्बाशय प्रदाह

P

Pelvis	पेड़ू
Palpitation	दिल की धड़कन
Pancreas	पेट की दीवारों के भीतर की गिल्टी
Paralysis	पक्षाघात
Paramenia	मासिकधर्म में गड़बड़ी
Parasites	पौधा या जानवर जो दूसरे जीवित प्राणी पर जीवन-निर्वाह करता है, पराश्रयी
Pathology	रोग निदान
Patient	रोगी
Penis	पुरुष जननेन्द्रिय
Peritoneum	मेदा को घेरने वाली झिल्ली
Pharmacopoeia	भैषज्य विधान जिसमें औषधियों के गुणागुण का विस्तृत विवरण दिया जाता है। (औषध निर्माण-विधि)

Phimosis	पुरुषाग का वह हिस्सा जो गोलाकार सुपारी के हिस्से से संयुक्त रहता है और ठीक उसी के नीचे स्थित है। (लिंगाग्र-चर्म का लिंगमुण्ड से सट जाना)
Phrenitis	मस्तिष्क-प्रदाह
Phthisis	राजयक्ष्मा, तपेदिक
Physiology	शरीर-विज्ञान
Piles	बवासोर
Placenta	जरायु कुसुम (फूल)
Placentitis	जरायु कुसुम (फूल) का सूजन, झिल्ली का प्रदाह
Pleurisy	फुफ्फुस को ढंकने वाली
Pollution	वीर्यपात
Postmortem Examination	मरने के बाद लाश की परीक्षा
Pox Small	बड़ी माता की गोटी, चेचक
Pox Chicken	छोटी माता की गोटी
Practice of medicine	चिकित्सा-तत्त्व
Prescription	नुस्खा
Puerperal Fever	सूतिका ज्वर
Pulmonary artery	वह धमनी जो हृदय के दाहिने वेंट्रिकल से फेफड़ों में खून ले जाती है।
Purgative	विरेचक, दस्तादि पेट से निकाल बाहर करना
Pus	पीब
Pyorrhoea	सड़ा हुआ दाँत का रोग

Q

Quack	अनाड़ी डाक्टर या वैद्य

Quintan	पाँचवें दिन पर आने वाला ज्वर
Quotidian (Fever)	चौथे दिन आने वाला बुखार

R

Radical cure	एकदम से आराम
Rash-fever	लाल ज्वर
Reaction	प्रतिक्रिया
Rectified Spirit	परिष्कृत या साफ किया हुआ सुरा
Rectal	मलाशय सम्बन्धी (आत्र के मुतल्लिक)
Rectum	बडी अँतडी का अंतिम हिस्सा मलाशय
Relapse	रोग का फिर आक्रमण होना
Remittent	स्वल्प विराम
Respiration	श्वास-प्रश्वास
Retention	अवरोध
Retinitis	दृष्टि पटल-प्रदाह
Rhinitis	नासिका-प्रदाह
Rhinopolypus	नासार्बुद
Ring worm	दाद
Rupture	फटना

S

Saline	नमकीन
Scarlatina	आरक्त ज्वर
Sciatica	कटिस्नायु शूल, गृध्रसी
Scrofula	गण्डमाला
Scrotum	अण्डकोष की थैली
Semen	वीर्य

Sensation	चैतन्य
Septicaemia	रक्त विकृति
Septic	दूषित
Sore-throat	गले का घाव
Spasm	अकड़न, ऐंठन
Spatula	मलहम बनाने की छुरी
Spermatorrhoea	स्वप्नदोष, वीर्यस्राव
Spleen	प्लीहा
Sterilization	पूतीकरण
Stethoscope	छाती-परीक्षक यन्त्र
Stool	मल
Strangury	मूत्रकृच्छ्र; बूँद-बूँद करके कष्ट से पेशाब आना
Sugar of milk	दूध की बनाई हुई चीनी
Suffocation	साँस का रुकना
Sulphur	गन्धक
Sun-Stroke	लू-लगना
Swelling	फूलना
Sycosis	एक प्रकार का चर्म रोग
	रोग के लक्षण
Syphilis	उपदंश
Syringe	पिचकारी

T

Tape-worm	फीता कृमि
Temperature	शरीर का ताप स्वाभाविक, मनुष्य का ताप

Tetanus	धनुष्टकार
Thermometer	तापमान यन्त्र
Typhoid Fever	सन्निपातिक ज्वर
Typhus Fever	तान्द्रिक ज्वर

U

Ulcer	फोड़ा घाव
Umbilical Cord	नाभी रज्जु
Uraemia	मूत्र नष्ट हो जाने के कारण रक्त की खराव हालत
Ureter	पेशाव की नली
Urethra	पेशाव निकलने का रास्ता
Urine	मूत्र
Urticaria	चकत्ते निकलने वाली व्याधि
Uteritis	जरायु प्रदाह
Uterus	जरायु, गर्भाशय

V

Vaccination	टीका लगाना
Vagina	योनि
Vaginitis	योनि-प्रदाह
Venereal	मैथुनजन्य रोग
Vertigo	सिर का घूमना
Vomiting	वमन
Vulvitis	भग-प्रदाह

W

Whites	श्वेत-प्रदर
Whitlow	अंगुलहाड़ा
Whooping Cough	कुकुरखाँसी
Wisdom	अक्ल दाँत
Worms	कृमि

Y

Yellow Fever	पीला बुखार

हमारे अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

डॉ० सुरेशप्रसाद शर्मा द्वारा लिखित पुस्तकें—

एलोपैथिक पुस्तकें—

१—इंजेक्शन—इसमें सूई लगाने के तरीके और इसके सम्बन्ध में जानने योग्य सभी बातों के अतिरिक्त सभी प्रकार के इन्जेक्शनों जैसे—पेनिसिलिन, स्ट्रेप्टोमायसिन, औरियोमायसिन, डाइक्रिस्टेसिन आदि का वर्णन और प्रयोग सरल ढङ्ग से दिया गया है। सजिल्द मूल्य २०·०० मात्र।

२—एलोपैथिक चिकित्सा—पुस्तक नौ अध्यायों में लिखी गयी है। प्रथम चार अध्यायों में 'विषय-प्रवेश', 'शरीर-विज्ञान', 'रोग निदान' सम्बन्धी आवश्यक बातों और नवीनतम आविष्कृत औषधियों का वर्णन क्रमशः दिया गया है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत। मू० २५·०० मात्र।

३—मिक्श्चर—मिक्श्चर बनाने की विधि और १८५ रोगों पर परीक्षित ३५० नुस्खों का वर्णन दिया गया है। साथ ही साथ पेटेण्ट दवाओं और विभिन्न रोगों पर चलने वाले इन्जेक्शनों के नाम भी दिये गये हैं। मू० ५·०० मात्र।

डॉ० शिवदयाल गुप्त, ए० एम० एस० द्वारा लिखित पुस्तकें--

४—एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका—हिन्दी और देशी भाषाओं में सर्वप्रथम प्रामाणिक पुस्तक। मू० ३०·०० मात्र।

५—सचित्र नेत्र रोग-विज्ञान (एलोपैथिक)—प्रथम नेत्र-रचना, उसकी कार्यक्षमता आदि विषयों पर सुन्दर विवेचन किया गया है, जैसे निकट-दृष्टि-ज्ञान, दूर-दृष्टि-ज्ञान आदि। मू० ६·०० मात्र।

६—स्त्रियों के रोग तथा उनकी आधुनिक चिकित्सा—मू० २२·०० मात्र।

७—वृद्धावस्था के रोग तथा उनका प्रतिकार— मू० १२.०० मात्र।

८—एलोपैथिक सफल औषधियाँ—इस पुस्तक में सल्फा ग्रूप की सभी औषधियाँ सीबाजाल, एम० बी० ६९३, सल्फा ट्रायब आदि, कालाजार-नाशक, मलेरिया-नाशक, कुष्ठनाशक, कृमि-नाशक आदि औषधियों का प्रयोग तथा पी० ए० एस०, वेसीट्रेसिन, आयलोटायसिन और अब तक की निकली हुई जीवाणुरोधक औषधियों का बृहद् वर्णन सरल ढंग से दिया गया है। मू० ६·०० मात्र।

९—मॉडर्न ट्रीटमेण्ट—प्रथम भाग २०'०० मात्र ।
द्वितीय भाग २०'०० मात्र

१०—एलोपैथिक पेटेण्ट मेडिसिन्स—ले० डॉ० अ० ना० पांडेय । इस पुस्तक में एलोपैथी की प्रायः सभी प्रचलित कम्पनियों द्वारा निकाली गयी सभी पेटेण्ट औषधियों का वर्णन है।

अतः यह पुस्तक विशेषकर साधारण चिकित्सकों और विद्यार्थियों के लिए परम उपयोगी है मूल्य १४'०० मात्र ।

११—एलोपैथिक पेटेण्ट चिकित्सा—इस पुस्तक में पेटेण्ट औषधियों द्वारा सभी रोगों की रोगानुसार आधुनिक चिकित्सा संकलित कर दी गई है । मूल्य ५'०० मात्र ।

१२—ज्वर-चिकित्सा—उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत । इस पुस्तक में ज्वरों के निदान के साथ उनकी चिकित्सा एलोपैथिक, आयुर्वेदिक, होमियोपैथिक तथा यूनानी चिकित्सा-विधि के अनुसार दी गयी है। आप किसी भी उपलब्ध पैथी के अनुसार विभिन्न प्रकार के ज्वरों की सफल चिकित्सा कर सकते हैं । मूल्य ५'०० ।

१३—शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान— मू० ६'०० मात्र ।

१४—संक्रामक रोगो का उपचार— मू० २'०० मात्र ।

१५—माडर्न एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका—ले० डॉ० रामनारायण सक्सेना, वाइस-प्रिंसिपल बुन्देलखण्ड आयुर्वेदिक कालेज, झाँसी । केवल इस पुस्तक के बल पर आप अपनी एलोपैथिक चिकित्सा चला सकते हैं। साधारण भाषा में अति सरल ढङ्ग से सम्पूर्ण चिकित्सा विषय आप आयत्त कर सकते हैं । मू० १५'०० मात्र ।

१६—कम्पाउण्डरी शिक्षा तथा चिकित्सा प्रवेश—मू० ८'०० मात्र ।

१७—मलेरिया और कालाजार चिकित्सा (एलोपैथिक)—इस पुस्तक में मलेरिया और कालाजार का इतिहास, परिचय, रोग का संक्रमण, शारीरिक विकृति, खून का तुलनात्मक अध्ययन और खून जाँच करने की विधि तथा रोग की सामान्य चिकित्सा, लाक्षणिक चिकित्सा और विशिष्ट चिकित्सा का सविस्तार वर्णन दिया गया है । मू० ३'०० मात्र ।

१८—चर्म रोग चिकित्सा—इस पुस्तक में विभिन्न चर्मरोगों की पहचान, उनका निदान एवं पेटेण्ट चिकित्सा विस्तार से बतायी गयी है ।
मू० ४'५० मात्र ।

१९—सल्फोनामायड और एण्टीबायोटिक्स—इसमें नवीनतम आविष्कृत सभी सल्फा और पेटेण्ट औषधियों के गुण कर्मों का वर्णन है।

मू० २·७५ मात्र।

२०—जननेन्द्रिय रोग चिकित्सा—इस पुस्तक में स्त्री-पुरुषों के प्रजनन अंगों के विभिन्न रोगों का वर्णन एवं उनकी चिकित्सा एलोपैथिक और आयुर्वेदिक पद्धति से दी गयी है।

३·७५ मात्र।

२१—नासा, गला एवं कर्ण रोग चिकित्सा—इसमें नाक, गला एवं कान की संक्षिप्त एनाटॉमी, उनमें होने वाले रोगों का वर्णन और उनकी उत्तम चिकित्सा बतायी गयी है।

मू० ७·०० मात्र।

२२—संकटकालीन प्राथमिक चिकित्सा—इस पुस्तक में आकस्मिक दुर्घटनाओं की तात्कालिक चिकित्सा अत्यन्त विस्तारपूर्वक बतायी गयी है।

मू० ६·०० मात्र।

२३—मल, मूत्र, रक्तादि परीक्षा एलोपैथिक— मू० ६·०० मात्र।

२४—धात्री विज्ञान—

मू० ४·०० मात्र।

२५—अभिनव शवच्छेद-विज्ञान—प्रोफेसर श्री हरिस्वरूप कुलश्रेष्ठ द्वारा लिखित—दो भाग—मू० २२·०० मात्र।

२६—सरल दन्त-विज्ञान—

मू० ४·५० मात्र।

२७—सर्जरी (सामान्य शल्य चिकित्सा)— मू० १४·०० मात्र।

२८—वाल रोग चिकित्सा—

मू० १०·०० मात्र।

२९—एलोपैथिक पाकेट गाइड—

मू० ६·०० मात्र।

३०—माडर्न डायग्नोसिस—

मू० १८·०० मात्र।

३१—माडर्न सिलेक्टेड मेडिसिन—

मू० ६·०० मात्र।

३२—ब्लड-प्रेशर—ले० डॉ० नौटियाल—

मू० ३·५० मात्र।

३३—स्टेथोस्कोप परीक्षा—ले० डॉ० केशवानन्द नौटियाल, ए. एम. एस. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय—

मू० ४·००।

३४—मेडिकल सर्टिफिकेट—(हि० अ०)

मू० २·०० मात्र।

३५—लेवुल वुक—

मू० २·०० मात्र।

३६—विटामिन—

मू० ३·०० मात्र।

३७—मासिक विकार—

मू० २·००।

३८—सफल आधुनिक औषधियाँ—

मूल्य ५·५० मात्र।

होमियोपैथिक पुस्तकें--

१- होमियोपैथिक मेटेरिया मेडिका रेपर्टरी सहित--मूल लेखक-डॉक्टर विलियम बोरिक--कैलिफोर्निया के यशस्वी डाक्टर विलियम बोरिक की होमियोपैथिक मेटेरिया मेडिका जगत प्रसिद्ध चिकित्सा-ग्रंथ है जो लगभग एक शताब्दी से दुनियाँभर में प्रचलित एवं समादृत है। मेडिकल पुस्तक भवन का इसी पुस्तक का प्रस्तुत हिन्दी रूपान्तर अत्यन्त सावधानीपूर्वक अविकल रूप में छापा गया है और इसे पाठकों का व्यापक समर्थन प्राप्त है।

रिपर्टरी सहित मूल्य ३०'०० मात्र।
केवल रिपर्टरी १०'०० मात्र।

२—फॅरिंगटन की कम्परेटिव मेटेरिया मेडिका—मू० १४'०० मात्र।

लेखक--डॉ० सुरेश प्रसाद शर्मा

३—होमियो पारिवारिक चिकित्सा--मू० २५'०० मात्र। ४—होमियोपैथिक मेटेरिया मेडिका—मू० १०'०० मात्र। ५—होमियो गृह-चिकित्सा—मू० ६'०० मात्र। ६—होमियो बाल चिकित्सा—मू० ५'५० मात्र। ७—होमियो पशु चिकित्सा—मू० २'५० मात्र। ८—होमियो शिशु चिकित्सा—मू० १'०० मात्र। ९—पुरानी बीमारियाँ--मू० ६'०० मात्र। १०—होमियो भेषज सम्बन्ध-तत्त्व एवं क्रिया स्थितिकाल—मू० ३.५० मात्र।

११—होमियोपैथिक चिकित्सातत्त्व के मुख्य निर्देशक लक्षण

ले० डॉ० ई० बी० नैश एम० डी०--होमियोपैथिक-चिकित्सा-क्षेत्र में डॉ० नैश का नाम विशेष प्रशंसा पा चुका है।

विख्यात लेखक ने प्रत्येक रोग के लिए एक-एक विशेष प्रकृतिगत औषधि निर्दिष्ट कर दी है। इससे प्रत्येक चिकित्सक को परीक्षा के लिए अनेक औषधियाँ देने की आवश्यकता नहीं होगी। मू० १२'०० मात्र।

१२—रोगी की सेवा और पथ्य—मू० ४'५० केवल। १३—बायोकेमिक चिकित्सा मू० १०'०० मात्र। १४—आगनन—मू० ७'०० मात्र। १५—स्त्री-रोग चिकित्सा सचित्र—मू० ८'५० केवल। १६—होमियो भेषज-सार—मू० ३'०० केवल। १७—होमियो इन्जेक्शन चिकित्सा—मू० ३'५० मात्र। १८—भारतीय औषधावली तथा होमियो पेटेन्ट मेडिसिन्स—मू० ३'०० केवल। १९—होमियो पाकेट गाइड—मू० २'००। २०—बायोकेमिक पाकेट गाइड—मू० २'०० मात्र। २१—बायोकेमिक रेपर्टरी—मू० ५'००। २२—नैश रोजनल